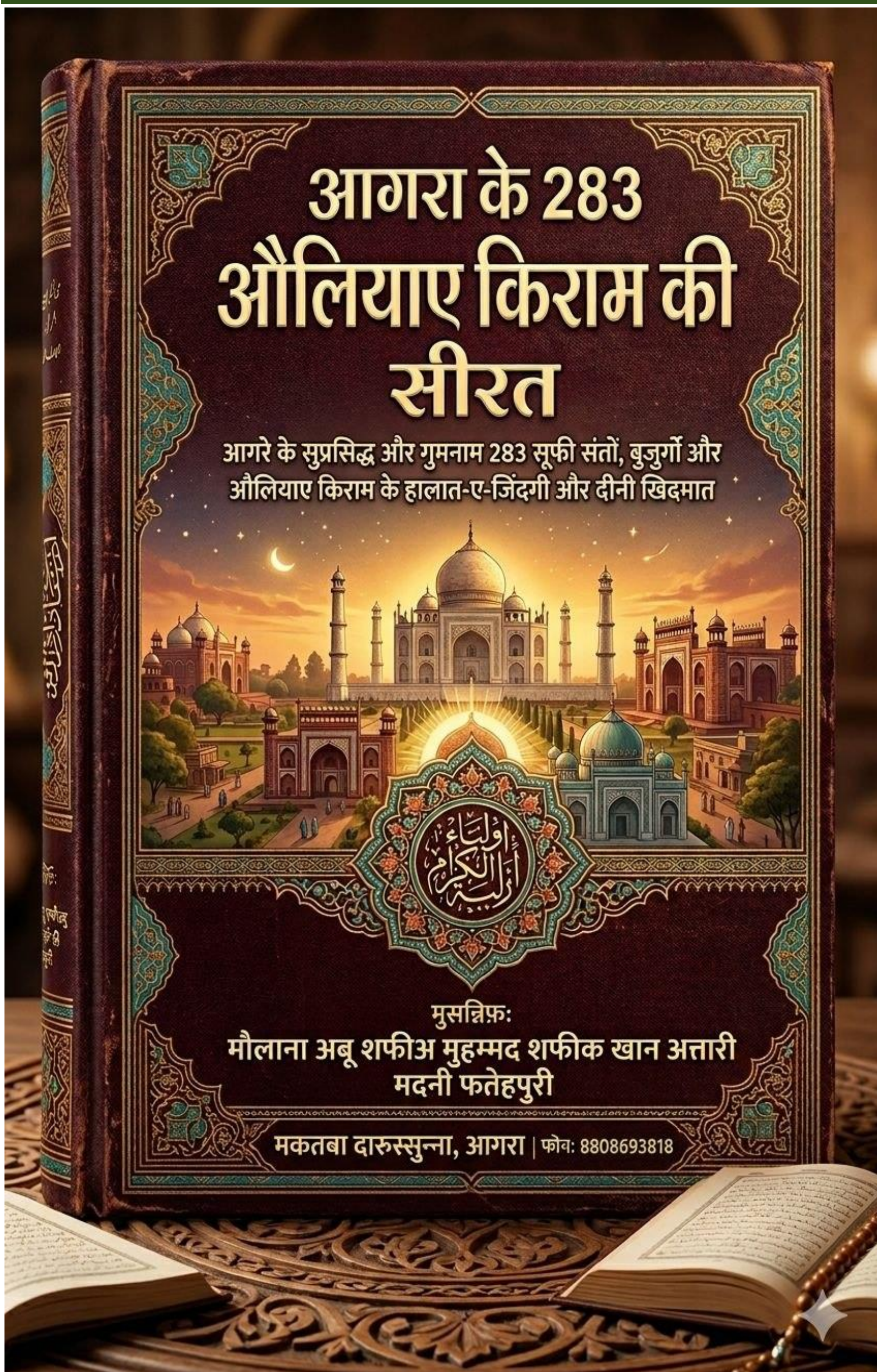

आगरा के 283
औलियाए किराम की
सीरत
आगरे के सुप्रसिद्ध और गुमनाम 283 सूफी संतों, बुज़ुर्गो और
औलियाए किराम के हालात-ए-जिंदगी और दीनी खिदमात
मुसन्निफ़:
मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक खान अत्तारी
मदनी फतेहपुरी
मकतबा दारुस्सुन्ना, आगरा | फोन: 8808693818

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْف وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

आगरा के 283 मशहूर बुज़ुर्गों के हालात पर मुश्तमिल 116 साल पुरानी किताब बनाम

बोस्ताने अख्यार

1331 हिजरी/1916 ईस्वी

मुसन्निफ़ : अल्लामा सईद अहमद मारहरवी

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

1447 हिजरी/2026 ईस्वी

तर्तीब व तसहील

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

दुरूदे पाक की अनोखी फ़ज़ीलत

पहला बाब : औलिया के तज़्किरे क्यों बाक़ी रहते हैं ?

दूसरा बाब : औलिया के बारे में अहम मालूमात

तीसरा बाब : औलिया से मदद मांगने पर दलाइल

चौथा बाब : औलिया के वसीले पर दलाइल

पाँचवाँ बाब : तरीक़त के सिल्सिलों का तआरुफ़

छठा बाब : बोस्ताने अख्यार के मुसन्निफ़ की कहानी

सातवाँ बाब : आगरा के औलिया की सीरत

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْف وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

मकतबा दारुससुन्ना देहली पेश कर रहा है 116 साल पुरानी 283 औलियाए किराम की सीरत पर मुश्तमिल आसान अंदाज़ में किताब

बनाम

बोस्ताने अख्यार

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

अल्लाह पाक हमें औलियाए किराम की मुहब्बत अता फरमाए और उनकी बरकतों से मालामाल फरमाये

जुमादल ऊला 1447 हिजरी NOV 2025

पेज : 608 **MRP: 700**

CONTACT: +91 8808693818

नोट : मैं अपने तमाम इस किताब को पढ़ने वालों से इल्तिजा करता हुँ कि इस किताब की कम्पोजिंग से लेकर चेक करने तक के सारे मराहिल गहरी नज़र से किये गये हैं लेकिन फिर भी गलती का इम्कान मौजूद है। लिहाज़ा जो भी इस किताब में कोई गलती पाये वह ज़रूर इस मेल आई डी पर मेल कर के बताये ताकि अगले एडीशन में उस को दुरुस्त किया जा सके।

EMAIL: SHAFIQMADANI26@GMAIL.COM

दुआए खैर का तालिब

अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

जनाब ज़ाहिद अत्तारी की वालिदा माजिदा
मरहूमा अफसाना के ईसाले सवाब के लिए

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ

الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

अल्लाह पाक इस दुरूद शरीफ की बरकत से
मरहूमा की बे हिसाब मगफिरत फरमाए

कमेटी “खादिमीने औलियाए आगरा”

आप भी इस ग्रुप में जॉइन हो जायें ताकि हम सब मिल कर आगरा के औलियाए किराम की खिदमत कर सकें

आगरा के 283 औलियाए किराम

WhatsApp group



सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं

आओ तुम को मैं बताऊं अस्फ़िया कितने ही हैं
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं
जल्वए नूरे ख़ुदा की हर तरफ़ देखी ज़िया
चार सू रौशन चिराग़े पुर ज़िया कितने ही हैं
गिनते गिनते थक ना जाएं येह तुम्हारी उंगलियां
जा बजा वो बंदगाने किबरिया कितने ही हैं
ख़ानवादए क़ादरिया से मदारी फ़ैज़ तक
हर तरफ़ जलवा कुनां वो बा सफ़ा कितने ही हैं
कादरी चिश्ती सुहर्वर्दी मदारी सिल्सिले
बाग़ ऐसे खिलखिलाते ख़ुशनुमा कितने ही हैं
जाने किस किस दर से मिलती है यहां पर राहतें
रहमतों के दर खुले मरहबा कितने ही हैं
औलिया की महफ़िलों में है सुकूं का तज़्किरा
आशिक़ी के दायरे में आशना कितने ही हैं
उनके दर की ख़ाक सर पर मल रहे हैं बादशाह
उनकी महफ़िल में झुके अहले हया कितने ही हैं
जाहो मन्सब छोड़ बैठे उनके दर की ख़ाक पर
फ़ैज़ लेते हैं यहां अहले दुआ कितने ही हैं
एक तू क्या है तेरी औक़ात क्या बेख़ुद रज़ा
उनकी बज़्मे इश्क़ में नग़मा सरा कितने ही हैं

शायर :वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजिस्थान

बोस्ताने ख़ैर ला कर बोस्ताँ महका दिया

बोस्ताने ख़ैर ला कर बोस्ताँ महका दिया
अहले सुन्नत के अकीदे को बड़ा चमका दिया

भूल बैठे दौलते दुनिया के चक्कर में जिन्हें
उन बुज़ुर्गों का तआरुफ़ आप ने करवा दिया

आगरा वालों पे हज़रत का बड़ा ऐहसान है
रब ने उनके हाथ से सच का अलम लहरा दिया

निस्बते मदनी से यूँ तो जल रहे थे पेशतर
और क़लम ने फिर जलन को और भी भड़का दिया

हक़ लिखा, बेबाक लिखा, ख़ौफ़े बातिल कुछ ना था
सच के शोअलों से हर इक फ़ितने को यूँ धमका दिया

इस शफ़ीक़े क़ादरी का रख तरो ताज़ा क़लम
जिस ने भूले रास्तों को रास्ते पे ला दिया

कब किसी मंसब की चाहत, कब सिले की आरज़ू
सिर्फ़ निस्बत ने येह सारा काम ही करवा दिया

जम रही थी धूल माज़ी के तख़य्युल की मगर
किस ने बेख़ुद आगरा को आईना दिखला दिया

शायर : वसीम बेख़ुद मांडलवी भीलवाड़ा राजिस्थान

इस किताब में क्या है ?

अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने **"बोस्ताने अख्यार"** नाम की किताब 116 साल पहले लिखी थी जिस को नई तरतीब और तस्हील के साथ मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफीक ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब ने नया नाम **"आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत"** दे कर पेश किया है।

येह किताब महेज़ एक तस्नीफ़ नहीं बल्कि आगरा की रुहानी तारीख़ का ज़िंदा दस्तावेज़ है। आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत में वो पाकीज़ा हस्तियाँ जमा की गई हैं जिनकी बरकतों से आगरा की सर ज़मीन सदियों से मुनव्वर चली आ रही है।

आगरा की सर ज़मीन वो सर ज़मीन है जिसको सैकड़ों साल हिन्दुस्तान की राजधानी बनने का ऐज़ाज़ हासिल है। आपको जान कर ख़ुशी होगी कि आगरा की सर ज़मीन में :

- अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी रहमतुल्लाह अलैह के पोते शागिर्द
- अल्लामा सख़ावी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द
- अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द
- हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के खल़ीफ़ा
- मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के खल़ीफ़ा
- मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे
- हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के खल़ीफ़ा

 अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

 हज़रत अब्दुर्रहीम मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

 आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब सैय्यिद आले रसूल मरहरवी रहमतुल्लाह अलैह के असातिज़ा

 हज़रत शाहे आलम रहमतुल्लाह अलैह, कुतुबे आलम रहमतुल्लाह अलैह के औलाद

 मीर सैय्यिद शरीफ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद

इनके इलावा और बहुत बुलंद पाया औलियाए किराम के मज़ारात मौजूद और उनकी सीरत इस किताब में महफ़ूज़ है।

इस किताब की सबसे बड़ी ख़ूबी येह है कि 283 औलियाए किराम का जामेअ तज़्किरा मुस्तनद तारीख़ी हवालों के साथ आम फहेम मगर इल्मी और वक़ार भरे उस्लूब में पेश किया गया है, जिसे पढ़ने वाला ख़ुद को आगरा की गलियों, ख़ानक़ाहों और मज़ारात की रुहानी फ़िज़ा में महसूस करेगा।

येह किताब मुस्लमानों के लिए बाइसे फ़ख़र, तलबा और मुहक़्क़िक़ीन के लिए क़ीमती सरमाया, और हर आशिक़े औलिया के लिए लाज़िमी मुताला है।

अगर आप चाहते हैं कि आपकी नस्लें अपने औलिया को पहचानें, घरों में दीनी व रुहानी माहौल क़ाईम हो और एक नायाब तारीख़ी किताब आपके घर की ज़ीनत बने तो आज ही इस किताब को हासिल करें। यक़ीन मानिए जो एक बार पढ़ेगा, वो दूसरों को भी पढ़ने पर मजबूर कर देगा।

सदक़ए जारिया का बेहतरीन मौक़ा

ऐ आशिक़ाने औलिया ! आइए! अक़ाबिर व औलियए किराम की मुक़द्दस ज़िंदगी को आम करें और अपनी आख़िरत सँवारें।

किताब: बोस्ताने अख्यार

मौज़ू: आगरा के 283 बुज़ुर्गों व औलियाए किराम की पाक सीरत

इल्म, अमल और रूहानियत से भरपूर एक अन्मोल किताब

इस किताब को मस्जिदों में, मदरसों में, दरगाहों पर, ग़रीब मुसलमान और दीनी तलबा में इसाले सवाब के लिए तक़सीम करवा कर हमेशा का सवाब हासिल करें।

तक़सीम रेट:

- 1 किताब — ₹350
- 5 किताब — ₹1750
- 10 किताब — ₹3500

जो इल्म फैलाता है, वो सदियों तक ज़िंदा रहता है।

बुज़ुर्गों की सीरत आम करना, ईमान की ताज़गी है।

आज ही ऑर्डर देकर इस नेक काम में शरीक बनें।

आपके नामए अमल में हमेशा सवाब जुड़ता रहेगा।

नियत करें — इल्म बाँटें — सवाब कमाएँ।

असल क़ीमत **700 रुपये** रिआयती क़ीमत **350 रुपये**

आर्डर बुक करवाने के लिए इस नंबर राबिता कीजिए

राबिता नंबर : +91 8808693818

मकतबा दारुस्सुन्ना, F 1 mewati नगला, ताजनगरी 2, आगरा

फेहरिस्त

आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



किताब के बारे में

आगरा घूमने की जगह है

अल्लाह पाक के करम से सगे अत्तार (अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी) 2014 ईस्वी में दर्से निज़ामी से फ़ारिग़ुत्तहसील हो कर बतौरे मुदर्रिस जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा ब मक़ाम नगला मेवाती ताज नगरी फ़ेस 2, ताजगंज आगरा अगस्त के महीने 2014 में आया। और अगस्त 2024 ईस्वी में ही फ़तेहपुर सीकरी हज़रत सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहि के मज़ारे पुर अनवार पर हाज़िरी का शर्फ़ हासिल किया। लेकिन कभी ताजमहल घूमने की ग़र्ज़ से नहीं गया और ज़ेहन में यही था कि आगरा बादशाहों का शहर है लोग तफ़रीहन घूमने के लिए आते हैं।

लेकिन ज़िलहिज्जा **1446 हिजरी ब मुताबिक़ 2025 ईस्वी** में जब सगे अत्तार ने वाक़िअए कर्बला पर **'आसान ख़ुत्बाते मुहर्रम'** किताब लिखी और उस को छपवा कर आगरा की मस्जिदों में रखवाई तो लोहा मंडी के मुहल्ले तेली पाड़ा के मस्जिद के इमाम हज़रत मौलाना रज़ाउद्दीन कादरी साहिब ने सगे अत्तार से राबिता फ़रमाया और कहा कि अल्लामा सईद अहमद मारहरवी की एक किताब है जिसमें आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत मौजूद है। और येह किताब अब कहीं भी दस्तयाब नहीं ,अगर हो सके तो वक़्त निकाल कर इस पर नए सिरे से काम कीजीए।

इमाम साहिब के कहने पर सगे अत्तार में हामी तो भर ली मगर तदरीस और दर्सी किताबों की तस्नीफ़ से फ़ुर्सत नहीं मिल रही थी।

आगरा औलियाए किराम का शहर है

बिलआख़िर एक महीने के बाद माहे मुहर्रम 1447 हिजरी ब मुताबिक़ जुलाई 2025 ईस्वी में कुछ वक़्त निकाल कर अल्लामा सईद अहमद मारहरवी की किताब **'बोस्ताने अख्यार'** को बड़ी मुश्किलों से हासिल किया चूँकि येह किताब आगरा में नहीं मिल सकी फिर नेट से डाउनलोड कर के फोटो कापी निकलवाई और उस का मुतालआ किया **“बोस्ताने अख्यार”** जो आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत पर मुश्तमिल किताब है इस को पढ़ने से पहले कभी भी येह नहीं सोचा था कि आगरा में उल्मा, और औलिया की इतनी बड़ी तादाद मौजूद होगी और फिर ऐसे पाए के औलियाए किराम और मशाईख़ीने उज़्ज़ाम जो अल्लामा सख़ावी अलैहिर्रहमा के शागिर्द, अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी अलैहिर्रहमा के पोते शागिर्द, मीर सैय्यिद शरीफ़ जुरजानी अलैहिर्रहमा की औलाद,हज़रत कुतुबे आलम अलैहिर्रहमा, शाहे आलम अहमदाबादी अलैहिर्रहमा की औलाद, मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरीअलैहिर्रहमा के शागिर्द, खलीफा और औलाद, इमाम रब्बानी, इमाम मुजद्दिदे अल्फ़े सानी अलैहिर्रहमा के खलीफ़ा, हज़रत बाक़ी बिल्लाह अलैहिर्रहमा के खलीफ़ा और अपने वक़्त के क़ुतुब, मुहद्दिस, मुफ़स्सिर, फुक़हा की एक ऐसी जमाअत के मज़ारात आगरा में मौजूद हैं, सगे अत्तार का दिल इस किताब को पढ़ कर मचल गया और आगरा को बादशाहों का शहर कहने के बजाये औलियाए किराम का शहर कहने लगा। और अल्लाह पाक की जानिब से एक ऐसी कशिश पैदा हुई कि जितनी जल्दी हो सके इस किताब को नई तर्तीब और तसहील के मराहिल से गुज़ार कर उर्दू, हिन्दी दोनों ज़बानों में छाप कर मुसलमानों तक पहुंचाया जाए।

किताब पर काम की शुरुआत

फिर क्या था ? तदरीस के बाद जो भी वक़्त मिलता इसी किताब में सर्फ करता और देखते देखते तीन महीने की मुसलसल मेहनत से येह किताब नई तर्तीब और तसहील के साथ कम्पोज़ हो कर तैयार हो गई। इस में सगे अत्तार ने मुहल्ला वाइज़ औलियाए किराम की सीरत को दर्ज किया है ताकि ज़ाइरीन को आसानी हो सके कि जब वो किसी मुहल्ला में जायें तो उस मुहल्ले में मौजूद तमाम औलियाए किराम के मज़ारात पर हाज़िरी दे सके।

कुछ नया अंदाज़

कम्पोज़िंग के मरहले के बाद ज़ेहन में एक बात आई कि औलियाए किराम के मज़ारात की हाज़िरी का शर्फ़ हासिल किया जाये और वहां के मौजूदा हालात भी लिखे जाएं क्योंकि **"बोस्ताने अख्यार"** नामी किताब अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने 1331 हिजरी ब मुताबिक़ **1910 ईस्वी में 116 साल** पहले तस्नीफ़ की थी और तब से लेकर अब तक कई मुहल्लों के नाम भी बदल गए, जो निशानियां साहिबे किताब ने लिखी थीं अब उनमें से बाअज़ का नामों निशान भी नहीं, शहर की तौसीअ से बहुत सारी तब्दीलियां हो चुकी हैं। और इस के साथ साथ एक नया काम भी किया जाये यानी वहां के लोकेशन का **QR Code** बना कर किताब में डाला जाये जिससे ज़ाइरीन **QR Code** को अपने मोबाइल से Scan कर के मैप के ज़रिये बा आसानी मज़ारात पर पहुंच सकें।

चुनांचे तीन महीने की मुसलसल मेहनत के बाद इस किताब की जदीद तर्तीब और तसहील से फ़ारिग़ हो कर मज़ारात पर हाज़िरी का

सिल्सिला शुरू किया ताकि उन औलियाए किराम के फ़्यूज़ो बराकात लेने के साथ साथ वहां की नई मालूमात लिखी जा सके नीज़ मज़ारात के लोकेशन का **QR Code** बनाया जा सके जिससे हाज़िरीन के लिए आसानी हो।

सफर की शुरुआत

लिहाज़ा इस मुबारक सफ़र का आग़ाज़ अपने दो मुहिब्बे गिरामी हाफ़िज़ आहिल अत्तारी और ज़ाहिद अत्तारी साकिन तेली पाड़ा ताजगंज के साथ, **17 जुमादल उला 1447 हिजरी** ब मुताबिक़ 9 नवंबर 2025 को बरोज़ इतवार किया और सबसे पहले नगला मेवाती ताज नगरी फ़ेस 2 से बाइक के ज़रिए ताजगंज में मौजूद सैय्यिद अहमद बुख़ारी अलैहिर्रहमा के मज़ार मुबारक पर पहुंचे वहां फ़ातिहा ख़्वानी और दीगर मामूलात से फ़ारिग़ हो कर ताजगंज थाना में हज़रत सैय्यिद हामिद बुख़ारी अलैहिर्रहमा के मज़ारे मुबारक पर हाज़िरी दी और वहां से मल्कों गली की पंजे मस्जिद में मौजूद तीन औलियाए किराम:

(1) ---सैय्यिद शाह मुजाहिदुद्दीन अलैहिर्रहमा जो बादशाह शाहजहाँ की बीवी सरहिंदी बेगम के पीरो मुर्शिद हैं और आप अलैहिर्रहमा मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस अकबराबादी अलैहिर्रहमा के चार वास्ते से पोते हैं।

(2) ---सैय्यिद मौलवी मुहम्मद काज़िम अलैहिर्रहमा आप शाह मुजाहिदुद्दीन अलैहिर्रहमा के तीन वास्ते से पोते हैं।

(3) ---सैय्यिद इमाम अली शाह अलैहिर्रहमा आप हज़रत सैय्यिद अमजद अली शाह कादरी अकबराबादी अलैहिर्रहमा के ख़लीफ़ा हैं।

ज़ुहर की नमाज़ पंजे मस्जिद में ही अदा की ,नमाज़ के बाद मुख़्तसर बयान किया जिसमें तीनों बुज़ुर्गाने दीन की सीरत बयान की,

यहां से फ़ारिग़ होने के बाद मियां नज़ीर के मज़ार पर हाज़िरी हुई जो कि मल्कों गली में मौजूद नज़ीर पार्क के नाम से मशहूरो मारूफ़ है, वक़्त तक़रीबन दोपहर के साढ़े तीन बज चुके थे दोपहर का खाना भी नहीं खाया था मगर एक फ़िक्र थी कि आज ताजगंज के तमाम औलियाए किराम के मज़ारात पर हाज़िरी देना है लिहाज़ा नज़ीर पार्क मल्कों गली से हज़रत जलाल बुख़ारी अलैहिर्रहमा के मज़ारे पुर अनवार पर हाज़िरी देने के लिए निकले। वहां पहुंच कर फ़ातिहा ख़्वानी और दीगर उमूर पर काम मुकम्मल कर के वहीं मौजूद हज़रत मौलाना ज़ियाउद्दीन बल्ख़ी अलैहिर्रहमा के मज़ार मुबारक का पता लगाया मगर कुछ पता ना चल सका। जो कि हज़रत जलाल बुख़ारी अलैहिर्रहमा के मज़ार के क़रीब पच्छिम की जानिब था। हो सकता है कि जो मज़ार हज़रत जलाल बुख़ारी अलैहिर्रहमा के मज़ार के बाज़ू में क़िबला की तरफ़ जो मज़ार है वही हज़रत मौलाना ज़ियाउद्दीन बल्ख़ी अलैहिर्रहमा का मज़ार हो। वल्लाहु आलम

दो हफ़्ते बाद एक काबिले ऐतिमाद शख़्स से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने बताया कि हज़रत मौलाना ज़ियाउद्दीन बल्ख़ी अलैहिर्रहमा का मज़ार वो है जो जलाल बुख़ारी अलैहिर्रहमा के मज़ार के नीचे हाफ़िज़ साहिब के मज़ार से मशहूर है।

हज़रत जलाल बुख़ारी अलैहिर्रहमा के मज़ार की हाज़िरी से फ़ारिग़ हो कर उन्ही के भाई हज़रत सैय्यिद अज़मत बुख़ारी अलैहिर्रहमा के मज़ार की हाज़िरी के लिए तेली पाड़ा रवाना हुए और हाज़िरी की सआदत हासिल कर के वहां से फैज़ाने मदीना नगला मेवाती नमाज़े मग़रिब से पहले पहले आ गए और यूं ताजगंज के औलियाए किराम की मज़ारों की हाज़िरी मुकम्मल हुई।

इस हाज़िरी में जो हालात क़लम बंद किए उनका तज़्किरा ताजगंज के औलियाए किराम की सीरत में ब उन्वान **“मौजूदा हालत 2025”** लिख दिया गया है।

दूसरा सफर

फिर अगले हफ्ते फ़ैज़ान अत्तारी साहिब साकिन छीपी टोला आगरा से मुलाक़ात हुई उनको इस काम के बारे में बताया तो उन्होंने काफी साथ दिया और उन्ही के साथ आगे का सफर शुरू किया।

ताजगंज से फ़ारिग़ हो कर रोज़ाना एक एक मुहल्ला का जदवल बनाता और मज़ारात की हाज़िरी का सिल्सिला रहता ,किसी दिन तीन मज़ारात तो किसी दिन चार मज़ारात पर हाज़िरी होती क्योंकि सारा वक़्त तलाश करने में निकल जाता। बिलआख़िर एक दिन हज़रत सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब अलैहिर्रहमा के मज़ार मुबारक पर हाज़िरी हुई जो कि नाई की मंडी में सदर भट्टी के रास्ते पर है। और वहां पर साहिबे मज़ार की एक करामत का मुशाहिदा हुआ और वो येह है कि

करामत

आगरा के औलियाए किराम की मज़ारात को तलाश करने में काफ़ी दुशवारियाँ पेश आ रही थीं, रोज़ाना चार पाँच घंटे घूमने के बावजूद कभी तीन मज़ार पर और कभी चार मज़ार पर हाज़िरी होती, सारा वक़्त तलाश करने में ही गुज़र जाता क्योंकि अब आबादी भी बढ़ चुकी है और मुहल्लों के नाम भी बदल चुके हैं। आप अलैहिर्रहमा के मज़ार पर पहुंच कर सगे अत्तार ने फ़ातिहा पढ़ी और हज़रत अलाउद्दीन अलैहिर्रहमा की बारगाह में अर्ज़ किया : हुज़ूर! मज़ारात को तलाश करने में काफ़ी दुशवारी हो रही है रोज़ाना तीन से चार मज़ारात पर ही हाज़िरी हो पाती है अगर यही हाल

रहा तो कई महीने लग जाऐंगे। अब आप मुझे हिम्मत अता कीजिए और मददगार दीजिए वर्ना में कल से येह काम छोड़ रहा हूँ।

येह अर्ज़ करने के बाद मग़रिब की नमाज़ अदा की और नमाज़ अदा करने के बाद फ़ौरन एक शख़्स से मुलाक़ात हुई उसने कहा : मैंने आप को काफ़ी दूर से देखा तो मुलाक़ात के लिए चला आया, आप यहां किस लिए आए हैं ? मैंने उन को सारा हाल बताया उन्होंने कहा मैं आप को मज़ारों पर ले चलता हूँ। फिर उस दिन के बाद अलहम्दु लिल्लाह कड़ी से कड़ी जुड़ती चली गई और मददगार मिलते रहे और एक एक दिन में कभी दस कभी बारह औलियाए किराम की बारगाहों में हाज़िरी की सआदत मिलने लगी।

सगे अत्तार की नीयत तो यही थी कि जब सारे औलियाए किराम के मज़ारात की मौजूदा हालत और उनके लोकेशन का QR कोड मुकम्मल हो जाऐंगे तब किताब को छपवाएगें। लेकिन इस काम में काफ़ी वक़्त दरकार था तक़रीबन छः महीने लग सकते थे और इधर अहबाब का इसरार पर इसरार कि किताब कब आ रही है ? जल्दी कीजिए वग़ैरा वग़ैरा। लिहाज़ा सगे अत्तार के ज़ेहन में एक बात आई कि अब तक जितना काम हो चुका है उसी पर बस करते हैं और अगले ऐडीशन के लिए बक़िया काम को मुअख़्ख़र रखते हैं।

अल्लाह पाक की बारगाह में दुआ है कि इस अदना सी कोशिश को क़बूल फ़रमाए।

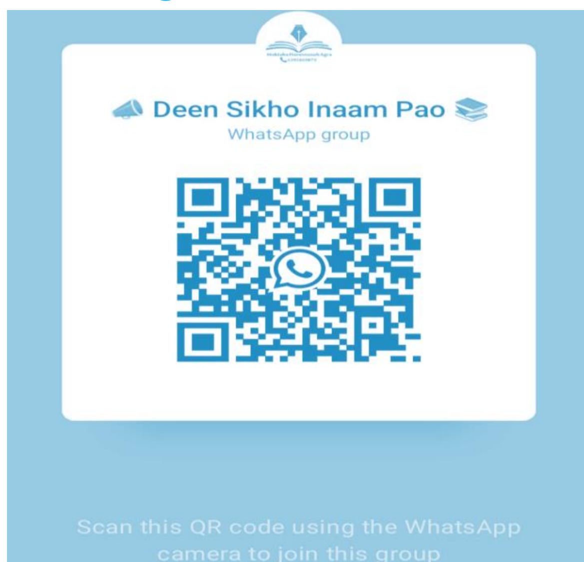
आगरा वालों से दर्दमंदाना अपील

ऐ आशिक़ाने औलिया! तक़रीबन 30 मज़ारात पर जाना हुआ, उन में से अक्सर में साहिबे मज़ार के नाम की तख़्ती नहीं लगी जिसकी वजह से कुछ पता नहीं चल पाता कि साहिबे मज़ार कौन हैं ? मज़ीद कई

मज़ारात तो ऐसे भी हैं जो बोसीदा यानी पुराने हो चुके हैं जिनमें तामीरी काम की ज़रूरत है, और कई बुज़ुर्गाने दीन ऐसे हैं कि अब से दस पंद्रह साल पहले उनका उर्स बहुत शानदार अंदाज़ से मनाया जाता था लेकिन अब उनका उर्स नहीं होता। सगे अत्तार की दिली तमन्ना है कि **"ख़ादिमे औलियाए किराम"** के नाम से एक कमेटी बनाई जाये जिसका सबसे पहला काम तमाम मज़ारात पर साहिबे मज़ार के नाम की तख़्ती लगवाना हो फिर जिस मज़ार पर तामीरी काम की ज़रूरत है इस को करवाया जाये और हर साल हर बुज़ुर्ग का शानदार अंदाज़ से उर्स मना कर उनके फ़ैज़ान से मालामाल हुआ जाये।

यक़ीनन इस काम में काफ़ी रक़म की ज़रूरत पड़ेगी लिहाज़ा आप सब मेरा साथ दें। अल्लाह पाक हमें औलियाए किराम की खिदमत करते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

इस ग्रुप में जॉइन हो जायें।



तकरीज़े जमील

नबीरए आला हज़रत, शैख़ तरीक़त, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल मन्नान रज़ा मन्नानी बरेली शरीफ़

الحمد لله ربّ العالمين، الصلوٰة والسلام على سيد الأنبياء والمرسلين، وعلى آله وأصحابه أجمعين

औलियाय किराम की सीरतें दर अस्ल ईमान, इख़्लास, इश्क़े इलाही और इत्तिबाए सुन्नत के रौशन मीनार हैं। उनके तज़्किरों से दिलों को हयाते रुहानी नसीब होती है और ईमान ताज़ा होता है। ज़ेरे नज़र किताब **"आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत"** इन्ही नफ़ूसे क़ुदसिया के तज़्किरों का एक हसीन गुलिस्ताँ है जिसमें हर वर्क़ से विलायत की ख़ुश्बू आ रही है।

मुरत्तिबे किताब हज़रत मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी ने निहायत अर्क़ रेज़ी, तहक़ीक़ और इख़्लास से अल्लामा सईद अहमद मारहरवी की नायाब तसनीफ़ **“बोस्ताने अख़्यार”** को जदीद तर्तीबो तसहील के साथ पेश कर के अहले आगरा ही नहीं बल्कि तमाम अहले मुहब्बतो विलायत पर अज़ीम एहसान फ़रमाया है।

अल्लाह पाक से दुआ करता हूँ कि इस किताब के मुरत्तिब मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी को इस का अच्छा बदला अता फ़रमाए।

यक़ीनन येह ऐसा अज़ीम काम है जिसका बदला हम मुरत्तिब को नहीं दे सकते। ताहम आगरा के मुस्लमानों से अपील है कि जगह जगह, मुहल्ला मुहल्ला इस किताब की तशहीर करें और ख़ुद भी खरीदें और

ईसाले सवाब में तक़सीम भी करवाएं ताकि बुज़ुर्गों की सीरत को आम किया जा सके।

इस किताब में औलियाए आगरा के हालाते ज़िंदगी, मज़ारों के मक़ामात, सिल्सिलए तरीक़त, साले वफ़ात, और औलिया से मुताल्लिक़ अहेम अक़ाइदो दलाईल को निहायत मुनज़्ज़म अंदाज़ में जमा किया गया है। येह तसनीफ़ ना सिर्फ तहक़ीक़ी और तारीख़ी लिहाज़ से अहेम है बल्कि रुहानी बालीदगी और अकीदए अहले सुन्नत की तक़वियत का ज़रिया भी है।

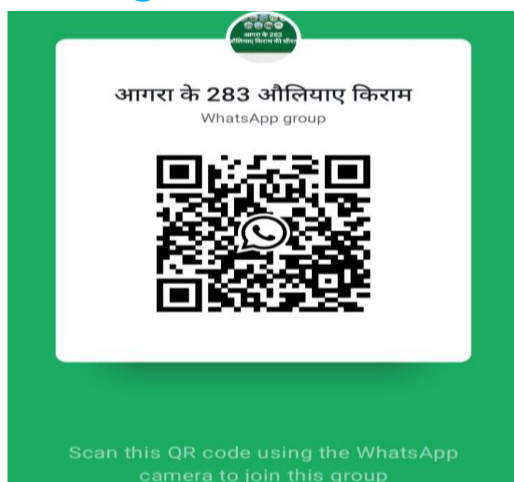
अल्लाह पाक मुरत्तिबे किताब की इस इल्मी, रुहानी ख़िदमत को अपनी बारगाह में शर्फ़े क़बूलीयत अता फ़रमाए, और इसे आशिक़ाने औलिया के लिए बाइसे रुशदो हिदायत बनाए।

आमीन बिजाहि सैय्यिदिल मुरसलीन ﷺ

अब्दुल मन्नान रज़ा मन्नानी बरेली शरीफ़

11 जुमादस्सानी 1447 हिजरी बमुताबिक़ 3 दिसंबर 2025 ईस्वी

इस ग्रुप में जॉइन हो जायें



तकरीज़े दिल नशीन

उस्ताज़ुल उलमा, फ़ज़ीलतुश्शैख़, हज़रत अल्लामा मौलाना अब्दुल अज़ीज़ अत्तारी कादरी मिस्बाही
शैख़ुल हदीस जामियतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

الحمد لله ربّ العالمين، والصلاة والسلام على سيد المرسلين، وآله وصحبه أجمعين

येह मेरे लिए बाइसे मुसर्रतो इफ़्तिख़ार है कि मैं **'आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत'** पर येह चंद कलिमाते तहसीन क़लम बंद कर रहा हूँ। येह किताब महेज़ एक तारीख़ी या तज़्किराती मजमूआ नहीं बल्कि येह आगरा की मुक़द्दस धरती पर जलवा फ़रमा उन रुहानी आफ़ताबो माहताब की हयातो ख़िदमात का ज़िंदा व ताबिंदा चिराग़ है जिनकी बरकतों ने सदियों दिलों को मुनव्वर रखा।

इस मुबारक तसनीफ़ी सरमाया के मुरत्तिब मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी अपने ज़माने के एक मुतहर्रिक, साहिबे ज़ौक़, और दीन के दर्द से लबरेज़ आलिमे दीन हैं।

आपकी ज़िंदगी दर्सो तदरीस, इस्लाहो तब्लीग़, तसनीफ़ो तालीफ़ और ख़िदमते ख़ल्क़ जैसे शोबों में सरापा जिद्दो जहद और पुर ख़ुलूस मेहनत का हसीन संगम है। आपकी तहक़ीक़ी काविश, दीनी फ़िक्र और तहरीरी हुस्न इस किताब के हर सफ़्हे से नुमायां झलकते हैं। आपने इस किताब को महेज़ तर्तीब नहीं दिया बल्कि पुराने मसादिर की छान बीन, मुहक़्क़िक़ाना अंदाज़े तहरीर, वाज़ेह उस्लूब, और निहायत मुहतात तर्तीब

के ज़रिये इसे अपनी नौईयत की एक बा कमाल ख़िदमते दीन बना दिया है।

आगरा के औलियाए किराम के हालात, सिल्सिलए तरीक़त की मारिफ़त, औलिया अल्लाह के फ़ज़ाइलो बरकात, मज़ारात के आदाब, और अक़ाइदे अहले सुन्नत के दलाइल, येह सब मज़ामीन इस क़दर सलीक़े, दलील और क़ुव्वते क़लम के साथ जमा किए गए हैं कि पढ़ने वाला ना सिर्फ इल्मी ऐतिबार से मुतमइन होता है बल्कि रुहानी तर्बीयत से भी बहरा मंद होता है।

येह किताब दर अस्ल अवाम के लिए नूरे तरीक़त का सरमाया, ख़वास के लिए तहक़ीक़ का माख़ज़, और आशिक़ाने औलिया के लिए एक रुहानी सौग़ात है।

मेरी राय में इस किताब की इशाअत उम्मत के लिए एक नेअमत से कम नहीं है। ऐसे दौर में जब लोग अपनी रुहानी तारीख़ से बेगाना होते जा रहे हैं, येह किताब उन्हें उन बुज़ुर्गों से जोड़ती है जिन्होंने आगरा को इल्म, इरफ़ान, इश्क़े रसूलﷺ और विलायत की ख़ुश्बू से महका दिया।

मैं तमाम पढ़ने वालों, अहले इल्म, सूफिया, तलबए मदारिस और आशिक़ाने औलिया से दस्त बस्ता गुज़ारिश करता हूँ कि इस किताब को ना सिर्फ ख़ुद पढ़ें बल्कि इसे ज़्यादा से ज़्यादा तक़सीम कर के सदक़ए जारीया बनाएं। मुम्किन है कि आपके ज़रिये येह किताब किसी ऐसे हाथ में पहुंच जाये जिसकी ज़िंदगी का रुख बदल जाये, उस के दिल में मुहब्बते औलिया की शमआ रौशन हो जाये, और आपके लिए येह दाइमी नेकी का सबब बन जाये।

आख़िर में मुरत्तिबे मुहतरम के लिए दुआ है कि अल्लाह पाक उनकी उम्र, इल्म, अमल, क़लम और ख़िदमात में बेपनाह बरकतें अता

फ़रमाए, उनके इस नेक कारनामे को क़ुबूलियते आम्मा से नवाज़े, और इसे उनके लिए दुनिया व आख़िरत का बेहतरीन ज़ख़ीरा बनाए।

अब्दुल अज़ीज़ अत्तारी कादरी मिस्बाही
12 जुमादस्सानी 1447 हिजरी बमुताबिक़ 4 दिसंबर 2025 ईस्वी

तकरीज़े लतीफ़

हज़रत मौलाना शाने इलाही मदनी, उस्ताद जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा

किताब **'आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत'** को कुछ ख़ास मक़ाम से पढ़ने का मौक़ा मिला येह बिलख़ुसूस अहले आगरा के लिए और बिलउमूम सब के लिए एक अज़ीम तोहफ़ा और दीनी असासा है। इस किताब के ज़रिये आगरा की इस मुबारक सरज़मीन पर मदफ़ून अल्लाह के नेक बंदों की हयात, ख़िदमात और रुहानी फ़ुयूज़ को एक जगह निहायत सलीक़े और तहक़ीक़ के साथ जमा कर दिया गया है।

येह किताब ख़ुसूसन आगरा वालों के लिए अपनी तारीख़, अपनी रुहानी विरासत और अपने अकाबिर से जुड़ने का एक मज़बूत ज़रिया है।

आगरा वालों के लिए येह किताब इसलिए ख़ास अहमीयत रखती है कि येह उन्हें अपने शहर के औलियाए किराम से रोशनास कराती है, उनकी ज़िंदगियों से अमल, अख़्लाक़, तक़्वा और मुहब्बते इलाही का सबक़ देती है, जो लोग अपने बुज़ुर्गों के मज़ारात पर हाज़िरी देने का शौक़ रखते हैं उनके लिए येह किताब ज़ियारत के साथ मारिफ़त भी अता करती है।

उलमाए किराम के लिए भी येह किताब एक मुस्तनद माख़ज़ की हैसियत रखती है। इस में तारीख़ी तसल्सुल, सलासिले तरीक़त का तआरुफ़ और औलियाए किराम की दावती व इस्लाही ख़िदमात को निहायत ख़ूबसूरती से पेश किया गया है, जो ख़िताबात, दुरुस और तहक़ीक़ी कामों में निहायत मुफ़ीद साबित हो सकती है।

मुरत्तिब मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी की येह मेहनत इस बात की रौशन दलील है कि उन्होंने आगरा के औलियाए किराम से मुहब्बत, अक़ीदत और ज़िम्मेदारी के साथ इस इल्मी अमानत को मुरत्तब किया है। मौसूफ़ की इस के इलावा भी इस्लाही व दर्सी कुतुब मौजूद हैं। अल्लाह पाक उनके इल्मो क़लम में और बरकतें अता फ़रमाए। आमीन

येह किताब सिर्फ़ मुताला की चीज़ नहीं बल्कि अपने माज़ी से जुड़ने, हाल की इस्लाह और मुस्तक़बिल को संवारने का ज़रिया है। मैं अहले आगरा, अवाम और उल्मा दोनों से ख़ुलूसे दिल के साथ गुज़ारिश करता हूँ कि वो इस किताब को ज़रूर पढ़ें, अपने घरों में रखें, नई नस्ल तक पहुंचाएं और अपने शहर के औलियाए किराम के फुयूज़ो बरकात से इल्मी व रुहानी फ़ायदा उठाएं।

येह किताब आगरा की दीनी पहचान को ज़िंदा रखने वाली एक निहायत काबिले क़दर ख़िदमत है।

अज़ क़लम शाने इलाही मदनी

उस्ताद जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा







तकरीज़े नफीस

हज़रत मौलाना आलमगीर मिस्बाही
उस्ताद जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

इल्मे सीरत और तज़्किरे का फ़न, महेज़ नामों का मजमूआ नहीं बल्कि हमारे अस्लाफ़ के इल्मी, रुहानी और इस्लाही सरमाया की हिफ़ाज़त का ज़रिया है। इस सिल्सिले में लिखी जाने वाली कोई भी किताब अपने मुअल्लिफ़ से ना सिर्फ मेहनत का तक़ाज़ा करती है बल्कि ख़ुलूस, तहक़ीक़, तर्तीब और ज़िम्मेदारी भी माँगती है।

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब की येह गिरांक़द्र काविश **"आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत"** इसी इल्मी और रुहानी ज़ौक़ का नादिर नमूना है।

उन्होंने आगरा के अज़ीम बुज़ुर्गाने दीन की हयात, हालात, ख़िदमात और रुहानी नुक़ूश को जिस मुहब्बत, तर्तीब और अमानतदारी के साथ जमा किया है, यक़ीनन येह काम काबिले सताइश है और अहले इल्म व अहले दिल दोनों के लिए यकसाँ नेअमत है।

इस किताब की एक ख़ुसूसीयत जो उसे असरे हाज़िर की ज़रूरत से जोड़ती है वो येह है कि बुज़ुर्गाने दीन के तज़्किरे के साथ उनके मज़ार मुबारक की **लोकेशन का QR Code** शामिल किया गया है, ताकि ज़ाइरीन और आशिक़ाने औलिया के लिए उनके मज़ारात तक पहुंचना आसान हो जाये। येह अंदाज़ ना सिर्फ तहक़ीक़ और मुहब्बत का हसीन

इम्तिज़ाज है, बल्कि जदीद वसाइल को दीनी ख़िदमत के लिए इस्तिमाल करने की रौशन मिसाल भी है।

येह किताब इंशाअल्लाह आगरा की रुहानी तारीख़ का मोअतबर हवाला बनेगी, और इल्मो अदब, तारीख़ो तज़्किरा और निस्बतो मुहब्बत के मुतलाशी क़ारिईन के लिए दाइमी फ़ायदा का ज़ख़ीरा साबित होगी।

अल्लाह पाक मुअल्लिफ़े मुहतरम **मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी** साहिब की इस इल्मी ख़िदमत को क़बूल फ़रमाए, इस किताब को उनके लिए सदक़ए जारीया बनाए, और उन्हें मज़ीद ख़िदमते दीन, तहक़ीक़, तस्नीफ़ और अवामो ख़वास के लिए बाइसे नफ़ा बनाए।

आमीन या रब्बल आलमीन

मुहम्मद आलमगीर मिस्बाही

उस्ताद जामिअतुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा

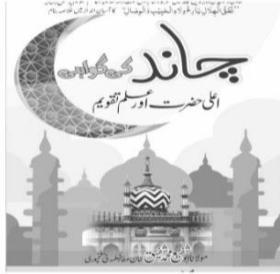
4 दिसंबर 2025 ईस्वी













तकरीज़े हसीन

मुहम्मद नोमान अशरफ़ नईमी बिन मुफ़्तिए आज़म शीशगढ़ हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद तौफ़ीक़ अहमद नईमी साहिब क़िब्ला

इस वक़्त मेरे पेशे नज़र हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी की तर्तीबो तसहील बनाम **"आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत"** है, नाम से ही ज़ाहिर है कि येह किताब आगरा के 283 औलियाए किराम की हयातो ख़िदमात पर मुश्तमिल है। अस्ल में इस किताब का पुराना तरीखी नाम **'बोसताने अख्यार'** है जो कि हज़रत अल्लामा सईद अहमद मारहरवी साहिब क़िब्ला की अब से 116 साल पहले की तालीफ़ है।

अल्हम्दु लिल्लाह मुझे येह जान कर बहुत ख़ुशी हुई कि आगरा के औलियाए किराम की सवानेह हयात को कई मुद्दत बाद दोबारा शाएअ किया जा रहा है और इस काम को **हज़रत मौलाना मुफ़्ती अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी** अंजाम दे रहे हैं।

अहकर ने येह चंद सतरें हुज़ूर सैय्यिद इरशाद मियां साहिब क़िब्ला के कहने पर रक़म किये हैं।

दुआ है कि अल्लाह पाक हज़रत अल्लामा मौसूफ़ की इस तारीख़ी किताब को मक़बूलियते आम्मा अता फ़रमाए। आमीन

मुहम्मद नोमान अशरफ़ नईमी बिन मुफ़्तिए आज़म शीशगढ़ हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मुहम्मद तौफ़ीक़ अहमद नईमी साहिब क़िब्ला

तकरीज़े जलील

हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती ग़ुलाम मुईनुद्दीन फ़ैज़ी अम्जदी

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

نحمدہ و نصلی و نسلم علی رسولہ الکریم

हज़रत अल्लामा मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी साहिब क़िब्ला शहरे आगरा में मुहताजे तआरुफ़ नहीं, बल्कि आगरा और क़ुर्बो जवार का हर फ़र्द जो इल्मो अदब, तहरीरो तक़रीर से अदना सा शग़फ़ रखता है ,वो मौसूफ़ को उनकी तस्नीफ़ो तालीफ़, तदरीसो तब्लीग़ में जल्वा फ़िशानी से बख़ूबी वाक़िफ़ है।

मौसूफ़ ने अपने ज़ोरे क़लम से हर मैदान में अपने आपको रोशनाश कराया है। ज़ेरे नज़र किताब **"बोस्ताने अख्यार"** मुसन्निफ़ : अल्लामा सईद अहमद मारहरवी बनाम **"आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत"** की उम्दा अंदाज़ में तर्तीबो तसहील की है। येह किताब अपनी गूनागूं ख़ूबियों की बिना पर इन्फ़िरादियत की हामिल है।

येह एक ऐसी किताब है जो तालिबाने सुलूको मुहब्बत, आशिक़ीने औलियाए उम्मत के लिए मशअले राह है। सबकन सबकन मैंने इस किताब का मुताला किया, तो मालूम हुआ कि शहर आगरा में बहुत सी ऐसी अज़ीम और बा कमाल हस्तियाँ जल्वा फ़िगन हैं जिनकी रुहानी नूर से पूरा शहर मामूरो मुनव्वर है।

इस किताब की तर्तीबो तसहील कर के मुहतरम मौसूफ़ ने तमाम उश्शाके औलिया को एक सुनहरा मौक़ा इनायत किया है कि जब भी कोई

सुन्नी सहीहुल अक़ीदा मुस्लमान इन बुज़ुर्गाने दीन की बारगाह में ख़िराजे मुहब्बत, गुलहाए अक़ीदत पेश करना चाहे तो इस किताब को मशअले राह बनाए, और शहर आगरा के किसी भी वली से इकतिसाबे फ़ैज़ करे।

अल्लाह पाक मुअल्लिफ़ की इस काविश को शर्फ़े क़बूलीयत से नवाज़े और मुस्लमानों को इस से फ़ायदा पहूँचाने के अस्बाब पैदा फ़रमाए, इस किताब को मक़बूले अनाम फ़रमाए। आमीन

फ़क़ीर कादरी ग़ुलाम मुईनुद्दीन फ़ैज़ी अम्जदी, उस्ताद व मुफ़्ती
जामिअतुर्रज़्वीयह अज़हरुल उलूम अब्बास नगर आगरा
ख़तीब व इमाम पक्की सराय बड़ी मस्जिद आगरा
22 जुमादल उख़रा 1447 हिजरी

तकरीज़े मुबीन

हज़रत सैय्यिद इम्तियाज़ सुल्तान साहिब ग्वालियर

بسم اللہ الرحمن الرحیم

نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم أما بعد!

रूहानियत के बामे उरूज पर जल्वा अफ़रोज़ वो पाकीज़ा नफ़ूस जिन्हें उम्मते मुहम्मदिया ने **'औलिया अल्लाह'** के लक़बे जमील से याद किया, दर अस्ल इन्सानियत के वो रहनुमा हैं जिनके किरदार, अमल, ज़ोहद, इल्म, और ख़िदमते ख़ल्क़ के नुक़ूश ता क़ियामत ज़िंदा रहेंगे।

येह वो बंदगाने ख़ुदा हैं जिन्होंने ज़ुल्मत में उजाला किया, ग़फ़लत में बेदारी पैदा की, और इन्सान को उस के रब से जोड़ने के लिए अपनी ज़िंदगियां वक़्फ़ कर दीं।

उनके फुयूज़ व बरकात से सरज़मीने हिंद हमेशा सरसब्ज़ो शादाब रही है। इन्ही औलिया के दम से यहां के क़ुलूब में ईमान की हरारत और मुहब्बते इलाही की चमक बरक़रार है।

ज़ेरे नज़र किताब **"आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत"** अस्ल में अल्लामा सईद अहमद मारहरवी की तक़रीबन एक सदी क़ब्ल लिखी गई किताब बनाम **'बोस्ताने अख्यार'** की जदीद तर्तीब व तसहील है जो उस्ताद, अल्लामा, मुसन्निफ़े कुतुबे कसीरा हज़रत **अल्लामा मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी** दामत बरकातुहुमुल आलिया की एक निहायत वक़ीअ और ख़ुलूसो तहक़ीक़ से लबरेज़ इल्मी काविश है, जो बर्रे सग़ीर के रुहानी और इल्मी सरमाए में एक क़ीमती इज़ाफ़ा है।

मुरत्तिब मुहतरम ने ना सिर्फ आगरा के औलिया के अहवालो आसार पर काम किया , बल्कि इस शहरे मुहब्बतो मारिफ़त के रुहानी पस मंज़र को भी वाज़ेह किया है। आगरा की ख़ानक़ाही रिवायत, वहां के इल्मी मराकिज़, और अहले दिल की महफ़िलों का ज़िक्र इस अंदाज़ में किया गया है कि इस किताब को पढ़ने वाला माज़ी के रुहानी माहौल में सांस लेता महसूस होता है।

किताब के मुताला से अंदाज़ा होता है कि मुरत्तिब मुहतरम ने महेज़ तारीख़ी तज़्किरा निगारी नहीं की, बल्कि एक ज़िंदा रुहानी असासा महफ़ूज़ करने की कोशिश की है। उन्होंने पुराने तज़्किरा निगारों, तारीख़ी माख़ज़, मल्फ़ूज़ाते मशाईख़ और मक़ामी रिवायतों से भरपूर इस्तिफ़ादा कर के एक जामेअ और मुहक़्क़िक़ाना मजमुआ पेश किया है।

मुरत्तिब मुहतरम ने हर वलिये कामिल की हयातो ख़िदमात का तज़्किरा निहायत तवाज़ुन के साथ किया है ना मुबालग़ा, ना इख्तिसार बल्कि एक ऐसी मोअतदिल इल्मी रविश जो हक़ीक़त पसंदी और दीनी ज़ौक़ दोनों को यकजा करती है।

इस किताब में इस बात को भी वाज़ेह किया है कि औलिया का रास्ता दर अस्ल क़ुरआनो सुन्नत का रास्ता है जिसमें इश्क़ व मारिफ़त के साथ अमलो ख़िदमत का पुख़्ता निज़ाम मौजूद है।

ज़बान व बयान के ऐतिबार से किताब का उस्लूब निहायत शाइस्ता, रवां और अदबी लताफ़त से मुज़य्यन है। इबारत में जगह जगह वो रुहानी रचाओ और ईमानी हरारत झलकती है जो पढ़ने वाले के दिल में असर छोड़ जाती है। हर सफ़्हा मुरत्तिब मुहतरम की मेहनत, ख़ुलूस, और दीन से मुहब्बत का आईना दार है।

किताब की एक नुमायां ख़ुसूसीयत येह है कि इस में आगरा के उन गुमनाम बुज़ुर्गों को भी जगह दी गई है जिन पर उमूमन ख़ामोशी छाई रही। हालाँकि उनकी दुआओं, ज़िक्रो अज़्कार, और फुयूज़ ने सदियों तक लोगों के दिलों को मुनव्वर रखा।

यूं येह किताब तारीखे औलिया का एक ऐसा गोशा मुन्कशिफ़ करती है जो अब तक तहक़ीक़ के पर्दे में था।

ख़ानवादए हुज़ूर क़ुतुब आलम, सैय्यिद सुल्तान शाह हल्बी क़ुतुब पुरी अलैहिर्रिहमा का हर फ़र्द इस बात को बाइसे मुसर्रत समझता है कि उस्ताद मुसन्निफ़े कुतुबे कसीरा **हज़रत अल्लामा मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी** दामत बरकातुहुमुल आलिया ने बड़ी बसीरत और तहक़ीक़ के साथ एक ऐसे मौज़ू पर क़लम उठाया जिस पर आज के माद्दी दौर में तवज्जोह कम दी जाती है।

ऐसी किताबें ना सिर्फ इल्मी ज़ौक़ रखने वालों के लिए क़ीमती सरमाया हैं बल्कि नई नस्ल के लिए रुहानी बेदारी का ज़रिया भी हैं।

अल्लाह पाक से दुआ है कि वो इस किताब को क़बूले आम नसीब फ़रमाए, और मुरत्तिब मुहतरम के इल्मो क़लम में मज़ीद बरकतें अता फ़रमाए।

अल्लाह पाक उन्हें मज़ीद ऐसे इल्मी व रुहानी कारनामे अंजाम देने की तौफ़ीक़ बख़्शे जिनसे दीने मतीन का वक़ार बुलंद हो और उम्मते मुस्लिमा के दिलों में मुहब्बते औलिया की रौशनी फैले। आमीन

फ़क़त वस्सलाम अहकर सैय्यिद इम्तियाज़ सुल्तान

ख़ानक़ाह आलीया, क़ादरिया, सुल्तानिया, शजानियह ग्वालियर

15 जुमादल ऊला 1447 हिजरी बमुताबिक़ 7 नवंबर 2025 ईस्वी

बरोज़ जुमा

तकरीज़े कामिल

हज़रत सैय्यिद इरशाद सुल्तान साहिब आगरा

بسم الله الرحمن الرحيم نحمده و نصلى على رسوله الكريم أما بعد!

अल्लाह पाक की ज़ात बा बरकत है जिसने हर ज़माने में अपने बर्गुज़ीदा बंदों के ज़रिये दीने इस्लाम की आबयारी फ़रमाई। औलियाए किराम, सोलहा व मशाईख़ ने अपनी रूहानियत, तक़्वा, और ख़ुलूस से वो रौशनी फैलाई जिसने सदियों तक दिलों को मुनव्वर रखा। इन्ही औलिया की बस्तियों में आगरा एक नुमायां हैसियत रखता है, जहां दीनो रूहानियत के बेशुमार चराग़ रौशन हुए।

इसी तारीख़ के पस मंज़र में मेरे मुहतरम व मुकर्रम उस्तादे गिरामी **हज़रत मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी** साहिब दामत बरकातुहुमुल आलिया की किताब **"आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत"** एक ग़ैर मामूली इल्मी व तहक़ीक़ी ख़िदमत है।

मुझे फ़ख़र है कि येह गिरां क़दर तालीफ़ मेरे अपने उस्तादे मुहतरम की है, और मेरे लिए येह बड़ी सआदत व ख़ुश बख्ती की बात है कि मैं अपने मुहसिन व मुरब्बी की किताब पर चंद तारीफ़ी कलिमात रक़म कर रहा हूँ। उस्तादे मुहतरम की येह काविश उनके इल्म, ज़ौक़े तहक़ीक़, तारीख़ी शुऊर और औलियाए किराम से कल्बी तअल्लुक़ का मुँह बोलता सबूत है।

उन्होंने निहायत अर्क़ रेज़ी और ख़ुलूस के साथ आगरा के रुहानी सरमाए को महफ़ूज़ कर दिया है, जो ना सिर्फ मुहक़्क़िक़ीन के लिए क़ीमती

सरमाया है बल्कि अवाम के लिए भी ईमान अफ़रोज़ और रूह परवर मुताला का ज़रिया है।

अल्लाह पाक मेरे मुहतरम उस्ताद की इस काविश को अपनी बारगाह में क़बूल फ़रमाए, उनके इल्मो उम्र में बरकत अता फ़रमाए, और हमें उनके फुयूज़ व बरकात से हमेशा मुस्तफ़ीद होने की तौफ़ीक़ दे।

आमीन या रब्बल आलमीन

ख़ाकसार सैय्यिद इरशाद सुल्तान

नाइब सदर तहरीक तहफ़्फ़ुज़े सुन्नियत व ख़तीबो इमाम चार मीनार

बड़ी मस्जिद तेली पाड़ा ताजगंज आगरा

15 जुमादल ऊला 1447 हिजरी बमुताबिक़ 7 नवंबर 2025 ईस्वी

बरोज़ जुमा

तकरीज़े फ़ाज़िल

हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सुलैमान मंज़री मुरादाबादी, ख़तीबो इमाम शाही जामा मस्जिद आगरा

بسم الله الرحمن الرحيم

पेशे नज़र किताब **"आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत"** पर मुश्तमिल एक निहायत उम्दा इल्मी काविश है, जिसे देख कर ख़ुशी हुई और येह बड़ी मुसर्रतो शादमानी की बात है कि इस दौर में भी अहले इल्म ने बुज़ुर्गाने दीन की यादों और उन के फ़ुयूज़ो बरकात को महफ़ूज़ करने के लिए अपने क़लम को मुतहर्रिक रखा है। आगरा बर्रे सग़ीर का वो रुहानी ख़ित्ता है जहां सदियों से औलियाए किराम ने अपनी ख़ानक़ाहों, दर्सगाहों और महाफ़िलो के ज़रिये दीन व मारिफ़त की शमएँ रौशन कीं।

उन बुज़ुर्गों की ज़िंदगियां इख्लास, इबादत, ख़िदमते ख़ल्क़, दावते दीन और सुन्नते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरवीज से भरी हुई हैं।

उनके तज़्किरे ना सिर्फ तारीख़ का हिस्सा हैं बल्कि अहले दिल के लिए ज़ादे राह भी हैं। इस किताब में उन औलियाए किराम की हयाते तय्यिबा को जिस तर्तीब, ऐहतिराम और तहक़ीक़ी सादगी के साथ पेश किया गया है, वो इस काबिल है कि तहसीन की नज़र से देखा जाये।

मुसन्निफ़ **मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी** ने अपनी साबिक़ा तसानीफ़ में भी यही मोअतदिल, पुर असर और आम फहेम इल्मी उस्लूब इख्तियार किया है। चाहे वो किताब **"आँखों का तारा नामे मुहम्मद"** सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हो, **"दीने इस्लाम की खूबियां"** हो या **"आसान ख़ुत्बाते मुहर्रम"** हर

जगह उनकी तहरीर में इख्लास, मुहब्बते रसूल, दीनी ग़ैरत और इस्लाही फ़िक्र नुमायां है। इसी सिल्सिले की एक मुबारक कड़ी येह किताब भी है। किताब के उन्वानात और उस के कुछ अज्ज़ा देखे, मजमुई तौर पर किताब उम्दा मालूम होती है।

मुरत्तिब का क़लम जहां सीरते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में जज़्बों की गर्मी पैदा करता है, वहीं औलियाए किराम के हालात में रुहानी सुकून और अमली रहनुमाई फ़राहम करता है। उनकी तहरीरों में वो जामिईयत मौजूद है जो मुब्तदी और साहिबे इल्म दोनों के लिए यकसाँ मुफ़ीद साबित होती है।

येह किताब आगरा के रुहानी सरमाया को अगली नस्लों तक पहुंचाने में एक अहम किरदार अदा करेगी। मुरत्तिब ने औलियाए आगरा की हयात से अख़ज़ होने वाले दर्सों को सलीक़े से पेश किया है, जिससे पढ़ने वाले के दिल में ना सिर्फ बुज़ुर्गों की मुहब्बत पैदा होती है बल्कि उनके नक़्शे क़दम पर चलने का हौसला भी मिलता है। अल्लाह पाक मुसन्निफ़ के इस इख्लासे नीयत को क़बूल फ़रमाए, उनके इल्मो क़लम में मज़ीद बरकत अता फ़रमाए, और इस किताब को अवाम और ख़वास के लिए नाफ़ेअ बनाए। आमीन

बंदए नाचीज़ मुहम्मद सुलैमान मंज़री मुरादाबादी
ख़तीब व इमाम शाही जामा मस्जिद आगरा
17 जुमादल उख़रा 1447 हिजरी बमुताबिक़ 17 दिसंबर 2025 ईस्वी बरोज़ मंगल

तअस्सुर

तज़्किरा निगारी की तारीख़ बहुत पुरानी है, जो सहाबा के दौर से शुरू हो कर अभी तक जारी है, और इंशाअल्लाह क़ियामत तक जारी व सारी रहेगी। पहले अंबियाए किराम अलैहिस्सलाम की सीरत लिखी गई, फिर सहाबा किराम के तज़्किरे क़लम-बंद किए गए, उस के बाद ताबईन और तबा ताबईन की हयातो कारनामों को सिपुर्दे क़िरतास किया गया, और इस के बाद औलियाए किराम,सूफ़ियाए उज़्ज़ाम के शबो रोज़ ज़ब्ते तहरीर में आए, आ रहे हैं और आते रहेंगे।

ज़ेरे नज़र किताब **"बोस्ताने अख्यार"** इसी सिल्सिले की एक कड़ी है, जो आगरा के औलियाए बावक़ार और सूफ़ियाए बासफ़ा के तज़्किरों पर मुश्तमिल है। येह किताब तकरीबन एक सदी पहले लिखी गई है, जो रिदाए गुमनामी में रुपोश हो कर तक़रीबन नापैद सी हो गई थी बरसों से येह किताब अपनी हमा ग़ैरियत और इन्फ़िरादियत के सबब शिद्दत से जदीद पैराहन पहन कर तबाअतो इशाअत की मुताक़ाज़ी थी कि कोई मुहिब्बे औलिया आए और इस किताब को अपने सर कर ले। क़ुर्बान जाऊं उस्तादे गिरामी मुसन्निफ़े कुतुबे कसीरा, हज़रत अल्लामा मौलाना **अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी** पर जिन्होंने इस किताब पर नज़र फ़रमाया, और इसे सिल्सिला वार मराहिले तबाअत तक ले आए। येह उस्तादे गिरामी की ख़ुलूस का ही नतीजा है कि जिन्होंने इस माद्दियत के दौर में तस्नीफ़ी, तालीफ़ी और तदरीसी ख़िदमात के बावजूद अपना वक़्त इस किताब पर ईसार फ़रमाया, जो बिग़ैर तौफ़ीक़े इलाही मुम्किन नहीं।

किसी भी किताब के अज़ीम होने की जिहत उस का मौज़ूअ होता है। येह उन नुफ़ूसे क़ुदसिया के तज़्किरे हैं जिनकी शख़्सियात से मुर्दा दिल ज़िन्दा होते हैं।

लिहाज़ा उस्तादे गिरामी हज़रत अल्लामा मौलाना **अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी** साहिब हम सबकी मुहब्बतों के हक़दार और हमारे शुक्रो सपास के सज़ावार हैं। अल्लाह पाक उस्तादे गिरामी को मज़ीद तरक़्क़ी अता फ़रमाए और दीनो दुनिया की भलाइयों से सरफ़राज़ फ़रमाए। आमीन

मुहम्मद फ़ैज़ान रज़ा रामपुरी

13 जुमादल उख़रा 1447 हिजरी ब मुताबिक5 दिसंबर 2025 ईस्वी

मुसन्निफ़ का तआरुफ़

किताब बनाम **"आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत"** दर अस्ल **'बोस्ताने अख्यार'** की नई तर्तीब और तसहील है जिसके मुसन्निफ़ अल्लामा सईद अहमद मारहरवी हैं।

मुसन्निफ़ की तफ़सीली सीरत किसी किताब में नहीं मिल पाई और ना ही किसी से कुछ मालूमात हो पाई ताहम काफ़ी कोशिशों के बाद उनके मज़ार का पता चल सका। आप का मज़ार शुएबिया ईंटर कॉलेज हींग की मंडी आगरा की मस्जिद में बना हुआ है। और कहा जाता है कि शुएबिया ईंटर कॉलेज लड़कों का और लड़कियों का आप ही का क़ाईम किया हुआ है जो कि अब तक मौजूद है। मज़ीद येह भी पता चला कि आप कलैक्टरी में भी सरकारी मुलाज़िम थे।

मुसन्निफ़ की चंद तसानीफ़ दर्ज ज़ेल हैं:

(1)-मुरक़्क़ा अकबराबाद **(2)**-आसारे ख़ैर

(3)-मशाहीरे अकबराबाद **(4)**-गुलदस्तए मुहम्मदिया

(5)-उमराए हनूद **(6)**-बोस्ताने अख्यार

(7)-रहनुमाए फ़तेहपुर सीकरी **(8)**-ख़ुतूत

(9)-फूलों का हार **(10)**-क़ौमी फुलवारी

सगे अत्तार (अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी) ने मुसन्निफ़ की इन किताबों में से **'बोस्ताने अख्यार'** पर काम कर दिया है जो कि आपके सामने है, अब **''मुरक़्क़ा अकबराबाद''**, **''रहनुमाए फ़तेहपुर सीकरी''** और **''आसारे ख़ैर''** पर तर्तीबो तसहील

का काम जारी है इंशाअल्लाह बहुत जल्द येह किताबें भी ज़ेवरे तबाअत से आरास्ता हो कर आपके सामने होंगी।

सगे अत्तार अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मुरत्तिब का तआरुफ़

नाम और निस्बत

नाम **मुहम्मद शफीक़ खान**, वालिद का नाम **मुहम्मद शरीफ खान** है, सिल्सिला क़ादरिया रज़विया अ़त्तारिया में शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दा'वते इस्लामी, हज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल, **मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी** रज़वी से **2004 ईस्वी** में बैअ़त होने की वजह से अपने नाम के साथ अ़त्तारी लिखते है, आपकी विलादत क़स्बा ललौली जिला फतेहपुर हंसवा, सूबा यू पी, हिंद में हुई, आप की तारीखे पैदाइश **10 जून 1986 ईस्वी** है।

दीनी माहौल से वाबस्तगी और सफ़रे इल्म

हज़रत ने इब्तिदाअन हिंदी इंग्लिश की ता'लीम हासिल करके सन **2000 ईस्वी** में ऐ. सी. का काम सीखने और करने के लिये बम्बई चले गये थे और वहां पर **4 साल** क़ियाम किया फिर **2004 ईस्वी** में अपने वतन लौटे और वतन में ही उन्हें दा’वते इस्लामी का दीनी माहौ़ल मिला, दा’वते इस्लामी के दीनी माहौल से वाबस्ता होने के बाद मुख्तलिफ कोर्सेज़ किये और **2006 ईस्वी** में अपने ही इलाके के दारुल उ़लूम बनाम **जामिया अ़रबिया गुलशने मा'सूम** कस्बा ललौली में **क़ारी इक़बाल अह़मद अ़त्तारी** से क़ुरआ़ने पाक नाज़िरा और ह़ज़रत **मौलाना अ़तीक़ुर्रह़मान मिस्बाही** से **दर्से निज़ामी** के दरजए ऊला और कुछ दरजाए सानिया की किताबें पढ़ीं, इसके बाद मज़ीद ता’लीम हासिल करने के लिये **चिरैयाकोट जिला मऊ** तशरीफ ले गये और वहां दरजए सानिया मुकम्मल करने के बाद अहले सुन्नत के अज़ीम इ़ल्मी इदारे अल

जामिअ़तुल अशरफिया मुबारकपुर आ'ज़मगढ़ में मतलूबा दरजए सालिसा का टेस्ट दिया और अल्लाह पाक के फ़ज़्ल से कामयाब होने के बाद दरजए सालिसा की तालीम वहीं हासिल की, फिर दरजए राबिआ **दारुल उ़लूम ग़ौसिया** (जो जिला **आ'ज़मगढ़ के गाँव सरय्या** में वाक़ेअ़ है) में मुकम्मल की, फिर उसके बाद दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना, **फैज़ाने अ़त्तार नेपालगंज**,नेपाल में दाखिला लिया और दरजए खामिसा से दौरए ह़दीस तक की ता'लीम वहीं मुकम्मल फरमाई।

तदरीसो तसनीफ़ की शुरुआत

2014 में फराग़त के बाद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना **फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर,आगरा** तशरीफ ले गये और एक साल वहां तदरीस फरमाई, फिर मज़ीद तदरीस के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी मरकज़ के हुक्म पर **बंगलादेश के दारुल हुकूमत ढाका** के जामिअ़तुल मदीना तशरीफ ले गये और वहीं पर दा'वते इस्लामी के जामिआ़त के दरजए सानिया में चलने वाली इ़ल्मे सर्फ की किताब बनाम **मराहुल अरवाह** की उर्दू शरह़ **शाफ़िकुल मिस्बाह** और दरजए राबिअ़ा में चलने वाली इ़ल्मे नहव की किताब बनाम **शरह जामी** की उर्दू शरह़ **अश शफीकुन नोअमानी** तसनीफ फरमाई।

उसके बाद फिर जामिअ़तुल मदीना फैज़ाने सिद्दीक़े अकबर आगरा तशरीफ लाकर दरजए सानिया में चलने वाली ह़दीस की किताब बनाम **अल अरबईने नवाविय्या** की उर्दू शरह़ **शफ़ीकिया** तह़रीर फरमाई, और तब से अब तक तस्नीफात का सिल्सिला जारी है। आखिरी मालूमात के मुताबिक अब तक कुल 65 से ज़ाइद किताबें तसनीफ़ हो चुकी हैं।

खिलाफ़तो इजाज़त

25 अप्रैल 2024 ईस्वी को शागिर्दे हाफिज़े मिल्लत, मुरीदे मुफ़्तिए आज़म हिन्द, खलिफ़ए बुरहाने मिल्लत, मुबल्लिगे इस्लाम, हज़रत **अल्लामा मौलाना अब्दुल मुबीन नोअमानी** साहिब ने सिलसिलए कादरिया, रज़्विया की **खिलाफ़तो इजाज़त** से नवाज़ा।

खिदमते दीन

हज़रत जिस तरह एक **मुदर्रिस** और **मुसन्निफ़** हैं उसी तरह **मुक़र्रिर** और **मुबल्लिग** भी हैं। आप के इस्लाही बयानात खौफे खुदा व इश्क़े मुस्तफा से लबरेज़ होते हैं। सुनने वालों पर रिक्कत तारी होती और दीन से मुहब्बत नसीब होती है। मज़ीद वक़्तन फ़वक़्तन मुख्तलिफ़ दीनी तहरीकें भी चलाते रहते हैं। अभी हाल ही में **{दीन सीखो और इनाम पाओ}** के नाम से घर घर दीनी तालीम पहुँचाने की तहरीक शुरू फरमाई है। अल्लाह पाक हज़रत की इस कोशिश को अपनी बारगाह में क़बूल फरमा कर तरक्की अता फरमाये। अमीन

अल्लाह पाक से दुआ है कि मौसूफ को बे बहा बरकातो समरात से नवाज़े और इस कारहाए नुमाया को अपनी बारगाह में शर्फे क़बूलियत अता करके मौसूफ के लिये तोशाए आखिरत बनाए। आमीन

अज़ : अल आजिज़ मुहम्मद शादाब खान मदनी कोटा राजस्थान

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْف وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْق اَمَّا بَعْد

فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحٰبِكَ یَا نُوْرَ اللّٰہ

दुरूद शरीफ़ की अनोखी फ़ज़ीलत

ऐ आशिक़ाने रसूल! हर दौर और हर ज़माने में हर आदमी की एक ही ख्वाहिश होती है कि वो हर काम में कामयाबी के ज़ीने चढ़ता रहे, उसे कामयाबी मिलती रहे नाकामी का मुँह ना देखना पड़े, और आदमी कामयाबी को पाने के लिये हर मुम्किन कोशिश भी करता है, मेहनत और जिद्दो जहद भी करता है मगर इन तमाम तर कोशिशों के बावजूद वो नाकाम हो जाता है।

कामयाबी क्या है?

अगर मैं आपसे पूछूँ कि अस्ल में कामयाबी क्या है? तो शायद हर शख़्स अपने अपने तौर पर बेशुमार चीज़ें गिनवाने लगे, कि इस दौर में माल का होना कामयाबी है, दुन्यवी आसाइशों का मिलना कामयाबी है, सेहत मंद और तंदरुस्त होना कामयाबी है, बड़ी बड़ी डिग्रियां हासिल करना कामयाबी है वग़ैरा वग़ैरा।

अस्ल कामयाबी

ऐ आशिक़ाने रसूल! मगर येह तमाम कामयाबियां सिर्फ़ दुन्यवी कामयाबियां हैं जो कि जल्द ख़त्म हो जाने वाली हैं, अस्ल कामयाबी तो आख़िरत की कामयाबी है, अस्ल कामयाबी दुनिया से ईमान सलामत लेकर जाना है। अस्ल कामयाबी क़ब्र के सवालात के सही जवाबात देना है, अस्ल कामयाबी क़ब्र के अज़ाबात से बच जाना है, अस्ल कामयाबी क़ियामत की गर्मी से बच जाना है, अस्ल कामयाबी क़ियामत के अज़ाबात से बच जाना है,

अस्ल कामयाबी नामाए आमाल का सीधे हाथ में मिल जाना है, अस्ल कामयाबी क़ियामत के हिसाबो किताब में कामयाब होना है, अस्ल कामयाबी पुल सिरात से अमन के साथ गुज़र जाना है, अस्ल कामयाबी मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत का मिल जाना है, अस्ल कामयाबी और कामरानी तो अल्लाह पाक की बारगाह में सुर्ख़रु हो कर हमेशा हमेशा की ज़िंदगी में राहत पाना है।

ऐ आशिक़ाने रसूल! अस्ल कामयाबी वो है जिसको अल्लाह पाक ने अपने क़ुरआन में बयान फ़रमाया है :चुनांचे पारा 4 सूरह ऑले इमरान की आयत नंबर 185 में इरशाद हुआ:

كُلُّ نَفْسٍ ذَآىِٕقَةُ الْمَوْتِؕ-وَ اِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِؕ-فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَ اُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَؕ-وَ مَا الْحَیٰوةُ الدُّنْیَاۤ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ(۱۸۵) (پ۴، آل عمران، ۱۸۵)

तर्जमा कंज़ुल ईमान: हर जान को मौत चखनी है और तुम्हारे बदले तो क़ियामत ही को पूरे मिलेंगे, जो आग से बचा कर जन्नत में दाख़िल किया गया वो मुराद को पहुंचा (यानी कामयाब हुआ) और दुनिया की ज़िंदगी तो यही धोके का माल है।

अस्ल में यही कामयाबी है

पस जो अल्लाह पाक की रिज़ा हासिल कर के तमाम अज़ाबात और दोज़ख़ से बच कर, मग़फ़िरत और बख्शिश का परवाना लिये जन्नत में दाख़िल हुआ अस्ल में वही कामयाब है। लिहाज़ा बख्शिश और मग़फ़िरत की दुआ करते और दूसरों से करवाते रहना चाहिए, कि येह हमारे अस्लाफ़ का तरीक़ा रहा है चुनांचे:

अमीरुल मुअमिनीन फ़ारुके आज़म रज़ी अल्लाहु अन्हु ने मदीने शरीफ़ में बच्चों से फ़रमाया करते बच्चों दुआ करो उमर बख़्शा जाये, उमर की मग़फ़िरत हो जाये। (फ़ज़ाइले दुआ, पेज 112)

अल्लाहु अकबर! अल्लाह पाक फ़ारुके आज़म रज़ी अल्लाहु अन्हु की इस अदा के सदक़े हम सब की मग़फ़िरत फ़रमाए। बहरे हाल बच्चों से दुआए मग़फ़िरत के अल्फ़ाज़ कहलवाने चाहिये अगर्चे बच्चों को दुआए मग़फ़िरत की समझ ना भी आये। दुआए मग़फ़िरत के माना तो बच्चे तो बच्चे बड़े भी नहीं समझते होंगे। मग़फ़िरत के माना हैं : या अल्लाह तो उस के गुनाह मुआफ़ कर दे, उस के गुनाह बख्श दे।

मग़फ़िरत की दुआ करते और करवाते रहना चाहिये

ऐ आशिक़ाने रसूल! बख्शिश और मग़फ़िरत की दुआ करते और दूसरों से करवाते रहना चाहिये, लेकिन हमारी अपनी दुआ या दूसरे की दुआ क़बूल हो जाये इस की कोई गारंटी नहीं, इसी तरह अगर कोई हमारे लिए मग़फ़िरत की दुआ करे तो कितनी देर ? चंद सेकंड, चंद मिनट, चंद घंटा, चंद दिन, बस और ज़्यादा से ज़्यादा अपनी मौत तक, मरने के बाद तो कोई किसी के लिये दुआ नहीं कर सकता बल्कि मुर्दा ख़ुद दूसरों की दुआओं का मुहताज रहता है।

लेकिन क्या मैं आप को एक ऐसा अमल ना बताऊं जिस से आपके लिए बख्शिश और मग़फ़िरत की दुआ एक दिन, एक महीना, एक साल नहीं बल्कि हज़ारों साल तक होती रहे, मरने के बाद भी होती रहे, बिग़ैर वक़्फ़ा, बिग़ैर रुके, हर लम्हा, हर घड़ी होती रहे, दम ब दम होती रहे, और कोई आम आदमी नहीं, जिन्नात नहीं, हैवानात नहीं बल्कि अल्लाह पाक के मासूम फ़रिश्ते जो ना खाते हैं, ना पीते हैं, ना सोते हैं, जिनकी उम्रों का हम और आप अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते, जो गुनाहों से पाको साफ़ हैं, हर वक़्त अल्लाह पाक के ज़िक्र में मशग़ूलो मसरूफ़ रहते हैं वो हमारे लिये बख्शिश और मग़फ़िरत की दुआ करते रहेंगे।

वो अमल येह है

अल्लाहु अकबर! ऐ आशिक़ाने मीलाद! ज़रा ग़ौर तो कीजिये कि वो कैसा अमल होगा जिसका बदला इतना बड़ा है। आईये मैं आप को वो अमल बताता हूँ, येह अमल ऐसा है जो रोज़ाना नहीं करना, हफ़्ते में नहीं करना, महीने में नहीं करना, साल में नहीं करना बल्कि उम्र में सिर्फ एक बार करना है, जब आप उस को कर लेंगे तो उस वक़्त से क़ियामत की सुब्ह तक अल्लाह के मासूम फ़रिश्ते आपके लिए बख्शिश और मग़फ़िरत की दुआ करते रहेंगे। चुनांचे मेरे शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादरी दामत बरकातुहुमुल आलिया अपने रिसाले **ज़ियाए दुरूदो सलाम** में लिखते हैं:

अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमाने आलीशान है: जिसने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा, जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़रिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (यानी बख्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (معجم اوسط، باب الالف من اسمہ احمد، ۱/۴۹۷، حدیث:۱۸۳۵)

सुब्हानल्लाह! ऐ आशिक़ाने रसूल! आज ही एक कापी लीजियेगा और उस में अपने नबी, अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दुरूद बल्कि येह अल्फ़ाज़ लिख लें **{सल्लल्लाहु अला मुहम्मद}** और फिर उस कापी को संभाल कर रख दें, जब तक उस कापी में अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे मुबारक लिखा रहेगा अल्लाह पाक के मासूम फ़रिश्ते आपके लिये बख्शिश की दुआ करते रहेंगे।

अज़ीम नबी की अज़ीम अता

ऐ आशिक़ाने रसूल! ज़रा अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अता पर ग़ौर तो कीजिये कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने उम्मतियों का ख़्याल

रखते हुए येह अमल अता फ़रमाया है, आज कल तो औलाद भी मरने के बाद चंद बार इसाले सवाब कर के भूल जाती है, जिस औलाद को ज़िंदगी भर ख़ून पसीने की कमाई खिलाते रहे, जिस की हर ख्वाहिश पूरी की, जिस को माल दिया, जिस को घर बार दिया, छोटे से बड़ा किया, इतने ऐहसानात करने के बाद हमारी औलाद तीजा, दसवां, बीसवां, चालिसवां और बरसी कर के अपने कामों में मशग़ूल हो कर हमेशा के लिए भूल जाएगी।

लेकिन येह अमल किया हुआ होगा तो हमारे मरने के सैकड़ों, हज़ारों साल बाद जब तक उस काग़ज़ के टुकड़े में मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नामे मुबारक महफ़ूज़ रहेगा बख्शिश और मग़फ़िरत की दुआ होती रहेगी। चाहे हम खा पी रहे हों, या काम कर रहे हों, बैठे हों या खड़े हों, चल रहे हों या रुके हुए हों, घर में हों या बाहर हों, सेहत मंद हों या बीमार हों, यहां तक की जाग रहे हों या सो रहे हों, हर वक़्त, हर घड़ी, हर लम्हा मग़फ़िरत की, बख्शिश की दुआ होती रहेगी। इंशा अल्लाह। शायर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के करम का तज़्किरा करते हुए कहता है:

तेरे करम से ऐ करीम मुझे कौन सी शै मिली नहीं
झोली ही मेरी तंग है तेरे यहां कमी नहीं

ख़ुदा के बाद मुहम्मद का नाम लेते रहो
हर एक काम में बरकत दरूदे पाक से है

सल्लू अलल हबीब

सल्लल्लाहु अला मुहम्मद

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْف وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَ عَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

पहला बाब

औलिया के तज़्किरे क्यों बाक़ी रहते हैं ?

आप इस बाब में पढ़ सकेंगे

बादशाहों के मक़बरों का हाल
औलियाए किराम के मज़ारों का हाल
औलियाए किराम के तज़्किरे बाक़ी रहने के चंद अस्बाब
औलियाए किराम के चर्चे ज़मीन और आसमान में
मुहब्बत और तारीफ़ में फ़र्क़ है
औलियाए किराम फ़ना हो कर नौ का अदद बन जाते हैं
नौ के अदद की चार अजीब बातें
क्या औलियाए किराम के पास सब कुछ है ?
दुनिया का निज़ाम कितने औलियाए किराम चलाते हैं ?

तर्तीब व तसहील

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान
अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

पहला बाब

औलिया के तज़्किरे क्यों बाक़ी रहते हैं?

ऐ आशिक़ाने औलिया! इस बाब में हम इस मौज़ूअ पर गुफ़्तगु करेंगे कि औलियाए किराम का चर्चा और ज़िक्र उनकी वफ़ात के बाद भी क्यों बाक़ी रहता है ? सदियां गुज़र जाने के बाद भी ज़माना उनकी मनक़बत, उनकी तारीफ़ कर रहा है ? आख़िर क्या वजह है ? जिसको देखो वही औलियाए किराम का नाम लेता और उनकी मनक़बते गुनगुना रहा है, और कह रहा है:

औलिया का चर्चा रहेगा

हालाँकि एक से बढ़ कर एक बड़े बड़े बादशाह, वज़ीर, अमीर, दानिश वर, बड़े बड़े ताजो तख़्त वाले गुज़रे हैं उनका ज़िक्र कोई नहीं करता, उनकी क़ब्रों पर कोई नहीं जाता, और इधर औलियाए किराम को देखिए कि उनके मज़ारों में मेला लगा हुआ है।

बादशाहों के मक़बरों का हाल

हिन्दुस्तान के बादशाहों में से एक जहांगीर बादशाह भी गुज़रा है, जिसके इशारे पर हिन्दुस्तान की तक़दीर लिखी हुई थी, मगर जब मरा, तो आप उस के मक़बरे को देख लीजिए, जहां आज भी हसरतें बरसती हैं, रात को तो वहां अंधेरा होता ही है, दिन को भी वहां कोई क़ुरआन पढ़ने वाला नहीं मिलता, ताश खेलने वालों की टोलियां तो मिलेंगी, तुम्हें वहां लोग घूमते फिरते तो नज़र आएँगे, लेकिन तुम्हें वहां कोई हाथ उठा कर दुआ मांगता हुआ नज़र नहीं आएगा, येह ऐसे शहन्शाह लोग थे जिनके इशारों पर हिन्दुस्तान की तक़दीर लिखी हुई थी बल्कि जहांगीर की बेटी ज़ैबुन निसा ने एक दीवान लिखा था उस का एक शेअर उस की क़ब्र पर लिखा हुआ है:

बर मज़ारे मा ग़रीबां ना चराग़े ना गुले
ना परे परवाना सोज़द ना सदाए बुलबुले

यानी हम उजड़े हुओं के मज़ारों पर ना ही कोई चराग़ जलता है और ना कोई फूल खिलता है, इसी लिए ना ही परवाना अपना पर जलाता है और ना ही बुलबुल की कोई आवाज़ सुनाई देती है यानी हमारे मज़ार पर वीरानी और हसरतो आस के सिवा कुछ नहीं।

औलियाए किराम की मज़ारों का हाल

अल्लाहु अकबर! येह शहन्शाह और बादशाह लोग हैं जिनका येह हाल है, और उन गुम्बदों को भी तो देखो जिनके लौहे मज़ार पर लिखा है:

गंज बख्शे फ़ैज़े आलम मज़हरे नूरे ख़ुदा
नाकिसां रा पीरे कामिल कामिलां रा रहनुमा

अरे मैगुसारो सवेरे सवेरे
ख़राबात के गिर्द फेरे पे फेरे
किसी दिन इधर से गुज़र कर तो देखो
बड़ी रौनक़ें हैं फ़क़ीरों के डेरे

दिन को चले जाओ या रात को, कड़कती दोपहर में चले जाओ या बरसती बारिश में, छुट्टी का दिन हो या वर्किंग डे हो, वक़्त या ज़माना कोई भी हो, तुम्हारा जब भी वहां जाना होगा, लोगों के सरों का समन्दर नज़र आएगा।

मज़ारे वली की येह शान देखी
हज़ारों की लगती क़तार देखी

येह फ़र्क़ है दुनियादार और दीनदार में,येह फ़र्क़ है शाहान और औलियाए रहमान में, कि वह मर कर मिट गए, और येह मर कर जी गए।

तज़्किरे बाक़ी रहने के चंद अस्बाब हैं

वफ़ात के बाद औलियाए किराम के ज़िक्र के बाक़ी रहने के क्या अस्बाब हैं ? क्या वजह है कि उनके तज़्किरे उनकी वफ़ात के बाद भी बाक़ी हैं? इस में कौन सा राज़ है ?

इस किताब में आप को वह अस्बाब, वह वजह और वह राज़ बताऊँगा जिसकी वजह से औलियाए किराम के तज़्किरे होते नहीं बल्कि ख़ूब होगें चुनांचे:

पहला सबब

(1)--- पहला सबब: वह जिसका तज़्किरा **बुख़ारी और मुस्लिम** शरीफ़ की हदीस में हमारे नबी के फरमान सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सूरत में मौजूद है, चुनांचे:

औलियाए किराम के चर्चे ज़मीन और आसमान में

हज़रते अबू हुरैरा रज़ी अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया:जब अल्लाह पाक किसी बंदे से मुहब्बत करता है तो हज़रते जिबरील को निदा की जाती(यानी फ़रमाया जाता)है कि अल्लाह पाक फ़ुलां बंदे से मुहब्बत रखता है लिहाज़ा तुम भी उस से मुहब्बत करो। हज़रते जिबरील उस से मुहब्बत करते हैं। फिर हज़रते जिबरील आसमानी मख़लूक़ में निदा करते (यानी फ़रमाते)हैं कि अल्लाह पाक फ़ुलां बंदे से मुहब्बत फ़रमाता है लिहाज़ा तुम भी उस से मुहब्बत करो, चुनांचे आसमान वाले भी उस से मुहब्बत करने लगते हैं, फिर ज़मीन वालों (के दिलों) में उस की मक़बूलियत रख दी जाती है।

(بخاری، کتاب بدء الخلق، باب ذکر الملائکۃ، ۲/ ۳۸۲، حدیث:۳۲۰۹)

ऐ आशिक़ाने औलिया! इस हदीसे पाक से पता चला कि अल्लाह वालों के तज़्किरे ज़मीन पर ही नहीं हो रहे बल्कि आसमानों में भी हो रहे हैं।

मुहब्बत और तारीफ़ में फ़र्क़ है

इस हदीस को सुनकर अगर कोई येह कहे कि ठीक है औलियाए किराम से मुहब्बत करना अच्छी चीज़ है, उनकी मुहब्बत मख़लूक़ के दिल में अल्लाह पाक की जानिब से डाली जाती है, हम मानते हैं, मगर लोग उनकी

तारीफ़ के पुल बाँधते हैं, उनकी तारीफ़ बढ़ा चढ़ा कर बयान करते हैं, येह तो दुरुस्त नहीं है, मुहब्बत करना और चीज़ है और तारीफ़ बयान करने में मुबालग़ा यानी ज़्यादती करना और चीज़ है, लिहाज़ा ऐसा नहीं होना चाहिए। इस ऐतिराज़ का जवाब भी हदीस में है, आईए कंज़ुल उम्माल की हदीसे पाक सुनिए:

लोग औलियाए किराम का चर्चा करने लगते हैं

अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमाने आलीशान है: क्या तुम जानते हो कि मोमिन कौन है ? मोमिन वह है जो उस वक़्त तक नहीं मरता जब तक कि अल्लाह पाक उस की पसंदीदा बातों से उस के कानों को ना भर दे, अगर कोई बंदा सत्तर मकानात (यानी एक मकान के अंदर दूसरा फिर तीसरा यहां तक कि 70) के अंदर अल्लाह पाक से डरे जब कि हर मकान का दरवाज़ा लोहे का हो तो अल्लाह पाक उसे उस के अमल की चादर पहना देता है यहां तक कि लोग उस का चर्चा करने लगते हैं और ज़्यादती से काम लेते हैं। (यानी उस की इबादत को बढ़ा चढ़ा कर बयान करते हैं) सहाबए किराम ने अर्ज़ की कि वह (किसी के अमल में) ज़्यादती कैसे कर सकते हैं ? तो हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: यक़ीनन मुत्तक़ी अगर अपने पोशीदा अमल में इज़ाफ़ा करने की इस्तिताअत रखता तो ज़रूर करता। (کنز العمال، کتاب الاخلاق، الحدیث:۵۲۸۶،ج۳،ص۱۴)

तभी तो हम गुनगुनाते हैं

येह है वह सबब जिसकी वजह से मख्लूक़ औलियाए कामिलीन का तज़्किरए दिलनशीन करती ही नहीं बल्कि ख़ूब करती है, कसरत से करती है, और करती रहेगी, तभी तो हम औलियाए किराम का तज़्किरा करते हुए कहते हैं:

जो कि अल्लाह के प्यारे वली हैं, हर तरफ धूम उन की मची है
ज़िक्र उनका ना हरगिज़ रुकेगा, औलिया का चर्चा रहेगा

दूसरा सबब

(2)--- दूसरा सबब: अल्लाह पाक का वह फ़रमान है जो पारा 2 सूरतुल बक़रा की आयत नंबर 152 में मज़कूर है:

فَاذْكُرُوْنِيْٓ اَذْكُرْكُمْ

यानी तुम मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूँगा।

पस इताअत से याद करने वालों को अल्लाह पाक अपनी मग़फ़िरत के साथ, शुक्र के साथ याद करने वालों को अपनी नेअमत के साथ, मुहब्बत के साथ याद करने वालों को अपने क़ुर्ब के साथ याद फ़रमाता है।

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रते अबू हुरैरा से रिवायत है नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है: मैं अपने बंदे के गुमान के नज़्दीक होता हूँ जो मुझसे रखे और जब वह मेरा ज़िक्र करता है तो मैं उस के साथ होता हूँ, अगर बन्दा मुझे अपने दिल में याद करता है तो मैं भी उसे अकेला ही याद करता हूँ और अगर वह मुझे मज्मे में याद करता है तो मैं उसे बेहतर मज्मे में याद करता हूँ और अगर वह बालिश्त भर मेरे क़रीब होता है तो मैं गज़ भर उस से क़रीब हो जाता हूँ और अगर वह गज़ भर मेरे क़रीब होता है तो मैं दोनों हाथों के फैलाओ के बराबर उस से क़रीब हो जाता हूँ और अगर वह चल कर मेरी तरफ़ आता है तो मैं दौड़ कर उस की तरफ़ जाता हूँ (यानी जैसे अल्लाह की शायाने शान है) या मुराद येह है कि अल्लाह की रहमत उस की तरफ़ ज़्यादा तेज़ी से मुतावज्जेह होती है।

(بخاری، کتاب التوحید، باب قول اللہ تعالٰی: ویحذرکم اللہ نفسہ، ۴/۵۴۱، الحدیث:۷۴۰۵)

तीसरा सबब

(3)---तीसरा सबब: येह है कि औलियाए किराम अल्लाह पाक की ज़ात में फ़ना हो जाते हैं, फ़ना फ़िल्लाह की मंज़िल में पहुंच जाते हैं, अपने तन, मन और धन सब कुछ अल्लाह की रिज़ा पर क़ुर्बान कर देते हैं उनका अपना

कुछ बाक़ी ही नहीं रहता, उनका जीना मरना अल्लाह के लिए होता है, और जो अल्लाह पाक की ज़ात पर फ़ना हो जाता है उसे बका मिल जाती है, जिस तरह अल्लाह पाक का ज़िक्र हमेशा रहेगा, उसी के फ़ैज़ान से उनका भी ज़िक्र हमेशा होता रहता है और होता रहेगा, निस्बत जो उन्हें अल्लाह पाक की ज़ात से हो गई है, मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी अलैहिर्रहमा अपने नाअतिया दीवान **"दीवाने सालिक"** में लिखते हैं:

तेरी ज़ात में जो फ़ना हुआ, वह फ़ना से नौ का अदद बना
जो उसे मिटाए वह ख़ुद मिटे, वह है बाक़ी उस को फ़ना नहीं

फ़ना हो कर नौ का अदद बन जाते हैं

मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी अलैहिर्रहमा ने इस शेअर में येह फ़रमा रहे हैं कि जो अल्लाह पाक की ज़ात में फ़ना हो जाता है तो वह फ़ना हो कर नौ का अदद यानी गिनती बन जाता है, और नौ के अदद को जो भी अदद मिटाने की कोशिश करता है वह ख़ुद मिट जाता है, मिसाल के तौर पर कुल अदद नौ हैं:

1 2 3 4 5 6 7 8 9

और यही सारे आदाद की अस्ल हैं,दहाई बनानी है इन्ही से बनेगी,सैकड़ा बनाना है, इन्ही से बनेगा, हज़ार बनाना है, इन्ही से बनेगा, लाख, करोड़, अरब जो भी बनाएँ इन्ही आदाद से बनेंगे, इनके इलावा कोई और अदद आप नहीं ला सकते।

जो भी अदद नौ को मिटाने आएगा

अब इन आदाद में से जो भी अदद नौ को मिटाने आएगा वह ख़ुद मिट जाएगा, कैसे ? वह ऐसे कि जब एक नौ के सामने आया और अपनी सारी ताक़तो क़ुव्वत नौ के सामने रखा, और अपने से नौ को तौलना चाहा, और जब आप ने नौ में एक को घटाया तो नौ में सिर्फ इतना फ़र्क़ आया कि वह नौ से आठ बन गया, इसी तरह दो को, फिर तीन को, चार को, पाँच को, छः को,

सात को, आठ को, नौ में घटाईए तो नौ बिल्कुल ख़त्म नहीं होगा बल्कि उस का कुछ ना कुछ वुजूद बाक़ी रहेगा मिसाल के तौर पर:

(9-1=8) **(9-2=7)** **(9-3=6)** **(9-4=5)**

(9-5=4) **(9-6=3)** **(9-7=2)** **(9-8=1)**

लिहाज़ा नौ को कोई भी अदद ना मिटा सका।

अगर नौ सब को मिटाना चाहे तो

अब अगर नौ सबको मिटाना चाहे तो सिर्फ मिटा ही नहीं देगा बल्कि मुल्के वुजूद से मुल्के अदम (यानी ना होने) के कई पर्दों के पीछे पहुंचा देगा यानी उन का वुजूद ही खत्म हो जाएगा, मिसाल के तौर पर: एक में नौ को घटाईए तो माइनस आठ बचेगा, पस नौ ने एक को अदम के आठ पर्दों के पीछे पहुंचा दिया, इसी तरह दो को अदम के सात पर्दों के पीछे, तीन को छः पर्दों के पीछे, चार को पाँच पर्दों के पीछे, पाँच को चार पर्दों के पीछे, छः को तीन पर्दों के पीछे, सात को दो पर्दों के पीछे, और आठ को अदम के एक पर्दे के पीछे पहुंचा दिया, मिसाल नक़्शे में मुलाहिज़ा कीजिए:

(1-9=-8) **(2-9=-7)** **(3-9=-6)** **(4-9=-5)**

(5-9=-4) **(6-9=-3)** **(7-9=-2)** **(8-9=-1)**

इसी लिए मख्लूक औलिया का उर्स मनाती है

पस औलियाए किराम अल्लाह पाक की ज़ात में फ़ना हो कर नौ के अदद की शक्ल इख्तियार कर लेते हैं, जिसकी वजह से फिर उन्हें कोई नहीं मिटा सकता हमेशा बाक़ी रहते हैं इसी लिए मख्लूक़ उनका उर्स मनाती है और मनाती रहेगी, उनकी शान बयान करती है और करती रहेगी, मनक़बत पढ़ती है और पढ़ती रहेगी।

फ़ैज़े ग़ौसुल वरा भी मिला है, और फैज़ाने ख़्वाजा मिला है
फ़ैज़ का दरिया हर दम बहेगा, औलिया का चर्चा रहेगा

उस का वही अंजाम और हश्र होगा

अब अगर कोई औलियाए किराम के ज़िक्र को मिटाने की कोशिश करेगा, उनसे टकराने की कोशिश करेगा, उनका मुक़ाबला करने की कोशिश करेगा, तो उस का वही अंजाम और हश्र होगा जो दीगर आदाद का हुआ, वह ख़ुद मिट जाएगा, उस का ज़िक्र मिट जाएगा, सिर्फ़ मिट ही नहीं जाएगा, बल्कि अदम के कई पर्दों के पीछे पहुंच जाएगा, और वहां से मुल्के वजूद तक पहुंचना मुश्किल ही नहीं मुश्किल तरीन हो जाएगा।

और जो अदद नौ से मुक़ाबला नहीं करता वही अच्छा रहता है, अगरचे उस में कोई फ़ज़ीलत पैदा नहीं हुई मगर कुछ नुक़्सान भी तो नहीं हुआ।

दुन्यवी लिहाज़ से फ़ायदे में है

पस इसी तरह जो अल्लाह के वलियों से नहीं टकराता, उनसे मुक़ाबला नहीं करता, वह दुन्यवी लिहाज़ से फ़ायदा में है, और जो अल्लाह के वलियों से टकरा जाता है, उनसे मुक़ाबला करता है, उनसे लड़ाई करता है, उनकी शान में तौहीन करता है तो उस का वही अंजाम और हश्र होता है जो बाक़ी आदाद का नौ से मुक़ाबला करने के बाद होता है, और यही नहीं बल्कि उस से तो अल्लाह पाक भी जंग का ऐलान फ़रमा देता है,चुनांचे बुख़ारी शरीफ़ की हदीसे पाक में है:

जिसने मेरे किसी वली से दुश्मनी रखी

अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमाने आलीशान है कि अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है: जिसने मेरे किसी वली से दुश्मनी रखी मै उस के साथ जंग का ऐलान करूँगा, मेरे किसी बन्दे ने मेरे फ़र्ज़ किए हुए अहकाम की बजा आवरी से ज़्यादा महबूब शै यानी चीज़ से मेरा क़ुर्ब हासिल नहीं किया और मेरा बन्दा नवाफ़िल के ज़रीये मेरा क़ुर्ब हासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उस से मुहब्बत करने लगता हूँ, जब मैं उस से

मुहब्बत करने लगता हूँ तो मैं उस के कान बन जाता हूँ जिनसे वह सुनता है, उस की आँखें बन जाता हूँ जिनसे वह देखता है, उस के हाथ बन जाता हूँ जिनसे वह पकड़ता है और उस के पांव बन जाता हूँ जिनसे वह चलता है, अगर वह मुझसे सवाल करे तो मैं उसे ज़रूर अता फ़रमाता हूँ और अगर किसी चीज़ से मेरी पनाह चाहे तो मैं उसे ज़रूर पनाह अता फ़रमाता हूँ।

(صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، الحدیث: ۶۵۰۲، ص ۵۴۵)

औलियाए किराम पर रब की कैसी नवाज़िशात हैं?

अल्लाहु अकबर! अल्लाह पाक की कैसी अताएं, कैसी नवाज़िशात हैं औलियाए किराम पर, तभी तो हम औलियाए किराम से मुहब्बत करते हैं और कहते हैं:

हमको सारे औलिया से प्यार है
इन्शा अल्लाह अपना बेड़ा पार है

और औलिया के पास बैठने के बारे में किसी ने क्या खूब कहा है :

यक ज़माना सोहबते बा औलिया
बेहतर अज़ सद साला ताअते बे रिया

यानी औलियाए किराम की सोहबत में एक लम्हा बैठना सौ साल की ऐसी इबादत से अफ़ज़ल है जो बिगैर रिया यानी दिखावे के हो।

नौ के अदद की अजीब बातें

अब आगे सुनिए जो अल्लाह पाक की ज़ात में फ़ना हो जाता है वह 9 का अदद ही क्यों बनता है ? इस सवाल का जवाब येह है कि वह नौ का अदद इसलिए बनता है कि नौ के अदद में चार बातें अजीब हैं चुनांचे:

पहली अजीब बात

पहली अजीब बात येह कि एक से आठ तक गिनती लिख लें फिर दोनों किनारों में से एक एक गिनती ले कर जोड़िये तो नौ बन जाएगा मसलन:

एक किनारे से 1 लिया और दूसरे किनारे से 8 लिया और दोनों को जोड़ा तो 9 हुआ, फिर एक किनारे से 2 लिया और दूसरे किनारे से 7 लिया और दोनों को जोड़ा तो 9 हुआ, फिर एक किनारे से 3 लिया और दूसरे किनारे से 6 लिया और दोनों को जोड़ा तो 9 हुआ, फिर एक किनारे से 4 लिया और दूसरे किनारे से 5 और दोनों को जोड़ा तो 9 हुआ।

1 2 3 4 5 6 7 8

(1+8=9) (2+7=9) (3+6=9) (4+5=9)

दूसरी अजीब बात

दूसरी अजीब बात येह कि सारे 9 के पहाड़े में हर जगह 9 बनेगा मिसाल के तौर पर: 9 का पहाड़ा पढ़िए 9 दुना 18, अब 18 के 1 और 8 को जोड़िए तो 9 हुआ, 9 तिरिक 27, अब 27 के 2 और 7 को आपस में जोड़िए तो 9 हुआ इसी तरह बाक़ी को कीजिए। मसलन :(9 x 1=9)इस में 9 है ही

(9 x 2=18)1+8 =9 (9 x 3=27)2+7=9 (9x 4=36)3+6=9

(9 x 5=45)4+5=9 (9 x 6=54)5+4=9 (9x 7=63)6+3=9

(9 x 8=72)7+2=9 (9 x 9=81)8+1=9 (9x10=90) 90 में 9 है ही।

तीसरी अजीब बात

तीसरी अजीब बात येह है कि जिस भी गिनती का पहाड़ा नौ बार करेंगे और उस में आने वाले अदद को आपस में जोड़ेंगे तो जवाब 9 ही आएगा मिसाल के तौर पर:

12 का पहाड़ा 9 बार पढ़ा तो 108 आया अब 108 में आने वाले अदद 1 और 8 को जोड़ा तो 9 हुआ 1+8=9 इसी तरह

13 नौवीं ,117 1+1+7=9

14 नौवीं,126 1+2+6=9

जिस भी गिनती का पहाड़ा नौ बार करें और हासिल होने वाली गिनती को जब आपस में मिलाएं तो सब में 9 बनेंगा।

चौथी अजीब बात

चौथी अजीब बात येह है कि नौ का अदद किसी अदद के अंदर नहीं मगर सब अदद नौ के अंदर हैं, मिसाल के तौर पर नौ में आठ भी है, सात भी है, छः भी है, पाँच भी है, चार भी है, तीन भी है, दो भी है और एक भी है। लेकिन एक में नौ नहीं है, दो में नौ नहीं है, तीन में नौ नहीं है, चार में नौ नहीं है, पाँच में नौ नहीं है, छः में नौ नहीं है, सात में नौ नहीं है, आठ में नौ नहीं है।

एक से आठ तक दुनिया वमा फ़ीहा हैं

ऐसा क्यों ? ऐसा इसलिए कि एक से आठ तक दुनिया वमा फीहा हैं यानी दुनिया में जो कुछ मौजूद है, पस जब वली अल्लाह पाक की ज़ात में फ़ना हो कर नौ का अदद बन गया तो उस के अंदर दुनिया वमा फ़ीहा आ गया, अब अगर किसी को दुनिया की कोई भी चीज़ लेनी है वली के पास आओ, उनसे मिलेगी, कि जिस तरह नौ के पास आठ भी है, सात भी है, छः भी है, पाँच भी है, चार भी है, तीन भी है, दो भी है, एक भी है, इसी तरह वली के पास औलाद भी है, दौलत भी है शोहरत भी है, हुकूमत भी है, सदारत भी है, वज़ारत भी है, इक़्तिदार भी है, इफ़्तिख़ार भी है, बीमारियों की दवा भी है, सेहत भी है, दुनिया की कोई ऐसी चीज़ नहीं जो वली के पास ना हो।

अल्लाहु अकबर !

औलियाए किराम के पास सब कुछ है

ऐ आशिक़ाने औलिया! औलियाए किराम ने जब अपने आपको अल्लाह पाक की ज़ात में फ़ना कर दिया तो नौ के अदद बन गए, पस औलियाए किराम के पास दुनिया भी है और दुनिया के तमाम उलूम भी हैं,

और चीज़ें भी हैं बल्कि दुनिया का निज़ाम अल्लाह पाक ने अपने औलियाए के सिपुर्द कर दिया है चुनांचे:

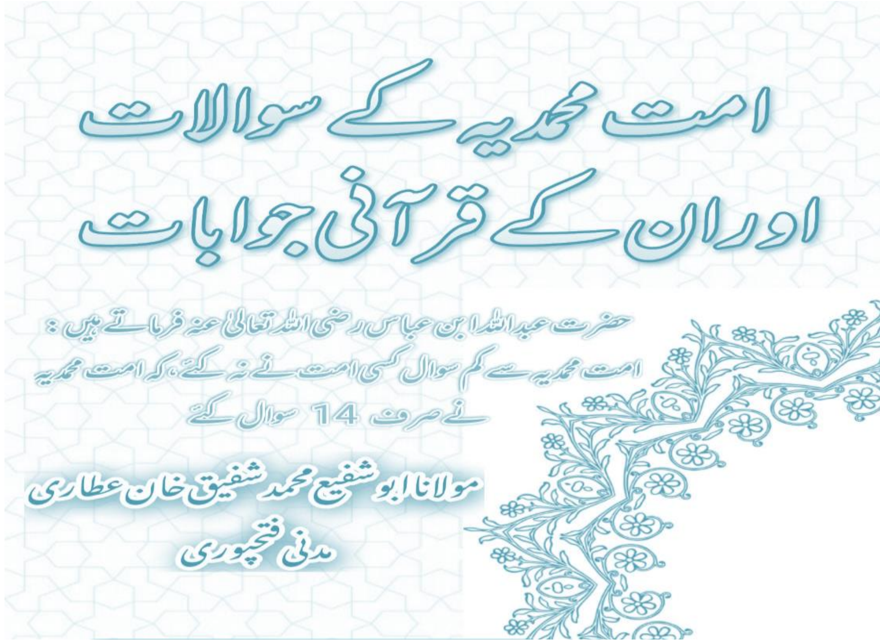
दुनिया का निज़ाम कितने औलियाए किराम चलाते हैं?

मेरे शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादरी ज़ीदा मज्दुहू व शर्फुहू अपनी माया नाज़ तसनीफ़ फैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल के बाब आदाबे तआम के सफ़ा नंबर 431 ता 432 पर लिखते हैं हज़रते इब्ने मसऊद रज़ी अल्लाहु अन्हु से रिवायत है, अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह पाक के तीन सौ बंदे रूए ज़मीन पर ऐसे हैं कि उनके दिल हज़रते आदम सफ़ीयुल्लाह अलैहिस्सलाम के क़ल्बे अतहर पर हैं। और चालीस के दिल हज़रते मूसा कलीमुल्लाह अलैहिस्सलाम के क़ल्बे अतहर पर हैं। और सात के दिल हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अलैहिस्सलाम के क़ल्बे अतहर पर हैं और पाँच के दिल हज़रते जिब्राईल अलैहिस्सलाम क़ल्बे अतहर पर हैं। और तीन के दिल हज़रते मीकाईल अलैहिस्सलाम के क़ल्बे अतहर पर हैं। एक उनमें ऐसा है जिसका दिल हज़रते इसराफ़ील अलैहिस्सलाम के क़ल्बे अतहर पर है। जब उनमें एक वफ़ात पाता है तो अल्लाह पाक उस की जगह तीन में से एक को मुक़र्रर फ़रमाता है और अगर तीन में से कोई एक वफ़ात पाता है तो अल्लाह पाक उस की जगह पाँच में से एक को और अगर पाँच में से कोई एक वफ़ात पाता है तो अल्लाह पाक उस की जगह सात में से एक को और अगर इन सात में का कोई एक वफ़ात पाता है तो अल्लाह पाक उस की जगह चालीस में से एक को और अगर इन चालीस हज़रात में से कोई एक वफ़ात पाता है तो अल्लाह पाक उनकी जगह तीन सौ में से एक को और अगर इन तीन सौ में से कोई एक वफ़ात पाता है तो अल्लाह पाक उस की जगह आम लोगों में से किसी को मुक़र्रर फ़रमाता है ।उनके ज़रीए (यानी वसीले) से ज़िंदगी और मौत मिलती, बारिश बरसती, खेती उगती और बलाऐं दूर होती हैं। हज़रते इब्ने

मसऊद रज़ी अल्लाह अन्हु से इस्तिफ़सार किया गया, उनके ज़रीए कैसे ज़िंदगी और मौत मिलती है ? फ़रमाया: वो अल्लाह पाक से उम्मत की कसरत यानी ज़्यादा होने का सवाल करते हैं तो उम्मत कसीर यानी ज़्यादा हो जाती है और ज़ालिमों के लिए बद दुआ करते हैं तो उन की ताक़त तोड़ दी जाती है, वो दुआ करते हैं तो बारिश बरसाई जाती, ज़मीन लोगों के लिए खेती उगाती है, लोगों से मुख़्तलिफ़ किस्म की बलाऐं टाल दी जाती हैं।(حلیۃالاولیاء ج۱ص۴۰حدیث۱۶)

ऐ आशिकाने औलिया! सुना आप ने कि इस दुनिया का निज़ाम अल्लाह पाक के औलिया के क़ब्ज़े में हैं इसी लिए औलियाए किराम की मज़ारों में आज भी मांगने वालों की भीड़ देखने को मिलती और लोग उनकी मज़ारों पर जा कर अपनी मन की मुरादें पाते हैं।

खवाजए हिन्द वो दरबार है आला तेरा
कभी महरूम नहीं मांगने वाला तेरा



اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْف وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

दूसरा बाब

औलिया के बारे में अहेम मालूमात

आप इस बाब में पढ़ सकेंगे

विलायत क्या है ?
क्या विलायत बेइल्म को मिल सकती है ?
क्या शरीअत और तरीक़त अलग अलग चीज़ हैं ?
क्या मज्ज़ूब वली के लिए भी शरीअत की पाबंदी ज़रूरी है ?
क्या औलियाए किराम को ताक़त भी अता की गई है ?
क्या औलियाए किराम पर उलूमे ग़ैबिया मुन्कशिफ़ होते हैं ?
औलिया से किस किस्म की करामतें ज़ाहिर हो सकती हैं ?
क्या औलियाए किराम से मदद माँगना शिर्क है ?
क्या औलियाए किराम अपने अपने मज़ारों में ज़िंदा हैं ?
पीर किस को बनाना चाहिए ?

तर्तीब व तसहील
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान
अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

दूसरा बाब

औलिया के बारे में अहम मालूमात

ऐ आशिक़ाने औलिया! आपकी मालूमात में इज़ाफ़ा करने के लिए सगे अत्तार (यानी मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी) की फ़र्ज़ उलूम पर मुश्तमिल किताब **आसान फ़र्ज़ उलूम** से औलियाए किराम की विलायत के मुताअल्लिक़ कुछ अहेम मालूमात पेशे ख़िदमत है।

विलायत क्या है?

सवाल: विलायत क्या है?

जवाब: विलायत एक ख़ास क़ुर्ब यानी नज़्दीकी है जो कि अल्लाह पाक अपने बर्गुज़ीदा बंदों को महेज़ अपने फ़ज़्लो करम से अता फ़रमाता है।

(बहारे शरीअत जि,1, पेज 264)

सवाल: क्या आदमी इबादतो रियाज़त कर के वली बन सकता है?

जवाब: विलायत वहबी शै है (यानी अल्लाह पाक की तरफ़ से अता किया हुआ इनाम है), ना येह कि सख़्त मुश्किल आमाल से आदमी ख़ुद हासिल कर ले, अलबत्ता ग़ालिबन नेक आमाल इस अल्लाह पाक की अता के लिए ज़रीआ होते हैं और बाज़ों को शुरू से विलायत मिल जाती है।

(फतावा रज़वीयह, जि 21, पेज 606)

क्या विलायत बेइल्म को मिल सकती है?

सवाल: क्या विलायत बेइल्म को मिल सकती है?

जवाब: विलायत बेइल्म को नहीं मिलती, बल्कि आलिम को ही मिलती है ख्वाह इल्म ज़ाहिरी तौर पर हासिल किया हो, या विलायत के मर्तबे पर पहुंचने से पहले ही अल्लाह पाक ने उस पर उलूम खोल दिए हों।

(फ़ुतूहाते मक्कीयह जि 3, पेज 92)

सब से अफ़ज़ल किस उम्मत के औलिया हैं?

सवाल: सब से अफ़ज़ल किस उम्मत के औलिया हैं?

जवाब: तमाम औलियाए अव्वलीनो आख़िरीन में से औलियाए मुहम्मदीयीन यानी हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के औलिया अफ़ज़ल हैं। ("الیواقیت والجواہر"،المبحث السابع والأربعون،الجزء الثاني،ص۳۴۸)

सवाल: इस उम्मत में सब से अफ़ज़ल कौन से औलिया हैं?

जवाब: तमाम औलियाए मुहम्मदीयीन में सब से ज़्यादा मारिफ़त और क़ुर्बे इलाही में चारों ख़ुलफ़ा रज़ी अल्लाहु अन्हुम हैं और उन में तर्तीब वही है जो अफ़्ज़लीयत की तर्तीब है, सब से ज़्यादा मारिफ़त और क़ुर्ब सिद्दीक़े अकबर रज़ी अल्लाहु अन्हु को है, फिर फ़ारुके आज़म रज़ी अल्लाहु अन्हु को, फिर उस्माने ग़नी रज़ी अल्लाहु अन्हु को, फिर मौला अली रज़ी अल्लाहु अन्हु को है।

("المعتمد المستند"،حاشیۃ نمبر:۳۱۶،ص۱۹۱)

क्या शरीअत और तरीक़त अलग अलग चीज़ हैं?

सवाल: क्या शरीअत और तरीक़त अलग अलग चीज़ हैं?

जवाब: नहीं ! तरीक़त शरीअत के ख़िलाफ़ नहीं है बल्कि तरिक़त शरीअत ही का बातिनी यानी अंदरुनी हिस्सा है, बाज़ जाहिल सूफी जो येह कह दिया करते हैं कि तरीक़त और है शरीअत और, येह महेज़ गुमराही है और इस बातिल खयाल की वजह से वो लोग अपने आपको शरीअत से आज़ाद समझते हैं जो की खुल्लम खुल्ला कुफ्र और बे दीनी है।

("عوارف المعارف"،ص۵۲،۱۲۸)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहिर्रहमा फतावा रज़्वियह में फ़रमाते हैं: शरीअत, तरीक़त, हक़ीक़त, मारिफ़त के अंदर आपस में कोई इख्तिलाफ़ नहीं, अगर कोई बे समझे कहे तो निरा जाहिल है और समझ कर कहे तो गुमराह, बद दीन। शरीअत, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अक़्वाल

यानी बात चीत हैं, और तरीक़त, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अफ़आल यानी काम, और हक़ीक़त, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहवाल यानी हालतें, और मारिफ़त, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उलूमे बेमिसाल।

(फतावा रज़्वीयह जि21, पेज 460)

सवाल: क्या कोई वली शरीअत की पाबंदी से आज़ाद हो सकता है?

जवाब: शरीअत के अहकाम की पाबंदी से कोई वली कैसा ही बड़े मर्तबे वाला हो, आज़ाद नहीं हो सकता। बाज़ जाहिल लोग जो येह बक देते हैं कि शरीअत रास्ता है, और रास्ते की ज़रूरत उन को है जो मक़सूद तक ना पहुंचे हों, हम तो पहुंच गए।

हज़रते जुनैद बग़दादी अलैहिर्रहमा ने ऐसों के बारे में फ़रमाया: वो सच कहते हैं (कि हम पहुंच चुके), बेशक वो पहुंचे, मगर कहाँ ? जहन्नम को।

("الیواقیت والجواھر"، المبحث السادس والعشرون، ص۲۰۶)

क्या मज्ज़ूब वली के लिए भी शरीअत की पाबंदी ज़रूरी है?

सवाल: क्या मज्ज़ूब वली के लिए भी शरीअत की पाबंदी ज़रूरी है?

जवाब: अगर मज्ज़ूबियत (यानी अल्लाह पाक की मुहब्बत) में ग़र्क़ होने से अक़्ले तकलीफ़ी खत्म हो गई हो, जैसे बेहोश होने वाला तो उस से शरीअत का क़लम उठ जाएगा, मगर येह भी समझ लीजिए कि जो मज्ज़ूब वली होगा, वो शरीअत का मुक़ाबला कभी ना करेगा (यानी शरीअत की पाबंदी से आज़ाद होने की बात कभी नहीं करेगा)।

(मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत, हिस्सा 2, पेज 240)

मज्ज़ूब वली इन जाहिलों की तरह हरगिज़ नहीं कहेगा कि मैं शरीअत की पाबंदी से आज़ाद हूँ, मैं पहुंच गया हूँ, क्योंकि औलियाए किराम तो आजिज़ी वाले होते हैं वो तो अपना वली होना ऐसे ही छुपाते हैं जैसे कुँवारी लड़की अपने आप को छुपाती है।

क्या अल्लाह पाक ने औलियाए को ताक़त भी अता फ़रमाई है?

सवाल: क्या अल्लाह पाक ने औलियाए किराम को ताक़त भी अता फ़रमाई है?

जवाब: जी हाँ! औलियाए किराम को अल्लाह पाक ने बहुत बड़ी ताक़त दी है, उनमें जो अस्हाबे ख़िदमत हैं, उन को तसर्रुफ़ का इख्तियार दिया जाता है, स्याह, सफ़ैद (यानी दिन और रात में जो कुछ होता है) के मुख़तार बना दिए जाते हैं, येह हज़रात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे नाइब हैं, उनको इख़्तियारात और तसर्रुफ़ात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नियाबत में मिलते हैं।("الیواقیت والجواہر"، المبحث السابع والأربعون، الجزء الثاني، ص۳۴۸۔۳۴۹)

मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमा तफ़सीरे अज़ीज़ी में लिखते हैं: अल्लाह पाक के बाज़ ख़ास औलियाहैं जिनको बंदों की तर्बियत और रहनुमाई के लिए ज़रीया बनाया गया है, उन्हें इस हालत में भी दुनिया के अंदर तसर्रुफ़ की ताक़त और इख़्तियार दिया गया है।

("فتح العزیز"(تفسیر عزیزی)، تحت الآیۃ: وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ، ص۲۰۶، بحوالہ "فتاوی رضویہ"ج۲۹، ص۱۰۳۔۱۰۴)

क्या औलियाए किराम को छुपी हुई चीजों का इल्म होता है?

सवाल: क्या औलियाए किराम पर उलूमे ग़ैबिया यानी छुपी हुई चीजों का इल्म होता है?

जवाब: जी हाँ! औलियाए किराम पर उलूमे ग़ैबिया यानी छुपी हुई चीजों का इल्म होता है? और जो कुछ हुआ और होने वाला है सब जानते हैं और तमाम लौहे महफ़ूज़ पर उन को इत्तिला दी जाती है मगर येह सब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वास्ता और अता से होता है, बिग़ैर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वास्ते कोई गैरे नबी किसी ग़ैब को नहीं जान सकता।

("الفتاوی الرضویۃ"، ج۲۹، ص۴۷۲)

सवाल: औलियाए किराम से किस किस्म की करामात ज़ाहिर हो सकती हैं?

जवाब: औलियाए किराम से तमाम आदात के खिलाफ बातें यानी करामात) मुम्किन हैं मिसाल के तौर पर मुर्दा ज़िंदा करना, पैदाइशी अंधे और कोढ़ी को शिफ़ा देना, पूरब से पच्छिम तक सारी ज़मीन एक क़दम में तै कर जाना, सिवाए उस मोअजिज़ा के जिस के बारे में दूसरों के लिए मुमानअत साबित हो चुकी है। जैसे कुराने मजीद के तरह कोई सूरत ले आना या दुनिया के अंदर बेदारी में अल्लाह पाक के दीदार या कलामे हक़ीक़ी से मुशर्रफ़ होना, इस का जो अपने या किसी वली के लिए दावा करे, काफ़िर है। और औलियाए किराम की करामात हक़ हैं, इस का इन्कार करने वाला गुमराह है।

("منح الروض الأزہر "للقارئ، ص٧٩)("ردالمحتار"، كتاب النكاح، باب العدة، ج٥، ص ٢٥٣)

औलियाए किराम से इस्तिम्दाद यानी मदद तलब करना कैसा है?

सवाल: औलियाए किराम से इस्तिम्दाद यानी मदद तलब करना कैसा है?

जवाब: औलियाए किराम से इस्तिम्दाद और इस्तिआनत यानी मदद माँगना महबूब यानी पसंदीदा है, औलियाए किराम मदद मांगने वाले की मदद फ़रमाते हैं। (फतावा रज़्वियह, जि 21, पेज 331.332)

सवाल: बाज़ लोग कहते हैं: औलियाए किराम से मदद माँगना शिर्क है क्योंकि मदद फ़रमाने वाला अल्लाह पाक है, और औलियाए किराम से मदद माँगना उनको ख़ुदा मानना है। ऐसा कहना कैसा है?

जवाब: ऐसा कहना दुरुस्त नहीं है, और जो उन्होंने कहा कि अगर औलियाए किराम से मदद मांगी तो गोया तुमने उनको ख़ुदा मान लिया और येह शिर्क है, येह उनका फ़रेब यानी धोका है, और यही दलील देकर गुमराह फ़िर्क़े वाले भोले भाले सुन्नियों को धोका देने की कोशिश करते हैं, मुस्लमान कभी ऐसा ख़्याल नहीं करता कि औलियाए किराम अल्लाह हैं, मुस्लमान के काम को ख़्वाह मख़्वाह बुरी सूरत पर ढालना गुमराहों का ख़ास्सा यानी उनकी आदत है। औलियाए किराम के मज़ारात पर हाज़िरी मुस्लमान के लिए

सआदत और बाइसे बरकत है। औलियाए किराम को दूरो नज़्दीक से पुकारना सल्फ़ सालिहीन यानी बुज़ुर्गों का तरीक़ा है। (फतावा रज़्वियह, जि 21, पेज 331,332)

क्या औलियाए किराम अपने अपने मज़ारात में ज़िंदा होते हैं?

सवाल: क्या औलियाए किराम अपने अपने मज़ारात में ज़िंदा होते हैं?

जवाब: जी हाँ! औलियाए किराम अपनी क़ब्रों में हयाते अब्दी के साथ ज़िंदा हैं, उन के इल्म, एहसास करने, देखने और सुनने की ताक़त पहले से बहुत ज़्यादा हो जाती हैं। (तफ़सीरे रूहुल बयान, जि 3, पेज 439)

आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहिर्रहमा फतावा रज़्वियह में इरशाद फ़रमाते हैं: अहले सुन्नत के नज़्दीक अंबियाए किराम और शहीद अपने जिस्मों के साथ ज़िंदा हैं बल्कि अंबियाए किराम के बदन ज़मीन पर हराम किए गए हैं कि वो उनको खाए, इसी तरह शहीद के बदन व कफ़न भी क़ब्रों में सही और सलामत रहते हैं वो हज़रात रोज़ी दिए जाते हैं।

(फतावा रज़्वियह, जि 21, पेज 431,433)

औलियाए किराम को ईसाले सवाब करने का क्या फ़ायदा है?

सवाल: औलियाए किराम को ईसाले सवाब करने का क्या फ़ायदा है?

जवाब: उन्हें ईसाले सवाब करना, निहायत बरकत वाला काम है इसे लोगों की बोल चाल में अदब के तौर पर नज़रो नियाज़ कहते हैं, जैसे बादशाह को नज़र देना, इन में ख़ुसूसन ग्यारहवीं शरीफ़ की फ़ातिहा निहायत अज़ीम बरकत की चीज़ है। उर्से औलियाए किराम में क़ुरआन ख्वानी, फ़ातिहा ख़्वानी, नाअत ख्वानी, बयान कर के ईसाले सवाब करना अच्छी चीज़ है। रहे वो काम जिन से शरीअत ने मना किया हैं जैसे नाच, गाना, ढोल बजाना, आजकल की कव्वालियां, औरतों का बेपर्दा घूमना वग़ैरा वो तो हर हालत में बुरे हैं और मज़ारात के पास और ज़्यादा बुरे हैं। (बहारे शरीअत, जि1, पेज 276,277)

पीर किस को बनाना चाहिए?

सवाल: पीर किस को बनाना चाहिए?

जवाब: उमूमन मुस्लमानों को औलियाए किराम से मुहब्बत और मशाइख़ के साथ उन्हें एक ख़ास अक़ीदत होती है, उन के सिल्सिले में मुंसलिक होने को अपने लिए दुनिया और आखिरत में नजात का ज़रिआ जानते हैं, इस वजह से इस ज़माने में लोगों को गुमराह करने के लिए बहुत सारे लोग येह जाल फैला रखा है और पीरी, मुरीदी के आढ़ में धंधा शुरू कर दिया है हालांकि वो पीर बनने के लाइक़ नहीं होते, और हक़ीक़त में वो लोग औलियाए किराम के मुन्किर यानी इन्कार करने वाले होते हैं, लिहाज़ा जब कोई भी मुरीद होना चाहे तो अच्छी तरह तफ़तीश कर लें यानी पता कर ले, वर्ना अगर पीर फ़ासिक़ो फ़ाजिर, गुनाह करने वाला या बद मज़हब हुआ तो ईमान से भी हाथ धो बैठेंगे।(बहारे शरीअत जि1, पेज 277)

पीर के लिए चार शर्तें हैं, मुरीद होने से पहले इनका लिहाज़ करना फ़र्ज़ है।

(1) सुन्नी सहीहुल अक़ीदा हो।

(2) इतना इल्म रखता हो कि अपनी ज़रूरियात के मसाइल किताबों से निकाल सके।

(3) फ़ासिक़ मुअलिन ना हो। यानी खुल्लम खुल्ला गुनाह करने वाला ना हो।

(4) उस का पीरी मुरीदी का सिल्सिला नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक मुत्तसिल हो यानी जुड़ा हुआ हो। ("الفتاوی الرضویۃ"،ج۲۱،ص۴۹۲،۵۰۵،۶۰۳)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْف وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

तीसरा बाब

औलिया से मदद माँगने पर दलाइल

आप इस बाब में पढ़ सकेंगे

इस्तिमदाद और इस्तिआनत से क्या मुराद है?
औलियाए किराम से मदद मांगने का अक़ीदा रखना कैसा ?
औलियाए किराम से मदद मांगने पर क़ुरआनी दलाइल क्या हैं?
औलियाए किराम से मदद मांगने पर अहादीस से दलाइल क्या हैं?
सब कुछ माँग लिया
औलियाए किराम से उनकी वफ़ात के बाद भी मदद मांगी जा सकती है?
मदद फरमाने के सबूत में एक वाकिआ
हज़रते अली रज़ी अल्लाहु अन्हा को मुश्किल कुशा कहना कैसा है?

तर्तीब व तसहील

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान
अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

तीसरा बाब

औलिया से मदद मांगने पर दलाइल

ऐ आशिक़ाने औलिया! अल्लाह पाक ने अपने औलिया को अपने फ़ज़्लो करम से बहुत नवाज़ा है इसी लिए अल्लाह पाक की मख्लूक़ उनके दर पर जाती है और अपने मन की मुरादें पाती है। लेकिन बाज़ लोगों को वहम होता है कि क्या औलियाए किराम से मदद मांग सकते हैं? लिहाज़ा इस के मुताअल्लिक़ सगे अत्तार की फ़र्ज़ उलूम पर मुश्तमिल किताब बनाम **आसान फ़र्ज़ उलूम** से कुछ अहम बातें सवाल जवाब की सूरत में हाज़िर हैं:

इस्तिम्दाद व इस्तिआनत से क्या मुराद है?

सवाल: इस्तिम्दाद व इस्तिआनत से क्या मुराद है?

जवाब: अल्लाह पाक को हक़ीक़ी मददगार जानते हुए अंबियाए किराम और औलियाए किराम से मदद माँगना इस्तिम्दाद कहलाता है और इस्तिआनत का भी यही मतलब है।

सवाल: अंबियाए किराम और औलिया किराम से मदद मांगने के बारे में अहले सुन्नत का क्या अक़ीदा है?

जवाब: अंबियाए किराम और औलियाए किराम से मदद माँगना बिला शुब्हा जाइज़ है जबकि अक़ीदा येह हो कि हक़ीक़ी मदद तो अल्लाह पाक ही की है और येह सब हज़रात उस की दी हुई ताक़तो क़ुदरत से मदद करते हैं क्योंकि हर चीज़ का हक़ीक़ी मालिक सिर्फ़ अल्लाह पाक ही है और अल्लाह पाक की अता के बिग़ैर कोई मख्लूक़ किसी चीज़ की कुछ भी मालिको मुख्तार नहीं होती। अल्लाह पाक ने अपनी ख़ास अता और फ़ज़्ल से अपने प्यारे हबीब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दोनों जहाँ का हाकिम और मुख्तार बनाया है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दीगर अंबियाए किराम

और औलियाए इज़ाम अल्लाह पाक की अता से (यानी उस की दी हुई क़ुदरत से) मदद फ़रमा सकते हैं। और यही अहले सुन्नत यानी हम सुन्नियों का अक़ीदा है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअत जि1, पेज 271,274)

औलिया से मदद मांगने पर क़ुरआनी दलाइल क्या हैं?

सवाल: अंबियाए किराम और औलियाए किराम से मदद मांगने पर क़ुरआनी दलाइल क्या हैं?

जवाब: अल्लाह पाक की अता से अंबियाए किराम और औलियाए इज़ाम मदद फ़रमाते हैं और येह क़ुरआन से साबित है जिसके दलाइल येह हैं:

(1) --- पारा 28, सूरहए तहरीम की आयत नंबर 4 में अल्लाह पाक का फ़रमान है:

فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَ جِبْرِیْلُ وَ صَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَۚ-وَ الْمَلٰٓىٕكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِیْرٌ(۴) (پ۲۸، التحریم:۴)

तर्जमए कंज़ुल ईमान: तो बेशक अल्लाह अपने नबी का मददगार है और जिब्रील और नेक ईमान वाले और इस के बाद फ़रिश्ते मदद पर हैं।

इस आयत से मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मदद अल्लाह पाक, जिब्रील अलैहिस्सलाम, मुत्तक़ी मुस्लमान और फ़रिश्तें हैं, पस अगर अल्लाह के सिवा किसी से मदद माँगना जाइज़ ना होता तो अल्लाह पाक यूं ना फ़रमाता।

(2) ---पारा 6, सूरहए माइदा की आयत नंबर 55 में इरशादे बारी है:

اِنَّمَا وَلِیُّكُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوا الَّذِیْنَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ یُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمْ رٰكِعُوْنَ(۵۵)

तर्जमए कंज़ुल ईमान: (ऐ ईमान वालो!) तुम्हारे मददगार नहीं मगर अल्लाह और उस का रसूल और वो ईमान वाले जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह के हुज़ूर झुके हुए हैं।

इस आयत से पता चला कि ईमान वालों का मददगार अल्लाह, रसूल और ईमान वाले मुत्तक़ी परहेज़गार औलियाए किराम हैं, पस अगर अंबियाए किराम और औलियाए इज़ाम से मदद माँगना कुफ्रो शिर्क होता तो अल्लाह पाक इन हस्तियों को मददगार कभी ना फ़रमाता।

(3) ---पारा 10, सूरहए तौबा की आयत नंबर 59 में इरशादे ख़ुदावंदी है:

وَلَوْ اَنَّهُمْ رَضُوْا مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ ۙ وَ قَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَیُؤْتِیْنَا اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَ رَسُوْلُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ (۵۹)

तर्जमए कंज़ुल ईमान: और क्या अच्छा होता अगर वो इस पर राज़ी होते जो अल्लाह और रसूल ने उनको दिया और कहते हमें अल्लाह काफ़ी है, अब देता है हमें अल्लाह अपने फ़ज़्ल से और अल्लाह का रसूल, हमें अल्लाह ही की तरफ़ रग़बत है।

इस आयत में अल्लाह पाक ने अपने साथ अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देने वाला फ़रमाया है, अगर अल्लाह के सिवा कोई मदद नहीं कर सकता तो हरगिज़ अल्लाह पाक अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देने वाला ना फ़रमाता।

(4) ---पारा 3, सूरहए ऑले इमरान की आयत नंबर 52 में अल्लाह पाक का इर्शाद हक़ बुनियाद है:

فَلَمَّاۤ اَحَسَّ عِیْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ اَنْصَارِیْۤ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِیُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ ۚ وَ اشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ (۵۲)

तर्जमए कंज़ुल ईमान: फिर जब ईसा ने उन से कुफ्र पाया बोला कौन मेरे मददगार होते हैं अल्लाह की तरफ़ हवारियों ने कहा हम दीने ख़ुदा के मददगार हैं हम अल्लाह पर ईमान लाए और आप गवाह हो जाएं कि हम मुस्लमान हैं।

इस आयत से पता चला कि हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने हवारियों से मदद मांगी, अगर गैरे ख़ुदा से मदद माँगना कुफ़्रो शिर्क होता तो अल्लाह के नबी हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम कभी ऐसा ना करते कि नबी आता ही है लोगों को कुफ़्रो शिर्क से बचाने के लिए।

(5)---पारा 16, सूरहए मरयम की आयत नंबर 19 में अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया:

قَالَ اِنَّمَاۤ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ لِاَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِیًّا(۱۹)

तर्जमए कंज़ुल ईमान: हज़रते जिब्रील ने हज़रते मरयम से कहा ऐ मरयम! मैं तेरे रब का भेजा हुआ क़ासिदा हूँ, ताकि मैं तुझे एक सुथरा बेटा दूं।

ऐ आशिकाने औलिया! औलाद देने वाला अल्लाह पाक की ज़ात है फिर हज़रते जिब्रील अलैहिस्सलाम कैसे दे रहे हैं? लिहाज़ा इस से पता चला की अल्लाह के नेक बंदे अल्लाह पाक के हुक्म से लोगों की मदद करते हैं।

(6)---पारा 3, सूरहए ऑले इमरान की आयत नंबर 49, में ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में अल्लाह पाक इरशाद फरमाता है:

اَنِّیْۤ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّیْنِ كَهَیْــٴَـةِ الطَّیْرِ فَاَنْفُخُ فِیْهِ فَیَكُوْنُ طَیْرًۢا بِاِذْنِ اللّٰهِۚ-وَ اُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَ الْاَبْرَصَ وَ اُحْیِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِۚ-

तर्जमए कंज़ुल ईमान: मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से परिंदे की सी मूरत बनाता हूँ फिर उस में फूंक मारता हूँ तो वो फ़ौरन परिंदा हो जाती है अल्लाह के हुक्म से और मैं शिफ़ा देता हूँ मादर ज़ाद अंधे और सफ़ेद दाग़ वाले को और मैं मुर्दे जिलाता हूँ अल्लाह के हुक्म से।

इस आयत से मालूम हुआ कि हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह पाक की अता से बेजान को जान, अँधों को आँखें और कोढ़ियों को शिफ़ा देने वाले हैं।

औलिया से मदद मांगने पर हदीस से दलाइल क्या हैं?

सवाल: अंबियाए किराम और औलियाए किराम से मदद माँगने पर अहादीस से दलाइल क्या हैं?

जवाब: अंबियाए किराम और औलियाए किराम से मदद माँगने पर अहादीस से यह दलाइल हैं:

(1) ---हज़रते इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: भलाई और अपनी हाजतें उन लोगों से माँगो जिनके चेहरे अल्लाह पाक की इबादत से रौशन हैं।(المعجم الكبير ج ۱۱، ص ۸۱)

(2)--- हज़रते अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ी अल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया: कि अल्लाह पाक के कुछ ऐसे बंदे हैं जिन्हें अल्लाह पाक ने मख्लूक़ की हाजत पूरी करने के लिए ख़ास फ़रमाया है, लोग घबराए हुए अपनी हाजतें उनके पास लाते हैं, येह बंदे अल्लाह पाक के अज़ाब से अमान में हैं।

(المعجم الكبير، الحديث ۱۳۳۳۴، ج ۱۲، ص ۲۷۴)

(3)--- हज़रते मालिकुद्दार रज़ी अल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहु अन्हु के ज़माने में क़हत यानी सूखा पड़ा। एक शख़्स (जिन का नाम बिलाल बिन हारिस है) ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र शरीफ़ पर हाज़िर हो कर यूं अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी उम्मत के लिए बारिश की दुआ फ़रमाएं वो हलाक हो रही है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख्वाब में उस शख़्स से फ़रमाया कि उमर के पास जा कर मेरा सलाम कहो और बिशारत दो कि बारिश होगी और येह भी कह दो कि नर्मी इख्तियार करे। उस शख़्स ने हाज़िर हो कर ख़बर दी।

हज़रते उमर रज़ी अल्लाहु अन्हु येह सुन कर रोये। फिर कहा या रब मैं कोताही नहीं करता मगर उस चीज़ में कि जिस से मैं आजिज़ हूँ।

(وفاءالوفاء،الباب الثامن۔۔۔الخ،الفصل الثالث فی توسل الزائر۔۔۔الخ،ج٢،الجزء٤،ص١٣٧٤۔علمیہ)

(4)--- एक साल मदीना शरीफ़ में सख़्त क़हत यानी सूखा पड़ा। लोगों ने हज़रते आईशा रज़ी अल्लाहु अन्हा से फ़रयाद की। हज़रते आईशा रज़ी अल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र शरीफ़ पर हाज़िर हो कर उस में एक रौशन दान आसमान की तरफ़ खोल दो ताकि क़ब्र शरीफ़ और आसमान के दर्मियान छत हाइल ना रहे यानी कोई आड़ ना हो। उन्होंने ऐसा ही किया। ख़ूब बारिश हुई और घास उगी और ऊंट ऐसे फ़र्बा यानी मोटे ताज़े हो गए कि चर्बी से फटने लगे।

(سنن الدارمی،باب ما اکرم اللہ تعالی نبیہ صلی اللہ علیہ وسلم بعد موتہ،باب١٥،الحدیث:٩٢،ج١،ص٥٦۔علمیہ)

अल्लामा क़ाज़ी जैनुद्दीन मुराग़ी अलैहि रहमा फ़रमाते हैं कि क़हत के वक़्त रौशन दान का खोलना इस वक़्त तक अहले मदीना का तरीक़ा है। वो क़ुब्बा ख़ज़रए मुक़द्दसा के नीचे की जानिब क़िब्ला की तरफ खोल देते हैं अगर्चे क़ब्र शरीफ़ और आसमान के दर्मियान छत हाइल रहती है।

(وفاءالوفاء،الباب الرابع۔۔۔الخ،الفصل الحادی والعشرون،ج١،الجزء٢،ص٥٦٠۔علمیہ)

सब कुछ मांग लिया

(5)--- हज़रते रबीआ बिन कअब असलमी रज़ी अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: एक मर्तबा मैंने हुज़ूर, सरापा नूर, फ़ैज़ गंजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वुज़ू करवाया तो अल्लाह पाक के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुश हो कर इरशाद फ़रमाया: रबीआ मांग क्या मांगता है ? हज़रते रबीआ रज़ी अल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ की: सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जन्नत में आपकी रफ़ाक़त (यानी पड़ोस) चाहिए। (गोया अर्ज़ कर रहे हैं:

तुझ से तुझी को मांग लूं तो सब कुछ मिल जाये
सौ सवालों से यही एक सवाल अच्छा है

दरयाए रहमत मज़ीद जोश में आया और फ़रमाया: कुछ और माँगना है? मैंने अर्ज़ की: बस सिर्फ यही। (यानी या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जन्नतुल फ़िरदौस में आप का पड़ोस मांगने के बाद अब दुनिया और उक़बा की और कौन सी नेअमत बाक़ी रह जाती है जिसे मांगा जाये)

तुझ से तुझी को मांग कर मांग ली सारी काएनात
मुझ सा कोई गदा नहीं तुझ सा कोई सखी नहीं

जब हज़रते रबीआ बिन कअब असलमी रज़ी अल्लाहु अन्हु जन्नत की रफ़ाक़त (यानी पड़ोस मांग चुके और मज़ीद किसी हाजत के माँगने से इन्कार कर दिया तो इस पर अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अपने नफ़्स पर कसरते सुजूद यानी ज़्यादा नवाफिल से मेरी मदद कर। (यानी हम ने तुम्हें जन्नत तो अता कर ही दी अब तुम भी बतौरे शुक्राना नवाफिल की कसरत करते रहो।(صحیح مسلم ص ۲۵۳ حدیث ۴۸۹)

सुब्हानल्लाह! इस हदीसे पाक ने तो ईमान ही ताज़ा कर दिया। हज़रत शैख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं: सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, का बिगैर किसी कैद के फ़रमाना: मांग क्या मांगता है? इस बात को ज़ाहिर करता है कि सारे ही मुआमलात नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक हाथ में हैं,जो चाहें जिसको चाहें अपने रब के हुक्म से अता कर दें।

ख़ालिक़े कुल ने आप को मालिके कुल बना दिया
दोनों जहान दे दिए क़ब्ज़ा ओ इख्तियार में

इमामे अहले सुन्नत, आला हज़रत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहिर्रहमा इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं:

अल्हम्दुलिल्लाह ! येह जलीलो नफ़ीस हदीसे सहीह अपने हर हर जुम्ले से फिर्क़ए वहाबीयत को मार डालने वाली है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह पाक के खलीफा हैं और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का

बिला क़ैद व बिला तख़सीस इरशाद फ़रमाना: मांग क्या मांगता है? जाने वहाबीयत पर कैसा पहाड़ है जिस से साफ़ ज़ाहिर है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर किस्म की हाजत रवा फ़रमा सकते हैं दुनिया वा आख़िरत की सब मुरादें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इख्तियार में हैं जभी तो इरशाद हुआ: मांग क्या मांगता है? यानी जो जी में आए माँगो कि हमारी सरकार में सब कुछ है। फ़िर इस हदीस में सब से बढ़ कर जाने वहाबीयत पर येह कैसी आफ़त कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस इरशाद पर हज़रते रबीआ रज़ी अल्लाहु अन्हु ख़ुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जन्नत माँगते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल करता हूँ कि जन्नत में रफ़ाक़त वाला अता हो।

आला हज़रत अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं: वहाबी साहिबो येह कैसा खुला शिर्के वहाबीयत है जिसे हुज़ूर मालिके जन्नत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़बूल फ़रमा रहे हैं।(فتاوی رضویہ ج۳۰،ص۳۹۴۔۳۹۶)

अल्लामा अली क़ारी अलैहिर्रहमा शरह मिश्कात में फ़रमाते हैं: हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने माँगने का हुक्म बिला कैद दिया इस से पता चलता है कि अल्लाह पाक ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आम क़ुदरत बख्शी है कि ख़ुदा के ख़ज़ानों से जो चाहें अता फ़रमा दें।

(مرقاۃ المفاتیح کتب الصلوٰۃ باب السجود وفضلہ الفصل الاول تحت حدیث ۸۹۶ المکتبۃ الحبیبیہ کوئٹہ ۲/۶۱۵)

औलिया से उनकी वफ़ात के बाद भी मदद मांगी जा सकती है?

सवाल: क्या अंबियाए किराम और औलिया से उनकी वफ़ात के बाद भी मदद मांगी जा सकती है?

जवाब: जी हाँ! जिस तरह ज़िंदगी में उन से माँगा जा सकता हैं और मदद माँगना जाइज़ है इसी तरह उनके विसाल के बाद भी जाइज़ है। अल्लाह पाक के प्यारे नबी और वली अपनी अपनी कब्रों में ज़िंदा होते हैं जैसा कि ऊपर गुज़रा।

मदद फ़रमाने के सबूत में एक वाक़िआ

सवाल: मदद फ़रमाने के सबूत में कोई वाक़िआ हो तो बयान करें।

जवाब: इस पर एक नहीं बल्कि बेशुमार वाक़िआत बयान किए जा सकते हैं, यहां एक वाक़िआ मुलाहिज़ा हो, चुनांचे इमाम तबरानी, अल्लामा इब्नुल मुक़री और इमाम अबुश्शैख़, येह तीनों हदीस के बहुत बड़े इमाम गुज़रे हैं और तीनों एक ही ज़माने में मदीनए मुनव्वरा की एक दर्सगाह में हदीस का इल्म हासिल करते थे, एक बार इन तीनों पर एक वक़्त ऐसा गुज़रा कि उनके पास खाने को कुछ नहीं था, रोज़े पर रोज़े रखते रहे, मगर जब भूक से निढाल हो गए और हिम्मत जवाब दे गई तो तीनों ने अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़े पर हाज़िर हो कर फ़रयाद की {या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हम लोग भूक से बेताब हैं। येह अर्ज़ कर के इमाम तबरानी तो आस्तानए मुबारका ही पर बैठे रहे और कहा इस दर पर मौत आएगी या रोज़ी, अब यहां से नहीं उठूंगा। इमाम अबुश्शैख़ और इब्नुल मुक़री अलैहिर्रहमा अपनी क़ियाम गाह पर लौट आए, थोड़ी देर बाद किसी ने दरवाज़ा खटखटाया, दोनों ने दरवाज़ा खोल कर देखा तो अलवी ख़ानदान के एक बुज़ुर्ग दो ग़ुलामों के साथ खाना लेकर तशरीफ़ फ़रमा हैं और येह फ़रमा रहे हैं कि अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अभी अभी मुझे ख्वाब में अपनी ज़यारत से मुशर्रफ फ़रमा कर हुक्म फ़रमाया कि मैं आप लोगों के पास खाना पहुंचा दूं, चुनांचे जो कुछ मुझ से फ़िल वक़्त हो सका हाज़िर है।

(تذکرۃ الحفّاظ، رقم:۹۱۳، ۳/۱۲۱، ملخصًا)

तुम्हीं हाकिमे बराया तुम्हीं क़ासिमे अताया
तुम्हीं दाफए बलाया तुम्हीं शाफ़ए ख़ताया
कोई तुम सा कौन आया

ऐ आशिक़ाने औलिया! अल्लाह पाक के मक़बूल बंदे अल्लाह पाक की इजाज़त से मुश्किल कुशा, हाजत रवा हैं, अल्लाह पाक के हुक्म से

बंदों की हाजतें पूरी करते हैं, मुश्किलें हल करते हैं, क़ुरआने करीम में इस का बयान भी मौजूद है।

किसी को मुश्किल कुशा कहना कैसा ?

सवाल: क़ुरआन शरीफ़ से साबित है कि बहुत दफ़ा पैग़म्बरों ने किसी को दुआ या बद दुआ दी। मगर क़बूल ना हुई फिर वो मुश्किल कुशा, दाफए बला कैसे हुए?

जवाब: येह हज़रात अल्लाह पाक के हुक्म से दाफए बला और मुश्किल कुशा हैं, जहां अल्लाह पाक का हुक्म ना हो वहां बला दूर ना होगी। हर चीज़ का यही हाल है कि ख़ुदा के हुक्म से नफ़ा या नुक़्सान देती है ग़र्ज़ कि अंबिया और औलिया मदद करते हैं मुश्किलें आसान, मुसीबत दूर फ़रमाते हैं मगर सब अल्लाह पाक के हुक्म से।

सवाल: हज़रते अली रज़ी अल्लाहु अन्हु को मुश्किल कुशा कहना कैसा है? क्या सिर्फ़ अल्लाह पाक ही मुश्किल कुशा नहीं?

जवाब: मुश्किल कुशा के मअना हैं: मुश्किल हल करने वाला, मुश्किल में मदद करने वाला। बेशक हक़ीक़ी माअनों में अल्लाह पाक ही मुश्किल कुशा है, मगर उस की अता से अंबियाए किराम, सहाबए किराम और औलियाए किराम बल्कि आम बंदे भी मुश्किल कुशा और मददगार हो सकते हैं इस की समझ में आने वाली आम फहम मिसाल येह है कि जा बजा येह बोर्ड लगे हुए हैं: {पुलिस हेल्प लाईन नंबर 112} हर एक येह जानता है कि पुलिस चोरों डाकूओं वग़ैरा से बचाने, दुश्मनों के ख़तरों और दीगर मुश्किल मौक़ों पर मुश्किल कुशाई यानी मदद करने की सलाहीयत रखती है।

मक्का शरीफ़ से हिजरत कर के जो सहाबए किराम मदीना शरीफ़ पहुंचे, वहां उन की नुसरत यानी मदद करने वाले सहाबाए किराम अन्सार कहलायें और अन्सार के माना मददगार हैं। इस के इलावा भी बेशुमार मिसालें दी जा सकती हैं, तो जब पुलिस मुश्किल कुशा, समाजी कारकुन हाजत रवा,

चौकीदार मददगार और क़ाज़ी फ़रियाद रस यानी फरियाद को सुनने वाला हो सकता है, तो अल्लाह पाक की अता से हज़रते मौला अली, शेरे ख़ुदा क्यों मुश्किल कुशा नहीं हो सकते।

कह दे कोई घेरा है बलाओं ने हसन को
ऐ शेरे ख़ुदा बहरे मदद तेग़ ब कफ़ जा

सवाल: बाज़ लोग कहते हैं:' सूरतुल फातिहा में है: {ऐ अल्लाह! हम तुझी से मदद मांगते हैं} लिहाज़ा किसी और से मदद माँगना शिर्क हुआ, इस का जवाब क्या होगा?

जवाब: इस के चंद जवाब मुलाहिज़ा फ़रमाएं:

(1)--- सूरतुल फातिहा की आयते करीमा में मदद से मुराद हक़ीक़ी मदद है यानी अल्लाह पाक को हक़ीक़ी कार साज़ यानी काम बनाने वाला समझ कर अर्ज़ किया जा रहा है: ऐ करीम! हम तुझी से मदद मांगते हैं, रहा बंदों से मदद माँगना तो वो अल्लाह पाक के फ़ैज़ का वास्ता समझ कर है। जैसा कि पारा 12 सूरह यूसुफ की आयत नम्बर 40 में है: हुक्म नहीं मगर अल्लाह का। और पारा 3 सूरतुल बकरा की आयत नम्बर 255 में फ़रमाया: उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में।

इन आयात के होते हुए फिर हम हुक्काम और पुलिस को फ़ैसला करने वाला क्यों मानते हैं? और अपनी चीज़ों पर मिल्कियत का दावा क्यों करते हैं? हालांकि फैसला करने वाला सिर्फ अल्लाह पाक है और आसमानों ज़मीन में जो कुछ है वो सब अल्लाह पाक का है।

तो आप यही कहेंगे कि आयत से मुराद है हक़ीक़ी फ़ैसला करने वाला और हक़ीक़ी मिल्कियत, मगर बंदों के लिए अल्लाह पाक की अता से है।

(جاءالحق ص ۲۱۵)

(2)---कई मक़ामात पर क़ुरआने करीम ने ग़ैरुल्लाह को मददगार क़रार दिया है, इस के बारे में 4 आयाते मुबारका मुलाहिज़ा कीजिए:

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ (پ۱،البقرہ:۴۵)

तर्जमा कंज़ुल ईमान: और सब्र व नमाज़ से मदद चाहो।

क्या सब्र ख़ुदा है? जिस से मदद मांगने का हुक्म हुआ है। क्या नमाज़ ख़ुदा है? जिस से मदद माँगने को इरशाद किया है।

दूसरी आयत में फ़रमाता है:

وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰی (پ۶،المائدہ:۲)

तर्जमा कंज़ुल ईमान: और नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो।

अगर ग़ैरे ख़ुदा से मदद लेनी हर सूरत में ना मुम्किन है तो इन आयते मुबारका में इरशाद किये हुए अल्लाह पाक के हुक्म का हासिल क्या?

اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ

۵۵ (پ۶،المائدہ:۵۵)

तर्जमा कंज़ुल ईमान: तुम्हारे मददगार नहीं मगर अल्लाह और उस का रसूल और ईमान वाले कि नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह के हुज़ूर झुके हुए हैं।

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ (پ۱۰،التوبہ:۷۱)

तर्जमा कंज़ुल ईमान: मुस्लमान मर्द और मुस्लमान औरतें एक दूसरे के मददगार हैं।

गैरुल्लाह की मदद की मिसालें

ऐ आशिकाने औलिया! इस आयते मुबारका की तफ़सीर येह की गई है: {और आपस मे दीनी मुहब्बत रखते हैं और एक दूसरे के मददगार हैं।

(خزائن العرفان،پ۱۰،التوبہ۷۱)

सही इस्लामी अक़ीदे के मुताबिक अगर कोई शख़्स येह अक़ीदा रखते हुए अंबियाए किराम और औलियाए किराम से मदद तलब करे कि वो अल्लाह पाक की इजाज़त के बिगैर ख़ुद नफ़ा और नुक़्सान के मालिक हैं तो येह यक़ीनन शिर्क है जबकि इस के उलट अगर कोई शख़्स हक़ीक़ी मददगार, नफ़ा और नुक़्सान का हक़ीक़ी मालिक अल्लाह पाक को मान कर किसी को ग़ैर हक़ीक़ी तौर पर और महेज़ अल्लाह पाक की अता से मददगार समझते हुए मदद चाहे तो हरगिज़ शिर्क नहीं और यही हमारा अक़ीदा है।

मेरे शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार कादरी** अपने रिसाले **करामाते शेरे ख़ुदा** में लिखते हैं: बहरे हाल सूरतुल फ़ातिहा की आयते मुबारका{हम तुझी से मदद चाहते हैं} हक़ है, मगर शैतान का बुरा हो कि येह लोगों को वस्वसे डाल कर गलत फ़हमियों का शिकार कर देता है। ग़ौर फ़रमाईए आयते मुबारका में ज़िंदा मुर्दा वग़ैरा की तख़सीस किए बिग़ैर हर हाल में अल्लाह के सिवा दूसरे से मदद मांगने से इन्कार किया गया है। आयते मुबारका के ज़ाहिरी लफ़्ज़ी माना के ऐतिबार से जो कि वस्वसा करने वालों ने समझा है कोई दूसरा तो ठीक येह ख़ुद भी शिर्क से नहीं बच सकते मसलन वज़न दार गठरी ज़मीन पर रखी है उठा नहीं पा रहे , किसी को आवाज़ देकर कहा बराए मेहरबानी उठाने में ज़रा मेरी मदद कर दीजिए ताकि सर पर रख लूं। इस वस्वसे के मुताबिक येह शिर्क हुआ या नहीं ? ज़रूर हुआ। इस तरह की हज़ारों मिसालें दी जा सकती हैं, बस चारों तरफ़ गैरे ख़ुदा की इमदादों के नज़ारे हैं।

मिसाल के तौर पर राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का मक़सद ही आपस में एक दूसरे की मदद करना है। इस में सदक़ा व खैरात, फ़ितरा, ज़कात मसाजिद और मदारिस के लिए चंदा, क़ुर्बानी की खालें, समाजी इदारें, वग़ैरा वग़ैरा सब का मक़सद दूसरों की इमदाद, इमदाद और इमदाद ही तो है मज़ीद आगे बढ़िए तो मज़लूमों की मदद के लिए अदालत है तो मरीज़ों की इमदाद के लिए

अस्पताल, मुल्क के अंदर के बाशिंदों की मदद के लिए पुलिस की निज़ामत है तो मुल्क के बाहर दुश्मनों से हिफ़ाज़त के लिए फ़ौजी ताक़त, औलाद की परवरिश में मदद के लिए माँ बाप की ज़रूरत है तो उनकी तालीमो तरबीयत के लिए स्कूल की हाजत, अलग़र्ज़ ज़िंदगी में क़दम क़दम पर ग़ैरुल्लाह की मदद और हिमायत की ज़रूरत है बल्कि मरने के बाद भी तकफ़ीनो तदफ़ीन बिगैर ग़ैरुल्लाह की मदद के मुम्किन नहीं, फिर ता क़ियामत ईसाले सवाब के ज़रीए मदद की हाजत है और आख़िरत में भी सब से अहम मदद की ज़रूरत है यानी प्यारे आक़ा की शफ़ाअत, येह सब गैरुल्लाह की मददें ही तो हैं।

(करामाते शेरे ख़ुदा, पेज 62)

आज ले उनकी पनाह आज मदद उन से
फिर ना मानेंगे क़ियामत में अगर मान गया



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْف وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

चौथा बाब

औलिया के वसीले पर दलाइल

आप इस बाब में पढ़ सकेंगे

औलिया का वसीला पेश करना कैसा ?
क्या औलिया को वसीला बनाना शिर्क है ?
वसीले का सबूत
क्या वसीला इख़्तियार करना ज़रूरी है ?
नबी का वसीला
नबी ने भी वसीला पेश किया
बुज़ुर्गाने दीन ने भी वसीला पेश किया
नबी ने वसीला बनाने की तालीम दी

तर्तीब व तसहील

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान
अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

चौथा बाब

औलिया के वसीले पर दलाइल

औलिया का वसीला पेश करना कैसा ?

सवाल: अल्लाह पाक की बारगाह में अंबिया और औलिया का वसीला पेश करने के मुताअल्लिक़ अहले सुन्नत व जमाअत का क्या अक़ीदा है?

जवाब: **ऐ आशिकाने औलिया!** अल्लाह पाक की बारगाह में अंबिया और औलिया का वसीला पेश करने के मुताअल्लिक़ अहले सुन्नत व जमाअत का येह अक़ीदा है कि येह जाइज़ है और हुसूले बरकात का ज़रीआ है कि अल्लाह पाक की बारगाह में नेक बंदों का वसीला पेश करना दुआओं की क़बूलीयत, मुश्किलात के हल, मसाइबो आलाम से छुटकारे और दीनी व दुन्यवी भलाइयों के हुसूल का आसान ज़रीआ है। कुरआनो हदीस और बुज़ुर्गाने दीन के अकवाल से वसीला इख्तियार करने का सबूत मिलता है।

क्या औलिया को वसीला बनाना शिर्क है?

सवाल: बाज़ लोगों का कहना है कि अंबिया और औलिया को वसीला बनाना शिर्क है, क्योंकि येह काफिरों का तरीक़ा है कि वो भी बुतों को वसीला बनाते थे। इस का क्या जवाब होगा?

जवाब: बाज़ लोगों का येह कहना दुरुस्त नहीं है क्योंकि जहां वसीला का इन्कार है वहां बुतों का वसीला या काफिरों के लिए वसीला मुराद है । या वो वसीला मुराद है जिस की पूजा पाट की जाये। इस की मिसाल कुरआने मजीद में येह है:

مَا نَعۡبُدُهُمۡ اِلَّا لِیُقَرِّبُوۡنَاۤ اِلَی اللّٰهِ زُلۡفٰی ۔ (پ۲۳، الزمر: ۳)

तर्जमा कंज़ुल ईमान: नहीं पूजते हैं हम इन बुतों को मगर इस लिए ताकि वो हमें ख़ुदा से क़रीब कर दें।

ऐ आशिकाने औलिया! इस से मालूम हुआ कि अरब के काफिर लोग अपने बुतों को (जो अल्लाह के दुश्मन हैं) ख़ुदा तक पहुंचने का वसीला समझ कर पूजते थे यानी उनके शिर्क की वजह दो हुईं :

(1) एक ख़ुदा के दुश्मन को खुदा तक पहुंचने का वसीला समझना।

(2) दूसरे इन्हें पूजना, सिर्फ़ वसीला इख्तियार करने की वजह से मुशरिक ना हुए।

वसीले का सबूत

और जहां वसीला का सबूत है, वहां अल्लाह पाक के प्यारों का वसीला या मुसलमानों के लिए वसीला मुराद है ताकि आयतों में कोई टकराओ ना हो। इस की मिसाल कुरआने मजीद में येह है:

وَابْتَغُوْٓا اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ (پ۶، المآئدۃ:۳۵)

तर्जमा कंज़ुल ईमान: और उस रब की तरफ़ वसीला ढूंढ़ो।

पस इस आयत में अल्लाह पाक ने वसीला बनाने का हुक्म इरशाद फ़रमाया है, लिहाज़ा जो वसीला को नहीं मानते वो इस आयत के इन्कार करने वाले हुए, और क़ुरआन की किसी आयत का इन्कार कुफ्र है, पस बाज़ लोग जो वसीले के इंकारी हैं वो काफ़िर हुए ना कि वो लोग जो वसीले को मानने वाले हैं। क्योंकि क़ुरआन में कई जगह वसीला अपनाने का हुक्म दिया गया है जैसे कि पारा 5 सूरतुन्निसा की आयत नंबर 64 में इरशाद हुआ:

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا

رَّحِيْمًا 

तर्जमा कंज़ुल ईमान: और अगर येह लोग अपनी जानों पर ज़ुल्म कर के आप के हुज़ूर आ जाऐं, फिर ख़ुदा से माफ़ी मांगें और रसूल भी उनके

लिए दुआए मग़फ़िरत करें तो अल्लाह को तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।

इस आयत में अल्लाह पाक का हुक्म है कि अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में जा कर माफ़ी मांगे, हालाँकि माफ़ी देने वाली ज़ात अल्लाह पाक की है ख़ुद बख़्शने पर क़ादिर है मगर इस के बावजूद अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में भेजना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वसीला बनाना ही तो है।

पस इन जैसी कई आयतों में वसीला का सबूत है मगर वही वसीला मुराद है जो अल्लाह की इजाज़त से हो और जिस के वसीले की इजाज़त अल्लाह पाक ने दिया हो। (علم القرآن ص ۱۶۲)

क्या वसीला इख़्तियार करना ज़रूरी है?

सवाल: क्या वसीला इख़्तियार करना ज़रूरी है?

जवाब: जी हाँ! वसीला इस्लाम में बड़ी अहम चीज़ है क्योंकि सारे आमाल मौत पर ख़त्म हो जाते हैं मगर वसीला पकड़ना मौत, क़ब्र, कियामत हर जगह ज़रूरी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम पर मौत हो, क़ब्र में उनके नाम पर कामयाबी हो, कियामत में उनके तुफ़ैल नजात हो, नीज़ और आमाल की ज़रूरत सिर्फ इन्सानों को है मगर वसीला की ज़रूरत हर मख़्लूक़ को है, देखो काबए मुअज़्ज़मा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीला के बिग़ैर क़िब्ला ना बना और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथों के बिग़ैर बुतों की गंदगी से पाक ना हो सका। वसीला का इन्कार इस्लाम के बड़े अहम मसअले का इन्कार है।(علم القرآن ص ۱۶۲)

नबी का वसीला

सवाल: क्या अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह पाक की बारगाह में वसीला बना सकते हैं?

जवाब: जी हाँ! बना सकते हैं कि इमाम तक़ीयुद्दीन शाफ़ई अलैहिर्रहमा (साले वफ़ात 756 हिजरी) लिखते हैं अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीले से दुआ करना जाइज़ और पसंदीदा है, चाहे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश से पहले हो, या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयाते ज़ाहिरी में हो या विसाले ज़ाहिरी के बाद हो। इसी तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़ास निस्बत रखने वाले बुज़ुर्गों को वसीला बनाना भी जाइज़ और पसंदीदा है।(شفاء السقام، ص۳۵۸،۳۷٦)

ऐ आशिकाने औलिया! अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया में तशरीफ़ लाने से पहले यहूदी लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीले से दुआएं करते और कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन पर अल्लाह पाक से फ़तह यानी जीत मांगते थे जिसका सबूत कुरआने मजीद के पारा,1, सूरतुल बकरा की आयत नंबर 89 में है, चुनांचे अल्लाह पाक इरशाद फरमाता है :

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۚ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾

तर्जमा कंज़ुल ईमान: और जब उनके पास अल्लाह की वो किताब (यानी क़ुरआन) आई जो उनके साथ वाली किताब (यानी तौरेत) की तसदीक़ फ़रमाती है और इस से पहले इसी नबी के वसीला से काफ़िरों पर फ़तह मांगते थे तो जब तशरीफ़ लाया उनके पास वो जाना पहचाना उस से मुन्किर हो बैठे तो अल्लाह की लानत मुनकिरों पर।

ऐ आशिकाने औलिया! देखा आप ने अल्लाह पाक ने यहूदियों के बारे में फरमाया कि येह लोग हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुनिया में आने से पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीले से दुआए किया करते थे

और जब हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दुनिया में तशरीफ़ ले आयें तो उनका इन्कार करने लगे।

नबी ने भी वसीला पेश किया

सवाल: क्या अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी अल्लाह पाक की बारगाह में किसी का वसीला पेश किया है?

जवाब: जी हाँ! अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी अल्लाह पाक की बारगाह में वसीला पेश फ़रमाया है, चुनांचे: हमारे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुस्लमान फ़ुक़रा के वसीले से दुआ फ़रमाया करते थे जैसा कि तबरानी शरीफ़ में है: नबीए पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुस्लमान फ़ुक़रा के वसीले से फ़तहो नुसरत तलब फ़रमाते थे।

(معجم کبیر،ج۱،ص۲۹۲،حدیث:۸۵۹)

बुज़ुर्गाने दीन ने भी वसीला पेश किया

सवाल: क्या बुज़ुर्गाने दीन में से भी किसी ने अल्लाह पाक की बारगाह में किसी का वसीला पेश किया है?

जवाब: जी हाँ! बुज़ुर्गाने दीन ने भी अल्लाह पाक की बारगाह में वसीला पेश किया है, जिसकी मिसालें येह हैं:

(1)--- हज़रते आदम अलैहिस्सलाम ने हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीले से दुआ की तो अल्लाह पाक का इरशाद हुआ: बेशक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम मख्लूक़ में मेरे नज़्दीक सबसे ज़्यादा महबूब हैं और अब कि तूने उनके हक़ के वास्ते से सवाल किया है तो मैंने तुम्हारी मग़फ़िरत कर दी और अगर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ना होते तो मैं तुम्हें भी पैदा ना करता।(دلائل النبوۃ للبیہقی،ج۵،ص۴۸۹)

(2)--- अमीरुल मुअमिनीन हज़रते उमर फ़ारुके आज़म रज़ी अल्लाहु अन्हु क़हत यानी सूखा पड़ जाने के वक़्त यूं दुआ किया करते: ऐ अल्लाह! पहले

हम तेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीले से दुआ करते थे, अब अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चचा हज़रते अब्बास रज़ी अल्लाहु अन्हु के वसीले से दुआ करते हैं, हमें बारिश अता फ़रमा। (بخاری،ج۱،ص۳۴۶،حدیث:۱۰۱۰)

(3)--- हज़रते अमीरे मुआविया रज़ी अल्लाहु अन्हु हज़रते इब्ने असवद रज़ी अल्लाहु अन्हु के वसीले से बारिश की दुआ मांगा करते थे।

(طبقات ابن سعد،ج۷،ص۳۰۹ملخصاً)

(4)--- इमामे आज़म, अबू हनीफ़ा अलैहिर्रहमा बारगाहे रिसालत में अर्ज़ करते हैं: या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आप ही वो हस्ती हैं कि जब हज़रते आदम अलैहिस्सलाम ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वसीला पकड़ा तो वो कामयाब हुए। (مجموعہ قصائد،ص۴۰)

(5)--- हज़रते इमामे शाफ़ई अलैहिर्रहमा हज़रते इमामे आज़म रज़ी अल्लाहु अन्हु से तवस्सुल करते, उनकी क़ब्र पर हाज़िर हो कर ज़ियारत करते, फिर अपनी हाजत पूरी होने के लिए की बारगाह में उन्हें वसीला बनाते।

(تاریخ بغداد،باب ماذکر فی مقابر بغداد المخصوصۃ،۱/۱۳۵)

(6)--- अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी अलैहिर्रहमा नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, इमामे आज़म और दीगर सालिहीन के वसीले से दुआ करते थे।

(ردالمحتار،ج۱،ص۱۸ملخصاً)

(7)--- ताबूते सकीना में अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के तबर्रुकात थे, बनी इसराईल मुश्किल वक़्त में इस ताबूत के वसीले से दुआ करते और दुश्मनों के मुक़ाबले में फ़तह यानी जीत हासिल करते।

(جلالین،پ۲،البقرۃ،تحت الآیۃ:۲۴۸،ج۱،ص۱۴۲)

(8)--- हुज़ूर ग़ौसे आज़म अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं: जो कोई मुझे वसीला बना कर अल्लाह पाक से कोई हाजत तलब करे उस की हाजत पूरी की जाती है।

(نزہۃ الخاطر الفاتر، ص ٦٧)

नबी ने वसीला बनाने की तालीम दी

सवाल: क्या अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वसीला बनाने की तालीम भी इरशाद फ़रमाई है?

जवाब: जी हाँ! अल्लाह पाक के आख़िरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वसीला बनाने की तालीम भी इरशाद फ़रमाई है यानी अपनी उम्मत को वसीला बनाने का हुक्म भी दिया है, चुनांचे सुनने इब्ने माजा में है:

एक नाबीना सहाबी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में हाज़िर हो कर दुआ के तालिब हुए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें इस तरह दुआ मांगने का हुक्म दिया: ऐ अल्लाह मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तेरी तरफ़ नबिए रहमत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ मुतवज्जा होता हूँ ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, मैंने आप के वसीले से अपने रब की तरफ़ अपनी इस हाजत में तवज्जो की ताकि मेरी हाजत पूरी कर दी जाये, ऐ अल्लाह! पस तू मेंरे लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत क़बूल फ़रमा। (ابن ماجہ، کتاب الصلاۃ، باب ماجاء فی صلاۃ الحاجۃ، ٢/١٥٧، الحدیث:١٣٨٥)

हज़रते उस्मान बिन हुनैफ रज़ी अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: हम अभी आपस में बात चीत ही कर रहे थे कि वो नाबीना शख़्स (जब दोबारा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बारगाह में हाज़िर हुआ तो यूं महसूस हुआ कि उसे कोई तकलीफ़ ही ना थी यानी वो नाबीना ही ना थे क्योंकि वो बीना हो चुके थे।

(معجم کبیر، ما اسند عثمان بن حنیف، ٩/٣١، حدیث:٨٣١٠)

वफ़ात शरीफ़ के बाद भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ी अल्लाहु अन्हुम मुसीबतों, जंगों और हाजात में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पुकारा करते और आप से इस्तिग़ासा किया करते थे। देखिए आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक दावते इस्लामी के इशाअती इदारे मकतबतुल मदीना की मतबूआ 752 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बनाम सीरते रसूले अरबी के

सफ़ा नंबर 705।

ऐ आशिकाने औलिया! अल्लाह पाक से दुआ है कि वो हमें औलियाए किराम की मुहब्बत में जीना मारना नसीब फरमाए, और हमें और हमारी आने वाली नस्लों को औलियाए किराम की गुलामी की सआदत नसीब फरमाए। आमीन



اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْف وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

पांचवाँ बाब

मज़ारात पर हाज़िरी देने का तरीक़ा

तर्तीब व तसहील

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान
अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

पांचवाँ बाब

मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा

सवाल: औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा क्या होना चाहिए ?

जवाब: किसी वली के मज़ार मुबारकपर हाज़िरी का तरीक़ा येह है कि अगर मुम्किन हो तो पायंती यानी क़दमों की तरफ़ से आए, चेहरा मुबारका की तरफ़ मुंह और काबे की तरफ़ पीठ कर के खड़ा हो, कमो बेश चार हाथ यानी दो गज़ दूर रहे, अगर कोई बिल्कुल क़रीब चला गया या ज़्यादा दूर रह गया तब भी कोई गुनाह नहीं है, तिलावत और दीगर इबादात करने वाले को तशवीश ना हो इस लिए दर्मियानी आवाज़ में इस तरह सलाम अर्ज़ करे अस्सलामु अलैकुम या सय्यिदी यानी ऐ मेरे आक़ा! आप पर सलाम हो। (فتاویٰ رضویہ، ۹/ ۵۲۲ ماخوذ اًرضافاؤنڈیشن مرکز الاولیالاہور)

अब एक बार सूरए फ़ातिहा, 11 मर्तबा क़ुल हुवल्लाह शरीफ़ अव्वल व आखिर तीन तीन बार दुरूदे पाक पढ़ कर ईसाले सवाब करें, ईसाले सवाब के लिए यही पढ़ना लाज़िमी नहीं है बल्कि कुछ भी पढ़ सकते हैं मिसाल के तौर पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर भी ईसाले सवाब हो सकता है बल्कि नमाज़ें, रोज़े, हज, उमरा, नेकी की दावत, इन्फ़िरादी कोशिश, रास्ते से कोई पत्थर वग़ैरा हटा दिया ताकि मुस्लमानों को तकलीफ़ ना हो, सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिरकत अलग़रज़ किसी भी नेक काम का ईसाले सवाब किया जा सकता है लिहाज़ा इस तरह के नेक कामों का सवाब मज़ार वाले बुज़ुर्ग की बारगाह में नज़्र कर दें, फिर वापिस होते हुए उलटे क़दमों पलटें ताकि मज़ार मुबारकको पीठ ना हो।

मज़ारात का अदबो एहतिराम किस हद तक किया जाये?

सवाल: मज़ारात का अदबो एहतिराम किस हद तक किया जा सकता है ?

जवाब: मज़ारात के अदबो एहतिराम और किसी से अक़ीदतो मुहब्बत और निस्बत के सबब उस के अदबो एहतिराम में इस हद तक बढ़ने की इजाज़त है जब तक शरीअत का कोई स्पीड ब्रेकर ना आ जाए मिसाल के तौर पर अदब व ताज़ीम के पेशे नज़र किसी को सज्दा नहीं कर सकते कि यहां शरीअत की तरफ़ से मुमानअत मौजूद है।

(فتاویٰ رضویہ، ۲۲/۴۷۶-کفریہ کلمات کے بارے میں سُوال جواب، ص۱۰۳ماخوذاً مکتبۃالمدینہ باب المدینہ کراچی)

आला हज़रत और अदब

बाक़ी अदबो ताज़ीम का हर वो काम जिस से शरीअत ने मना नहीं किया वो ख़ुद बख़ुद जाइज़ है अगरचे क़ुरआने पाक और अहादीसे मुबारका में उस की सराहत ना मिलती हो, बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम ने ऐसे काम किए भी हैं मिसाल के तौर पर आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं : कि मैंने जब से होश संभाला है और मुझे बग़दाद शरीफ़ की सम्त का पता चला है तो मैंने उस तरफ़ कभी जान बूझ कर पांव नहीं किए कि मेरे पीरो मुर्शिद गौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार उस तरफ़ है और आप कादरियों के मुर्शिद हैं। (سوانح امام احمد رضا، ص۱۱۷ مکتبہ نوریہ رضویہ سکھر)

आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह हुज़ूर ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के अदब की वजह से उस सम्त पांव नहीं करते थे, इस से वो लोग सबक़ हासिल करें जो काबा शरीफ और मदीना शरीफ़ की तरफ़ पांव फैलाने से भी नहीं चूंकते, उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए कि बा अदब बा नसीब, ऐसा ही

अदबो एहतिराम पर मुश्तमिल एक वाक़िआ हज़रते सय्यिदुना इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह के बारे में भी मनक़ूल है चुनांचे :

इमामे आज़म और अदब

आप रहमतुल्लाह अलैह के उस्तादे गिरामी का मकाने आलीशान सात गलियां छोड़ कर था लेकिन फिर भी आप रहमतुल्लाह अलैह अदब की वजह से उस तरफ़ पांव नहीं फैलाते थे। (حضرت سیدنا امام اعظم، ص ۹۲ زاویہ پبلشرز مرکز الاولیا لاہور)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान और इमामे आज़म अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैहिमा तो इतनी दूर से भी अपने बुज़ुर्गों की तरफ़ पांव ना करें और हम इतने क़रीब से मज़ार मुबारककी तरफ़ पीठ कर लें तो येह मुनासिब नहीं है।

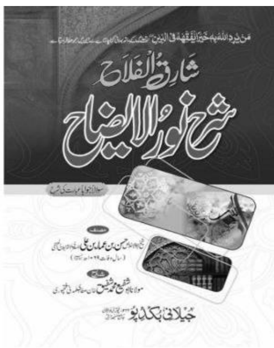
ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का अपने मुर्शिद के मज़ार का अदब

दावते इस्लामी के इशाअती इदारे मकतबतुल मदीना के रिसाले फैज़ाने ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के सफ़ा नंबर 16 पर येह वाक़िआ है कि एक मर्तबा ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह अपने मुरीदीन को मलफ़ूज़ात से नवाज़ रहे थे, दौराने गुफ़्तगु एक तरफ़ रुख कर के आप बार बार खड़े हो जाते कि बुज़ुर्गों की बसा औक़ात अपनी एक कैफ़ीयत होती है, मुरीदीन में से किसी और की हिम्मत ना हुई कि इस की वजह मालूम कर सके, लेकिन एक मंज़ूरे नज़र मुरीद ने पूछ लिया कि बार बार खड़े होने की वजह बयान फरमा दीजिए ताकि हमारी तअज्जुब की कैफ़ियत दूर हो सके, ख़्वाजा साहिब रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि मेरे पीरो मुर्शिद हज़रते शैख़ उस्मान हरवनी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक इस तरफ़ है, पस दौराने गुफ़्तगु जब मुझे याद आ जाता था तो मैं उस की तरफ़ रूख कर लेता था और अदब व ताज़ीम की वजह से खड़ा हो जाता था।

(فوائد السالکین مع ہشت بہشت، ص۱۳۸شبیر برادرز مرکز الاولیالاہور)

ख़्वाजा साहिब रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब का नाम हज़रते सय्यिदुना शैख़ उस्मान हरवनी रहमतुल्लाह अलैह हैं, बाज़ लोग इसे हरूनी या हारूनी पढ़ते हैं लेकिन अस्ल में हरवनी है, इन का मज़ारे मुबारक मक्का शरीफ के मुक़द्दस क़ब्रिस्तान जन्नतुल मअला में है, मौजूदा दौर में उस मज़ार मुबारकपर गुंबद और ख़ूबसूरत जालियाँ वग़ैरा कुछ नहीं, ख़्वाजा साहिब इतने दूर होने के बावजूद भी अपने पीर साहिब के मज़ार का एहतिराम करते थे, बहरे हाल येह अदबो एहतिराम के ऐसे वाक़िआत हैं जो हर एक नहीं कर पाता और जिन्होंने किए उन पर कोई ऐतिराज़ भी नहीं हो सकता, अदबो एहतिराम की इन बातों के जाइज़ होने के लिए इतना ही काफ़ी है कि शरीअत ने इन से मना नहीं किया और लोग अक़ीदत व मुहब्बत के इज़हार के लिए शरीअत के दायरे में रह कर अपने अपने अंदाज़ में जो कुछ करते हैं तो उनको गलत कहने वाले ख़ुद गलती पर हैं, इन बातों का सबूत मांगने से पहले सोचना चाहिए कि कई ऐसी बातें हैं जिनकी क़ुरआन व हदीस में सराहत नहीं मिलती लेकिन सब ही उन्हें कर रहे हैं ।

अल्लाह पाक हमें औलियाए किराम की मज़ारों का अदब करने और उनके फुयूज़ो बरकात से हिस्सा पाने की तौफीक अता फरमाए।







اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْف وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

छठा बाब

तरीक़त के सिल्सिलों का तआरुफ़

तर्तीब व तसहील
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान
अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

छठा बाब

तरीक़त के सिल्सिलों का तआरुफ़

तसव्वुफ़ के सिल्सिलों के नाम

औलियाए उम्मत के चंद सिल्सिलों के नाम येह हैं:

(1) सिल्सिला इयाज़िया: येह हज़रते शैख़ फुज़ैल इब्ने ईयाज़ रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(2) सिल्सिला इब्राहीमिया: येह हज़रत शैख़ इब्राहीम अदहम रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(3) सिल्सिला अज्मिया: येह हज़रत शैख़ हबीब अज्मी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(4) सिल्सिला तैफ़ूरिया: येह हज़रत शैख़ बा यज़ीद बिस्तामी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(5) सिल्सिला कर्ख़िया: येह हज़रत शैख़ मारूफ़ कर्ख़ी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(6) सिल्सिला सक़तिया: येह हज़रत शैख़ सिरी सक़ती रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(7) सिल्सिला जुनैदिया: येह हज़रत जुनैद बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(8) सिल्सिला चिश्तिया: येह हज़रत शैख़ अबू इस्हाक़ चिश्ती शामी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

कुछ बुज़ुर्गाने दीन इस सिल्सिले को हज़रते शैख़ उस्मान हरवनी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब करते हैं।

(9) **सिल्सिला सुहर्वर्दिया:** येह हज़रत शैख़ ज़ियाउद्दीन अबू नजीब सुहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(10) **सिल्सिला क़ादरिया:** येह हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(11) **सिल्सिला नूरिया:** येह हज़रत शैख़ अबुल हसन नूरी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(12) **सिल्सिला शाज़लिया:** येह हज़रत शैख़ अबुल हसन अली अब्दुल्लाह शाज़ली रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(13) **सिल्सिला साबिरिया:** येह हज़रत शैख़ अलाउद्दीन साबिर कलयरी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

हज़रत शैख़ अलाउद्दीन साबिर कलयरी रहमतुल्लाह अलैह बाबा फ़रीद गंजे शकर फ़रीदुद्दीन मसऊद रहमतुल्लाह अलैह के भांजे हैं।

(14) **सिल्सिला रिफ़ाइया:** येह हज़रत शैख़ सैय्यिद अहमद रिफ़ाई रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(15) **सिल्सिला निज़ामिया:** येह हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(16) **सिल्सिला अशरफिया:** येह हज़रत शैख़ मख्दूम अशरफ़ जहांगीर सिमनानी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(17) **सिल्सिला नक़्शबंदिया:** येह हज़रत शैख़ बहाउद्दीन नक़्शबंद रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(18) **सिल्सिला बरकातिया:** येह हज़रत शैख़ बरकतुल्लाह मारहरवी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(19) **सिल्सिला मदारिया:** येह हज़रत शैख़ शाह बदीउद्दीन क़ुतुब मदार रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(20) सिल्सिला शत्तारिया: येह हज़रत शैख़ अब्दुल्लाह शत्तारी (बाबा बुल्ले शाह क़ादरी) रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(21) सिल्सिला अबुल उलाईया: येह हज़रत अमीर अबुल उला सरताजे आगरा रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(22) सिल्सिला मुजद्दिदिया: येह हज़रत शैख़ मुजद्दिदे अल्फ़े सानी शैख़ अहमद सरहिंदी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(23) सिल्सिला रशीदिया : येह हज़रत शैख़ दीवान अब्दुर्रशीद जौनपुरी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(24) सिल्सिला क़लंदरिया: येह हज़रत शैख़ शाह बू अली क़लंदर पानीपती रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब है।

(25) सिल्सिला नक़ीबिया : येह हज़रत ख़्वाजा ए ख़्वाजगान फ़क़ीर सूफ़ी मुहम्मद नक़ीबुल्लाह शाह, आस्ताना आलिया नक़ीबाबाद शरीफ़, क़सूर पंजाब से मंसूब है।

अगरचे बाद में भी कुछ सिल्सिले बने हैं मगर बाद वाले इन्ही बड़े सिल्सिलों की शाख़ें हैं।

इन तमाम सिल्सिलों की अस्ल चार सिलसिले हैं जो कि येह हैं :

(1) क़ादरिया सिल्सिला
(2) चिश्तिया सिल्सिला
(3) नक़्शबंदिया सिल्सिला
(4) सुहरवर्दिया सिल्सिला

इन चारों सिल्सिलों का मुख़्तसर तआरुफ़ मुलाहिज़ा कीजिये :

(1) क़ादरिया सिल्सिला

इस ख़ानदाने तरीक़त के बानी महबूबे सुब्हानी हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह हैं।

सिल्सिलए आलिया क़ादरिया का तअल्लुक़ शैख़ मुहिय्युद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह से है, आपकी शान में आशिक़े रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान रहमतुल्लाह अलैह एक क़सीदे में फ़रमाते हैं :

वाह क्या मर्तबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊंचे ऊंचे के सरों से क़दम बाला तेरा
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आँखें वो है तलवा तेरा
तेरी सरकार में लाता है रज़ा उस को शफ़ीअ
जो मेरा ग़ौस है और लाडला बेटा तेरा

सिल्सिलए क़ादरिया को उम्मुस्सलासिल भी कहा जाता है यानी तमाम सिल्सिलों की अस्ल, इस ख़ानवादे में तक़्वा व तहारत के इलावा शरीअत की सख़्ती से पाबंदी है और बातिन की आरास्तगी के लिए ज़ाहिर पे भी गहरी नज़र है।

(2) सिल्सिला नक़्शबंदिया

सिल्सिला नक़्शबंदिया के बानी हज़रत बहाउद्दीन नक़्शबंद रहमतुल्लाह अलैह हैं, इस सिल्सिले की निस्बत हज़रत सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहु अन्हु से है, येह सिल्सिलए तरीक़त मुख़्तलिफ़ नामों से मौसूम रहा।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहु अन्हु से हज़रते शैख़ बा यज़ीद बिस्तामी रहमतुल्लाह अलैह तक येह सिल्सिला **"सिद्दीकिया"** कहलाया, हज़रत बा यज़ीद बिस्तामी रहमतुल्लाह अलैह से हज़रत ख़्वाजा अब्दुल ख़ालिक़ ग़जदवानी रहमतुल्लाह अलैह तक "तैफ़ूरिया" कहलाया, ख़्वाजा अब्दुल ख़ालिक़ ग़जदवानी से ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबंद रहमतुल्लाह अलैह

तक **"ख़्वाजगानिया"** कहलाया और हज़रत ख़्वाजा नक़्शबंद से शैख़ अहमद सरहिंदी (मुजद्दिदए अलफे सानी रहमतुल्लाह अलैह तक **“नक़्शबंदिया”** के नाम से जाना और पहचाना जाता रहा और हिंदुस्तान में हज़रत मुजद्दिदे अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैह से मंसूब हो कर **“मुजद्दिदिया”** कहलाया और हज़रते अमीर अबुल उला सरताजे आगरा से मंसूब हो कर सिल्सिला **“अबुल उलाइया”** कहलाया।

इस सिल्सिले में शरीअत की पाबंदी और इत्तिबाए सुन्नत यानी सुन्नतों पर अमल करने पर काफ़ी ज़ोर दिया गया है, ज़ाहिरी और बातिनी हर लिहाज़ से शरीअत की पाबंदी ज़रूरी है, तक़्वे के साथ एहतियात का ज़्यादा ख़्याल रखा गया है, हज़रात नक़्शबंदिया अज़ीमत पर अमल को हत्तल मक़दूर हाथ से नहीं जाने देते और रुख़सत पर अमल करने को इख्तियार नहीं करते।

(3) सिल्सिला चिश्तिया

इस ख़ानदाने तसव्वुफ़ के बानी हज़रत शैख़ अबू इस्हाक़ चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह हैं, इस सिल्सिले की इशाअत चिश्त शहर से हुई फिर संजान, दमिश्क़, सजिस्तान, खुरासान और नीशापूर से होता हुआ येह सिल्सिलए तरीक़त सुल्तानुल हिंद हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के ज़रीये हिन्दुस्तान आया।

इस सिल्सिले में ज़ाहिर से ज़्यादा बातिन पर ज़ोर दिया गया है और शरीअत की पाबंदी क़दम क़दम पर लाज़िम रखी गई है, सिल्सिलए चिश्तिया की चंद अहम खुसूसियात येह हैं :

(1) सिल्सिलए चिश्तिया की बुनियाद इश्क़े इलाही पर है, इबादत, रियाज़त और मुजाहिदा का अस्ल मक़्सूद सोज़े इश्क़ का फ़रोग़ है।

(2) नफ्स की मुख़ालिफ़त इस सिलसिले में कलीदी यानी चाबी की हैसियत रखती है, चिश्ती मशाइख़ के नज़दीक नफ्स सबसे बड़ा बुत है जिसकी शिकस्त यानी हार राहे सुलूक की पहली मंज़िल है, शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं कि चिश्ती सूफिया के नज़दीक नफ्स की मुख़ालिफ़त इबादत की अस्ल है और इस की मुवाफ़िक़त कुफ्र है।

(4) सिल्सिला सुहरवर्दिया

इस तरीक़त के ख़ानवादे के बानी हज़रत शैख़ ज़ियाउद्दीन अबू नजीब सुहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह हैं जो शैख़ वजीहुद्दीन अबू हफ्स रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा थे।

इस सिल्सिले की इशाअत आपके मुरीद व ख़लीफ़ा शैखुश्शुयूख हज़रत शहाबुद्दीन सुहरवर्दी रहमतुल्लाह अलैह से हुई, आपकी मशहूरे ज़माना किताब अवारिफुल मआरिफ़ तसव्वुफ़ की गिरां क़द्र यानी क़ीमती किताब और सूफिया के लिए मशअले हिदायत है।

इस सिल्सिलए तरीक़त में इत्तिबा और मुहब्बते इलाही की तालीम दी गई है बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी ऐन मुहब्बते इलाही है।

शैख़ शहाबुद्दीन सुहरवर्दी लिखते हैं: पस जो जितना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों पर अमल करने वाला होगा उसी क़द्र मुहब्बते इलाही का हिस्सेदार है।

इस सिल्सिलए तसव्वुफ़ में इल्मो अमल दोनों पर तवज्जोह दी जाती है लेकिन अल्लाह पाक के आखिरी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी और मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ज़्यादा ज़ोर है।

इस सिल्सिले की इशाअत का मर्कज़ बग़दाद था, वहां से येह सिल्सिला हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी रहमतुल्लाह अलैह के ज़रीये हिन्दुस्तान आया और पंजाब, यूपी, बिहार और बंगाल में ख़ूब फैला।

अल्लाह पाक हमें तमाम सिलसिलों की बरकतों से मालामाल फरमाए।

आओ तुम को मैं बताऊं अस्फ़िया कितने ही हैं
सर ज़मीने आगरा पर औलिया कितने ही हैं

जल्वए नूरे ख़ुदा की हर तरफ़ देखी ज़िया
चार सू रौशन चिराग़ पुर ज़िया कितने ही हैं

गिनते गिनते थक ना जाएं येह तुम्हारी उंगलियां
जा ब जा वो बंदगाने किब्रिया कितने ही हैं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْف وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه   وَعَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

सातवाँ बाब

आगरा के औलिया का मुख्तसर खाका

आप इस बाब में पढ़ सकेंगे

खानवादए कादरिया के बुज़ुर्गाने दीन
खानवादए चिश्तिया के बुज़ुर्गाने दीन
खानवादए नक़्शबंदिया के बुज़ुर्गाने दीन
खानवादए शत्तारिया के बुज़ुर्गाने दीन
खानवादए मदारिया के बुज़ुर्गाने दीन
उलमा फुज़्ला की जमाअत
मुहद्दिसीन की जमाअत
मुफ़स्सिरीन की जमाअत
कारियों की जमाअत
मुअर्रिखीन की जमाअत

तर्तीब व तसहील

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान
अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

सातवाँ बाब

आगरा के औलिया का मुख्तसर खाका

عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِيْنَ تَنَزَّلُ الرَّحْمَةُ

सालिहीन यानी नेक लोगों के ज़िक्र के वक़्त अल्लाह पाक की रहमत नाज़िल होती है।

शैखुल इस्लाम हज़रत अब्दुल्लाह अंसारी से मनक़ूल है कि जहां तक हो सके अल्लाह पाक के औलिया की बातें याद रखो और जो येह भी ना हो सके तो उन के नाम मुबारक ही याद रखो कि यही काफ़ी हैं।

(بوستانِ اخیار، ص ا)

हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह अमीर ख़ुसरु रहमतुल्लाह अलैह से अक्सर इरशाद फ़रमाया करते थे कि : ऐ ख़ुसरु! मशाइख के मलफ़ूज़ात यानी उनकी बातों को याद करो और उनका ज़िक्र किया करो, कि उनके ज़िक्र से दिल में कैफ़ीयत पैदा होती है।

(بوستانِ اخیار، ص ا)

मौलाना सैय्यिद अब्दुल वाहिद बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह साहिबे सबए सनाबिल फ़रमाते हैं : सालिहीन का ज़िक्र ग़मगीन दिलों के सुकून का सबब होता है, येह बुज़ुर्गाने दीन अगरचे हमारी ज़ाहिरी निगाहों से दूर और आलमे ख़ाक से रुख़स्त हो कर बहिश्त नशीनों के हम नशीन हैं लेकिन क़ुरआने पाक के फ़रमान से अब तक ज़िंदा हैं और क़ियामत तक ज़िंदा रहेंगे जैसा कि अल्लाह पाक ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ـ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿١٦٩﴾

तरजमए कंज़ुल ईमान : और जो अल्लाह की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा ना ख़्याल करना बल्कि वो आपने रब के पास ज़िंदा हैं रोज़ी पाते हैं। (پ۴، آلِ عمران،۱۶۹)

लेकिन उन बुज़ुर्गाने दीन के ज़ाहिरी तौर पर इस दुनिया से चले जाने के बाद भी हम उनकी रूहों से उसी तरह फ़ैज़ हासिल कर सकते हैं जैसा कि हम उनकी दुन्यवी ज़िंदगी में फ़ैज़ हासिल करते थे, उनके मुक़द्दस तज़किरे, उन के मुबारक कलिमात (यानी उनकी बातें) हमारी हिदायत का सबब बन सकते हैं, उनके हालात को पढ़ना, लिखना, सुनना इबादत में दाख़िल और बरकत का सबब है और उनके अहकाम व हिदायत की पैरवी नजात का सबब है, उन में वही कीमियाई असर और मक़बूलियत की तासीर मौजूद है जो साहिबे कलिमात की नज़र व ज़बान में मौजूद थी, हाँ ! नियाज़ मंदी, ख़ाकसारी ज़रूरी और अक़ीदत लाज़िमी है।

अलबत्ता जहां तक मुम्किन हो औलिया अल्लाह के मज़ारात पर ख्वाहिशाते दुन्यवी को नज़र अंदाज कर के दौलत ख़ुदा शनासी के फ़ैज़ की दुआ करनी चाहिए।

राक़िमुल हुरूफ़ (सईद अहमद मारहरवी) को बचपन से मर्दाने ख़ुदा (यानी औलियाए किराम) के साथ दिली मुहब्बत और अक़ीदत है और मुद्दत से बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात की ज़ियारत और मज़ारात और हालात की तहक़ीक़ व तफ़तीश का शौक़ दामनगीर है और इस तलाश व जुस्तजू में सैकड़ों तारीख़ों और तज़किरों की किताबों की वर्क़ गरदानी और बीसियों शहरों और जंगलों मे जाने का फख्र हासिल है, अल्लाह पाक "مَنْ اَحَبَّ قَوْماً حُشِرَ مَعَهُمْ" यानी जो कोई जिस गिरोह के साथ मुहब्बत

रखता है उसी के साथ क़ियामत के दिन उस को उठाया जाएगा, के शर्फ़ से मुशर्रफ़ फ़रमाए।

पिछले साल मैं आगरा की तारीख़ लिखते वक़्त बुज़ुर्गाने अकबराबाद (आगरा) के अहवाले बा कमाल जमा करने और तर्तीब देने का ख़्याल पैदा हुआ था चुनांचे आगरा की तारीख़ ख़त्म करने के बाद चंद बुज़ुर्गाने दीन के हालात लिख भी लिए थे लेकिन كُلُّ اَمْرٍ مَرْهُوْنٌ بِوَقْتِهٖ यानी हर काम का वक़्त मुक़र्रर है, की मजबूरी रुकावट बनी और दो तीन सफ़हात के बाद फिर क़लम उठाने की तौफ़ीक़ नसीब ना हुई, बिल आख़िर "اِذَا اَرَادَ اللّٰهُ شَيْأً فَهَيَّاَ اَسْبَابَهٗ" यानी अल्लाह पाक जब किसी चीज़ का इरादा फ़रमाता है तो वो उस के अस्बाब को पैदा फरमा देता है) ने दस्त गीरी फ़रमाई और ख़ुदा के फ़ज़्लो करम और बुज़ुर्गाने बा कमाल की रुहानी इमदाद से थोड़े ही अरसे में पैकरे ख़्याल ने आलमे वुजूद में आकर सर ज़मीन क़िरतासी में जलवा फ़रमाया और 'बोसताने अख़यार' का तारीख़ी ताजे सर पर रखा।

वज़ाहत : इस किताब का नाम मुसन्निफ़ ने ऐसा रखा जिसके अदद 1331आते हैं जो कि किताब के तसनीफ़ किए जाने के साल की जानिब इशारा कर रहे हैं कि ये किताब 1331 हिजरी में लिखी गई है।

अल्लाह पाक इस बोस्ताने अख़यार को चश्मए आबे हयात से सैराब कर के बकाए दवाम के मर्तबे पर पहुंचा दे, خَتَمَ اللّٰهُ بِالْخَيْرِ وَ عَلَى اللّٰهِ اِعْتِمَادِى यानी अल्लाह पाक इस को ख़ैर के साथ ख़त्म करे और अल्लाह पाक पर ही मेरा भरोसा है।

अब आईए सरसरी तौर से बोस्ताने अख़यार की सैर भी फ़रमाते जाईए, इस फले फूले गुलज़ारे बहिश्ती के नज़ारे से आँखों में नूर और दिल

में सुरूर पैदा कीजिए, काग़ज़ी सर ज़मीन पर ख़ुल्दे बरीं का मंज़र देख लीजिए, चमने मुहम्मदिया की फलवार को मुलाहिज़ा फ़रमाईए और इस बोस्ताने पुर बहार के सब्ज़ा ज़ार को देखिए, इस गुलज़ारे अबरार के फूल और पत्तों से अल्लाह पाक की मारिफ़त का सबक़ हासिल कीजिए।

वो देखिए बागे बहिश्त की पेशानी पर

"اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ"

(यानी अल्लाह पाक आसमानो ज़मीन का नूर है)

के नूर से "سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ" (सलाम हो तुम पर तुम ख़ूब रहे तो जन्नत में जाओ हमेशा रहने) लिखा हुआ है।

इस के रंग बिरंग के ख़ुशनुमा पौदे अगरचे क़ुदरती तौर पर बहुक्मे فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ (यानी हमने एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी) एक दूसरे पर फ़ज़ीलत रखते हैं। लेकिन اَلْفُقَرَاءُ كَنَفْسٍ وَاحِدَةٍ (यानी दरवेश लोग एक जान की तरह हैं) और सब के फूल पत्तों से अल्लाह पाक के जल्वे नज़र आते हैं।

नज़र जिस गुल पे पड़ती है मेरी गुलज़ार आलम में
हर इक पत्ते पे जलवा देखता हूँ हुस्ने क़ुदरत का

इस बागे पुर बहार में हर किस्म के पौधे एक तर्तीब में अपना अपना जुदागाना रंग और मुख़्तलिफ़ बहारें दिखा रहे हैं।

लगाया है माली ने येह बाग़ ऐसा
नहीं जिसमें छोटा बड़ा कोई पौधा

इस किताब में चार किस्म के औलिया का तज़्किरा है

इस बोसताने बे ख़िज़ां में चार किस्म के अस्हाब रौनक अफ़रोज़ हैं:

(1) **अव्वल** मशाइख़ीने इज़ाम जिन्होंने ज़ाहिरी और बातिनी सफ़ाई हासिल कर के कमाल पैदा किया।

(2) **दोम** दानिशमंद अस्हाब जो उलमा फुज़ला के लक़ब से मशहूर हैं।

(3) **सोम** मज्ज़ूबाने बाकमाल और क़लंदराने नामदार जिनका अंदर आबाद और बाहर का बर्बाद है।

(4) **चहारुम** शुहदाए बा वक़ार जिन को हयाते जावेद का मर्तबा हासिल है।

आगरा के औलिया का पहला तबक़ा

आगरा के औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम में सब से पहले तबक़े में क़ादरिया, चिश्तिया, नक़्शबंदिया, शत्तारिया, मदारिया वग़ैरा मुख़्तलिफ़ ख़ानवादों के मशाईख़ीन शामिल हैं।

ख़ानवादए क़ादरिया के बुज़ुर्गाने दीन

ख़ानवादए क़ादरिया के सरबराहों में अमीर सैय्यिद इस्माईल क़ादरी, मीर सैय्यिद जलाल क़ादरी, शैखुश्शुयूख मुहम्मद सालेह क़ादरी, सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी, शैख़ मुहम्मद ख़्याली, शाह अब्दुर्रहमान क़ादरी, शैख़ यूसुफ़ क़ादरी, शैख़ मुहम्मद मारूफ़ क़ादरी, सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी, हकीम नूरुद्दीन क़ादरी, हकीम महेर अली क़ादरी, रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बुज़ुर्गाने बा कमाल इस किताब में रौनक अफ़रोज़ हैं यानी इनके तज़्किरे मौजूद हैं।

ख़ानवादए चिश्तिया के बुज़ुर्गाने दीन

ख़ानवादए चिश्तिया में शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, अब्दुल मोमिन चिश्ती, शाह मुहम्मद चिश्ती, शैख़ मुहम्मदी चिश्ती, मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी, शैख़ मुनव्वर चिश्ती, शाह यार मुहम्मद चिश्ती, शैख़ सिधारी चिश्ती, शैख़ ज़ैनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा बुज़ुर्गाने चिश्त अहले बहिश्त का तज़्किरा इस किताब में मौजूद है।

ख़ानवादए नक़्शबंदिया के बुज़ुर्गाने दीन

मशाइख़ीने नक़्शबंदिया में हज़रत शाह अबुल उला, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, अमीर अब्दुल्लाह, मीर मुहम्मद नोअमान, ख़्वाजा मुहम्मद मीर, मुहम्मद इब्राहीम, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा।

ख़ानवादाए शत्तारिया के बुज़ुर्गाने दीन

और मशाइख़ीने शत्तारिया में शैख़ ज़ियाउल्लाह, शैख़ अब्दुल्लाह, शैख़ बुरहान रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा।

ख़ानवादए मदारिया के बुज़ुर्गाने दीन

और ख़ानवादए मदारिया में शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी, मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैहिम का तज़्किरा मौजूद है।

नक़्शबंदिया पौधे में चिश्तिया शाख़ पैवंद कर के एक जदीद शजर पुर समर इस बाग़ में तैयार किया गया है जो अबुल उलाईया के नाम से मशहूरो मारुफ़ है, इस की शाख़ें दूर दूर तक फैली हुई हैं, इस सिलसिले के बानी हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के इलावा अमीर फ़ैज़ुल उला, अमीर नूरुल उला, अमीर अब्दुल माजिद, अमीर अब्दुल मुनइम, ख़लीफ़ा अबुल क़ासिम, मुल्ला मुहम्मद उमर, सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल, सैय्यिद

मुहम्मद जाफ़र, शाह फ़रहाद, शैख़ वली मुहम्मद वग़ैरा इसी फ़ल आवर दरख्त के औलियाए किबार हैं जिनका ज़िक्रे खैर भी इस किताब में मौजूद है।

इनके इलावा और भी बहुत सारे बड़े बड़े औलियाए कामिलीन रहमतुल्लाह अलैहिम का ज़िक्रे खैर इस किताब में जगमगा रहा है जिनके सिलसिलए मारिफ़त का पता नहीं चला, या कई कई सिलसिलों में मुंसलिक हैं, शैख़ अबुल फत्ताह, मीर अबुल गैस बुख़ारी, शैख़ अबू बक्र क़ुरैशी, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, हाफ़िज़ अहमद, शैख़ अफ़ज़ल मुहम्मद, सैय्यिद बाक़ी, शैख़ बा यज़ीद शरवानी, शैख़ बा यज़ीद ख़वेशगी, ख़्वाजा बख़्तियार, सैय्यिद बदरुद्दीन, सैय्यिद भिकारी, मीर तपां, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, शैख़ चंदन क़ुरैशी, मौलाना शैख़ हसन शीराज़ी, शैख़ हुसैन बदखशी, सैय्यिद हुसैन, शाह हैदर, ख़्वाजा ख़िज़्र, शैख़ ख़लील, अमीर सैय्यिद दाऊद, शाह रफ़ीअ सब्ज़ पोश, मीर रफ़ीउज़्ज़मान, शैख़ सालिम, सक़ा, सैय्यिद शाह मीर, मीराँ आरिफ़ हुसैनी, शैख़ अब्दुल्लाह खटवासन, शैख़ अब्दुल्लाह बुख़ारी, शैख़ अब्दुलहकीम, ख़्वाजा अब्दुर्रऊफ़, शाह अब्दुल लतीफ़ बरी, शैख़ अबदी, शैख़ फ़तहुल्लाह, शाह फ़तह अली, शैख़ कमाल, शैख़ कमालुद्दीन हुसैन, शाह मुजाहिदुद्दीन, शैख़ मुहिब्बुल्लाह, सैय्यिद मुहम्मद बुख़ारी, शैख़ मुहम्मद ज़ाहिद, शैख़ मुहम्मद आरिफ़, मौलाना मुहम्मद आरिफ़, शैख़ महमूद, सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन, शैख़ नाज़िर, शैख़ नसीरुद्दीन अंसारी, शाह नूरुज़्ज़मान, शैख़ वली मुहम्मद नारनौली, शाह हरे भरे, शैख़ यूसुफ़ लंक, शैख़ यूसुफ़ अंसारी, शाह अज़मतुल्लाह, शेर अली शाह, नन्हे मियां रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा ।

आरिफ़ा और सालिहा औरतों में से बीबी जीवनी, चांद बीबी, बीबी ख़ाकी शाह, बीबी क़ुतुबन, बीबी नबफ़शा, बेगम सुल्तान रहमतुल्लाह अलैहिन्ना के हालात इस किताब में मौजूद हैं।

आगरा के औलिया का दूसरा तबक़ा

(2) **तबक़ए दोम** यानी दूसरा तबक़ा उलमा, फुज़ला के गिरोह में मुहद्दिसीन, मुफ़स्सिरीन, क़ुर्रा (यानी क़ारी), मुअर्रिख़ीन, शोअरा, उलमा, फुज़ला वग़ैरा शामिल हैं।

उलमा व फुज़ला की जमाअत

उलमा व फुज़ला में शैख़ जलालुद्दीन अंसारी, सैय्यिद शाह मीर सामाना, मुफ़्ती अबुल फ़तह, मुफ़्ती नासिर, मुफ़्ती ईसा, मुफ़्ती बहाउद्दीन, मुफ़्ती जुनैद, मुल्ला अब्दुर्रशीद, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़, मौलाना इमादुद्दीन, क़ाज़ी क़ुर्बान, क़ाज़ी अबू बक्र, क़ाज़ी जलालुद्दीन, क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी, क़ाज़ी नासिर, मौलाना मीर, मौलाना मुहम्मद सईद, मौलवी अब्दुल्लाह, मीर हादी, हिम्मत ख़ां, मीरज़ा ईज़द बख्श, अल्लामा अफ़ज़ल ख़ां, शैख़ अबुल ख़ैर, मौलाना आदिल, मौलाना अहमदी रहमतुल्लाह अलैहिम ।

मुहद्दिसीन की जमाअत

और मुहद्दिसीन में मीर रफ़ीउद्दीन सफवी, शैख़ अब्दुल वह्हाब, मौलाना मीर कलां, हाजी इब्राहीम, सैय्यिद जाफ़र, शैख़ जमालुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहिम।

मुफ़स्सिरीन की जमाअत

और मुफ़स्सिरीन में शैख़ मुबारक साहिबे तफ़सीर मंबउल उयून, शैख़ फ़ैज़ी फ़य्याज़ी साहिबे तफ़सीर सवातिउल इल्हाम रहमतुल्लाह अलैहिम ।

क़ारियों की जमाअत

और क़ारियों में क़ारी हाफ़िज़ अब्दुल मलिक, क़ाज़ी हाफ़िज़ शैख़ मुहम्मद, क़ारी हाफ़िज़ अब्दुल करीम बसीर, क़ारी हाफ़िज़ मुहम्मद सालेह रहमतुल्लाह अलैहिम ।

मुअर्रिखीन की जमाअत

और मुअर्रिख़ीन में अल्लामा अबुल फ़ज़्ल, शैख़ अब्दुस्समद अंसारी साहिबे अख़बारुल असफिया, मीर मुहम्मद फ़ाज़िल साहिबे मुख़्बिरुल वासिलीन व तज़्किरतुल क़ुदमा, मौलवी सैय्यिद वारिस अली साहिबे शम्सुत्तवारीख रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा।

सूफ़ी शोअरा की जमाअत

और शोअरा में मौलाना अबुल वाजिद फ़ारग़ी, शैख़ ज़ैनुद्दीन ख्वानी, मौलाना शहाबुद्दीन मुअम्माई, मीर अब्दुल हय्य मशहदी, मुल्ला नज्मुद्दीन (क़ासिम काही), मुल्ला मक़सूद अली गुर्बती हिसारी, मियां नज़ीर वगैरा, चंद सूफ़ी शायर इस किताब में रौनक अफ़रोज़ हैं।

आगरा के औलिया का तीसरा तबक़ा

(3) तीसरे तबक़े में दो किस्में हैं:

(1) अव्वल मज्ज़ूबाने बाकमाल जिन में सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब, शाह विलायत, शैख़ अलाउद्दीन सानी, शैख़ इस्हाक़, शैख़ फूल, शैख़ मुबारक ग़ौस, शैख़ माखो, सैय्यिद निज़ाम, सैय्यिद मुनव्वर, जमाल शाह, सैय्यिद हबीब, सल्लू शाह, लोटन शाह, मिर्ज़ा अली शाह, बब्बू शाह, उस्मान ग़नी, मज़हर अली शाह रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा।

(2) और दूसरे क़लंदराने नामदार जिनमें शाह बर्दी, शाह शौक़ा, ख़ाकी शाह, हांडी मौक़ूफ़ शाह, रहमतुल्लाह अलैहिम वगैरा रौनक अफ़रोज़ हैं।

आगरा के औलिया का चौथा तबक़ा

(4) चौथे चमन में शुहदाए बावक़ार हैं जिनके बारे में क़ुरआन का ऐलान है :

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتٌ ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ﴿۱۵۴﴾

तर्जमए कंज़ुल ईमान : और जो ख़ुदा की राह में मारे जाएं उन्हें मुर्दा ना कहो बल्कि वो ज़िंदा हैं हाँ तुम्हें ख़बर नहीं। (پ۲،البقرۃ:۱۵۴)

कुतुबे सियर और तज़्किरए मशाईख़ीन में शुहदा का ज़िक्र बहुत कम बल्कि बराए नाम भी नहीं मिलता, इसी वजह से येह किताब उनके मुफ़स्सल हालात से ख़ाली है, लेकिन चूँकि उनका मर्तबा आली और रुत्बा बेहतर है, लिहाज़ा तबर्रुकन शुहदा का जो कुछ हाल मालूम हो सका कलमबंद कर दिया गया है, रौशन शहीद, सैय्यिद काले ख़ां शहीद, ज़ंगी शहीद, लुत्फ़ुल्लाह शहीद, सैय्यिद मुहम्मद शहीद, मीर मुहम्मद मुजाहिद शहीद, सैय्यिद हुसैन शहीद, सैय्यिद हसन शहीद, आग़र ख़ां शहीद, सैय्यिद ज़ैनुल आबिदीन शहीद, मीर दुस्तम ख़ां शहीद, अबुल फ़तह शहीद, सैय्यिद कल्लन शहीद, सुल्तान शहीद, लोटन शहीद, मीरन शहीद रहमतुल्लाह अलैहिम ।

जिन मशहूर औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम के हालात मुख़्तलिफ़ तारीख़ों और तज़्किरों में मौजूद हैं उनके हालात में उमूमन और खिर्के आदात और कश्फ़ो करामात के वाक़ियात में इख़्तिसार को मद्दे नज़र रखा गया है।

आगरा शहर का आबाद होना

आगरा अगर्चे बहुत पुराना शहर है मगर इस्लामी ज़माने और सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने से पहले येह एक गुमनाम जगह से

ज़्यादा वुक़अत नहीं रखता था, 907 हिज्री बमुताबिक़ 1501 ईस्वी में सिकन्दर लोदी ने इस को नये सिरे से आबाद कर के अपना दारुल खिलाफ़त मुक़र्रर किया, इस बादशाह की दरवेश परस्ती, इल्मी क़दरदानी और कमाल पर्वरी की बरकत से चंद ही रोज़ में येह नौ आबाद शहर मशाइख़ीने नामदार का मर्कज़ और शीराज़ व बग़दाद की तरह दारुल उलूम बन गया और सुल्तान की नेक नीय्यती, ख़ुदा दोस्ती, कमाल पर्वरी बहुत से अहले दिल बुज़ुर्गों और अहले कमाल आदमियों को दूर दराज़ इस्लामी मुल्कों से आगरा में खींच लाई और यहां की सुकूनत का बाइस हुई।

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में औलिया की आमद

चुनांचे शैख़ यूसुफ़ लंक, सैय्यिद रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस, सैय्यिद अब्दुल्लाह दानिशमंद, शैख़ यूसुफ़ अंसारी, शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती, शैख़ बुढन शत्तारी, शैख़ चंदन क़ुरैशी, शैख़ नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी, शैख़ अबुल फ़तह मक्की, शैख़ अबू बक्र क़ुरैशी, सैय्यिद इस्माईल क़ादरी, शैख़ अब्दुल मोमिन चिश्ती, शैख़ हसन शीराज़ी, क़ारी अब्दुल मलिक, शैख़ महमूद, सैय्यिद जाफ़र मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बुज़ुर्गोंने अकबराबाद सुल्तान सिकन्दर लोदी के अहद यानी ज़माने में आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए।

उनके बाद मुफ़्ती अबुल फ़तह, मुफ़्ती बहाउद्दीन, सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, शैख़ जलाल अंसारी, सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, शैख़ मुबारक, शैख़ ज़ैनुद्दीन, शैख़ शहाबुद्दीन मुअम्माई, मौलाना अबुल वाजिद फ़ारग़ी वग़ैरा बाबरी, हुमायूंनी अहद यानी ज़माने में आगरा तशरीफ़ लाए।

दसवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

दसवीं सदी हिज्री के अख़ीर तक जो अहदे अकबरी का आख़िरी ज़माना था, आगरा में उलमा फुज़ला और मशाईख़ीन का ख़ूब दौर दौरा रहा और हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, सैय्यिद बदरुद्दीन, क़ाज़ी जलालुद्दीन, क़ाज़ी नूरुल्लाह शोस्तरी, ख़्वाजा मुहम्मद यहया, शैख़ मुनव्वर चिश्ती, शैख़ आरिफ़ हुसैनी, शैख़ अब्दुल वह्हाब, मौलाना कमालुद्दीन हुसैन, शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, क़ारी शैख़ मुहम्मद ख़ालिदी, मौलाना मीर कलां, मौलाना मीर, क़ाज़ी नासिर, शैख़ अब्दुर्रहमान क़ादरी, अल्लामा अबुल फ़ज़्ल, शैख़ अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी, शैख़ अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ अबुल ख़ैर रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा उलमा फुज़ला और ख़ुदा शनास आगरा में तशरीफ़ लाए या पैदा हुए।

ग्यारहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

ग्यारहवीं सदी में जो कि जहांगीर और शाहजहाँ और आलमगीर का अहदे सलतनत है, ब निस्बत दसवीं सदी के तनज़्ज़ुली के आसार नुमायां होने लगे मगर फिर भी बाज़ मशाईख़ीन के तुफ़ैल हरा भरा रहा चुनांचे हज़रत शाह अबुल उला, मीर मुहम्मद नोअमान, सैय्यिद अहमद बुख़ारी, सैय्यिद जलाल बुख़ारी, सैय्यिद बाक़ी, शैख़ इस्माईल चिश्ती, अल्लामा अफ़ज़ल ख़ां, मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी, सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी, अमीर फ़ैज़ुल उला, शैख़ मुहम्मदी, शैख़ मुहम्मद सालेह, शैख़ नाज़िर, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़, मुल्ला अब्दुर्रशीद रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा बड़े बड़े मशहूर औलिया अल्लाह और उलमा, फुज़ला इस सदी में भी पैदा हुए।

बारहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी में इस्लामी सल्तनत के तनज़्ज़ुल के साथ आगरा के मशहूर औलिया में भी हैरत अंगेज़ तनज़्ज़ुल पैदा हुआ, अय्यामे तवाइफुल मुलूकी और जाटों और मराठों के ज़माने के तमाम शुरफा और मशाईख़ीन आगरा से रुख़स्त हो गए, जिस का येह नतीजा है कि तक़रीबन पूरी सदी में सिफ़र ही सिफ़र नज़र आता है, उस ज़माने से अंग्रेज़ों के ज़माने तक ऐसा तारीक यानी अंधेरा ज़माना गुज़रा कि बड़े बड़े औलिया अल्लाह और मशाईख़ीन की ख़ानक़ाहें, दरगाहें और मज़ारात तक खुद खुदा कर खत्म हो गए या कसमपुर्सी की वजह से बेनाम व लापता हो गए, किस क़द्र अफ़सोस की बात है कि पुराने बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम के मज़ारात में सिर्फ दो एक मज़ार मशहूर और चंद मज़ारात का निहायत तलाशो तहक़ीक़ात से पता चला है, शाह अब्दुल्लाह शत्तारी, शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी, मौलाना मीर कलां, शैख़ इस्माईल चिश्ती, हाजी इब्राहीम मुहद्दिस, अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल, सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैहिम वग़ैरा में से औलियाए किबार यानी बड़े औलियाए किराम के मज़ारात तक का पता व निशान नहीं मिलता, चंद बा फ़ैज़ व नूरानी मज़ारात मौजूद हैं, उन के मकीनों का नाम बताने वाला दुनिया में कोई नहीं मिलता।

अफ़सोस कि शैख़ मुबारक, शैख़ फ़ैज़ी, शैख़ अबुल ख़ैर वगैरा में से मशाहीर के मक़ाबिर नेस्तो नाबूद कर दिए गए और किसी को गवर्मैंट को मुतावज्जेह करना क्या मा'ना उफ़ तक करने की तौफ़ीक़ ना हुई।

जिनके नक़्शे पा को रखती थी ज़मीं सर पर ब फख्र
तुर्बुतों में ख़ाक आलूदा हैं वो आली गुहर
नाम उनका कोई अब भूले से भी लेता नहीं

जिनके दरवाज़ों पे डंका बजता था शामो सहर
ख़ाक में मर कर मिले अफ़सोस वो आली दिमाग़
अब निशाने क़ब्र भी उनके नहीं आते नज़र

सैंकड़ों मज़ारात आबादी में आ कर लापता हो गए यानी आबादी बढ़ने की वजह से मज़ारात खत्म कर दिये गये, पुराने बुज़ुर्गाने दीन की ख़ानक़ाहें अक्सर लबे जमुना यानी जमुना नदी के किनारे थीं, मुग़्लिया अहदे सल्तनत यानी ज़माने में वहां अमीर लोगों ने बड़ी बड़ी आलीशान हवेलियाँ और बाग़ात तामीर कराये, कुछ आसार यानी निशानियाँ उस ज़माने में नेस्तो नाबूद हो गए, अब उस मक़ाम यानी जगह पर गैर मुस्लिमों का मुहल्ला बेलन गंज आबाद है, जिस में ग़ालिबन एक घर भी मुसलमान का नहीं है, मुग़्लिया ज़माने के अमीर लोगों की बड़ी बड़ी हवेलियों में गैर मुस्लिम साहूकार आबाद हैं, इस से आगे बढ़ कर जान साहिब मशहूर सौदागर के वसीअ कारख़ाने (फ़्लोर मिल्ज़, कॉटन मिल्ज़, बर्फ़ कारख़ाना वग़ैरा) और पानी पहुंचाने के कारख़ाने वग़ैरा बन गए हैं, दो एक मज़ार जान साहिब के कारख़ानों के अंदर अब तक मौजूद हैं, मगर साहिबे मज़ारात के नामो निशान का कुछ पता नहीं चलता, अब इस नवाह यानी अतराफ़ में हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस और शाह फ़ख़्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैहिमा के दो पुराने मज़ारात मशहूरो मारूफ़ बाक़ी रह गए हैं।

तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज्री के औलियाए आगरा

बारहवीं सदी हिज्री की तारीकी के बाद तेरहवीं और चौदहवीं सदी हिज्री के बुज़ुर्गाने दीन नेमते ग़ैर मुतरक़्क़बा मालूम होते हैं, मौलाना ज़ियाउद्दीन बलख़ी, मौलाना अहमदी क़ादरी, मौलाना आदिल, सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी, शाह मुहम्मद चिश्ती, हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन, हकीम सैय्यिद महेर अली, शाह बेदार बख्त, हाफ़िज़ अब्दुल्लाह, मियां

नज़ीर, शैख़ इमाम अली शाह, सल्लू शाह मज्ज़ूब, मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब, बब्बू शाह मज्ज़ूब, मौलवी सैय्यिद वारिस अली, हम्द शाह व मुहब्बत शाह नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैहिम।

इस ज़माने में जो कि मज़हब, अक़ीदत, रग़बत और सिदक़ो सफ़ा के बार आवर दरख़्त हमारे बद नसीबी से क़रीब क़रीब खुश्क हो गए और अलल उमूम किसी को उनमें पानी देने की तौफ़ीक़ बाक़ी नहीं रही और उनकी जगह बद अक़ीदगी, ला मज़हबी और इल्हाद के नए पौधे रोज़ ब रोज़ जदीद यानी नई तालीमो फ़ल्सफ़ा से सैराब हो कर जड़ पकड़ते जाते और शबो रोज़ तरक़्क़ी पर हैं, अक़ीदतो इख्लास के दरख्त की जो चंद हरी टहनियां बाक़ी नज़र आती हैं वो बचा हुआ ग़नीमत हैं, उन्हें नेअमत गैरे मुतरक्क़ब्बा समझो यानी ऐसी नेमत जो बिगैर मेहनतो मशक्कत के मिल गई है, और माले ग़नीमत ख़्याल करो, आँखों का तारा तसव्वुर करो।

और क़दरो ताज़ीम की निगाहों से देख कर जो कुछ हो सके उन से फ़ैज़ हासिल करने की कोशिश करो, वरना याद रखो और यक़ीन जानो कि चंद रोज़ में इन मुक़द्दस नूरानी सूरतों को भी तरसोगे, शाह मुहम्मद अफ़ज़ल साहिब बुख़ारी, सैय्यिद इरफान अली शाह साहिब क़ादरी, मौलवी मुहम्मद सआदतुल्लाह साहिब संभली मुदर्रिस अव्वले मदरसा जामेअ मस्जिद, मौलवी ज़ियाउल इस्लाम साहिब इमाम जामा मस्जिद वगैरा बुज़ुर्गाने मुक़ीम अकबराबाद (आगरा) अंजुमने ख़ुदाशनासी के अरकान, असरारे तरीक़त के मुश्किल कुशा, तालिबाने हिदायत के रहनुमा, राहे शरीअत के पेशवा और पुराने बुज़ुर्गाने दीन की यादगार हैं, इन बा कमालों के दीदार से ज़ाहिरी और बातिनी आँखें मुनव्वर कर के शर्फ़ हासिल करो और इन मर्दाने ख़ुदा की सोहबत के फ़ैज़ से दोनों जहान की सआदते हासिल करने की कोशिश करो।

मर्दाने ख़ुदा ख़ुदा ना बाशद
लेकिन ज़ ख़ुदा जुदा ना बाशद

यानी अल्लाह पाक के नेक बंदे औलियाए किराम ख़ुदा नहीं हैं मगर ख़ुदा से जुदा भी नहीं हैं बल्कि उनको अल्लाह पाक का क़ुर्ब हासिल है जिसकी वजह से वो हम जैसों से बदरजा अफ़ज़ल व आला हैं।

अब मैं अकबराबाद यानी आगरा के इन हज़ारहा बुज़ुर्गाने दीन की पाक व बरतर रूहों से जो ख़ाके पाक आगरा में आसूदा हैं और जिनके मज़ारात व हालात का पता नहीं चला और उन ख़ुदा शनास ज़िंदा बुज़ुर्गों से जिनकी ख़िदमते बा बरकत में बद किस्मती से मुझे नियाज़ हासिल नहीं है और ना बावजूद तलाश किसी दीगर ज़राए से उन के हालात मालूम हो सके और इस किताब के अवराक़ यानी पेज उन के नामे नामी और वाकिआते गिरामी की सआदत से महरूम रहे, दिली आजिज़ी और क़ल्बी नियाज़मंदी से माफ़ी चाह कर अल्लाह पाक की बारगाह में निहायत अदबो आजिज़ी से दस्त ब दुआ हूँ कि वो अपने फ़ज़्ल व करम और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तुफ़ैल और तमाम सहाबए किराम और बुज़ुर्गाने दीन रहमतुल्लाह अलैहिम ख़ुसूसन उन नाम वराने फ़िर्दोस खियाम के तसद्दुक़ हैं जो इस किताब में जल्वा अफ़रोज़ हैं, मुझ गुनहगार व रू स्याह के नामए आमाल से गुनाहों की स्याही और क़ल्ब से बद कारियों की तारीकी और ज़ंग को दूर फरमा दे और सीने को इस्लामी नूर से मुनव्वर कर के किसी क़द्र अबदी मारिफ़त नसीब करे और इस किताब के ख़्याबाँने बा अनवार को अनहारे जन्नत से ऐसा सर सब्ज़ व शादाब करे कि इस बोस्ताने दिल फ़रेब और फ़र्हत अंगेज़ के ख़ुशनुमा फलों के दीदार और दिलकश फूलों की ख़ुश्बू से तमाम ज़ाइरीन का दिमाग़ मुअत्तर मुअंबर हो जाये, जो शख़्स इस की सैर करे बे साख्ता सल्ले अला पढ़ कर

ख़ुदा का शुक्र बजा लाए, दुरूद शरीफ़ के फूल चुन कर जनाबे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर निसार करे, फ़ातिहा के हज़ारे यानी फ़व्वारे को चश्मे रहमत से पुर कर के शजरहाए पुर समरो पुर बहार पर आब पाशी करे और सब के बाद बाग़बान पुर इस्याँ को दुआए ख़ैर से याद फ़रमाए आमीन, राक़िमे बोसतान ख़ुदा के फ़ज़्ले बे पायाँ से उम्मीदवार है कि कोई अहले दिल इस चमनिस्तान मुहम्मदिया की सैर फ़रमाए और इस के अदना इशारे से गुम कर्दा राह, राहे रास्त पर आ जाए।

बहरे हाल अल्लाह पाक का फ़ज़्ल हर हाल में दरकार है और राक़िम उसी का मुहताज व उम्मीदवार है।

لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

وَ اٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

وَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَاٰلِهٖ وَأَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْن

बंदए गुनहगार आजिज़ो शर्मसार, उम्मीदवारे मग़फ़िरते परवर्दगार

सईद अहमद बिन मौलवी सुल्तान अहमद मारहरवी

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْف وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ　وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत

आठवाँ बाब

औलियाए किराम की सीरत का बयान

तर्तीब व तसहील
मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान
अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

आठवाँ बाब

औलियाए किराम की सीरत का बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِهِ الشَّفِیْقِ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰه   وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰه

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا نَبِیَّ اللّٰه   وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ یَا نُوْرَ اللّٰه

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

आला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान अलैहिर्रहमा फ़तावा रज़्वियह शरीफ़ जिल्द 23 पेज 122 पर नक़्ल फ़रमाते हैं: हज़रत अबुल मवाहिब रज़ी अल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि मैंने ख्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया कि: क़ियामत के दिन तुम एक लाख बंदों की शफ़ाअत करोगे। मैंने अर्ज़ की या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं कैसे इस काबिल हुआ ? इरशाद फ़रमाया: इसलिए कि तुम मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ते हो उस का सवाब मुझे नज़र कर देते हो।

(سعادۃ الدارین, الباب الرابع فیما ورد من لطائف المراء۔۔۔الخ، اللطیفۃ الثامنۃ والسبعون، ۱/۱۴۷، دار الکتب العلمیۃ)

ऐ आशिक़ाने औलिया! आपने मुलाहिज़ा फ़रमाया कि हज़रत अबुल मवाहिब को दुरूदे पाक पढ़ने का किस क़दर अज़ीम तोहफ़ा मिला कि येह क़ियामत के दिन एक लाख बंदों की शफ़ाअत करेंगे। लिहाज़ा हमें भी चाहिए कि जितना ज़्यादा से ज़्यादा हो सके अपने नबी सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम पर दरूदे पाक पढ़ते रहें और इस की बरकतों से हम किनार होते रहें।

शाने औलिया

ऐ आशिक़ाने औलिया! अल्लाह पाक ने अपने पाक बंदे औलियाए किराम की शान बहुत बुलंद व बाला की है और अल्लाह पाक ने उनकी शान अपने कलाम क़ुराने पाक में भी जगह जगह इरशाद फ़रमाई है और औलियाए की शान में सरकार सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भी कई अहादीस मुबारका मौजूद हैं।

हज़रत इस्माईल हक़्क़ी हनफ़ी अलैहिर्रहमा **"रूहुल बयान"** में सूरतुल हज की आयत नंबर 18 की तफ़सीर करते हुए इरशाद फरमाते हैं: वली ऐसा महबूब इन्सान होता है जिसे अल्लाह पाक अपनी इज़्ज़त व करामत से बुज़ुर्गी अता फ़रमाता है कि ऐसी बुज़ुर्गी और किसी को अता नहीं फ़रमाता। पस अगर ज़माने के सारे लोग मिल कर भी उस की तौहीन करना चाहें तो नहीं कर सकते क्योंकि उसे हक़ीक़ी इज़्ज़त मिल चुकी है और वह इस तरह कि उसने अपने नफ़्स को फ़ना फ़िल्लाह के मक़ाम में गिरा दिया और यही हक़ीक़ी सज्दा है।

पस अल्लाह पाक ने उसे इज़्ज़त व बुलंदी का ताज पहना दिया। क्या तुम इस हदीसे क़ुदसी में ग़ौर नहीं करते। अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है: जिसने मेरे किसी वली से दुश्मनी की उसने मुझ से जंग का ऐलान किया। मतलब येह है कि जो मेरे औलिया में से किसी वली पर नाराज़ हुआ, उसे अज़ीयत दी या उस की तौहीन की तो गोया वो अल्लाह पाक के साथ जंग करने निकला है। और अल्लाह पाक सिर्फ अपने प्यारों (यानी औलियाए किराम) ही की मदद फ़रमाता है लिहाज़ा अल्लाह पाक

से जंग के लिए निकलने वाला ज़लीलो ख्वार होता है। ना उस का कोई मददगार होता है और ना ही कोई ज़िल्लत से बचाने वाला होता है।

(تفسیر روح البیان، الحج، تحت الآیۃ:۱۸، ۷/۱۹، دار الکتب العلمیۃ)

ऐ आशिक़ाने औलिया! आईए अब अल्लाह पाक के कलाम में मौजूद औलिया की शान को मुलाहिज़ा करते हैं अल्लाह पाक ने क़ुराने पाक में इरशाद फ़रमाया:

اَلَاۤ اِنَّ اَوْلِیَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَ لَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ﴿۶۲﴾ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا یَتَّقُوْنَ ﴿۶۳﴾

तरजमए कंज़ुल ईमान: सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर ना कुछ ख़ौफ़ है ना कुछ ग़म। वो जो ईमान लाए और परहेज़गारी करते हैं।

(پ۱۱، یونس:۶۲-۶۳)

इन आयाते मुबारका के तहत **मुफ़्ती नईमुद्दीन मुरादाबादी** अलैहिर्रहमा अपनी तफ़सीर ख़ज़ाइनुल ईरफ़ान में फ़रमाते हैं :वली की अस्ल विला से है जो क़ुर्बो नुसरत के मअना में है।

वलीयुल्लाह वो है जो फ़राइज़ से अल्लाह पाक का कुर्ब हासिल करे और अल्लाह पाक की इताअत में मशग़ूल रहे और उस का दिल अल्लाह पाक के नूर की मारिफ़त में मुस्तग़रक़ हो जब देखे दलाइले क़ुदरते इलाही को देखे और जब सुने अल्लाह की आयतें ही सुने और जब बोले तो अपने रब की सना ही के साथ बोले और जब हरकत करे इताअते इलाही में हरकत करे और जब कोशिश करे तो उसी काम में कोशिश करे जो अल्लाह पाक के कुर्ब का ज़रिया हो, अल्लाह पाक के ज़िक्र से ना थके और दिल की आँख से ख़ुदा के सिवा ग़ैर को ना देखे, येह सिफ़त औलिया की है, बंदा जब इस हाल पर पहुंचता है तो अल्लाह पाक उस का वली व नासिर और मुईनो मददगार होता है।

मुताकल्लिमीन कहते हैं: वली वो है जो ऐसे सही अकीदे रखता हो जिनकी दलील उसके पास हो और नेक आमाल शरीअत के मुताबिक़ बजा लाता हो।

बाज़ आरिफीन ने फ़रमाया: कि विलायत नाम है अल्लाह पाक के क़ुर्ब और हमेशा अल्लाह के साथ मशग़ूल रहने का। जब बंदा इस मक़ाम पर पहुंचता है तो उस को किसी चीज़ का ख़ौफ़ नहीं रहता और ना किसी चीज़ के फ़ौत होने का ग़म होता है।

हज़रते इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाह अन्हुमा ने फ़रमाया: कि वली वो है जिसको देखने से अल्लाह याद आए।

इब्ने ज़ैद ने कहा: कि वली वही है जिसमें वो खूबियाँ हों जो कुरआन की आयत में ज़िक्र की गई हैं यानी ईमान और तक़्वे दोनों का जामेअ हो।

बाज़ उलमा ने फ़रमाया: कि वली वो हैं जो ख़ालिस अल्लाह के लिए मुहब्बत करें, औलिया की येह खूबी अहादीस में भी वारिद हुई है।

बाज़ अकाबिर ने फ़रमाया: वली वो हैं जो इताअत से अल्लाह पाक का क़ुर्ब तलब करतअ है और अल्लाह पाक करामत से उसकी कारसाज़ी फ़रमाता है। या वो जिनकी हिदायत का बुरहान यानी दलील के साथ अल्लाह पाक कफ़ील हो और वो बंदगी का हक़ अदा करने और अल्लाह पाक की ख़ल्क़ पर रहम करने के लिए वक़्फ़ हो गए। येह मआनी और इबारात अगर्चे जुदागाना हैं लेकिन उनमें इख्तिलाफ़ कुछ भी नहीं है क्योंकि हर एक इबारत में वली की एक एक सिफ़त बयान कर दी गई है जिसे क़ुर्बे इलाही हासिल होता है येह तमाम सिफ़ात उस में होती हैं।

विलायत के दर्जे और मरातिब में हर एक बक़दर अपने दर्जे के फ़ज़्लो शर्फ़ रखता है।

(تفسیر خزائن العرفان، پ:۱۱، یونس، تحت الآیۃ:۶۲۔۶۳، ص۴۰۵، ضیاء القرآن پبلی کیشنز)

इन आयात के तहत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी रहमतुल्लाह अलैह अपनी तफ़सीर **"तफ़सीरे नईमी"** में फ़रमाते हैं कि इन आयात करीमा में उस गिरोह का ज़िक्र है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़ैज़ उम्मत तक पहुंचाएं यानी अल्लाह पाक के औलिया, और इस की तफ़सीर का ख़ुलासा येह है कि **ऐ लोगो!** कान खोल कर सुन लो, आगाह रहो, ख़बरदार रहो, इस में शक नहीं कि अल्लाह पाक के दोस्त, अल्लाह पाक से क़ुर्ब रखने वालों की शान येह है कि दुनिया में उन पर किसी मख़लूक़ का ख़ौफ़, रोब, डर नहीं छाता, क्योंकि उनके दिल अल्लाह पाक के ख़ौफ़ से भरे हैं दूसरे के ख़ौफ़ की वहां जगह ही नहीं, ना कोई ऐसी हरकत करें जिससे उन्हें बाद में गम हो या रंज हो अल्लाह पाक इन दोनों तकलीफों में उन्हें महफ़ूज़ रखता है।

येह वो लोग हैं जो सच्चे पक्के मोमिन होते हैं और हर वक़्त, हर तरह परहेज़गार, मुत्तक़ी रहते हैं कि ना कोई शरई फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत छोड़ते हैं। ना कोई नाजाइज़ काम करते हैं। उनके लिए दुनिया और आख़िरत में ख़ुश ख़बरियाँ हैं कि ख़्वाह मख्वाह बंदों के मुँह से निकलता है कि वो अल्लाह पाक का वली है। उनकी तरफ़ दिल झुकते हैं और मरते वक़्त फ़रिश्ते उन्हें जन्नती होने की बिशारत देते हैं। क़ियामत में और जन्नत में दाख़िले के वक़्त उन्हें ख़ुश ख़बरियाँ देते हैं और देंगे।

येह अल्लाह पाक के वाअदे हैं, अल्लाह पाक के कलिमात में तब्दीली नहीं हो सकती। **ऐ लोगो!** येह बड़ी कामयाबी है इस की तरफ़ रग़बत करो।

(تفسیر نعیمی، پ:۱۱ یونس، تحت الآیۃ:۶۲تا۶۴، ۱۱/۳۹۳، نعیمی کتب خانہ مفتی احمد یار خان روڈ، گجرات پاکستان)

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रहमतुल्लाह अलैह अपनी तफ़सीर **'तफ़सीरे कबीर'** में एक रिवायत नक़ल फ़रमाते हैं:

اَوْلِیَاءُ اللّٰهِ لَایَمُوْتُوْنَ وَلٰكِنْ یَنقِلُوْنَ مِنْ دَارٍ اِلٰی دَارٍ

यानी बेशक अल्लाह पाक के औलिया मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर मुंतक़िल हो जाते हैं।

(التفسیر الکبیر، آل عمران، تحت الآیۃ:۱۶۹۔۱۷۰، ۳/۴۲۷، دار احیاء التراث العربی بیروت)

ऐ आशिक़ाने औलिया! आपने मुलाहिज़ा किया कि औलिया मौत की वजह से मरते नहीं हैं बल्कि एक घर से दूसरे घर में मुंतक़िल होते हैं यक़ीनन औलिया की शान बहुत ही बुलंदो बाला है।

कौन कहता है कि वली सब मर गए
क़ैद से छूटे अपने घर गए

ऐ आशिक़ाने औलिया! औलियाए किराम रहमतुल्लाह अलैहिम पर हर वक़्त अल्लाह पाक की रहमतों का नुज़ूल होता रहता है और जो उनके मज़ारात पर हाज़िर होता, उनसे मुहब्बत करता है उस पर भी औलियाए किराम के सदक़े अल्लाह पाक की रहमतों का नुज़ूल होता है।

औलियाए किराम के मज़ारात पर हाज़िर होना बहुत बड़ी सआदत की बात है, दुनिया में कई शहर, कई इलाक़े ऐसे भी हैं जहां अल्लाह पाक का कोई एक वली मौजूद नहीं।

आगरा औलियाए किराम की अमानतों का शहर

ऐ आशिक़ाने औलिया! क्या आप जानते हैं ? पूरे हिन्दुस्तान में किसी एक शहर में इतने बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात और उनकी सीरतें जमा नहीं जितनी आगरा में मौजूद हैं।

अल्हम्दु लिल्लाह सुम्मा अल्हम्दुलिल्ला

येह 283 बुज़ुर्गाने दीन महेज़ एक अदद नहीं येह आगरा की रुहानी निस्बत, उस की पहचान, उस की अज़मत और इस की ख़ुश बख्ती का सबूत हैं।

ऐ आगरा के लोगो! येह तुम्हारी ज़मीन है और येह अल्लाह पाक के औलिया तुम्हारी हिफ़ाज़त करने वाले, तुम्हारे ख़ैर ख़्वाह, तुम्हारे मुहसिन हैं। उनकी बदौलत इस शहर में ईमान की रौशनी है, बरकत है, अमन है, मुहब्बत है, दीन की ख़ुश्बू है। हमारी क्या हैसियत कि हम उनके मक़ाम व मर्तबा को बयान कर सकें ? मगर हमारा फ़र्ज़ है कि हम उनकी क़दर करें ,क्योंकि उन्ही के दम क़दम से हमारा शहर फल फूल रहा है। हम उनका एहसान मानें, क्योंकि उन्ही की दुआओं की बदौलत अल्लाह पाक ने हमें सुकून, अमन और दीन की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। हम उनका ज़िक्र ज़िंदा रखें, क्योंकि जो क़ौम अपने बुज़ुर्गों को भूल जाती है, वो ख़ुद भी भुला दी जाती है। हम उनकी सीरत पढ़ें, फैलाएं, इसी लिए येह किताब तैयार की गई है जिसमें आगरा के 283 औलियाए और बुज़ुर्गाने दीन की ज़िंदगियां, उनकी ख़िदमात, करामात और रौशन नुक़ूश जमा कर दिए गए हैं ताकि आगरा वाले अपने औलिया को पहचानें, उनसे मुहब्बत करें और उनकी निस्बत से दीन की रौशनी फलाएं। येह किताब हर उस शख़्स के लिए नेअमत है जो समझता है कि: "**अल्लाह पाक के औलिया क़ौमों की जान होते हैं, और उनका ज़िक्र ईमान की ताज़गी का ज़रीया होता है**"।

ऐ आशिक़ाने औलिया! आगरा में मौजूद बहुत सारे औलियाए किराम की मज़ारों में उनके नाम की तख़्तियाँ नहीं लगीं, जिसकी वजह से वो गुमनाम होते जा रहे हैं और कई मज़ारात बोसीदा हो चुके हैं जिसमें तामीरी काम करवाने की ज़रूरत है।

सगे अत्तार की दिली ख़्वाहिश है कि हम और आप मिलकर कोई एक कमेटी बना लें जिसका काम मज़ारात औलिया की हिफ़ाज़तो खिदमत करना, लोगों को उनके मक़ामो मर्तबा से आगाह करना हो, जो इस काम में हमारा साथ देना चाहता हो वो सगे अत्तार से मुलाक़ात या मोबाइल से राबिता करे।

अल्लाह पाक हम सबको औलियाए किराम के फ़ैज़ान से माला माल फ़रमाए। आमीन

सगे अत्तार अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी
फतेहपुरी, नगला मेवाती, ताजनगरी 2, ताजगंज आगरा
राबिता नंबर 8808693818

दरगाह अमीर सैय्यिद अबू उला (आगरा)

1☆...**सरताजे आगरा अमीर सैय्यिद अबुल उला**

2☆...अमीर फैज़ुल्लाह

3☆...अमीर नूरुल उला

4☆...अमीर ताजुल उला

5☆...मुल्ला उमर

6☆...ख़्वाजा फ़ौलाद अबुल उलाई

7☆...अमीर सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल अहरारी

8☆...शाह नूरुज़्ज़मान

9☆...अमीर अब्दुल माजिद

10☆...अमीर अब्दुल मुनईम

11☆...सौफा अला क़ली (अली क़ली)

12☆...सूफ़ी हुसैन ख़ां शहीद

दरगाह अमीर सैय्यिद अबू उला (आगरा)

(1) सरताजे आगरा अमीर सैय्यिद अबुल उला

नसब नामा

अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह आगरा के अफताब और हिन्दुस्तान के औलियाए आली मक़ाम और मशाइख़ीने ज़ी एहतिशाम और सादात में से हैं, सिल्सिलए नसब उनत्तीस वासतों से हज़रत इमामे हुसैन रहमतुल्लाह अलैह से मिलता है, आपके आठवें दादा अमीर इमादुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह और छठे दादा अमीर तक़ीउद्दीन किरमानी रहमतुल्लाह अलैह औलियाए किबार और मशाइख़ीने नामदार में से थे, माँ की जानिब से नसब नामा हज़रत ग़ौसुल अबरार ख़्वाजा उबैदुल्लाह अहरार रहमतुल्लाह अलैह तक पहुंचता है जिनके कमालात अज़हर मिनश्शम्स यानी सूरज से ज़्यादा ज़ाहिर हैं।

विलादत बा सआदत

आप रहमतुल्लाह अलैह के दादा ख़्वाजा अमीर अब्दुस्सलाम इब्ने अमीर अब्दुल मलिक इब्ने अमीर अब्दुल बासित इब्ने अमीर तक़ीउद्दीन किरमानी रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के अहदे सल्तनत यानी ज़माने में अपने वतन समरक़ंद से अहलो इयाल के साथ हिन्दुस्तान में तशरीफ़ लाए थे, सफर के दौरान बमुक़ाम क़स्बा नरेला जो दिल्ली से ब जानिब लाहौर एक मंज़िल के फ़ासिला पर वाक़ेअ है, क़ियाम फ़रमाया, 990 हिज्री में सैय्यिद अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की विलादत बा सआदत वाक़ेअ हुई।

आप रहमतुल्लाह अलैह के दादा ख़्वाजा अमीर अब्दुस्सलाम रहमतुल्लाह अलैह नरेला से दारुस्सुरूर फ़तेहपुर सीकरी आए जो उस वक़्त अकबर बादशाह का दारुल खिलाफ़त यानी राजधानी था, यहां से आगे जाना चाहते थे मगर अकबर बादशाह ने उन से फ़तेहपुर सीकरी में रहने की दरख्वास्त की, वो राज़ी हो गए और फ़तेहपुर में सुकूनत इख्तियार फ़रमाई, फिर उस के बाद हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत और हज्जे बैतुल्लाह के वास्ते तशरीफ़ ले गए और बमुक़ाम मक्कए मुअज़्ज़मा सफ़रे आख़िरत इख्तियार फ़रमाया यानी उनका इंतिक़ाल हो गया।

वालिदे माजिद

आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद का नाम अमीर अबुल वफ़ा रहमतुल्लाह अलैह है और येह बदस्तूर फ़तेहपुर सीकरी में मुक़ीम रहे, जब उनकी ज़िंदगानी का दौर ख़त्म हुआ तो ख़्वाबगाह यानी मज़ार के वास्ते दिल्ली को पसंद किया और लाश मुबारक फ़तेहपुर सीकरी से ले जा कर ख़ाके पाक दिल्ली के सपुर्द की गई।

वालिदा माजिदा

आप रहमतुल्लाह अलैह की वालिदा माजिदा हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद फ़ैज़ रहमतुल्लाह अलैह की दुख्तरे नेक अख़तर यानी बेटी थीं और हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद फ़ैज़ रहमतुल्लाह अलैह बर्दवान शहर में नाज़िम के ओहदे पर फ़ाइज़ थे।

परवरिश और तालीम

अभी आप रहमतुल्लाह अलैह कम सिन ही थे कि आपके वालिद रहमतुल्लाह अलैह का साया आप रहमतुल्लाह अलैह के सर से उठ गया और आप रहमतुल्लाह अलैह अपने दादा हज़रते अमीर अब्दुस्सलाम रहमतुल्लाह अलैह की

शफ़क़त से भी महरूम रहे क्योंकि आप रहमतुल्लाह अलैह के दादा हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत के लिए गए थे और मक्का शरीफ़ में उनका विसाल हुआ।

आप रहमतुल्लाह अलैह के दादा जान रहमतुल्लाह अलैह ने हरमैन शरीफ़ैन जाते वक़्त आपको आपके नाना हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद फ़ैज़ रहमतुल्लाह अलैह के सिपुर्द फ़रमाया था और हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद फ़ैज़ रहमतुल्लाह अलैह राजा मानसिंग कछवाहा गवर्नर बंगाल की तरफ़ से शहर बर्दवान के नाज़िम थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के नाना आप रहमतुल्लाह अलैह को अपने साथ बर्दवान ले गए, उन्हीं की निगरानी में आप रहमतुल्लाह अलैह की तालीमो तर्बीयत हुई, आप रहमतुल्लाह अलैह बहुत जल्द तहसीले उलूमो फ़नून से फ़ारिग़ हो कर तमाम उलूमे ज़ाहिरी व कमालाते बातिनी में माहिर हुए और फन्ने सिपहगरी में बेमिस्ल साबित हुए।

नाना का विसाल

अभी आप रहमतुल्लाह अलैह तमाम उलूमो फ़नून मुतदावला से फ़ारिग़ ही हुए थे कि आप रहमतुल्लाह अलैह के नाना हज़रत मुहम्मद फ़ैज़ रहमतुल्लाह अलैह किसी लड़ाई में शहीद हो गए।

ओहदा ए निज़ामत

आप रहमतुल्लाह अलैह के नाना हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद फ़ैज़ रहमतुल्लाह अलैह के कोई लड़का नहीं था, राजा मानसिंग ने आप रहमतुल्लाह अलैह की लियाक़त और क़ाबिलियत देखकर आप रहमतुल्लाह अलैह के नाना रहमतुल्लाह अलैह की जगह आप रहमतुल्लाह अलैह को बर्दवान का नाज़िम मुक़र्रर कर दिया, चूंकि मशीयते इलाही शामिले हाल थी लिहाज़ा अज़ली इनायत ने दस्त गीरी फ़रमाई।

इशारत पुर बशारत

उन्ही दिनों में एक रात आप रहमतुल्लाह अलैह ने तीन बुज़ुर्गों को ख्वाब में देखा कि फ़रमाते हैं : ऐ सैय्यिद ! तुमने येह क्या वज़अ इख्तियार की है, हमारी वज़अ इख्तियार करो और फ़िक्रे मआश से बेफ़िक्र हो कर

'اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ'

(यानी अल्लाह ही के नूर से आसमान व ज़मीन की रौशनी है)

के मज़हर बन जाओ, फिर एक बुज़ुर्ग ने उस्तुरे से आपके सर के बाल तराश दिए, दूसरे ने एक क़मीस पहनाई, तीसरे ने एक इमामा आपके सर पर रख दिया, येह तीनों बुज़ुर्ग में से एक हज़रते अली, दूसरे हज़रते इमाम हसन, तीसरे हज़रते इमाम हुसैन रज़ीअल्लाहु अन्हुम थे।

काया पलट

इस ख्वाब से आप रहमतुल्लाह अलैह का बेदार होना गोया ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार होना था कि हक़ीक़तो मारिफ़त की आँखें खुल गईं, आँख के खुलते ही दिल में शोरिशे अज़ीम यानी बड़ी जलन पैदा हुई और दिल में ऐसा जज़्बे का सैलाब आया जिसके अंदर फ़िक्रे मआश बह गई फ़ौरन हज्जाम को बुला कर बाल तरशवाए, खय्यात यानी दर्ज़ी से क़मीस सिल्वा कर पहन ली, बज़्ज़ाज़ से कपड़ा मंगा कर इमामा बांध लिया, ग़र्ज़ेकि तवंगरी लिबास को खिरक़ए दरवेशी से तब्दील कर के मुलाज़िमत यानी नौकरी का इस्तीफ़ा भेज दिया, नेक दिल राजा को जब येह हाल मालूम हुआ तो आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हो कर बहुत तसल्ली व तशफ्फी की और समझा बुझा कर आप को मुलाज़िमत छोड़ने से बाज़ रखना चाहा मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ने क़बूल ना फ़रमाया, इसी अरसे में अकबर बादशाह ने इंतिक़ाल किया और जहांगीर तख़्ते सल्तनत

पर बैठा, बहुत से उमरा और मंसबदार हाज़िरीए दरबार के वास्ते तलब हुए, आप रहमतुल्लाह अलैह ने इस मौक़े को ग़नीमत समझा और अकबराबाद यानी आगरा की तरफ़ रवाना हुए, रास्ते में क़स्बा मुनीर में हज़रत शाह दौलत मुनीरी रहमतुल्लाह अलैह से जो कि बुज़ुर्ग साहिबे बातिन थे कई दिन तक सोहबत गर्म रही और फ़ैज़ व बरकत से मालामाल हुए, आख़िरे कार अकबराबाद आकर शहेनशाह जहांगीर से मुलाक़ात हुई, जहांगीर आपके जमालो कमाल से बहुत मुताअस्सिर हुआ, आप बिला रोक टोक शाही दरबार में आने जाने लगे, एक दिन का वाक़िआ है कि साक़ी ने जहांगीर को जाम पेश किया, जहांगीर ने अपने हाथ से वो जाम आप रहमतुल्लाह अलैह को दिया, आप रहमतुल्लाह अलैह ने वो जाम लेकर वहीं फेंक दिया, जहांगीर ने दूसरा जाम दिया, आप रहमतुल्लाह अलैह ने लेकर उसे भी फेंक दिया, जहांगीर बादशाह नशे की हालत में आप रहमतुल्लाह अलैह से मुख़ातब हो कर कहने लगा क्या तुम ग़ज़बे सुल्तानी से नहीं डरते ? आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया गुस्सा ए सुल्तानी से नहीं डरता, कहरे रब्बानी से डरता हूँ।

तर्के दुनिया

इस के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह ने शाही मुलाज़िमत छोड़ दी, अपने मकान में तशरीफ़ लाए, अपना मालो मताअ तक़सीम कर दिया, उस में से अपने पास कुछ भी ना रखा, जहांगीर ने आप रहमतुल्लाह अलैह को बहुत बुलाया मगर आप रहमतुल्लाह अलैह नहीं गए।

अजमेर की रवानगी

इसी रात को शेरे ख़ुदा हज़रत अली रज़ीअल्लाहु अन्हु को ख्वाब में देखा कि आप रहमतुल्लाह अलैह को आग़ोशे शफ़क़त में लेकर इरशाद फ़रमाते हैं कि ऐ बेटा! दस्ते क़ुदरत ने तुम्हारी मतलब आवरी ख़्वाजा मुईनुद्दीन

चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाह अलैह के हाथ में रखी है, मुनासिब है कि तुम उनके मज़ार पर हाज़िर हो कर क़ुदरते ख़ुदा का तमाशा देखो, सुब्ह को आप रहमतुल्लाह अलैह ने बेदार हो कर अपना सारा मालो अस्बाब राहे ख़ुदा मे लुटा दिया और एक तहबंद बांध कर और चादर ओढ़ कर दिल्ली की तरफ़ रवाना हुए, चंद रोज़ तक हज़रत क़ुतुबुल अकताब ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत सुल्तानुल मशाइख़ ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह के मज़ारात फ़ाइज़ुल अनवार पर मोतकिफ़ रह कर फुयूज़े बातिनी हासिल किए, आख़िर रोज़ा ए मुक़द्दसा हज़रत ख्वाजा ए ख़्वाजगान ख़्वाजा मुईनुद्दीन हसन संजरी चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह में हाज़िर हो कर दिल में आराम और आँखों में बसीरत पैदा की।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह आलमे मिसाल में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया सैय्यिद ! इतने दिन तुम कहाँ रहे ? एक अरसे से मैं तुम्हारा मुंतज़िर था, हुज़ूर शेरे ख़ुदा, अलीयुल मुर्तज़ा रज़ीअल्लाहु अन्हु की बार बार ताकीद होती थी कि फ़र्ज़ंद अबुल उला को जल्द तलक़ीन करो, आप रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि फ़क़ीर को येह तमन्नाए ज़ियाराते मज़ाराते हज़रत क़ुतुबुल अकताब रहमतुल्लाह अलैह व हज़रत महबूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह तवक़्क़ुफ़ हुआ, अब हुज़ूर मैं हाज़िर हूँ। फिर हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह को कमालाते ज़ाहिरी और बातिनी से मालामाल किया, चंद मुद्दत तक आप रहमतुल्लाह अलैह रोज़ा ए मुनव्वरा में मो'तकिफ़ और रोज़ाना चश्मए फ़ैज़ो करामत से सैराब होते रहे, आख़िरे कार हस्बे हुक्म अकबराबाद यानी आगरा वापिस आ कर अपने चचा जान सैय्यिद अमीर अब्दुल्लाह नक़्शबंदी अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हुए।

हज़रते सैय्यिद अमीर अब्दुल्लाह नक़्शबंदी अहरारी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी दुख्तरे नेक अख्तर यानी बेटी से आप रहमतुल्लाह अलैह की शादी कर दी और खिर्क़ा ए ख़िलाफ़तो इजाज़त और शजरए तरीक़त इनायत फरमा कर फ़रमाया :बाबा काम वही है जो तुम करते हो यानी जो नेअमत ख़्वाजा बुज़ुर्गवार ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह के दरबार से तुमको अता हुई है वो काफ़ी है, सिमाअ की भी तुमको इजाज़त है लेकिन अश्ग़ालो अज़्कार सिलसिलए आलिया नक़्शबंदिया का भी शुग़्ल यानी काम जारी रखना, चुनांचे आपने दोनों सिल्सिलों के अज़्कारो अश्ग़ाल की तरकीब से एक जदीद तरीक़ा यानी ख़ानवादए अबुल उलाईया जारी फ़रमाया।

ऐ आशिक़ाने औलिया! आप रहमतुल्लाह अलैह के खिर्क़े आदात व करामात के बे इंतिहा फूल निसार किया जा सकता है मगर अफ़सोस कि इस किताब के ख़ियाबां तंग और तवालत से ख़ाली हैं, इस के इलावा येह वाक़िआत अज़हर मिनश्शम्स और किताबत की इमदाद से मुस्तग़नी हैं, अज़्कारुल अहरार, हुज्जतुल आरिफ़ीन, कैफ़ीयतुल आरिफ़ीन, अनवारुल आरिफ़ीन, निस्बतुल आशिक़ीन और नजाते क़ासिम वग़ैरा किताबों में आप रहमतुल्लाह अलैह के अक्सरो बेशतर हालात लिखे हुए हैं, शौक़ रखने वाले इन किताबों में मुलाहिज़ा कर सकते हैं।

मौलाना शाह वलीयुल्लाह साहिब मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब अन्फ़ासुल आरिफ़ीन में अपने वालिद बुज़ुर्गवार शाह अब्दुर्रहीम साहिब रहमतुल्लाह अलैह की ज़बानी तहरीर फ़रमाया है कि आप रहमतुल्लाह अलैह के अफ़आल से शरीअत ज़ाहिर थी, क़ौलन और फ़ेअलन कभी आप रहमतुल्लाह अलैह ने ज़र्रा बराबर भी जादए (शरीअते) मुहम्मदी से क़दम बाहर नहीं रखा, आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिब ज़ादे अमीर नूरुल

उला रहमतुल्लाह अलैह से बढ़कर मैंने किसी को रास्त गो यानी सच बोलने वाला नहीं देखा, मुद्दत तक उनकी सोहबत में रहा और कुलाहे मुबारक यानी टोपी और खिरक़ा शरीफ़ से भी मुशर्रफ़ हुआ, एक दिन मैंने उन से दरयाफ्त किया कि लोग कहते हैं कि अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह सिमाअ की तरफ़ बहुत राग़िब थे और जिस किसी की तरफ़ देखते या अपने पान का उगाल इनायत फ़रमाते थे वो बेहोश हो जाता था, जवाब दिया कि मुझे याद नहीं है कि आप रहमतुल्लाह अलैह ने सिमाअ सुना हो मगर चंद बार कि वो भी एक तक़रीब के साथ था, दूसरी बात की निस्बत फ़रमाया कि येह क़ायदा कुल्लिया ना था ख़ुद मैंने बे तादाद मर्तबा आप रहमतुल्लाह अलैह का नीम खुर्दा यानी आधा खाया हुआ पान (उगाल) खाया है, एक मर्तबा आप रहमतुल्लाह अलैह पर फ़ालिज गिरा, मुद्दत तक उस की तकलीफ़ उठाई, ख़ुसूसन वुज़ू या तहारत के वक़्त बहुत ज़्यादा तकलीफ़ होती थी, एक दिन हालते तकलीफ़ में एक शेअर ज़ौक़ो शौक़ से पढ़ना शुरू किया फ़ौरन ऐसा वज्द पैदा हुआ कि उस की हरारत से तमाम आज़ा खुल गए और शाफ़ीए मुतलक़ यानी अल्लाह पाक ने अपने फ़ज़्लो करम से सेहते कामिला अता फ़रमाई।

औलाद

आप रहमतुल्लाह अलैह के दो बेटे हैं:

(1) हज़रत अमीर फ़ैज़ुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह ।

(2) हज़रत अमीर नूरुल उला रहमतुल्लाह अलैह ।

वफ़ात

71 बरस की उम्र में सह शंबा यानी मंगल के दिन 9 सफ़र 1061 हिज्री को हर्क़तुल बोल के आरिज़े में ताइरे रूह पुर फ़ुतूह ने क़फ़से उंसरी से परवाज़ कर के गुलज़ारे जहां और फ़ज़ाए लामकां की तरफ़ परवाज़ की।

तसनीफ़ात

एक मुख़्तसर रिसाला जो मरातिबे फ़ना और बक़ा के बयान में है और चंद मकतूबात और एक मुख़्तसर सा दीवान आप रहमतुल्लाह अलैह का यादगार है, मज़ारे मुबारक मौज़ूअ लश्करपुर के क़रीब में एक वसीअ चहार दीवारी के दर्मियान में ज़ियारत गाह ख़ासो आम है, इस चहार दीवारी के अंदर दो मस्जिदें, एक सिमाअ ख़ाना, मज़ार मुबारक की सह दरी और आलीशान दरवाज़े के इलावा बड़े बड़े मर्दाने ख़ुदा आसूदा हैं यानी उनके मज़ारात हैं।

हर जुमेरात को ज़ाइरीन का मेला लगता है और सालाना उर्स निहायत धूम धाम और शानो शौकत से होता है, अब तक मज़ार फ़ाइज़ुल अनवार से दरयाए फ़ैज़ जारी है, मज़ार का तावीज़ संगमरमर का है जिस पर سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی लिखा हुआ है, ऊपर संगमरमर की तख़्ती नसब है यानी लगी हुई है, उस पर आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात की तारीख़ लिखी हुई है, जिनकी नक़ल नजाते क़ासिम नामी किताब में मौजूद है, जिस मक़ाम पर दरगाह शरीफ़ वाक़ेअ है यहां शाही ज़माने में एक वसीअ मुहल्ला आबाद था जो सूफ़ी पुरा के नाम से मौसूम था, ख़ास दरगाह के मक़ाम पर आप रहमतुल्लाह अलैह का मकान और ख़ानक़ाहे आलिया बनी हुई थी।

अमीर फ़ैज़ुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह और अमीर नूरुल उला रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के दोनों साहिबज़ादे और बहुत से ख़ुल्फ़ाए ज़ी वक़ार और मुरीदाने जानिसार का तज़्किरा इस किताब में मौजूद है।

साहिब ज़ादगान के इंतिक़ाल के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह के पोते अमीर ताजुल उला बिन अमीर फ़ैज़ुल उला रहमतुल्लाह अलैह सज्जादा नशीन और दरगाह शरीफ के मुतावल्ली रहे, इन के बाद उनकी साहिब ज़ादी

मुतावल्ली रहीं, उन के बाद उनके बरादर ज़ादा यानी भाई का लड़का मीर मुईनुद्दीन बिन अमीर मुहम्मद सालेह, फिर उन के बेटे मीर अकरमुद्दीन ख़ां, उस के बाद मीर अज़ीज़ुल्लाह उर्फ़ सैय्यिद मीरन जान व सैय्यिद बदरुद्दीन उर्फ़ मीर बदले दरगाह के मुतावल्ली और सज्जादा नशीन है, 2 ज़ुल हिज्जा 1279 हिज्री से सैय्यिद मीरन जान के नवासे हाफ़िज़ क़मरुद्दीन बेग साहिब सज्जादा नशीन हैं, आराज़ी इहातए दरगाह तादादी 4 बिस्वा ज़मीन सल्फ के ज़माने से बनाम बुज़ुर्गान मौसूफ़ माफ़ यानी वक़्फ़ चली आती है।

बोस्ताने अख्यार के मुसन्निफ़ 1331 हिज्री के हालात लिखते हैं कि अब हाफ़िज़ साहिब मौसूफ़ बशुमूल आपने भाई रज़ीउद्दीन बैग और बिरादर ज़ादे यानी भाई के बेटे मिर्ज़ा सिराजुद्दीन बैग इब्ने मिर्ज़ा ज़ियाउद्दीन बैग इस ज़मीन के मुआफ़ीदार हैं और तमाम इंतिज़ामाते दरगाह बतौरे ख़ुद करते हैं।

करामात

एक दिन अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैहअपनी ख़ानक़ाह में रौनक अफ़रोज़ थे कि यकायक आप रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत अमीर नूरुल उला रहमतुल्लाह अलैह से फ़रमाया कि कुछ ऐसा मालूम होता है कि शाहजहाँ बादशाह के दरबार में इस वक़्त ख़ूँ रेज़ी हो रही है, थोड़ी देर के बाद नवाब सदाक़त ख़ां के क़त्ल की ख़बर सारे शहर में फैल गई।

हज़रत मुल्ला उमर रहमतुल्लाह अलैह को सिमाअ में कैफ़ीयत हुई उन्होंने उसी हालत में अपनी जाने शीरीं जाने आफ़री के सुपुर्द फ़रमाई, जब उनको आप (यानी हज़रत सय्यिदुना सरकार रहमतुल्लाह अलैह) की ख़िदमत में लाया गया तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने उन पर एक निगाह डाली, मुल्ला उमर उठ कर बैठ गए और फिर हालते वज्द में रक़्स करने लगे।

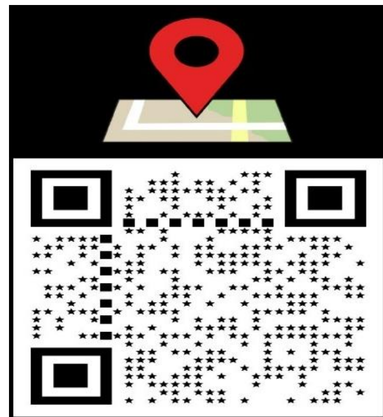
एक बदमस्त हाथी लोगों को परेशान करता था उस के ख़ौफ़ से लोग छुप जाते थे, एक दिन आप रहमतुल्लाह अलैह जामा मस्जिद से ख़ानक़ाह जा रहे थे, आपने शोर सुना, पूछा कि येह शोर क्या है ? मुरीदों ने अर्ज़ किया कि एक बदमस्त हाथी आ रहा है इस से बचने की तदबीर ज़रूरी है किसी गली में जाना मुनासिब है, आप रहमतुल्लाह अलैह ने येह सुनकर फ़रमाया : "बाबा अबुल उला अपनी राह जाता है वो अपनी राह जाएगा" जब वो मस्त हाथी सामने आया आप रहमतुल्लाह अलैह ने उस की तरफ़ बग़ौर देखा, हाथी एक दम रुक कर खड़ा हो गया, आप रहमतुल्लाह अलैह इस बदमस्त हाथी के बराबर से निकल कर चले गए, कुछ दिन के बाद आपको इत्तिला हुई कि वो बदमस्त हाथी ख़ानक़ाह के दरवाज़े पर खड़ा है आप रहमतुल्लाह अलैह उस के पास तशरीफ़ ले गए और उस से फ़रमाया कि मख्लूक़ को परेशान करना अच्छा नहीं, बेहतर येह है कि राजघाट जा कर लोगों को दरिया पार कराओ, वो हाथी राजघाट गया और लोगों को अपनी पीठ पर बिठा कर दरिया पार उतारने लगा कुछ ही दिनों में वो हाथी मीर साहिब का हाथी कहलाया।

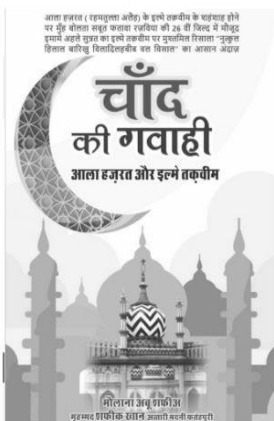
एक दिन का वाक़िआ है कि आप रहमतुल्लाह अलैह की मुलाक़ात एक जोगी से जमुना पार हुई, उस जोगी ने एक डिबिया आपको पेश की, आप रहमतुल्लाह अलैह ने जोगी से दरयाफ्त किया कि डिबिया में क्या है ? जोगी ने जवाब दिया कि इकसीर है, इकसीर की खूबी येह है कि एक रत्ती भर ताँबे पर मलने से ताँबा सोना हो जाता है आप रहमतुल्लाह अलैह ने वो डिबिया जमुना में फेंक दी और जोगी से फ़रमाया साधू जी इन्सान तो ख़ुद इकसीर है, ऐसी सूरत में दूसरी इकसीर की तदबीर करना इन्सान की तहक़ीर है, जोगी को रंज हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैह से कहने लगा कि अफ़सोस मेरी सारी उम्र की कमाई आपने जमुना में लुटा दी, आप रहमतुल्लाह अलैह ने उस

जोगी से पूछा अच्छा येह बताओ, इकसीर कैसी होती है, जोगी ने जवाब दिया, ख़ाक सी यानी मिट्टी की तरह, फिर आप रहमतुल्लाह अलैह ने जोगी से फ़रमाया: उधर देखो, जमुना की येह रेत सब ख़ाक है जितनी चाहिए ले लो, वो तो एक छोटी सी डिब्बी थी, बड़े शौक़ से डिब्बे भर लो और बे तकल्लुफ़ इस से सोना बना लो, साधू को यक़ीन ना आया फिर भी उसने थोड़ी सी रेत बतौरे आज़माईश के ताँबे पर मली, ताँबा ख़ालिस सोना हो गया, साधू आप की येह करामत देखकर आपका मोतक़िद हो गया।

(बोस्ताने अख्यार, स15.21)

अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।









(2) अमीर फैज़ुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के बड़े बेटे, मुरीद, ख़लीफ़ा और सज्जादा नशीन हैं, बोसताने अख्यार के मुसन्निफ़ की नज़र से एक शाहजहाँ बादशाह का फ़रमान ब तारीख़ 18 रजब 1058 हिज्री गुज़रा है जिस से वाज़ेह होता है कि जामा मस्जिद की तोलिय्यत यानी मुतावल्लियत शाहज़ादी जहां आरा बेगम ने आप रहमतुल्लाह अलैह के सिपुर्द की थी और चार सौ रुपये साल उस के मुआवज़े में आप रहमतुल्लाह अलैह को दरबारे शाही से मिलते थे, येह फ़रमान हाफ़िज़ क़मरुद्दीन बेग साहिबे सज्जादा नशीन दरगाह सय्यिदुना अबुल उला के पास मौजूद है।

आप रहमतुल्लाह अलैह बड़े आरिफ़ कामिल और शैखे अकमल थे, बड़े बड़े ख़ुल्फ़ाए रफ़ीउश्शान आप रहमतुल्लाह अलैह के हुए हैं 61 साल की उम्र में 29 ज़ुल क़ादा 1081 हिज्री को आपने रिहलत फ़रमाई।

मज़ारे मुबारक अंदर इहातए दरगाह अबुल उलाईया चबूतरा उत्तर पूरब जानिब के गोशे पर वाक़ेअ है।

वफ़ात की तारीख़ ये है

(ज़ेबे जिनाँ ब फैज़ुल्लाह) इस के अदद 1081 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल का हिज्री साल है।

(बोस्ताने अख्यार, स139.140)

अमीर सैय्यिद फैज़ुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मबारक तक पहँच सकते हैं।



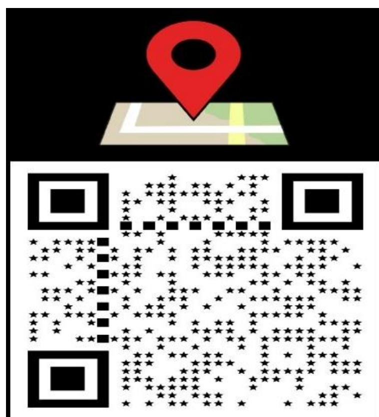
(3) अमीर नूरुल उला

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के फ़रज़ंद रशीद मुरीद और ख़लीफ़ा हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह इल्मो फ़ज़्ल से मौसूफ़ और बड़े आबिद व ज़ाहिद बुज़ुर्ग थे, आप रहमतुल्लाह अलैह ने ज़िक्रे नफ़ी व इस्बात को हब्से नफ़्स के साथ कमाल के दर्जे को पहुंचाया।

हज़रत शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब 'अन्फ़ासुल आरिफीन' में अपने वालिदे माजिद अब्दुर्रहीम मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाह अलैह की ज़बानी लिखा है कि मैंने किसी को अमीर नूरुल उला रहमतुल्लाह अलैह से ज़्यादा रास्त गो नहीं देखा, मैं मुद्दत तक उनकी सोहबत में रहा और आप रहमतुल्लाह अलैह के कुलाह मुबारक यानी टोपी और खिर्क़ा शरीफ़ से मुशर्रफ़ हुआ, शैख़ लुत्फुल्लाह साहिबे अज़्कारे अहरार आप रहमतुल्लाह अलैह ही के ख़लीफ़ा थे।

7 रबीउस्सानी 1090 हिज्री को, 73 साल की उम्र में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई और अपने वालिदे बुज़ुर्गवार हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के पांइती पर आसूदा हैं, मज़ार शरीफ का तावीज़ मुबारक सादा मगर संगमरमर का है। (बोस्ताने अख्यार, पेज235.236)

अमीर सैय्यिद नुरुल उला रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।

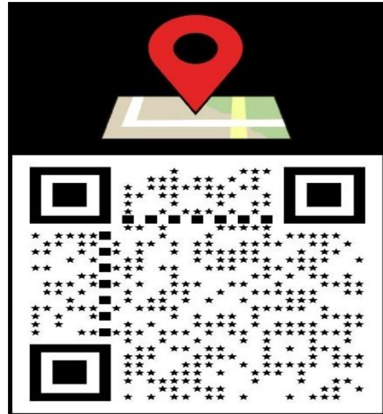


(4) अमीर ताजुल उला

आप रहमतुल्लाह अलैह अमीर फ़ैजुल उला इब्ने अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंद, ख़लीफ़ा और सज्जादा नशीन हैं यानी सय्यिदुना सरकार अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के पोते हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के सर चश्मए फ़ैज़ो इरशाद से एक आलम सैराब हुआ, 15 शाबान 1102 हिज्री को 67 साल की उम्र में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई।

मज़ार मुबारकहज़रत सय्यिदुना सरकार, अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के पहलू में वाक़ेअ है, मज़ार मुबारक का तावीज़ संगमरमर का है और इस पर आयतुल कुर्सी लिखी हुई है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज61)

अमीर सैय्यिद ताजुल उला रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।







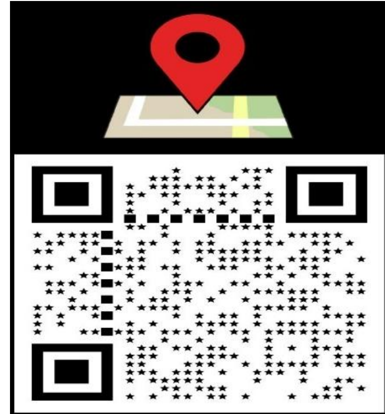


(5) मुल्ला उमर

हज़रत मुल्ला उमर रहमतुल्लाह अलैह शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के हम असर हम दम और बाराने बा सफ़ा थे, आपकी आँखें ख़ुदा शनासी के नूर से मुनव्वर और आपका दिल हर वक़्त ख़ुदा की याद में तस्बीह करता रहता था।

आप रहमतुल्लाह अलैह अपने ज़माने के ज़बरदस्त आलिम थे शरह मुल्ला पर आपने हाशिया लिखा था, मज़ार ग़ालिबन अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की दरगाह के पास है। (बोस्ताने अख्यार, पेज131)

मुल्ला उमर रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।





(6) ख़्वाजा फ़ौलाद अबुल उलाई

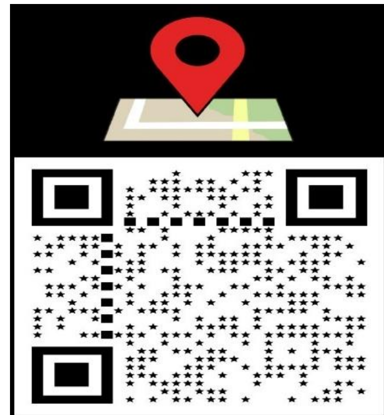
आप का असली नाम ख़्वाजा मुहम्मदी रहमतुल्लाह अलैह है, आप रहमतुल्लाह अलैह शाह अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद, दामाद और बड़े खुलफ़ा में से हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह के कश्फ़ व करामात के हालात अब तक लोगों की ज़बानों पर हैं, आप कमाल जलालो जबरूत रखते थे औरतों को आपके मज़ार पर जाने की क़तई मुमानअत है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक**अंदर इहातए दरगाह अबुल उलाईया रहमतुल्लाह अलैह सिमाअ ख़ाना से मुत्तसिल जानिबे शुमालो मग़रिब वाक़ेअ है यानी उत्तर और पच्छिम की जानिब।

(बोस्ताने अख्यार, पेज138.139)

ख्वाजा फौलाद अबुल उलाई रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



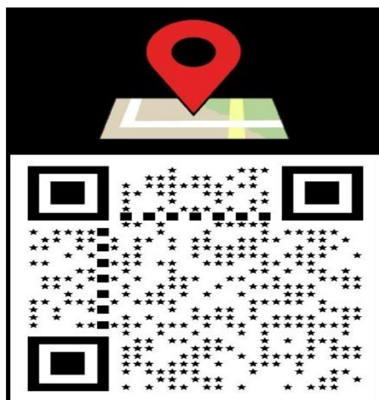
(7) अमीर सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल अहरारी

आप ख़्वाजा अमीर अहरारी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और अकमल खुलफा में से हैं, एक ज़माने को आप से फ़ैज़ पहुंचा, सुख़न गोई में भी आपको ख़ास मलका हासिल था चुनांचे हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की तख्ती पर जो तारीखें लिखी हुई हैं वो आप रहमतुल्लाह अलैह ही के नताइज तबअ का नतीजा हैं यानी आप की लिखी हुई।

81 बरस की उम्र में एक रबीउल अव्वल 1111 हिज्री को आप रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा में वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक आस्तानए अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह में नीम के दरख़्त के नीचे वाक़ेअ है, शहनशाह आलमगीर का एक फ़रमान बा तारीख 24 ज़िल क़ादा 5 वे जुलूस राक़िमे बोसतां की नज़र से गुज़रा जिस से वाज़ेह होता है कि ख़िदमते तोलियत मस्जिद अकबराबादी व दरोग़गी दीगर मसाजिद अकबराबाद व ख़िदमते अदालत शहर अकबराबाद व दरोग़गी रोज़ियाना दारान व सालियाना दारान आपके सिपुर्द थी और मबलग़ पाँच रुपया यौमिया आपको ख़िदमात की तनख़्वाह मिलती थी।

(बोस्ताने अख्यार, पेज161)

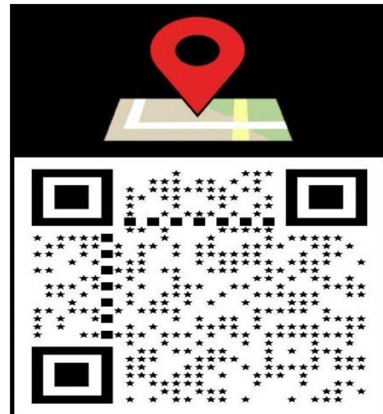
अमीर सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार तक पहुँच सकते हैं।



(8) शाह नूरुज़्ज़मान

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने नामवर बुज़ुर्गों में हैं, आपका ज़िक्रे ख़ैर किसी किताब में राक़िम की नज़र से नहीं गुज़रा, मगर अहले शहर को आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक से बहुत अक़ीदत है और आप रहमतुल्लाह अलैह की करामात और बुज़ुर्गी की अक्सर दास्तानें अब तक मशहूर चली आती हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार दरगाह शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह से मिला हुआ ज़ियारत गाह है, हर नवीं रबी उस्सानी को आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता है, बाज़ लोग कहते हैं कि आप चिश्तिया, साबरिया सिल्सिला में मुंसलिक हैं, हाजी ए हरमैन शरीफ़ैन और ख़्वाजा ख़ानूं ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और ख़लीफ़ा थे, वल्लाहु आ'लम। (बोस्ताने अख़्यार, पेज235)

शाह नुरुज़्ज़मान रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(9) अमीर अब्दुल माजिद

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अमीर अबू नसर के फ़रज़ंदे रशीद यानी बेटे, सैय्यिद अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की बहन के बेटे, मुरीद और ख़ुल्फ़ाए इज़ाम में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह अंजुमन ख़ुदा शनासी के रुकने आज़म और अपने मामूं और पीर के आशिक़े ज़ार थे।

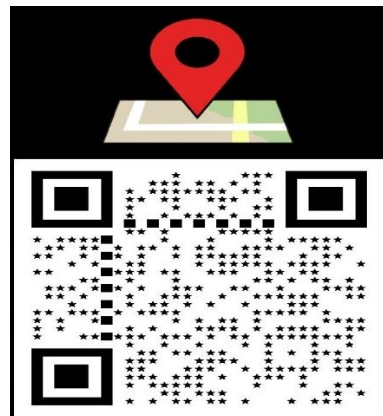
बहुत से लोग सिर्फ आप रहमतुल्लाह अलैह का जमाले बा कमाल देख कर शर्फ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए, बड़े बड़े जलीलुल क़द्र और अज़ीमुश्शान ख़ुलफ़ा आप रहमतुल्लाह अलैह के हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के सीने में शोरिशे इश्क़ की आग भड़का करती थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह का इंतिक़ाल भी वज्दो शोरिश ही की हालत में हुआ, **मज़ार मुक़द्दस** पीर साहब की पाईंती पर वाक़ेअ है, जिस के संगमरमर के तावीज़ पर येह शेअर लिखा हुआ है, जो आप रहमतुल्लाह अलैह की वसीयत करने की वजह से लिखा गया था।

चश्मे आँ दम कि ज़ शौक तू नहद सर ब लहद
ता दमे सुब्ह क़ियामत निगरां ख्वाहद बुवद

(बोस्ताने अख्यार, पेज116.117)

अमीर अब्दुल माजिद रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



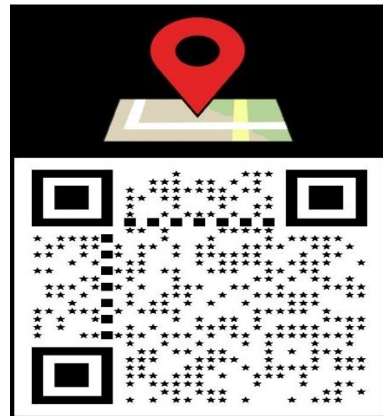
(10) अमीर अब्दुल मुन्ईम

आप रहमतुल्लाह अलैह अमीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के छोटे साहिब ज़ादे हैं, इल्मो फ़ज़्ल से मौसूफ़ और साहिबे रियाज़तो मुजाहिदात थे।

मुकम्मल 30 साल तक हैवानाते जमाली और जलाली और प्याज़ वग़ैरा तर्क कर के तरह तरह की रियाज़तें की थीं, दिन रात वज़ीफ़ा व तस्बीह से सरोकार रखते थे।

आख़िरे कार हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की नज़रे तवज्जोह से कमाल के दर्जे पर पहुंच गए, **मज़ार मुबारक** ग़ालिबन दरगाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह में है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज118)

अमीर अब्दुल मुनईम रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(11) सौफा अला क़ली (अली क़ली)

आप रहमतुल्लाह अलैह शुरू में एक शो'बदा बाज़ जोगी थे, एक ज़मींदार की हसीन व महजबीं बेटी पर आशिक़ हो कर उस को ले उड़े और जादू के ज़ोर से मैना की शक्ल में कर के एक पिंजरे में लिए हुए फिरते थे।

ख़ुश क़िस्मती से आगरा में गुज़र हुआ और शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह के क़रीब से गुज़रे, आप रहमतुल्लाह अलैह ने जोगी जी को देख कर बुला लिया और दो रकअत नमाज़ नफ़्ल पढ़ कर वुज़ू का बचा हुआ पानी पिंजरे पर डाल दिया कि उस के पड़ते ही तमाम जादू बातिल हो गया और वो साहिबे जमाल लड़की अपनी असली हालत पर आ गई।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने उस लड़की से पूरा हाल पूछ कर के फ़रमाया कि अगर अपने घर जाने की ख़्वाहिश हो तो मैं वहां पहुँचवा दूं, वो दौड़ कर क़दमों पर गिर पड़ी और सिद्क़े दिल से मुसलमान हो गई, जोगी जी भी येह हाल देख कर अपना सब कमाल भूल गए और हज़रत अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के हाथों पर शर्फ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए, आप रहमतुल्लाह अलैह ने दोनों का निकाह कर दिया, दोनों आपके मुरीदीने जां निसार में शामिल हो कर मुद्दत तक ख़ानक़ाह शरीफ़ में रहे।

हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह ने जोगी साहिब का नाम सूफ़ी अलाक़ी रखा और चंद ही रोज़ में विलायत के बुलंद मरातिब पर पहुंचा दिया, दोनों के मज़ार दरगाह के इहाते के अंदर मौजूद हैं और जोगी जोगन की ज़ियारत के नाम से मशहूर हैं।

मौलाना शाह वलीयुल्लाह साहिब मुहद्दिसे देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने अन्फ़ासुल आरिफीन में आपकी निस्बत येह जुमला एक मौक़े पर

तहरीर फ़रमाया है : अली क़ली अकबराबाद यानी आगरा में आये और हज़रत अबुल उला की नज़र से मशहूर हो गये।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज129.130)

सौफ़ा अला कली (अली कली) रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की Location का QR Code इस को अपने मोबाइल से Scan कीजिए, आप के मोबाइल पर Location खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार तक पहुँच सकते हैं।

लश्कर पुर

(12) सूफ़ी हुसैन ख़ां शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मौज़ा लश्कर पुर में साहिबे जज बहादुर की कोठी के इहाते में वाक़ेअ है जिस पर 1081 हिजरी शहादत का साल लिखा हुआ है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज73)



कर्बला(आगरा)

(13) बब्बू शाह मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह बड़े साहिबे बातिन और मस्त मज्ज़ूब थे, जिनकी ज़ियारत से राक़िमे बोसतान (अल्लामा सईद अहमद) भी मुशर्रफ़ हुआ है, मुहल्ला सूई कटरा में शैख़ अली बख़्श मरहूम उर्फ़ नन्हे भाई के मकान पर रहा करते थे, रास्ते के किनारे नशिस्त रहती थी, अच्छी ख़बरें कम और बुरी ख़बरें ज़्यादा आपकी ज़बान से निकला करती थीं जो फ़ौरन तीर ब हदफ़ साबित होती थीं यानी वैसा ही होता जैसा आप कहते थें, इसी वजह से लोगों ने ख़ौफ़ के मारे वो रास्ता चलना बंद कर दिया था और काला नाग आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम रख दिया था।

हज़ारों अजीबो ग़रीब करामात आप रहमतुल्लाह अलैह की मशहूर और देखी हुई और सुनी हुई लोग बयान करते हैं, नन्हे भाई मरहूम ने तमाम उम्र आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत की और बावजूद फ़ारिगुल बाल यानी अमीर होने के महज़ आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत और आप से फ़ैज़ हासिल करने के शौक़ में शादी नहीं की।

और मरज़ुल मौत में इसी उम्मीद पर एक दम के वास्ते भी किसी वक़्त जुदा नहीं हुए, जब विसाल का वक़्त क़रीब आया आप रहमतुल्लाह अलैह ने इरशाद फ़रमाया: कि भय्या जी! जामा मस्जिद तक हो आ, लेकिन नन्हे भाई दो मर्तबा के हुक्म पर भी पास से नहीं हटे, तीसरी मर्तबा बुलंद आवाज़ से फिर वही फ़रमाया, इस पर बेचारे ना चाहते हुए जामा मस्जिद की तरफ़ भागे, उनका जाना था कि 25 साल की उम्र का एक नौजवान कमली पोश फ़क़ीर दरवाज़े पर झाँका, मोहल्ले के बहुत से लोग पास बैठे हुए थे, बावजूद इस के कि दस्तों की वजह से मुद्दत से आप साहिबे फ़िराश

यानी चारपाई पर लग चुके थें और बैठने तक से मजबूर थे, मगर उस फ़क़ीर को देखते ही पास बुलाया और फ़ौरन अपनी ताक़त से खड़े हो कर उसे बग़ल में दबा लिया, फिर दो तीन मिनट के बाद छोड़ दिया, फ़क़ीर अपनी राह गया, उस का मुड़ना था कि आप रहमतुल्लाह अलैह ने दुनिया से मुँह मोड़ा और फ़ौरन ताइरे रूह परवाज़ कर गया।

तमाम हाज़िरीन येह माजरा आनन फ़ानन में देखकर अंगुश्त बदंदाँ और महवे हैरत रह गए, नन्हे भाई दौड़ते हाँपते जामा मस्जिद से आए, यहां आकर येह रंग देखा, सर पकड़ कर देर तक रोते रहे, आख़िरे कार जिस्मे ख़ाकी को कर्बला में ले जा कर सुपुर्दे ख़ाक किया और चंद मुद्दत बाद ख़ुद भी इस रंज और सदमे में चल बसे। (बोस्ताने अख्यार, पेज, 59.60)

(14) सैय्यिद हुसैन

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ नसीरुल्लाह इब्ने शैख़ अब्दुल वाहिद रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे और शाहजहाँ बादशाह के ज़माने के मशाईख़ीने साहिबे असरार में से थे, 1064 हिजरी में आप ने विसाल फ़रमाया।

वफ़ात की तारीख़ येह है :

आरिफ़े बे नज़ीर शैख़ हुसैन
मुर्शिदो पीरो हादी युस्सक़लैन
साल नक़्क़ालश ख़िर्द चू गो हर सफ़्त
ब हसीन अस्त ज़ेबे जन्नत गुफ़्त

मज़ार मुबारक करबला में इम्दादुल मकादिर बाग़ के अंदर एक गुंबद के नीचे मौजूद है, मज़ार का तावीज़ संग मरमर का है जिस पर संग़े मूसा की पच्चे कारी से {नाम मुबारक दवाज़्दा इमाम सलवातुल्लाह

अलैहिम अजमईन} और पायतीं पर {बंदा ए आसी क़ाज़ी सैय्यिद हुसैन 1064 हिजरी} लिखा हुआ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज73)

(15) शाह नमद पोश बरहना

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद यानी आगरा के बुज़ुर्गाने दीन में से हैं, आपके हालात का कुछ भी पता नहीं चल सका, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** कर्बला में मौजूद है, आप रहमतुल्लाह अलैह की औलाद में से मीर सैय्यिद शाह रहमतुल्लाह अलैह और उनकी बहन फ़ैज़ बेगम हैं उनका मज़ार भी कर्बला में मौजूद है। (बोस्ताने अख्यार, पेज88)

(16) मीर सैय्यिद शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह नमद पोश बरहना रहमतुल्लाह अलैह की औलाद में से हैं, **मज़ार मुबारक** कर्बला में एक हुजरे के अंदर मौजूद है जिसमें आप रहमतुल्लाह अलैह की हमशीरा यानी बहन फ़ैज़ बेगम और आप आराम फरमा हैं, हुजरे के जुनूबी यानी दख्खिनी दरवाज़े पर येह कतबा नसब है यानी लगा हुआ है :

फ़ैज़ बेगम आंकि दर ख़ूबी नज़ीर ऊ नबूद
दर महे शव्वाल चूँ रिहलत अज़ीं आलम नबूद
गुफ़्त हातिफ़ साले फ़ौत आँ अफ़ीफ़ा ईं क़दर
मुक़द्दम ऊ आबरूए अहले जन्नत शुद फ़ज़ूद

ब तारीख़ हज़्दहुम माहे शव्वाल 1197 हिजरी फैज़ बेगम फ़ौत शुद, फ़ैज़ बेगम व मीर सैय्यिद शाह बाहम ख्वाहर व बिरादर बू दंद, हुवल क़ादिर।

माहे ज़ी कादा अज़ क़ज़ाए इलाह
चूँकि शुद फ़ौत मीर सैय्यिद शाह

गुफ़्त हातिफ़ ब मर्गश अज़ सरे दर्द
ब जिनां बाद रोज़ीश मस्वाह

ब तारीख़ अव्वल माह ज़ीकादा 1197 हिजरी मीर सैय्यिद शाह फ़ौत शुद, औलाद शाह नमद पोश बरहना।

(बोस्ताने अख्यार, पेज85)

(17) मौलवी सैय्यिद वारिस अली

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद यानी आगरा के फ़रज़ंद रशीद हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के आबाओ अज्दाद यानी बाप दादा सादात यानी सैय्यिद सहीहुन्नसब और काकोरी के बाशिंदे थे, इल्मो फ़ज़्ल और ओहदा ए क़ज़ा के साथ पीरी मुरीदी का सिल्सिला मुद्दत से ख़ानदान में चला आता था, येह पता नहीं चला कि आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिद बुज़ुर्गवार आगरा में किस सिल्सिले से रौनक अफ़रोज़ थे, बहरे हाल आप रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा के मोहल्ले ज़ैन ख़ाना में आलमे ग़ैब से ज़हूर फ़रमाया यानी पैदा हुए।

जिस लाड़ प्यार से आप रहमतुल्लाह अलैह की परवरिश हुई, वो इस बात से ब ख़ूबी ज़ाहिर होती है कि चार बरस की उम्र तक आप रहमतुल्लाह अलैह गोद से नहीं उतरे, इसी का नतीजा था कि आप रहमतुल्लाह अलैह बावजूद मज़बूत जिस्म वाले और बुलंद क़ामत यानी लंबे होने के लिथड़ा कर चला करते थे।

शुरुआती तालीम व तर्बियत आला पैमाने पर हुई और अरबी ज़बान की तालीम बतौरे मादरी ज़बान के दी गई, फ़ारसी, उर्दू घर की ज़बान थी, अरबी, अंग्रेज़ी में भी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ आप रहमतुल्लाह अलैह ने आला तालीम पाई, ख़ुसूसन रियाज़ी यानी मैथ व हैयत यानी ईस्टरोनोमी में तो ऐसा कमाल हासिल किया कि शोहरा ए आफ़ाक़ हुए,

इब्तिदाई ज़माने में कुछ मुद्दत तक आपने विक्टोरिया स्कूल में मास्टरी भी की थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह राक़िमे बोसतान (अल्लामा सईद अहमद मरहरवी)के मख़्दूमे ख़ास थे, मगर येह उम्मीद ना थी कि आपके हालाते ज़िंदगी के तहरीर की ज़रूरत इस क़द्र जल्द पड़ेगी, लिहाज़ा कभी आप रहमतुल्लाह अलैह से इब्तिदाई हालात के मुतअ़ल्लिक़ गुफ़्तगु नहीं आई।

अफ़सोस कि मौत के ज़बरदस्त हाथों ने ख़िलाफ़े उम्मीद आप रहमतुल्लाह अलैह को हमसे इस क़दर जल्द जुदा कर दिया कि जो बातें तीन बरस पहले ख़ुद आपकी ज़बाने मुबारक से सुन सकते थे वो आज बावजूद कोशिशो तलाश के भी मालूम ना कर सके।

आप रहमतुल्लाह अलैह में ऐसा जज़्बा पैदा हो गया था कि चलते फिरते, उठते बैठते घंटों मुराक़बे की हालत में रहते थे, इस हालत में ख़्वाह कैसा ही हक़ीक़ी दोस्त क्यों ना मिलता, कभी उस की तरफ़ मुतवज्जेह ना होते थे ग़र्ज़ कि मज्ज़ूबे साकित के तमाम औसाफ़ आपकी ज़ात में मौजूद थे, नमाज़े ज़ाहिरी से आज़ाद लेकिन रोज़े के इस क़द्र पाबंद थे कि अय्यामे ज़ईफ़ी यानी बुढ़ापे के दिनों और बीमारी में भी ना छोड़ते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह की रात की हालत ऐसी राज़ सर बस्ता थी कि जिसका राज़ हर वक़्त के हम नशीनों पर भी अख़ीर दम तक ना खुला।

तमाम अय्यामे हयात में जहां जहां रहे रात के वक़्त हमेशा तने तन्हा रहे, ग़ालिबन एक रात भी ऐसी नहीं होगी कि आप रहमतुल्लाह अलैह किसी के साथ एक कमरे बल्कि एक मकान में रहे हों, जहां रहते मकान की कुंडी बंद करने के बाद ख़्वाह कैसा ही यार, दोस्त पुकारे, कैसा ही ज़रूरी काम क्यों ना पेश आए कभी कुंडी ना खोलते थे और अगर कभी मजबूर हो कर खोल भी देते थे तो ख़ुद दूसरी जगह चले जाते थे, हर चंद

यार दोस्तों ने इस राज़ से पर्दा उठाने की कोशिश की मगर दमे वापसी तक येह राज़ सर बस्ता ही रहा, जब किसी ने ज़्यादा इसरार किया तो सिर्फ़ येह जवाब देकर टाल दिया कि घर और गौर (क़ब्र) का अलैहिदा होना ही अच्छा है।

ग़ालिबन वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह की हयात में आप रहमतुल्लाह अलैह मुताहिल हो गए थे लेकिन मुद्दत से क़तए तअ़ल्लुक़ात कर लिए थे, आपकी रहमतुल्लाह अलैह बीवी साहिबा और एक साहिबज़ादा सैय्यिद ज़हूर अली मौजूद और जयपुर में मुलाज़िम हैं, बीवी, बच्चे से मिलना क्या मा'ना उन के ज़िक्र तक से गुरेज़ करते यानी बचते थे।

आपका रहमतुल्लाह अलैह वो कारनामा जिससे आइन्दा नस्लों में आप रहमतुल्लाह अलैह का नामे नामी नेक नामी के साथ हमेशा ज़िंदा रहेगा, आप रहमतुल्लाह अलैह की तसानीफ़ो तालीफ़ात का सिल्सिला है, चूँकि आप रहमतुल्लाह अलैह की तबीअत फ़ितरतन इख़्फ़ा दोस्त वाक़ेअ हुई थी, आप रहमतुल्लाह अलैह को शौहरत से नफ़रत और गुमनामी से उल्फ़त थी, बीसियों किताबें, सैकड़ों आला दर्जे के मज़ामीन बिला नाम या दूसरों के नाम से शाएअ़ करा दिए, जिसको निगारंदए बोसतान (यानी सईद अहमद मरहरवी) को ज़ाती इल्म है, यही वजह है कि आज आप रहमतुल्लाह अलैह की तसानीफ़ की मुकम्मल फ़ेहरिस्त पेश करना ना सिर्फ मुश्किल बल्कि ना मुम्किन है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का क़लम मशीन की तरह बराबर चलता रहता था, आखिरी उम्र में भी जबकि आप रहमतुल्लाह अलैह मुतवातिर यानी लगातार बीमारियों की वजह से निहायत कमज़ोर हो गए थे, हाथ में राशा पैदा हो गया था, तबीबों और डाक्टरों ने किसी किस्म की दिमाग़ी मेहनत की क़तई मुमानअत कर दी थी मगर आप रहमतुल्लाह अलैह का हाथ ना रुकता

था, अगरचे राशे की वजह से देर में लिखा जाता था मगर हमेशा क़लम बरदाश्ता और ख़त्ते नस्तालीक़ लिखते थे, आपका क़लम क़लमे वह़ी का मुक़ल्लिद था कि जो एक मर्तबा निकल गया वो पत्थर की लकीर हो गया, लिख कर वो दोबारा पढ़ना जानते ही ना थे और वाक़ई कुछ ऐसा कमाल हासिल था कि एक नुक़्ते की भी ग़लती ना रहती थी, यहां तक कि अंग्रेज़ी से उर्दू या उर्दू से अंग्रेज़ी में तर्जमा करने में भी येह ही हालत थी, मुश्किल से मुश्किल अंग्रेज़ी किताबों या मज़ामीन का तर्जमा इस नफ़ासत और ख़ूबी से क़लम बरदाश्ता लिखते जाते थे कि बड़े बड़े काबिल बी, ए और एम, ए महवे हैरत हो कर आप रहमतुल्लाह अलैह का मुँह तका करते थे।

सबसे पहले आप रहमतुल्लाह अलैह ने रियाज़ी यानी मैथ के चंद रिसाले कलमबंद फ़रमाए जो उस्ताद के नाम से शाएअ़ हुए, उस के बाद कई बरस तक आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के मशहूरो मरहूम अख़बार **इस्लामे आगरा** के ऐडीटर रहे जिन लोगों की निगाह से उस अख़बार के पुर ज़ोर मज़ामीन गुज़रे हैं वो आज तक उस को याद करते हैं, 1892 ई से 1898 ई तक एक बेनज़ीर जंतरी **तक़वीमे हुसैनी** के नाम से आप रहमतुल्लाह अलैह मुरत्तिब करते रहे जो 1897 ई तक मतबए अकबरी से शाएअ़ होती रही और 1898 ई की क़लमी लिखी हुई दफ़्तर मतबए अकबरी में मौजूद है।

अक्सर जंतरियाँ उस मतबए में मौजूद हैं जिनमें शहर के रोज़ाना के वाक़िआत आपके हाथ के लिखे हुए हैं, रिसाला नई रौशनी के भी जो एक आलिमाना मैगज़ीन था आप रहमतुल्लाह अलैह एडीटर रहे, रिसाला **मैडीकल जनरल आगरा** जो एक डाक्टरी रिसाला था मुद्दत तक आप रहमतुल्लाह अलैह के ज़ेरे एहतिमाम व इमदाद यानी मदद से निकलता रहा, आप रहमतुल्लाह अलैह की सबसे मशहूर और ज़ख़ीम किताब **शम्सुत्तवारीख** है जिसके

पहले हिस्से में हुज़ूर रसूले मक़बूल ﷺ और आप ﷺ के ख़ानदान के मुफ़स्सल वाक़िआत, मोजज़ात, ग़ज़वात वग़ैरा, दूसरे तीसरे हिस्से में ख़लीफ़ए अव्वल, दोम के ख़िलाफ़त के ज़माने के वाक़िआत निहायत सलेस उर्दू और सल्फ़ सालिहीन के तर्ज़ पर क़लमबंद किए हैं, यकुम मुहर्रम 1317 हिजरी को उस की बिस्मिल्लाह हुई थी, येह किताब **मत्बउन्नूर आगरा** से शाएअ हो कर बेइंतिहा मक़बूल हुई, जब आप रहमतुल्लाह अलैह ख़लीफए दोम हज़रत फ़ारुके आज़म रज़ी अल्लाहु अन्हु के हालात क़लमबंद फरमा चुके तो अरकाने मत्बअ़ ने बक़िया ख़िलाफ़ते राशिदा के हालात लिखने की फ़र्माइश की मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ने बावजूद इसरार इन्कार किया और फ़रमाया कि अब मैं आगे क़लम नहीं उठा सकता, मुम्किन है कि सहाबए किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन के बाहमी झगड़ों में मेरे क़लम से किसी की शान में कोई ख़िलाफ़ कलिमा निकल जाये जो मेरी आख़िरत की ख़राबी का बाइस हो।

शम्सुत्तवारीख के अलावा सानिहा ए कर्बला, मारका ए कर्बला, जंग रूसो जापान, रिसाला अरूज़, हैरत, वग़ैरा कई किताबें आप रहमतुल्लाह अलैह की और भी तबअ़ हो कर शाएअ़ और क़बूले ख़ासो आम हो चुकी हैं, उनके इलाक़ा तर्जमा **शम्सुल फ़राइज़** मुअल्लफ़ा मौलवी शम्सुद्दीन ख़ान, हिदायतुन्नहव, मक़तलुल अदब, बिदायतुल अदब फ़ी लिसानिल अरब, रिसाला सर्फ़, रिसाला नहव, वग़ैरा चंद सर्फ़ो नहव के 21, वर्क़ के रिसाले जो जनवरी और फरवरी 1897 ई के लिखे हुए हैं कुतुब ख़ाना **मुहम्मदिया आगरा** में क़लमी नुस्खे मौजूद हैं उन के छपने की नौबत नहीं आई।

दो तीन किताबों की तालीफ़ की आप रहमतुल्लाह अलैह को तमाम उम्र तमन्ना रही, उनमें पहली किताब क़ुरआने मजीद की तफ़्सीर है जिसे आप

रहमतुल्लाह अलैह एक जदीद तर्ज़ पर निहायत ख़ूबसूरत और आला पैमाना पर लिखना और छपवाना चाहते थे और उस के मुतअल्लिक़ बहुत सा ज़ख़ीरा फ़राहम कर के दो तीन पारों की तफ़्सीर लिख भी चुके थे उनमें पहले पारे की तफ़्सीर कुतुब ख़ाना **मुहम्मदिया आगरा** में मौजूद है और दूसरी किताब जिसके ख़्यालात आपके दिल में हमेशा मोजज़न रहे, एक **इस्लामी क़ामूसुल उलूम** इन्साईक्लो पीडीया की तालीफ़ थी और तीसरी किताब जिसकी तबअ का आपको बहुत ही इश्तियाक़ था मुंशी मुईनुद्दीन साहिब की किताब **तारीख़े आगरा** थी जिसके बाज़ मज़ामीन ख़ुद आपके लिखे हुए थे।

तसनीफ़ो तालीफ़ के इलावा आप रहमतुल्लाह अलैह का तमाम वक़्त दर्सो तदरीस में सर्फ होता था, अरबी, फ़ारसी, उर्दू, अंग्रेज़ी ख़ुसूसन रियाज़ी यानी मैथ बहुत कसरत से लोग आप रहमतुल्लाह अलैह से पढ़ा करते थे, अक्सर कॉलिजों के आला दर्जों के तालिबे इल्म भी आप रहमतुल्लाह अलैह से रियाज़ी सीखा करते थे, शुरूअ में आप रहमतुल्लाह अलैह बिल्कुल मुफ़्त पढ़ाया करते थे लेकिन आख़िर में कुछ लोगों से उजरत क़बूल फरमा लेते थे, आगरा में हज़ारहा आप रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द मौजूद हैं, जो सब आप रहमतुल्लाह अलैह की तालीम व बरताव के मद्दाह यानी तारीफ करने वाले हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह छोटे बड़े सब शागिर्दों से निहायत मुहब्बतो उल्फ़त से पेश आते और सबको यार के लक़ब से मुख़ातब फ़रमाया करते थे, तीन तीन, चार चार वक़्त भूके रहते लेकिन कभी दिल तंग ना होते, ना ज़बान पर शिकवे शिकायत के कलिमात लाते थे।

वफ़ात से एक हफ़्ता पहले आप रहमतुल्लाह अलैह मुंशी फ़ैज़ अहमद साहिब इन्सपैक्टर के हमराह यानी साथ एक मौलूद शरीफ़ की तक़रीब में क़स्बा महाबन तशरीफ़ ले गए थे, एक हफ़्ता क़ियाम का इरादा था, मगर

दो तीन दिन के बाद यकायक आप रहमतुल्लाह अलैह की तबीअत में एक ख़ास इन्क़िलाब पैदा हुआ और ख़िलाफ़े आदत वापसी की जल्दी की, हर चंद इसरार किया मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ना ठहरे और तने तन्हा आगरा वापिस आ गए, यहां आकर उसी दिन मर्ज़े फ़ालिज में मुब्तला हुए, दोस्त अहबाब ने हर चंद इलाज में कोशिश की मगर चूँकि पैमाना ए हयात लबरेज़ हो चुका था लिहाज़ा कोई कोशिश कारगर ना हुई और सनीचर के दिन दसवीं रबीउस्सानी 1327 हिजरी को 70 या 75 बरस की उम्र में आप रहमतुल्लाह अलैह इस आलमे फ़ानी से राहीये बहिश्ते बरीं हुए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार कर्बला में एक मस्जिद और पक्के कुवें के क़रीब मौजूद है, लौहे मज़ार पर मुंशी फ़ैज़ अहमद साहिब ने येह तारीख़ लिखवा दी है :

जानिबे जन्नत गए वारिस अली
ख़ूब पाया फ़ज़्ले बारी से उरूज
दस रबीउस्सानी और शंबे का दिन
हाथ आया दीन दारी से उरूज

(बोस्ताने अख्यार, पेज236.246)

ताज गंज (आगरा)

(18) सैय्यिद अहमद बुख़ारी

सैय्यिद अहमद बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने औलियाए किराम में से हैं, मुफ़स्सल हाल किसी तारीख़ या तज़्किरे में नज़र से नहीं गुज़रा, आम तौर से मशहूर है कि आप सैय्यिद जलाल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह के बड़े भाई हैं मगर इस की सेहत में शक है, आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार से शहर वालों ख़ुसूसन ताज गंज के रहने वालों को ख़ास अक़ीदत है, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** निहायत बुलंदो पुरफ़ज़ा मक़ाम पर मुत्तसिल हवेली ख़ांद दरां ख़ान में मौजूद और ज़ियारत गाहे ख़ासो आम है, शाहाँने सल्फ़ यानी पहले के बादशाहों के ज़माने से कुछ अराज़ी ज़मीन इस मज़ार के अखराजात यानी खर्च के वास्ते माफ़ यानी वक़्फ़ चली आ रही है, जो ज़ेरे ऐहतिमाम कमेटी लोकल एजैंटी है।

जुमा के दिन 25 रजब, 1064 हि को आप रहमतुल्लाह अलैह ने सफ़रे आख़िरत इख्तियार फ़रमाया, विसाल की तारीख़ **'मुनव्वर बहिश्त अज़ अहमद'** है जिसके अदद 1064 बनते हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज40)

मौजूदा हालत 2025

सैय्यिद अहमद बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार शरीफ़ पर हाज़िरी देने के लिए दो तरीक़े हैं (1) पैदल। (2) बैट्री वाली बाइक। क्योंकि पैट्रोल या डीज़ल वाली गाड़ी को ताजमहल के आस पास नहीं जाने देते। लिहाज़ा ताजमहल के पूरबी गेट से संदली मस्जिद होते हुए आगे बढ़ते जाएं, कुछ दूर चल कर **'अहमद बुख़ारी क़ब्रिस्तान'** के नाम से क़ब्रिस्तान आएगा वहीं पर टाट शाह के नाम से एक क़ब्र बनी हुई है, इस से कुछ दूर आगे चल कर एक टीला नज़र आएगा, उस टीले पर चढ़ने के

लिए सीढियां बनी हुई हैं, पहली सीढी के पास गवर्मेंट की जानिब से दो लाल रंग के पत्थर लगाए गए हैं जिसमें से एक में इंग्लिश और दूसरे में हिन्दी से यूं लिखा हुआ है:

सैय्यिद अहमद बुख़ारी की दरगाह

येह कहा जाता है सैय्यिद अहमद बुख़ारी को अरब के बुख़ारा शहर से सम्राट शाहजहाँ द्वारा ताजमहल की नीव रखने के लिए बुलाया गया था। वो अपने तीन भाईयों जिनके नाम सैय्यिद जलाल बुख़ारी, सैय्यिद अमजद बुख़ारी, सैय्यिद लाल बुख़ारी थे, के साथ भारत आया था। चारों भाईयों ने ताजमहल स्थल (की जगह) पर पवित्र (पाक) क़ुरआन का पाठ किया। इस के बाद बादशाह शाहजहाँ ने शिलान्यास (तामीर की शुरूआत) किया और ताजमहल का निर्माड़ (तामीर) शुरू हुआ। इन भाईयों की मृत्यू (वफ़ात) के बाद ताजमहल के चारों ओर (तरफ़) उनकी दरगाह बनाई गई जो इस तरह है सैय्यिद अहमद बुख़ारी की दरगाह पूरब की तरफ़, सैय्यिद जलाल बुख़ारी की दरगाह पच्छिम की तरफ़, सैय्यिद लाल बुख़ारी की दरगाह दक्खिन की तरफ़, और सैय्यिद अमजद बुख़ारी की दरगाह बलोच पुरा स्थान (जगह) पर है।

इस टीले पर सीढियों से ऊपर चढ़ जाईए वहीं हज़रत अहमद बुख़ारी अलैहिर्रहमा का मज़ार पुर अनवार मौजूद है। येह मज़ार मुबारक ताजमहल के पूरब की जानिब मौजूद है। मज़ार मुबारक के ऊपर पीलू का दरख़्त साया किए हुए है जिसके पुराने होने का अंदाज़ा इस दरख़्त को देख कर लगाया जा सकता है। मज़ार मुबारक के चारों तरफ़ स्टील की रेलिंग लगी हुई है। मज़ार मुबारक के सिरहाने एक मस्जिद भी बनी हुई है। और मस्जिद के सामने मेहमान ख़ाना भी बना हुआ है। आप अलैहिर्रहमा का उर्स 25, 26, 27 रजब को होता है।

नोटः मज़ार मुबारक पर नाम और वफ़ात के साल की कोई तख़्ती वग़ैरा नहीं लगी हुई है और आगरा के कई मज़ारात ऐसे हैं जिनमें तख़्तियाँ नहीं लगी हैं जिसकी वजह से साहिबे मज़ार का नाम और उनकी वफ़ात की तारीख़ का कुछ पता नहीं चल पाता। काश कोई अहले ख़ैर इस नेकी के काम में आगे आए और तमाम मज़ारात पर तख़्तियाँ लगवा दे।

सैय्यिद अहमद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।





(19) सैय्यिद जलाल बुख़ारी

आप रहमतुल्लाह अलैह हज़रत शाह आलम बुख़ारी अहमदाबादी रहमतुल्लाह अलैह की पांचवीं पुश्त में सैय्यिद मुहम्मद बुख़ारी रज़वी रहमतुल्लाह अलैह के फ़रज़ंदे अर्जुमंद यानी बेटे हैं, 15 जुमादस्सानी 1003 हि ब मुताबिक़ 1594 ई को पैदा हुए, **'वारिसे रसूल'** विलादत की तारीख़ है, उलूमे ज़ाहिरी मुल्ला मुहम्मद सूफ़ी माज़ंदरानी की शागिर्दी में और कमालाते बातिनी आपने वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह की फ़ैज़े तर्बीयत से हासिल किए।

शाहजहाँ बादशाह की तख़्त नशीनी के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह ने वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से आगरा में तशरीफ़ लाए और दरबारे शाही से ऐज़ाज़ हासिल कर के वापस गए, 1052 हि ब मुताबिक़ 1643 ईस्वी में दोबारा आगरा में रौनक अफ़रोज़ हुए, इस मर्तबा बादशाह ने निहायत इसरार से सदारते कुल के मन्सबे जलीला पर कि जिससे तमाम मुमालिके महरूसा के उलमा, फुज़ला और मशाईख़ीन वग़ैरा का तअल्लुक़ था, मुअज़्ज़ज़ कर के मन्सबे चहार हज़ारी (यानी चार हज़ार सिपाहियों का सिपह सालार) मर्हमत किया, चंद अरसे में शश हज़ारी (यानी छः हज़ार) के मन्सब पर तरक़्क़ी पाई।

एक जुमादल अव्वल 1057 हि ब मुताबिक़ 1647 ईस्वी को दुनिया ए फ़ानी से फ़िरदौसे बरीं को रवाना हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया, **''जा नशीने हैदरे कर्रार''** आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात की तारीख़ है यानी इस के अदद 1057 बनते हैं।

मज़ार मुबारक ताज गंज के रास्ते में मर्द घटा दरियाए जमुना के किनारे एक बुलंद चबूतरे पर वाक़ेअ है और ज़ियारत गाह ख़ासो आम है।

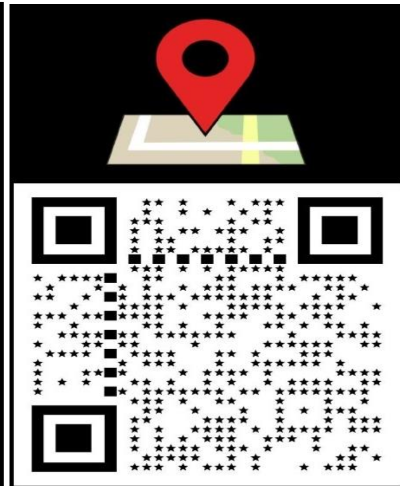
(बोस्ताने अख़्यार, पेज66)

मौजूदा हालत2025

हज़रत जलाल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक निहायत ख़ूबसूरत और ऊंचे चबूतरे पर बना हुआ है आप के मज़ार के दाएं बाएं एक एक मज़ार और बनी हुई हैं जिनके बारे में कुछ पता नहीं चल सका कि वो किन की हैं फिर भी लोगों में मशहूर है कि एक क़ब्र आपके भांजे और दूसरी आपके भातीजे की है। मज़ार मुबारक के क़िब्ला की जानिब एक ख़ूबसूरत मस्जिद भी मौजूद है। और आपके मज़ार मुबारक के नीचे कई सारी क़ब्रें बनी हुई हैं।

उर्स मुबारक 5 रमज़ान को होता है जिसमें कसीर आशिक़ाने औलिया शिरकत करके फ़ैज़ हासिल करते हैं।

सैय्यिद जलाल बुखारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की Location का QR Code इस को अपने मोबाइल से Scan कीजिए, आप के मोबाइल पर Location खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(20) मौलाना ज़ियाउद्दीन बल्ख़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह इनायत क़ारी शत्तारी लाहौरी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा ए आज़म और बड़े साहिबे बातिन और आरिफे कामिल बुज़ुर्ग थे, मशहूर है कि चालीस बरस तक आप रहमतुल्लाह अलैह को बुख़ार आया।

मौलाना सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह (जिन का मज़ार मुबारक पंजे मदरसा आगरा में मौजूद है) पहले आप रहमतुल्लाह अलैह ही के मुरीद व मो'तक़िद थे और आप रहमतुल्लाह अलैह ही के हुक्म से हज़रत अब्दुल्लाह शाह क़ादरी बगदादी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हो कर उनके मुरीद हुए, हज़रत मौलाना सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह की तारीफ़ में एक क़सीदा कहा है जो उनके दीवान में मौजूद है।

तसव्वुफ़ में आप रहमतुल्लाह अलैह का रिसाला बनाम **'क़तरुन्नजात'** यादगार है, जिसका क़लमी नुस्ख़ा हकीम सैय्यिद इरफ़ान अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के कुतुब ख़ाने में मौजूद है जो कि सुई कटरा आगरा में है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** सैय्यिद जलाल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के क़रीब जानिबे मग़रिब वाक़ेअ और ज़ियारत गाह है, तारीख़े रिहलत येह है

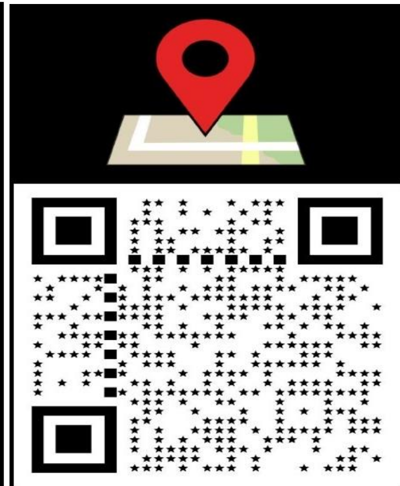
सरवरे आरिफ़ाने बा तमकीं
चूँकि शुद अज़ जहां ब ख़ुल्दे बरीं
साल नक़लश ब जुस्तम अज़ दिल ख़्वेश
गुफ़्त मक़बूले हक़ ज़ियाउद्दीन

'मक़बूले हक़ ज़ियाउद्दीन' के अदद 1193 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल का साल है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज91)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत जलाल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के आस पास बहुत से क़ब्रें बनी हैं काफ़ी पता करने के बाद भी आपके मज़ार का कुछ पता ना चल सका। लेकिन बाद में एक शख़्स से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने बताया कि आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक वही है जो अब हाफ़िज़ साहिब के मज़ार से मशहूर है। और येह मज़ार जलाल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के नीचे मौजूद है।

सैय्यिद जलाल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



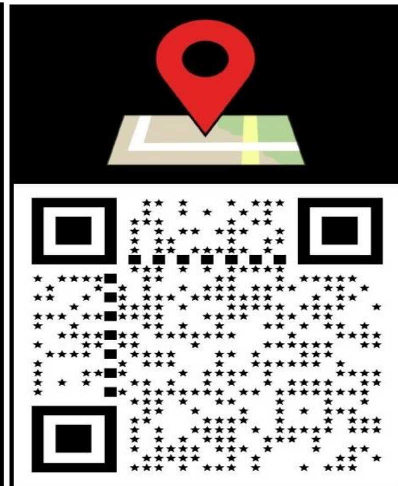
(21) हज़रत शैख नुरुल्लाह कादरी

हज़रत शैख नुरूल्लाह कादरी बिन शैख सलीमुल्लाह बिन काज़ी मुहम्मद इस्माईल मद्रासी रहमतुल्लाह अलैह ने रस्मी उलूम हासिल करने के बाद अपने भाई मुफ्ती शैख अब्दुल वहहाब के साथ आगरा आये और थाना ताजगंज आगरा में थाने दार मुकर्रर हुए।

आप रहमतुल्लाह अलैह सूफी मुंशी बुज़ुर्ग थे, शाईरी से भी ज़ौक़ था, आबाद तखल्लुस करते थे, कलाम सूफियाना होता था।

हज़रत मौलवी अहमदुल्लाह शाह रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद थे, 15 शव्वाल में विसाल फरमाया और मज़ार मुबारक दरगाह सैय्यिद जलाल बुखारी रहमतुल्लाह अलैह में है। (महताबे अजमेर पेज 111)

सैय्यिद जलाल बुखारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(22) सैय्यिद हामिद बुख़ारी

आप रहमतुल्लाह अलैह शाहजहाँ बादशाह के ज़माने के बुज़ुर्गों में से हैं, अवामुन्नास आप रहमतुल्लाह अलैह को सैय्यिद जलाल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह और सैय्यिद अहमद बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह का भाई बतलाते हैं, आपका मज़ार थाना ताजगंज के अंदर वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज70)

(23) सैय्यिद मुहम्मद बुख़ारी

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार थाना ताजगंज के अंदर वाक़ेअ है, आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अहमद बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह और सैय्यिद जलाल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह के भाई मशहूर और आगरा के मशहूर औलिया अल्लाह में शुमार होते हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के सही तारीख़ो हालात से ला इल्मी है यानी आप रहमतुल्लाह अलैह के हालात मालूम ना हो सके। (बोस्ताने अख्यार, पेज156)

मौजूदा हालत 2025

ताजगंज थाना के अंदर सिर्फ एक मज़ार मुबारक है जिसमें कोई तख़्ती वग़ैरा नहीं लगी, आस पास के मुस्लमानों से पता किया तो उन्होंने बताया कि येह मज़ार अमजद बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह की है जो कि अहमद बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह और जलाल बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह के भाई हैं।

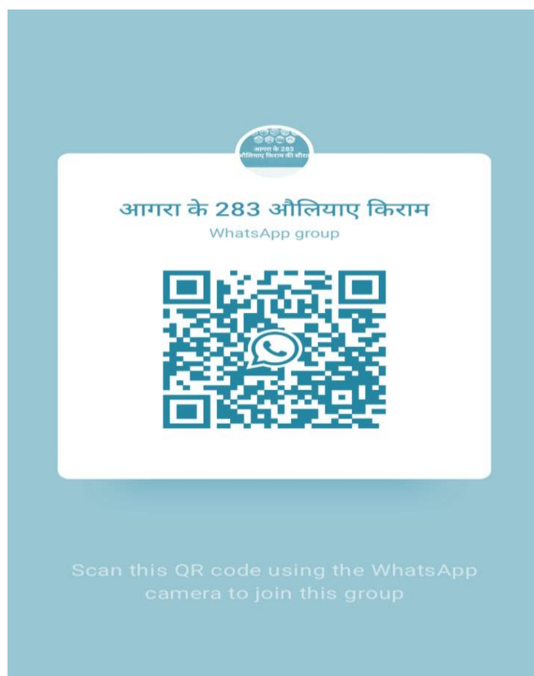
और हज़रत सैय्यिद अहमद बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के पास गवर्मेंट की जानिब से जो पत्थर लगाया गया है उस में येह लिखा है : "सैय्यिद अमजद बुख़ारी की दरगाह बिलोच पुरा स्थान (जगह) पर है"

लेकिन बोस्तांने अख्यार के मुसन्निफ़ अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने ताजगंज थाना के अंदर दो बुज़ुर्गों के मज़ारों का तज़्किरा

किया है एक सैय्यिद हामिद बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह और दूसरे सैय्यिद मुहम्मद बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह। हक़ीक़ते हाल क्या है पता नहीं।

ताजगंज थाने के अंदर के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।





तेली पाड़ा (ताजगंज)

(24) सैय्यिद अज़मत बुखारी

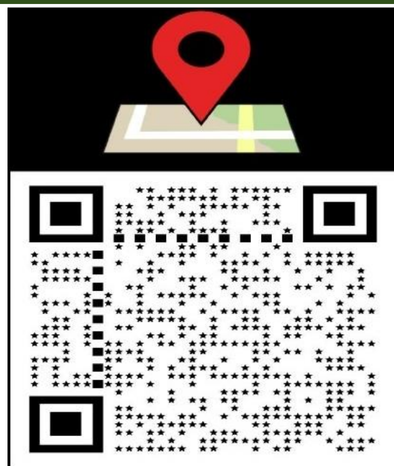
आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद जलाल बुखारी रहमतुल्लाह अलैह, सैय्यिद अहमद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह और हामिद बुखारी रहमतुल्लाह अलैह के भाई और शाहजहाँ बादशाह के ज़माने के बुज़ुर्ग बयान किये जाते है, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुहल्ला तेली पाड़ा ताजगंज में वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज123,124)

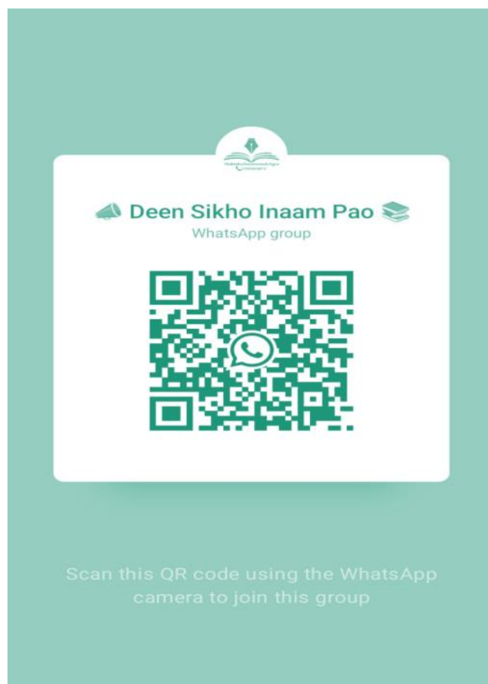
मौजूदा हालत 2025

हज़रत सैय्यिद अज़मत बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक ताजमहल से दक्खिन की जानिब वाक़ेअ है, लोगों में लाल बुख़ारी के नाम से मशहूर हैं। तेली पाड़ा ताजगंज की **'रज़ा उस्मानी'** मस्जिद के पास गली के अंदर मौजूद है। आप रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक पर भी नाम और तारीखे वफ़ात की कोई तख़्ती वग़ैरा नहीं लगी।

नोट: आगरा के कई औलियाए किराम के मज़ारात ऐसे हैं जिनमें तख़्तियाँ नहीं लगी हैं जिसकी वजह से साहिबे मज़ार का नाम और उनकी वफ़ात की तारीख़ का कुछ पता नहीं चल पाता। और इस की वजह से बाज़ औलियाए किराम के नाम भी बदल गए हैं। काश कोई अहले ख़ैर इस नेकी के काम में आगे आए और तमाम मज़ारात पर तख़्तियाँ लगवा दे।

सैय्यिद अज़मत बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।





गली मल्कान ताज गंज(मल्कों गली)

(25) शाह मुजाहिदुद्दीन

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद मुबारिज़ुद्दीन इब्ने सैय्यिद ग़ुलाम मुर्तज़ा इब्ने सैय्यिद जलालुद्दीन इब्ने सैय्यिद मुहीय्युद्दीन इब्ने मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के फ़रज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह निहायत बा बरकत और ख़ुदा शनास बुज़ुर्ग थे।

शाहजहाँ बादशाह आप रहमतुल्लाह अलैह का मोअतक़िद और शाहजहाँ बादशाह की बीवी "सरहिन्दी बेगम" आप रहमतुल्लाह अलैह की मुरीद थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुहल्ला ताजगंज में मल्कों की गली की मस्जिद के पीछे वाक़ेअ है, जिस पर क़दम शरीफ़ नसब लगा हुआ है और 1107 हि तारीख़ और येह शेअर भी एक पत्थर पर लिखा हुआ है।

तारीख़ बिना अलकरीम फ़ी वक़ूई कलामिल करीम
रूहो रैहान व जन्नातुन्नईम
फ़िदाए रसूल अस्त व औलादे ऊ
चू सिद्दीक़ अज़ जाने मुहम्मद करीम

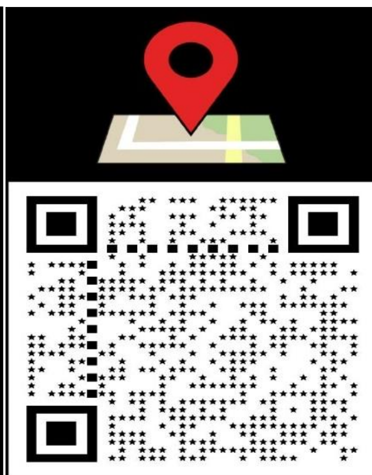
(बोस्ताने अख्यार, पेज153.154)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक ताज गंज के मुहल्ला मल्कों गली की पंजे मस्जिद के मेहराब के पीछे वाक़ेअ है, मज़ार पर कोई तख़्ती वग़ैरा नहीं लगी मगर सिरहाने ऊपर की जानिब ऊपर बयान किया हुआ शेअर लिखा है और आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार

पर क़दम शरीफ़ का नक़्श भी मौजूद है। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के दाएं बाएं एक एक क़ब्र बनी हुई है, येह क़ब्रें किन की हैं कुछ पता नहीं चल सका। मज़ीद मज़ार मुबारक की चहार दीवारी के अंदर कई सारी क़ब्रें मौजूद हैं।

शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(26) मौलवी मुहम्मद काज़िम

आप रहमतुल्लाह अलैह मौलवी दोस्त मुहम्मद इब्ने सैय्यिद शाह मुहम्मद इब्ने सैय्यिद पीर मुहम्मद इब्ने सैय्यिद शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के फ़रज़ंद रशीद और मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह की नस्ल से हैं, इल्मो फ़ज़्ल से मौसूफ़ और निहायत बुज़ुर्ग व बा बरकत शख़्स थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मस्जिद मल्कों की गली की पुश्त पर शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के क़रीब वाक़ेअ है, आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल 1199 हि है।

आप रहमतुल्लाह अलैह की मुहर राक़िमे बोसतान की नज़र से गुज़री है जिस पर **सैय्यिद मुहम्मद काज़िम वल्द सैय्यिद दोस्त मुहम्मद 1191 हि** लिखा हुआ था। (बोस्ताने अख़्यार, पेज199)

माहताबे अजमेर

माहताबे अजमेर नामी किताब में हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद काज़िम रहमतुल्लाह अलैह का तज़्किरा कुछ यूं लिखा हुआ है :

हज़रत मौलवी शाह मुहम्मद काज़िम कादरी रहमतुल्लाह अलैह हसनी हुसैनी सैय्यिद, निहायत मुत्तक़ी और परहेज़गार, बड़े बा बरकत आलिमे बा अमल, सूफ़ी बा सफ़ा, वलिए कामिल, बदर जहां, मुतावक्किल, अल्लाह पाक पर तवक्कुल के इलावा आप रहमतुल्लाह अलैह की कोई मआश ना थी।

सिल्सिलए क़ादरिया में मुंसलिक, हज़रत सैय्यिद शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह से चौथे वास्ता में और हज़रत सैय्यिद शाह

रफ़ीउद्दीन सफ़्वी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह से नौवें वास्ते में मुंसलिक थे।

एक मर्तबा आगर के सूबेदार ने आप रहमतुल्लाह अलैह की करामात व तवक्कुल का हाल मालूम करके अपने ख़ास बावर्ची ख़ाना का खाना ख्वानों में लगा कर आप रहमतुल्लाह अलैह के वास्ते भेजा, पयाम ले जाने वाले से सूबेदार ने कहा: कि हज़रत से दस्त बस्ता अर्ज़ करना: आज से इसी तरह खाना आया करेगा। जब आप रहमतुल्लाह अलैह को पेश किया गया तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने खाना वापस कर दिया और कहा कि येह खाना हमारे पास ना लाना, हमारे तवक्कुल में फ़र्क़ आ जाएगा। हमें हमारा माबूद यानी अल्लाह पाक अपने ख्वाने नेअमत से अता फ़रमाता है और वही काम का है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल 5 शाबान 1199 हिजरी को हुआ। आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार आगरा में है। (माहताबे अजमेर पेज 113)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत मौलवी मुहम्मद काज़िम रहमतुल्लाह अलैह शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह पोते हैं आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार आप रहमतुल्लाह अलैह के दादा के पास है मगर मज़ार पर तख्ती ना होने की वजह से कुछ पता नहीं चलता, लेकिन बोस्ताने अख्यार के मुसन्निफ़ अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने लिखा है कि आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मस्जिद मल्कों की गली की पुश्त पर शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के क़रीब वाक़ेअ है। लिहाज़ा इस इबारत से यही मालूम होता है कि मस्जिद के मेहराब से मिली हुई जो मज़ार है शायद यही आप रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार हो। वल्लाहु आलम

शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।

(27) सैय्यिद इमाम अली शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा और आगरा के मुताअख़्ख़िरीन यानी बाद में होने वाले मशाईख़ीन में हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह मुहल्ला नमक की मंडी के रहने वाले थे, **मज़ार मुबारक** इहातए दरगाह मीर मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह में मुत्तसिल मस्जिद गली मल्कान ताजगंज वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज52)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत सैय्यिद इमाम अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर तख़्ती ना होने की वजह से कुछ पता नहीं चल सका कि आप रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक कौन सी है ? लेकिन येह बात तै है कि हज़रत शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की चहार दीवारी के अंदर ही है।

शाह मुजाहिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(28) मियां नज़ीर

आप का असली नाम शैख़ वली मुहम्मद और तख़ल्लुस नज़ीर था, अक्सर उलूम से आप मौसूफ़ और कमालाते शायरी में बेनज़ीर थे, तबीअत सूफ़ियाना थी और ऐसी सादा ज़िंदगी बसर करते थे कि आज उन के हालाते ज़िंदगी सुन सुन कर तअज्जुब व हैरत होती है।

जब कमालाते शायरी का शोहरा हुआ तो अक्सर वालियाँने मुल्क और ज़माने के अमीर लोगों ने बेश क़रार मुशाहरों और इन्आम व इकराम के वादों पर आप को तलब फ़रमाया मगर आप ने उसे क़नाअतो वज़अदारी के ख़िलाफ़ समझ कर इन्कार कर दिया और तमाम उम्र लड़कों को पढ़ाते रहे।

आप के औसाफे हमीदा और खसाइले पसंदीदा की अक्सर रिवायतें मशहूर चली आती हैं, प्रोफ़ैसर सैय्यिद मुहम्मद अब्दुल ग़फ़ूर शहबाज़ मरहूम ने आपकी मुफ़स्सल सवानेह उमरी कलमबंद फ़रमाई है जो चमन बेनज़ीर के नाम से मौसूम और काबिले दीद है, आपके तमाम औसाफो कमालात नेचुरल शायरी के पर्दे में हैं, आप नेचुरल नज़्म उर्दू के ताज, सरताज, शाह या शहन्शाह हैं, कलाम आम पसंदीदा और सूफ़ियाना रंग में रंगा हुआ है, फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी तीन ज़बानों में आप का कलाम मौजूद है, कई कुल्लियात और बीसियों छोटे बड़े रिसालाजात आप के छप कर शाएअ हो चुके हैं, मगर जिस क़द्र कलाम शाएअ हो चुका है इस से दो गुना, तीन गुना ग़ैर मत्बूआ और **अवामुन्नास की ज़बानों** पर है, आप का तरजीह बंद सबसे ज़्यादा मशहूर है।

पीर के दिन 26 सफ़र 1246 हि ब मुताबिक़ 16 अगस्त 1830 ई को आप ने इंतिक़ाल फ़रमाया और अपने मकान वाक़ेअ गली मल्कान ताजगंज में दफ़्न हुए, मज़ार पर कोई गुंबद या कतबा मौजूद नहीं है, राक़िमे

बोस्ताने अख़्यार मुफ़ीदे आम आगरा मुअर्रख़ा 13 जुलाई 1903 ई में एक अपील ब उन्वान 'नज़ीर अकबराबादी और उनकी यादगार' शाएअ करवा कर मरम्मते क़ब्र व तामीरे चबूतरा व कतबा वग़ैरा नसब कराने की इल्तिजा की थी और कई माह तक अमली कोशिश भी की मगर बावजूद वादा वईद कोई शख़्स आमादा ना हुआ और मजबूरन ख़ामोशी इख़्तियार करनी पड़ी।

इसी क़ब्रिस्तान में मियां नज़ीर के साहिब ज़ादे गुलज़ार अली असीर की क़ब्र भी मौजूद है जिस पर येह कत्बा लिखा हुआ है :

उस्तादम मीर गुल्ज़ार अली
चूँ ब सूए ख़ुल्द शुद रौनक़ फ़ज़ा
बस के दरे रूहानियाँ शौरे फ़ताद
रुह सोहबान चूँ शुनीद ईं माजरा
आह रा बैरूं कशीदा बहरे साल
गुफ़्त असीरे दाम हस्ती शुद रहा

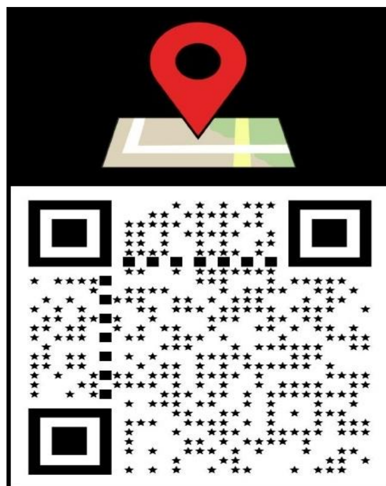
(बोस्ताने अख़्यार, पेज227.229)

मौजूदा हालत 2025

अल्लामा सईद अहमद मारहरवी ने 116 साल पहले की जो हालत तहरीर फ़रमाई है वही बल्कि इस से ज़्यादा बदतर हालत अब मियां नज़ीर की क़ब्र का है। मियां नज़ीर की क़ब्र सफ़ैद पत्थर से बनी हुई है और इस के आस पास और कई क़ब्रें हैं इन तमाम क़ब्रों के चहार जानिब लोहे के तार की रेलिंग और ऊपर टीन शैड लगा हुआ है मगर आस पास के लोग अपनी बकरियों को इस में बाँधते हैं और वो बकरियां क़ब्रों पर चढ़ती, पेशाब व पाख़ाना करती हैं जिसकी वजह से चारों तरफ़ गंदगी रहती है। कुछ लोगों से मियां नज़ीर के ताल्लुक़ से पूछा तो उनकी बातों

से महसूस हुआ कि आस पास के लोग मियां नज़ीर को कुछ भाव नहीं देते जिसकी वजह से उनकी क़ब्र की सफ़ाई वग़ैरा का ऐहतिमाम नहीं करते। अल्लाह पाक मुस्लमानों को क़ब्रों की ताज़ीम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

मियां नज़ीर के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए।

Like Share & Subscribe Channel



ख़रादी टोला (ख़ैराती टोला)

(29) शाह मुहम्मद चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ानवादए चिश्तिया के सिल्क में मुंसलिक हैं, बड़े साहिबे बातिन और तारीकुद्दुनिया (यानी दुनिया को छोड़ने वाले) बुज़ुर्ग थे, सक़ा (यानी पानी पिलाने वाले अब्बासी) के लिबास में अपने कमालात को छुपा रखा था, बंदगाने ख़ुदा को पानी पिलाया करते थे, दिन में सिर्फ पाँच टके का पानी फ़रोख़्त यानी बेचा करते इस में से पाँच पैसे ख़ैरात कर देते और पाँच पैसे की शीरीनी मंगा कर फ़ातिहा पढ़ कर तक़्सीम कर देते थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह की येह करामत अब तक मशहूर चली आती है कि हर शख़्स की ख़्वाहिश के मुताबिक़ एक ही मश्क से दरिया या कुँवें का पानी निकाल कर देते थे, बहुत से लोगों को आप रहमतुल्लाह अलैह की बदौलत रुहानी फ़ैज़ हासिल हुआ, हकीम नूरुद्दीन अकबराबादी आपके निहायत मो'तक़िद थे और इब्तिदा में अज़ली इनायत ने आप रहमतुल्लाह अलैह ही की नज़रे कीमिया असर के ज़रीये से उनकी दस्तगीरी फ़रमाई थी, चुनांचे अब तक उनका कुल ख़ानदान आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार से ख़ास अक़ीदत रखता है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुहल्ला ख़रादी टोला में वाक़ेअ है जो पब्लिक पार्क के दर्मियान और ताजगंज के रास्ते में है, 12 रबीउल अव्वल को आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज157.158)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत शाह मुहम्मद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक ख़ैराती टोला के इमाम बाड़े के बाज़ू में मौजूद है। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर जाने का आसान रास्ता पुरानी मंडी चौराहे से बिजली घर की तरफ़ जाते हुए रास्ते में उल्टे हाथ की जानिब सफ़ैद पत्थर का बना हुआ एक ऊंचा गेट है जिस पर बिस्मिल्लाह शरीफ़ और पूरी सूरह फ़ातिहा लिखी हुई है और गेट के दाएं जानिब **'बाबुर्रिज़्वान'** और बाएं जानिब **'बाबुल ग़ुफ़रान'** और बीचो बीच **'खैरादी टोला'** उर्दू से लिखा हुआ है। इस गेट से अंदर जा कर ख़ैराती टोला की आबादी आ जाएगी, आबादी में कुछ अंदर जा कर इमाम बाड़ा आएगा, उस इमाम बाड़े के पास आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मौजूद है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के दाएं बाएं दो क़ब्रें और बनी हुई हैं वहां के रहने वालों से पूछा तो बताया कि दाएं जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिद की क़ब्र है और बाएं जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह की माँ की क़ब्र है। वल्लाह आलम

वालिद की क़ब्र	हज़रत शाह मुहम्मद चिश्ती का मज़ार	माँ की क़ब्र
पच्छिम ----------------------गेट--------------------पूरब		

आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स 11, 12 रबीउल अव्वल को होता है, आप रहमतुल्लाह अलैह जिस कुँवें से पानी निकाला करते थे वो कुँआं आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के क़रीब ही था जो अब मौजूद नहीं।

मज़ार मुबारक के पास रहने वाले एक उम्र रसीदा बुज़ुर्ग ने आप रहमतुल्लाह अलैह की एक करामत येह भी बयान की कि जिस खाने की ख्वाहिश कर के जो शख़्स आप रहमतुल्लाह अलैह के पास आता वही गर्मा गर्म खाना आप रहमतुल्लाह अलैह के पास पाता और आप रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते: जाओ खाना खा लो।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के हट कर कुछ फ़ासले पर एक चहार दीवारी के अंदर कई मज़ारात बने हुए हैं। और पास ही एक मस्जिद है। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की तख़्ती पर येह इबारत लिखी हुई है:

अल्लाह

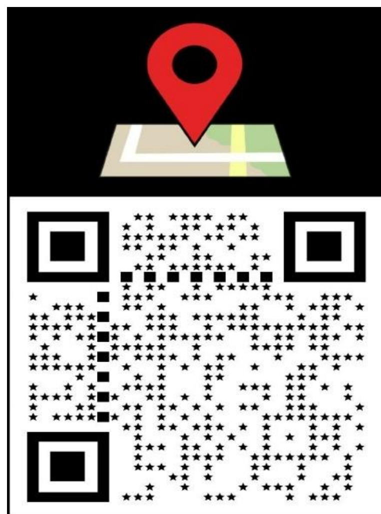
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदु रसूलुल्लाह

शाह मुहम्मद शाह

वफ़ात तारीख़ 11 रबीउल अव्वल 1332 हिजरी बमुताबिक़ 1912 ईस्वी

शाह मुहम्मद चिश्ती के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



फूल सैय्यिद चौराहा (तजगंज रोड, अमर होटल के पास)

(30) शैख़ फूल मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह मज्ज़ूबाने साहिबे कमाल और आशिक़ाने नामदार में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात से ख़राबात वीरानियाओं का मकान ज़्यादा रौनक पाता था, बहुत से खिरक़े आदात आप रहमतुल्लाह अलैह से सरज़द हुए, मटिया महल मुत्तसिल थाना रकाबगंज में ज़मीन के अंदर एक ग़ार खोद कर ऊपर से ख़सपोश यानी घास वगैरा डाल लिया था, उसी में रहा करते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मशहूरो मारूफ़ और फूल सैय्यिद के नाम से मौसूम ज़ियारत गाह ख़ासो आम है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज61)

मौजूदा हालत 2025

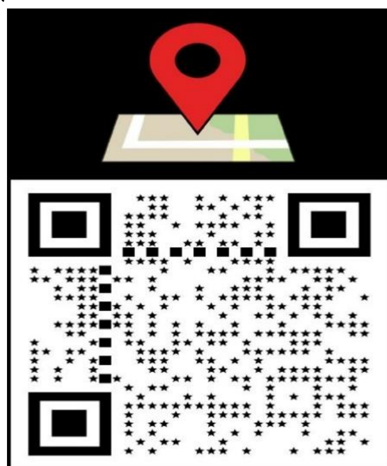
हज़रत शैख़ फूल मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का आसान रास्ता येह है कि फ़तेहाबाद रोड से आगरा कैन्ट की जानिब जाते हुए ताज व्यू के आगे अमर होटल पड़ेगा, अमर होटल से आगे बढ़ते हुए जो पहला चौराहा आएगा उस चौराहे का नाम फूल सैय्यिद चौराहा है इस चौराहे से पुरानी मंडी की तरफ़ जाने वाले ताज रोड पर आईए, चौराहे से मुत्तसिल उल्टे हाथ पर मज़ार मुबारक मौजूद है, मज़ार के ऊपर सफ़ैद रंग का गुंबद बना हुआ है और मज़ार के बाज़ू में मस्जिद भी मौजूद है। मज़ार मुबारक की तख़्ती पर **"हज़रत बाबा फूल शाह"** रहमतुल्लाह अलैह लिखा हुआ है। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के पूरब की जानिब दो क़ब्र और बनी हुई हैं जिनमें से एक जो आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार से मुत्तसिल है वो आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के ख़ादिम बाबा ग़फ़ूर शाह की और उसके बाज़ू में बाबा बहादुर शाह की क़ब्र है। बाबा ग़फ़ूर शाह, बाबा

बहादुर शाह के बेटे हैं। और अब जो मज़ार की देख भाल करते हैं वो बाबा ग़फ़ूर शाह के बेटे बाबा शकील हैं।

मस्जिद	शैख़ फूल मज्ज़ूब की मज़ार	बाबा ग़फ़ूर शाह की क़ब्र	बाबा बहादुर शाह की क़ब्र
पच्छिम ---------------------गेट--------------------पूरब			

शैख़ फूल मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह का उर्स मुबारक 13 ज़िलहिज्जा यानी बक़रईद की 13 तारीख़ को बड़े धूम धाम से मनाया जाता है।

शैख फूल मज्ज़ूब के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



बालूगंज (पीली कोठी, खोया मंडी के पास)

(31) मुल्ला वली मुहम्मद अबुल उलाई

आप रहमतुल्लाह अलैह इल्मो फ़ज़्ल से मौसूफ़ और सैय्यिद शाह अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के ख़ुल्फ़ाए आ'ज़म (यानी बड़े खलिफ़ाओं में से) और याराने जांनिसार से थे, जो निस्बत शैख़ नसीरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह को हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह के खलिफ़ाओं में थी वही निस्बत आप रहमतुल्लाह अलैह को सैय्यिद अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के खलिफ़ाओं में हासिल थी।

आलिमे बा अमल, आरिफ़, आशिक़ और उलूम में अहले ज़माना के उस्ताद थे, ख़लीफ़ा अबुल क़ासिम अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह को आप की शागिर्दी और मुरीदी का फख्र हासिल था, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** पक्की सड़क के किनारे मुत्तसिल आबादी मुहल्ला बालूगंज वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज248)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत मुल्ला वली मुहम्मद अबू उलाई रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का रास्ता येह है कि चील गढ़ चौराहे से बालूगंज पैट्रोल पंप की तरफ़ जाते हुए सीधे हाथ पर पीली कोठी और खोया मंडी के बीच में बिल्कुल रोड के किनारे मौजूद है। मज़ार मुबारक पर एक गूलर का दरख़्त है जो मज़ार पर साया किए हुए है।

मज़ार मुबारक पर लगी हुई तख़्ती में येह इबारत लिखी हुई है:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हज़रत मुल्ला वली मुहम्मद साहिब अबू उलाई रहमतुल्लाह अलैह

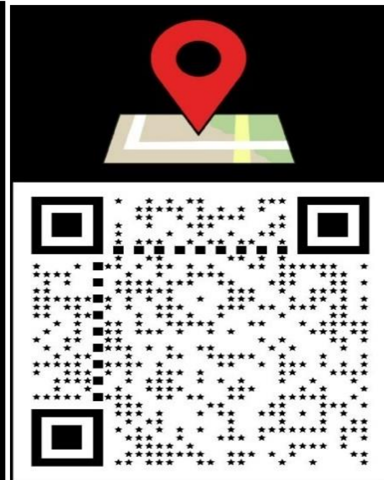
ख़लीफ़ा अबूल क़ासिम अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह को आप रहमतुल्लाह अलैह की शागिर्दी और मुरीदी का फ़ख़र हासिल था। आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक पक्की सड़क के किनारे मुत्तसिल आबादी मुहल्ला बालूगंज वाक़ेअ है।

आपका सिन्ने वफ़ात 1099 हिजरी है।

वलीयुल्लाह के मर्क़द से अब तक फ़ैज़ जारी है
ख़ुदा पर मिटने वालों की निशानी देखते जाओ

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के इहाते में सफ़ैद पत्थर के टुकड़ों का फ़र्श और मज़ार मुबारक के इर्द गिर्द लोहे के तार का जाल और ऊपर लोहे के टीन का शैड लगा हुआ है।

मुल्ला वली मुहम्मद अबुल उलाई रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



परताब पुरा (बालूगंज)

(32) मीर मुहम्मद जान नक़्शबंदी मुजद्दिदी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ अब्दुल हैय्य शादमानी रहमतुल्लाह अलैह के खलीफा हैं और शैख़ अब्दुल हैय्य शादमानी रहमतुल्लाह अलैह हज़रत शैख अहमद मुजद्दिद अल्फे सानी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ए नामदार हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैहअकबराबाद के नामवर मशाईख़ीने नक़्शबंदिया में से हैं, बड़े आरिफ़ कामिल और निहायत अज़ीज़ुल वुजूद बुज़ुर्ग थे, आलमगीर बादशाह के ज़माने में 1099 हिज्री ब मुताबिक़ 1687 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह वासिल बहक हुए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** पक्की सड़क के किनारे परताब पुरा बालूगंज मुत्तसिल वालनेटर क्लब वाक़ेअ है, मज़ार पर एक गुंबद बना हुआ है जो चार सुतूनों यानी पिलरों पर क़ाइम है, शैख़ अताउल्लाह रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के मशहूर ख़ुलफ़ा में से है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज169.170)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत मीर मुहम्मद जान नक़्शबंदी मुजद्दिदी रहमतुल्लाह अलैह मुजद्दिद अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा हज़रत शैख़ अब्दुल हैय्य शादमानी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक बालूगंज पैट्रोल पंप चौराहे से प्रताप पुरा की तरफ़ जाते हुए सैंट मरी चर्च के गेट से पहले रोड के किनारे सीधे हाथ पर मौजूद है। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के बग़ल में और तीन क़ब्रें बनी हुई हैं जिनका नाम वग़ैरा मालूम ना हो सका।

आज भी आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर एक गुंबद बना हुआ है जो चार सतूनों पर क़ाइम है। रोड के किनारे एक गेट लगा हुआ है जिस पर **'सैय्यिद मुहम्मद मीर जान कादरी नक़्शबंदी'** लिखा हुआ है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक की तख़्ती पर येह इबारत लिखी हुई है:

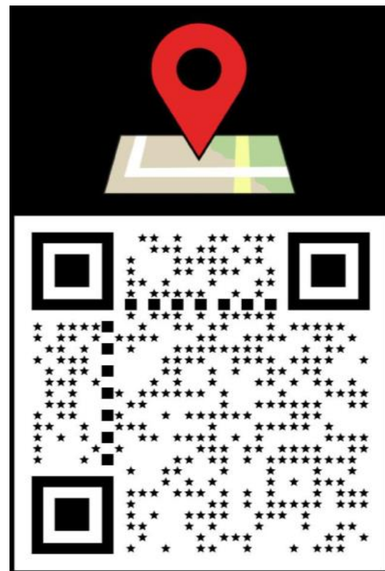
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

الا ان اولیاء اللہ لا خوف علیھم ولا ھم یحزنون

हज़रत शैख़ुल मशाईख़ हज़रत मीर जान नक़्शबंदी मुजद्दिदी

तारीख़े वफ़ात 5 शव्वाल 1099 हिजरी, 1687 ईस्वी वासिल ब हक हुए।

मीर मुहम्मद जान नक़्शबन्दी मुजद्दिदी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



थाना रकाबगंज

(33) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह के अस्ली नाम का पता नहीं चल सका, **मज़ार मुबारक** अंदर, आबादी मुहल्ला रकाबगंज मस्जिद मुत्तसिल नबक बंगाल से जुनूबी जानिब थोड़े फ़ासिले पर वाक़ेअ है, जिससे बुज़ुर्गी के आसार नुमायां हैं, क़ुरबो जवार के लोग आप रहमतुल्लाह अलैह की बेहद करामात बयान करते हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज103.104)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(34) शैख़ अब्दुर्रहमान सूफ़ी क़ादरी सरहिंदी

आप रहमतुल्लाह अलैह बुलंद हिम्मत, सितूदा सिफ़ात, गोशा नशीन, भूके रहने वाले, दुनिया से बेनियाज़, क़नाअत दोस्त और अहले कश्फ़ बुज़ुर्ग थे, आप रहमतुल्लाह अलैह को सैय्यिद बूढ्ढा बिलग्रामी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में इरादत थी।

सरहिंद से आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह के एक हुजरे में सुकूनत इख्तियार फ़रमाई, चंद रोज़ तक ज़ियाई सोहबतों ने ज़िंदगानी का बाग पुर बहार कर दिया, यकायक एक हसीनो जमील औरत पर आशिक़ हो गए, माशूक़ा के दिल में भी सच्ची मुहब्बत ने दर्द पैदा कर दिया और उस ख़ातून ने भी दरवेशी पर दिल निसार कर दिया, दोनों तरफ़ की इजाज़त और ख़ुशनूदी से अक़्द यानी निकाह की रस्म अदा हुई, बरसों तक दोनों हमराज़ रहे, सैय्यिद अहमद क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह से जो आपके हमराज़ थे मन्क़ूल है कि शैख़ अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाह अलैहउस औरत के साथ ऐसा गहरा मुराक़बा किया करते थे कि रात को सुब्ह कर देते थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह निहायत कम दर्जे की ख़ुराक वाले थे, 995 हिज्री में अपनी उंसुरी सूरत सिपुर्दे ख़ाक कर के वतन अस्ली को रुख़स्त हुए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

मज़ार मुबारक मुत्तसिल थाना रकाबगंज अराज़ी मौसूमा मटिया महल में वाक़ेअ है, रबीउल अव्वल की पंद्रह तारीख़ को आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज109.110)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

ढोली ख़ार दरवाज़ा (बिजली घर चौराहा)

(35) शैख़ मुबारक मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह सादात किबार और मज्ज़ूबाने साहिबे हाल से हैं, ग़ौसियत के मर्तबा पर सरफ़राज़ और शाह मुबारक ग़ौस के नाम से मशहूर हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह की हालत दिल फ़रेब और सोहबत ख़ुशगुवार थी, इब्तिदा में ग्वालियर में रौनक अफ़रोज़ थे, 978 हिजरी में आगरा तशरीफ़ लाए और ढोली ख़ार दरवाज़ा पर जहां अब आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** वाक़ेअ है ख़सपोश मकान के अंदर मुद्दत तक जिगर गुदाज़ी के साथ बसर की।

विसाल फरमाने के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक़िदीन ने मज़ार पर एक ख़श्ती इमारत बनवा दी थी, **मज़ार मुबारक** पक्की सड़क के किनारे मुत्तसिल लाल क़िला और आगरा फोर्ट रेलवे स्टेशन वाक़ेअ है, जिस पर अब कोई इमारत नहीं, सिर्फ तीन दर की एक मस्जिद मौजूद है ग़दर यानी 1857 ईस्वी की जंगे आज़ादी से पहले इस जगह एक ग़न्जान मुहल्ला और बाज़ार आबाद था जो सब मुन्हदिम करा दिया गया, अब सिवाए मस्जिद और मज़ार और एक छोटे से मकान के और कोई घर नहीं रहा।

1857 ईस्वी की ग़दर यानी जंगे आज़ादी से पहले मिस्टर कनीस कलैक्टर ने जब मज़ार के क़रीब पक्की सड़क निकालनी चाही तो हकीम नूरुद्दीन साहिब ने मुफ़्ती मुहम्मद असदुल्लाह ख़ां की मारिफ़त कलैक्टर से कहला भेजा कि जो सड़क बनाने के लिए निशानी लगाई गई है उस में येह मज़ार सड़क में आता है, बराहे मेहरबानी यहां सड़क बनवाना मौक़ूफ़

रखिए वर्ना आपके हक़ में अच्छा ना होगा। कलैक्टर ने येह पैग़ाम सुनकर सड़क बनवाने का काम रोक दिया। और 1857 की ग़दर यानी जंगे आज़ादी के बाद सड़क निकाली गई मगर मज़ार मुबारक महफ़ूज़ रखा गया। (बोस्ताने अख्यार, पेज147)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत शैख़ मुबारक ग़ौस रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक बिजली घर चौराहे से आगरा फोर्ट स्टेशन की जानिब जाते हुए रास्ते में रोड के किनारे उल्टे हाथ पर मौजूद है।

आशिक़ाने औलिया ने अब मज़ार मुबारक के चारों तरफ़ दीवार, स्टील की जालियाँ और ऊपर एक ख़ूबसूरत गुंबद बनवा दिया है जिस पर हरा रंग हो रहा है।

मज़ार मुबारक की देख भाल करने वाले बाबा जलाल ने बताया कि अब से कुछ दिन बाद मज़ार मुबारक के इर्द गिर्द मार्बल की जाली भी लगेगी। जिससे मज़ार की ख़ूबसूरती में चार चांद लग जाऐंगे।

ज़िलक़ादा की1,2,3 तारीख़ को बड़ी अक़ीदत के साथ आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स मनाया जाता है। मज़ार से क़िब्ला की जानिब छोटी सी एक मस्जिद बनी है। आप रहमतुल्लाह अलैह के पायँती एक क़ब्र बनी हुई है पूछने पर पता चला कि येह क़ब्र आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के ख़ादिम की है।

शैख मुबारक मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



हथिया पोल (दरवाज़ा, बिजली घर चौराहा)

(36) ज़ंगी शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने शहीदों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** आगरा क़िला के दोनों फ़सीलों के बीच में हथिया पोल (दरवाज़ा) से मिला हुआ ज़ियारत गाह ख़ासो आम है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज82.83)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत ज़ंगी शहीद रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का रास्ता येह है कि बिजली घर चौराहे के आटो स्टैंड से अंबेडकर पार्क के गेट से अंदर जाकर क़िला के हथिया पोल दरवाज़े के पास जाएं, दरवाज़े के पास जहां फ़ौजी मौजूद होते हैं वहां से उल्टे हाथ की तरफ़ मुड़ कर सीढ़ियों से चढ़ जाएं, फिर आगे जा कर सीढ़ियों से नीचे उतर जाएं। एक आसान और क़रीब का रास्ता और है और वो येह कि आगरा फोर्ट स्टेशन के गेट से पहले पतला सा रास्ता अंबेडकर पार्क से होता हुआ हथिया पोल दरवाज़े के लिए गया है।

मज़ार के आस पास बंदर काफ़ी हैं लिहाज़ा जब भी जाएं तीन चार लोग एक साथ जाएं वर्ना बंदर परेशान करेंगे।

मज़ार मुबारक का फ़र्श सफ़ैद मार्बल का और मज़ार के इर्द गर्द मार्बल की जाली लगी हुई है और मज़ार के चारों तरफ़ लोहे के तार की जाली है और ऊपर लोहे के पतरे का टीन शैड लगा हुआ है। मज़ार मुबारक के सिरहाने एक नीम का दरख़्त है जो मज़ार पर साया किए हुए है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स 2 रमज़ानुल मुबारक को होता है लेकिन आशिक़ाने औलिया हर जुमेरात को हाज़िर हो कर आप रहमतुल्लाह अलैह की बरकतों से हिस्सा पाते और फ़ातिहा व नियाज़ करते हैं।

ज़ंगी शहीद रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



जामा मस्जिद (आगरा)

(37) ग़रीब शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के तारीख़ी हालत हमारी ला इल्मी के पर्दे में पोशीदा हैं, मज़ार मुबारक जामा मस्जिद के सेहन के नीचे वाक़ेअ और ताबूत नुमा बना हुआ है, ज़िलक़ादा के महीने में आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज131)

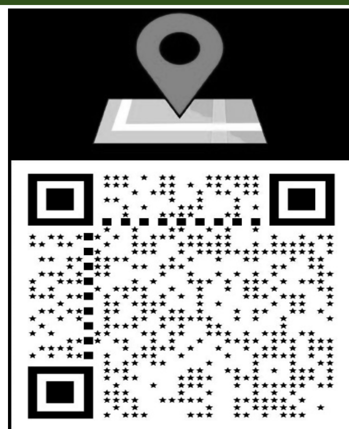
मौजूदा हालत 2025

हज़रत ग़रीब शाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का रास्ता येह है कि जामा मस्जिद के बुलंद दरवाज़े (मैन दरवाज़ा) जो आगरा फोर्ट स्टेशन के सामने है पर चढ़ कर सीधे हाथ की जानिब मुड़ जाएं और नीचे उतर कर अंदर जाएं अंदर मज़ार तक पहुँचने के लिए झुक कर जाना पड़ता है। मज़ार मुबारक पर कोई तख़्ती वग़ैरा नहीं लगी है। मज़ार के चारों तरफ़ स्टील की रेलिंग और ऊपर ख़ूबसूरत गुंबद बना हुआ है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार चूँकि जामा मस्जिद के सेहन के नीचे है इसलिए जामा मस्जिद के सेहन में मज़ार की निशानी के तौर पर चारों तरफ़ पत्थर लगा हुआ है जिस पर हरा रंग है ताकि कोई मज़ार की बे अदबी ना करे।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को देख कर ऐसा मालूम होता है कि पहले उस जगह आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक था फिर उसके बाद जामा मस्जिद बनी है।

गरीब शाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



हलवाई गली

(38) सैय्यिद हसन शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह ज़ुमरा ए शुहदाए अकबराबाद में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार हलवाई गली में ज़ियारत गाह आम और लोकल कमेटी एजंटी के ऐहतिमाम में है। (बोस्ताने अख्यार, पेज72)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



घाटी मामूं भांजा

(39) शैख़ अबुल फ़तह मक्की

शैख़ अबुल फ़तह रहमतुल्लाह अलैह की पैदाइश **'शरवान'** शहर की है चूँकि आप रहमतुल्लाह अलैह मक्कए मुअज़्ज़मा में बहुत रहे थे इसी वजह से मक्की मशहूर हो गए, शैख़ जमालुद्दीन इब्ने अब्दुल बासित अब्बासी के फ़र्ज़ंद यानी बेटे हैं, सिल्सिलए इरशाद शैख़ उमर इब्ने क़ारिज़ तक पहुंचता है, हज़रत ग़ौसुल इरफ़ा गीलानी रहमतुल्लाह अलैह का खास खिरका आप रहमतुल्लाह अलैह को पहुंचा था वो हमेशा अपने साथ रखा करते थे, हर एक किस्म के फ़ज़ाइलो कमालात से मौसूफ़ और सय्याही के शौक़ीन थे, सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में ख़ुश्की के रास्ते सिंध में तशरीफ़ लाए।

बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह के औसाफ़ो कमालात का हाल सुन कर एक अरीज़ा आप रहमतुल्लाह अलैह की तलब में भेजा जिसमें तरह तरह की ख़ुशामदें और आरज़ूऐं दर्ज की थीं, इस अरीज़ा को मुलाहज़ा कर के आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा में तशरीफ़ लाए, सुल्तान निहायत आजिज़ी और मुहब्बत के साथ पेश आया और मिन्नत समाजत कर के आप रहमतुल्लाह अलैह को आगरा के क़ियाम पर राज़ी कर लिया और इस क़द्र ख़ातिरो वुक़अत की कि उमराए दौलत को रश्क पैदा हुआ चुनांचे एक बद बातिन ने आप रहमतुल्लाह अलैह के हुरूफ़ का चर्बा उतार कर एक ख़त सुल्तान के दुश्मन के नाम बना कर इस तरह रवाना किया कि बादशाह के पास पहुंच गया, बादशाह ने वो ख़त आप रहमतुल्लाह अलैह के पास भेज दिया, आप रहमतुल्लाह अलैह ने कहला भेजा कि अबुल फ़तह ऐसा नालाइक़ नहीं कि ऐसी बेहूदा तहरीर से अपने क़लम को मुलव्वस कर के दिल

आज़ारी रवा रखे। इन्शा अल्लाह तोहमत लगाने वाला शख़्स जल्द अपने किए की सज़ा पाएगा। एक हफ़्ता भी पूरा ना गुज़रने पाया कि एक मस्त ऊंट ने उस शख़्स का हाथ चबा डाला।

जब सुल्तान इब्राहीम लोदी बाबर के मुक़ाबले के वास्ते लश्कर के साथ पानीपत की तरफ़ रवाना हुआ तो दीगर उलमा और मशाईख़ीन के साथ आप रहमतुल्लाह अलैह को भी हमराह यानी साथ ले गया। दिल्ली से आप रहमतुल्लाह अलैह लश्कर से लौट आये, जब लोगों ने हक़ीक़ते हाल पूछा तो फ़रमाया कि ख़ुदा की आफ़त और अज़ली आशूब इस लश्कर के ऊपर नामज़द हुआ है लिहाज़ा भागना वाजिब है, ग़र्ज़ कि आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा चले आए और सुल्तान इब्राहीम और उस की फ़ौज के इलावा बेशुमार मख्लूक़ात इस लड़ाई में ज़ाए हुई।

सुल्तान इब्राहीम लोदी के बाद के सलातीन भी आप रहमतुल्लाह अलैह की इज़्ज़तो वुक़अत करते रहे, सबसे ज़्यादा शेर शाह सूरी आप रहमतुल्लाह अलैह का मोअतक़िद था

पुरनमल वालिए रायसेन जिसने चंदेरी को ग़ारत कर के हज़ारहा मुसलमान शुरफा को तबाहो बर्बाद और दो हज़ार मुसलमान औरतों को अपने हरम में दाख़िल कर लिया था 950 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ही के फ़तवे से उस को हाथियों के पांव के नीचे कुचलवा दिया गया।

चुनांचे 134 बरस आप रहमतुल्लाह अलैह ने तालिबाने ख़ुदा की रहनुमाई की और बा इख्तिलाते रिवायात 22 शाबान या 2 ज़िलहिज्जा 953 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ाके आगरा के सिपुर्द किए गए, मीर रफ़ीउद्दीन सफवी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह के जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाई।

अब **मज़ार मुबारक** का पता नहीं, क्या अजब कि आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार वही हो जो घाटी मामूं भांजा में शोहदे की मस्जिद और मदरसा कस्साबान के क़रीब हाजी मक्की या हाजी मकई के नाम से मशहूर है।(बोस्ताने अख्यार, पेज31.33)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

कचहरी कलैक्ट्री

(40) आदम शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** लबे सड़क यानी सड़क के किनारे रेलवे मुत्तसिल कचहरी कलैक्ट्री रेलवे पुल से मशरिक़ी यानी पूरब की जानिब वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज44)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



हींग मंडी

(41) शैख़ फ़तहुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह तरीक़ए विलायत के राज़ दार, तालिबाने ख़ुदा के रहनुमा और हज़रत शाह अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के हम असर यानी ज़माने के थे, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुहल्ला नाई मंडी में मुत्तसिल चौराहा कचहरी कलैक्ट्री पक्की सड़क की किनारे वाक़ेअ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज132)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत शैख़ फ़तहुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक सदर भट्टी चौराहे से ढाकरान की जानिब जाने वाले रोड पर चौराहे से दो बिल्डिंग छोड़ कर उल्टे हाथ में रोड के किनारे छोटी सी मस्जिद है जिसका नाम **'मस्जिद फ़तहुल्लाह'** है उसी मस्जिद में पीछे की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मौजूद है। इसी मस्जिद में आगे की जानिब एक और मज़ार है मगर साहिबे मज़ार का नाम मालूम ना हो सका मगर लोग उन्हें हाफ़िज़ साहिब के नाम से जानते हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर नाम और तारीख़ की तख़्ती नहीं लगी है।

शैख फ़तहुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(42) शैख़ आरिफ़ हुसैनी (मीराँ आरिफ़ हुसैनी)

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद शाह इस्माईल सफ़्वी की औलाद में से हैं, इस्म बा मुसम्मा यानी आरिफ़े ख़ुदा और बहुत बड़े साहिबे बातिन और करामतो विलायत वाले बुज़ुर्ग थे, आमिले कामिल और ज़ुहदो तक़्वा में बे नज़ीर थे, आप रहमतुल्लाह अलैह ने बड़ी बड़ी रियाज़तें और मुजाहिदे किए थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह का खाना जौ की जली हुई रोटी और कड़वी घास थी कि सिवाए आप रहमतुल्लाह अलैह के किसी में इस के खाने की ताक़त ना थी।

शरीअत की इत्तिबा में बड़े साबित क़दम थे, ऐन अकबर बादशाह के दरबार में अज़ान कह कर नमाज़ पढ़ा करते थे, जब अकबर बादशाह की मुलाक़ात को तशरीफ़ ले जाते तो वो एक ज़रीं प्याले में मुश्को काफ़ूर और बहुत सी ख़ूश्बुएं डाल कर बतौरे तोहफ़ा पेश किया करता था, अकबर बादशाह ने बहुत इल्तिजा की कि कुछ जागीर या नक़्द रुपये ले लीजिए मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ने क़बूल ना फ़रमाया और हमेशा आप रहमतुल्लाह अलैह ने यही जवाब दिया कि रुपये अपने खादिमों को दो क्योंकि वो बहुत बद हाल हैं।

एक रोज़ अकबर बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह से कहा कि या तो आप रहमतुल्लाह अलैह हम से हो जाएं या हमें अपना सा कर लें। आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि हम ना मुराद लोग आप जैसे कैसे हो सकते हैं? अगर तुम हम से होना चाहो तो हमारे पास आकर बैठ जाओ।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने सय्याही यानी सैर बहुत फ़रमाई, गुजरात, पंजाब और कश्मीर, तिब्बत ग़र्ज़ कि दूर दूर तक फिरे, हर जगह बहुत सारी करामात आप रहमतुल्लाह अलैह से ज़ाहिर हुईं। गोल काग़ज़ काट कर जलती हुई अँगीठी (यानी आग) में डाल देते और उस में से अशरफियां (यानी

सोने के सिक्के) निकाल कर सब हाज़िरीने मजलिस को तक़सीम कर देते थे, सर्दी के मौसम में गर्मी के और गर्मी के मौसम में सर्दी के मेवे लोगों को इनायत फ़रमाते थे।

अगर आप रहमतुल्लाह अलैह को किसी हुजरे में ताला लगा कर बंद कर दिया जाता था तो ख़ुद ब ख़ुद वहां से निकल कर दूसरी जगह ज़ाहिर हो जाते थे। आप रहमतुल्लाह अलैह हमेशा मुँह पर निक़ाब डाले रहते थे, एक मर्तबा कश्मीर में अकबर बादशाह ने शैख़ अबुल फ़ज़्ल और हकीम अबुल फ़तह को आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में भेजा उन्होंने ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि अगर आप रहमतुल्लाह अलैह निक़ाब को उठा लें तो हम आप रहमतुल्लाह अलैह के दीदार मुबारक से मुशर्रफ़ हो जायें। आप रहमतुल्लाह अलैह ने इन्कार फ़रमाया और कहा की फ़क़ीरों को सताना अच्छा नहीं, हकीम अबुल फ़तह के मिज़ाज में शोख़ी और गुस्ताख़ी ज़्यादा थी उस ने इन्कार करने के बावजूद आप रहमतुल्लाह अलैह के निक़ाब की तरफ़ हाथ बढ़ाया, इस पर आप रहमतुल्लाह अलैह को जलाल आ गया और निक़ाब उतार कर ज़मीन पर फेंक दिया और फ़रमाया कि मआज़ अल्लाह मैं मज्ज़ूबो मायूब (यानी ऐबदार) नहीं हूँ, लो मेरा मुँह देख लो। मगर हकीम याद रखना तूने मेरा मुँह तो देख लिया इंशा अल्लाह दो हफ़्ते के बाद इस का नतीजा भी देख लेगा। चुनांचे पूरे पंद्रह दिन ना गुज़रे थे कि हकीम अबुल फ़तह यकायक इस्हाले कब्दी के मर्ज़ में मुब्तला हो कर इंतिक़ाल कर गया।

21 रबीउस्सानी 1006 हिजरी ब मुताबिक़ 1597 ईस्वी को आप रहमतुल्लाह अलैह आलमे नासूत से आलमे मलकूत की सय्याही को रवाना हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मस्जिद मुहल्ला मीराँ हुसैनी में ज़ियारत गाह है। येह मुहल्ला और मस्जिद आप रहमतुल्लाह अलैह ही के नाम से मौसूम और मुहल्ला की बेश्तर ज़मीन अब तक मस्जिदो मज़ार के अख़राजात के वास्ते वक़्फ़ और ज़ेरे ऐहतिमाम कमेटी लोकल एजेंटी है। (बोस्ताने अख्यार, पेज93.94.95)

मौजूदा हालत 2025

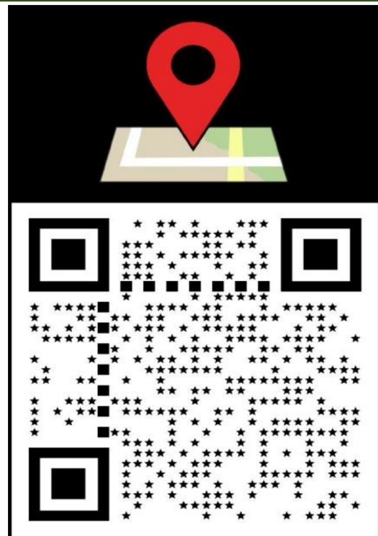
हज़रत शैख़ आरिफ़ हुसैनी अल मारूफ़ मीराँ आरिफ़ हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक सदर भट्टी चौराहे से मीराँ हुसैनी चौराहे की तरफ़ जाते हुए मीराँ हुसैनी चौराहे से पहले सीधे हाथ पर गली के अंदर मौजूद मस्जिद के अंदर मेहराब से उल्टे हाथ की जानिब एक कमरे में मौजूद है। पहले मस्जिद का नाम **'मस्जिद मीराँ हुसैनी'** था लेकिन अब लोगों ने इस मस्जिद का नाम **'मस्जिदे आईशा'** रख दिया है।

मस्जिद के मेहराब के सीधे हाथ पर भी एक कमरा है और इस में भी कई मज़ारात बने हुए हैं लेकिन कुछ पता नहीं चल सका कि वो मज़ारात किन के हैं।

मज़ार के इर्द गिर्द लकड़ी की छोटी सी जाली लगी है, फ़र्श पर मार्बल और तावीज़ की तख़्ती पर नाम व तारीख़ बोस्ताने अख्यार के हवाले से लिखी हुई है लेकिन बोस्ताने अख्यार में 1006 हिजरी है जबकि मज़ार की तख़्ती में 1004 हिजरी लिखी हुई है।

मज़ार मुबारक पर एक ख़ूबसूरत गुंबद भी बना हुआ है जिसका अक्सर हिस्सा मस्जिद की इमारत में दबा हुआ है।

शैख आरिफ़ हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(43) शैख़ कमाल

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ ज़ैनुद्दीन सिद्दीक़ी के फ़र्ज़ंद अर्जुमंद यानी बेटे हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह बनारस के रहने वाले हैं, तमीज़ की उम्र को पहुंच कर संभल तशरीफ़ ले गए, दो साल तक शैख़ उस्मान बंगाली रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में रह कर इल्मो फ़ज़्ल हासिल किया।

इस के बाद शैख़ जलाल थानसेरी रहमतुल्लाह अलैह और शैख़ मुबारक की फ़ैज़े सोहबत से फ़ैज़याब हो कर आगरा में सुकूनत इख़्तियार की। बड़े मुतावक्किल और तन्हाई पसंद बुज़ुर्ग थे।

10 शवाल 1009 हिजरी को रेहलत फ़रमाई, **मज़ार मुबारक** मुहल्ला हींग मंडी में तकिया वज़ीर शाह के अंदर वाक़ेअ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज142.143)

मौजूदा हालत 2025

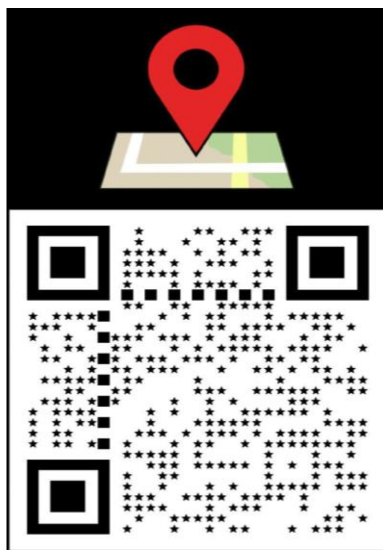
हज़रत शैख़ कमाल रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का आसान रास्ता येह है कि सदर भट्टी चौराहे से मीराँ हुसैनी चौराहे की जानिब आएं और मीराँ हुसैनी चौराहे से हींग की मंडी की तरफ़ आगे बढ़ते जाएं हींग मंडी रोड पर मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार आएगा, उनके मज़ार के बग़ल से नीचे को एक रास्ता गया है इस रास्ते से जूं ही उतरेंगे तकिया वज़ीर शाह आ जाएगी, बीच में छोटा सा एक मैदान बना है उसी मैदान के पास एक मस्जिद है जिसका नाम **'मस्जिदे आईशा'** है उसी मस्जिद में गेट से घुसते ही शैख़ कमाल रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मौजूद है। मज़ार का नक़्शा येह है:

वज़ीर शाह की क़ब्र

मस्जिद का दरवाज़ा		
क़ब्र	मस्जिद में जाने का रास्ता	खाली जगह
		शैख़ कमाल का मज़ार
क़ब्र		शैख़ कमाल की बैठक
		मह्दी नामी ख़ादिम की क़ब्र

मस्जिद के गेट से पहले ही एक कच्ची सी क़ब्र बनी है वो क़ब्र वज़ीर शाह की है जिनके नाम से येह इलाक़ा तकिया वज़ीर शाह कहलाता है। तकिया वज़ीर शाह में बने हुए कई घरों के अंदर भी मज़ारात मौजूद हैं लेकिन नाम वग़ैरा का कुछ पता नहीं।

शैख़ कमाल रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(44) शैख़ मुहम्मदी चिश्ती साबरी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ ईसा रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, जो क़स्बा ख़ैराबाद के क़रीब मौज़अ गरचे में सुकूनत पज़ीर थे, इसी मौज़अ में 14 शव्वाल 1021 हिज्री को आप रहमतुल्लाह अलैह ने आलमे ग़ैब से आलमे दुनिया में ज़हूर फ़रमाया यानी पैदा हुए।

आप रहमतुल्लाह अलैह इब्तिदाए हाल में खेल कूद में मशग़ूल थे, हर चंद वालिद बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह नसीहत फ़रमाते, समझाते बुझाते मगर आप रहमतुल्लाह अलैह पर कुछ असर ना होता था, आख़िरे कार एक दिन आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिद शैख़ ईसा रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह को अय्याश लोगों के साथ देख कर बहुत मारा पीटा। चूँकि मशीय्यते इलाही शामिले हाल थी रगे ग़ैरत मुहर्रिक हुई, उसी दिन घर से निकल कर उलूमो फ़नून हासिल करने में मसरुफ़ हुए और चंद ही मुद्दत में उलूमे ज़ाहिरी की तहसील से फ़ारिग़ हो कर उलूमे बातिनी के हुसूल की फ़िक्र दामन गीर हुई, जिसने आप रहमतुल्लाह अलैह को शैख़ कबीर शाह मुहिब्बुल्लाह इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत बा बरकत में पहुंचा दिया।

मुकम्मल 16 साल आप रहमतुल्लाह अलैह हज़रत शैख़ कबीर शाह इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में रहे और उनके अन्फ़ास और तवज्जोह की बरकत से ऐसे कमाल दर्जे पर पहुंचे कि एक दिन पीर रौशन ज़मीर ने निहायत मेहरबानी करते हुए तरीफ़ी कलिमात इरशाद फ़रमाये और उस मुरीद के क्या कहने जिसका पीर उस के हक़ में तरीफ़ी कलिमात इरशाद फरमायें।

तकमील के बाद पीर बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा के क़ियाम का हुक्म दिया, आप रहमतुल्लाह अलैह अपने वतन से होते हुए आगरा तशरीफ़

लाए और यहां की सुकूनत इख्तियार फरमा कर मख़्लूक़े ख़ुदा को फ़ैज़ पहुंचाने लगे ।चूँकि आप रहमतुल्लाह अलैह अरबाबे कमाल की मुलाक़ात के आशिक़ थे लिहाज़ा सय्याही यानी सैर पर दिल निहाद हो कर चंद रोज़ तक हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ़ शहरों की सैरो सयाहत फ़रमाते रहे। इसी सिल्सिले में ब मक़ाम अमरोहा मुताहिल हुए यानी शादी कर ली, उस के बाद कुछ मुद्दत अमरोहा और कुछ अरसा आगरा में क़ियाम रहने लगा।

शैख़ मुहिब्बुल्लाह इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह की वहदतुल वुजूद के मसअले पर ख़ास तवज्जोह थी और बहुत से मसाइल में वो शैख़ अकबर मुहिय्युद्दीन अरबी रहमतुल्लाह अलैह के मुक़ल्लिद थे इसी वजह से अक्सर अहले इनाद आप रहमतुल्लाह अलैह को ज़ंदिक़ा और इल्हाद की तरफ़ मंसूब करते थे, शैख़ मुहिब्बुल्लाह इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह के इंतिक़ाल के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह का एक रिसाला **'तस्वियह'** आलमगीर बादशाह की नज़र से गुज़रा जिसमें ब ज़ाहिर बहुत सी बातें शरीअत के ख़िलाफ़ मालूम होती थीं उस वक़्त शैख़ मुहिब्बुल्लाह इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह के दो मुरीद और ख़लीफ़ा मौजूद थे, एक सैय्यिद मुहम्मद चिश्ती कन्नौजी रहमतुल्लाह अलैह जो शाहजहाँ बादशाह के रफ़ीक़ और उस्ताद और साहिबे इज़्ज़त व जाह थे, दूसरे शैख़ मुहम्मदी चिश्ती साबरी रहमतुल्लाह अलैह ।

बादशाह ने पहले वो रिसाला सैय्यिद मुहम्मद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में भेज कर लिखा कि रिसाले के मसाइल को अहकाम शरीअत के मुताबिक़ साबित कीजिए वर्ना शैख़ की मुरीदी से इस्तिग़फ़ार कर के उन के रिसाले को आग में जला दीजिए, सैय्यिद मुहम्मद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह ने शैख़ की मुरीदी से इन्कार किया यानी उनकी बैअत तोड़ दी। फिर वो रिसाला बादशाह आलमगीर ने शैख़ मुहम्मदी रहमतुल्लाह अलैह

की ख़िदमत में भेजा। आप रहमतुल्लाह अलैह ने दरवेशाना दिलेरी से जवाब दिया कि मुझे शैख़ की मुरीदी से इन्कार नहीं, शैख़ ने जिन मक़ामात के मुताअल्लिक़ इस रिसाले में गुफ़्तगु फ़रमाई है अभी मेरी रसाई उस मक़ाम तक नहीं हुई, जब उस मर्तबे पर पहुँचूगा हस्बे दरख्वास्त मुश्किलात का हल लिख कर इरसाले ख़िदमत करूँगा यानी भेज दूंगा। अगर बादशाह ने रिसाले के जलाने ही का पक्का इरादा कर लिया है तो मेरे घर से शाही मतबख़ में आग ज़्यादा मौजूद है।

बादशाह आलमगीर को इस जवाब पर बहुत ग़ुस्सा आया, रिसाले को फ़ौरन जलवा दिया और आप रहमतुल्लाह अलैह के वास्ते हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत का फ़रमान सादिर हुआ, हस्बे हुक्म आप रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ़ ले गए और 1090 हिजरी में हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत और हज का फख्र आप रहमतुल्लाह अलैह को हासिल हुआ, दो हज अदा फरमा कर आप रहमतुल्लाह अलैह हिन्दुस्तान में वापिस आए, मुख़ालिफ़ीन और दुश्मनी रखने वालों ने फिर शोरो गुल मचाया और बादशाह को बहका कर नज़र बंदी का हुक्म जारी करा दिया।

मुद्दत तक आप रहमतुल्लाह अलैह औरंगाबाद के क़िले में नज़रबंद और यादे ख़ुदा में मसरूफ़ रहे और उसी जगह से 3 रजब 1107 हिजरी फ़िरदौसे बरीं को रवाना हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह के जिस्म मुबारक को हस्बे वसीयत आगरा ला कर सिपुर्दे ख़ाक किया गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुहल्ला हींग मंडी में मुत्तसिल मंदिर आर्या समाज सड़क के किनारे वाक़ेअ है, पहले यहां आलीशान इमारत और ख़ानक़ाह बनी हुई थी इब्तिदादे ज़माना से तमाम

इमारत मिस्मार हो कर ज़मीन ग़ैरो के क़ब्ज़े में पहुंच गई यहां तक कि मज़ार भी एक मकान के अंदर हो गया था, चंद साल का अरसा हुआ कि शाह बुख़ारी साहिब ने जो एक साहिब तक़्वे और मुतावक्किल बुज़ुर्ग हैं उस मकान को ख़रीद कर दालान और इहाता तामीर करवा दिया है, दरवाज़े की बाहरी पेशानी पर येह तारीख़ लिखी हुई है।

साक़ी इश्क शह मुहम्मद मा
बूद सरदारे मैकशाने हुब्ब
हमज़ए देहलवी ग़ुलामे ऊ
गुफ़्त तारीख़ बद मुग़ाने हुब्ब

“बद मुग़ाने हुब्ब” के अदद 1107 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल का हिजरी साल है। (बोस्ताने अख्यार, पेज158.161)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

आगरा के **औलियाए किराम** की सीरत की **Video** देखने और सुनने की लिए इस **QR Code** को **Scan** कीजिए ।
Like Share & Subscribe Channel



(45) मलंग शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह सिल्सिला मदारिया के बुज़ुर्गों में से हैं, **मज़ार मुबारक** सड़क के किनारे मुहल्ला हींग मंडी मुत्तसिल विक्टोरिया स्कूल वाक़ेअ है।

तीन दूकानें इस मज़ार के मुताल्लिक़ मौजूद हैं यानी वक़्फ़ हैं।

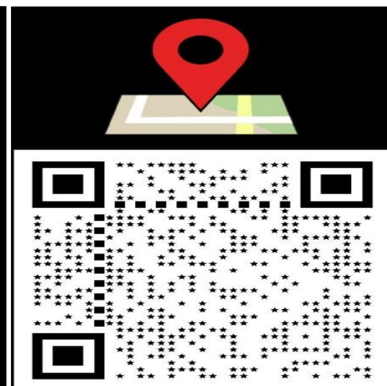
(बोस्ताने अख्यार, पेज213)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार हींग की मंडी वाले रोड पर रोड के किनारे मौजूद है। मीराँ हुसैनी चौराहे से सेब के बाज़ार की तरफ़ जाते हुए रेडीयो मार्कीट के पास। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक से एक रास्ता ढलान से नीचे की तरफ़ गया हुआ है। विक्टोरिया स्कूल अब काफ़ी दूर है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक बोसीदा हालत में एक कमरे के अंदर है। मज़ार सादा, फ़र्श बालू और सीमेंट का। मज़ार के तावीज़ पर तख़्ती नहीं लगी। कमरे के दरवाज़े के ऊपर एक पत्थर लगा हुआ है जिस पर **'हज़रत बाबा मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैह, उर्स मुबारक 17 सफ़र'** लिखा हुआ है।

मलंग शाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



सेब का बाज़ार

(46) शैख़ बुढन शत्तारी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ अब्दुल्लाह शत्तारी मांडवी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद में से हैं, शैख़ हाफ़िज़ जौनपुरी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत से जो शैख़ अब्दुल्लाह शत्तारी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा हैं, दोनों तरह के इल्म और दोनों जहां की सआदत का सरमाया तहसील कर के बहुत से कमालात फ़राहम किए थे, आप रहमतुल्लाह अलैह सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में आगरा में मुक़ीम हुए और अपने मुरीदों को ख़ानवादए शत्तारिया के मुताबिक़ तालीम व तल्क़ीन फ़रमाया करते थे।

मज़ार मुबारक ग़ालिबन उसी मक़ाम पर है जहां बाज़ार सेब में एक ताक़ बना हुआ है, जो मक़ामे मज़ार पर बतौरे यादगार बना दिया गया है और बुढन शहीद के नाम से मौसूम है, सालाना उर्स होता है।

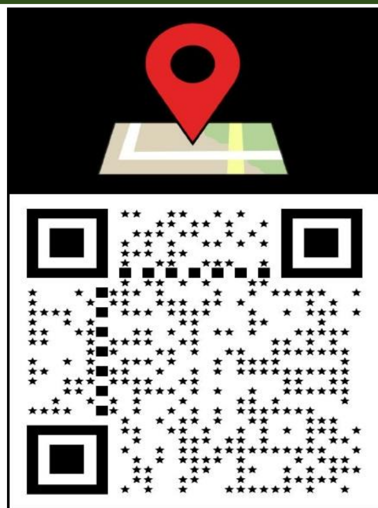
(बोस्ताने अख्यार, पेज56)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत शैख़ बुढ्ढन शत्तारी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक अब तो मौजूद नहीं है अलबत्ता काफ़ी तलाश के बाद 'सेब का बाज़ार' के रोड के किनारे एक ताक़ नज़र आया, उस के बारे में कई लोगों से पूछा मगर कुछ जवाब ना मिला, हो सकता है कि यही ताक़ हज़रत शैख़ बुढ्ढन शत्तारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक का हो।

इस ताक़ तक पहुंचने का रास्ता येह है कि फ़व्वारा चौराहे से सेब के बाज़ार वाले रोड की तरफ़ जाएं, येह ताक़ उल्टे हाथ पर "राधा कृष्णा एंटरप्राइज़' और 'पंजाब सुलाई मशीन' इन दोनों दुकानों के बीच में बना है।

शैख़ बुढ्ढन शत्तारी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



नाई की मंडी

(47) सैय्यिद हुसैन शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** साहिबे मिफ़्ताहुत्तवारीख ने मुत्तसिल नाई की मंडी लिखा है, राक़िमे बोसतान (अल्लामा सईद अहमद मरहरवी) ने हर चंद तलाश किया मगर कुछ पता नहीं चल सका, मुम्किन है कि आप रहमतुल्लाह अलैहका वो मज़ार हो जो मुत्तसिल मस्जिद मीराँ हुसैनी का तावीज़ बुलंद चबूतरे पर वाक़ेअ है और लोगों में सैय्यिद पहलवान के नाम से मौसूम है, क्योंकि उस का तावीज़ बहुत पुराना मालूम होता है और कतबा भी लिखा हुआ है जिसके हुरूफ़ बोसीदा होने की वजह से पढ़ने में नहीं आते, बहरे हाल आपके मज़ार पर कई अशआर लिखे हुए थे।

(बोस्ताने अख्यार, पेज72.73)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel

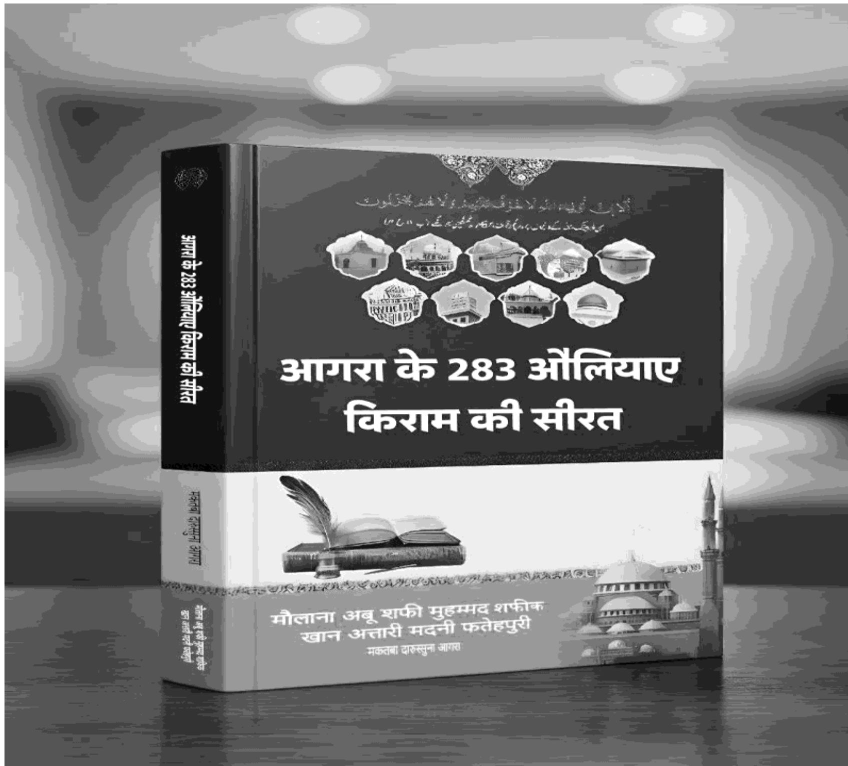


(48) सैय्यिद कमाल शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह शुहदाए अकबराबाद में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुहल्ला नाई मंडी में पेश दरवाज़ा मस्जिद मुहल्ला अथाईं वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज142)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



(49) हांडी मौक़ूफ़ शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम मुबारक शाह बा यज़ीद और ख़िताब आशिक़े इलाही था, पंजाब के बाशिंदे सैय्यिद शाह अब्दुर्रहमान देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और ख़ानदाने सुहरवर्दिया क़ादरिया के साथ तअल्लुक़ रखते थे, आख़िर में जज़्बाते इलाही में बेखुद हो कर मस्त मौला हो गए, आप रहमतुल्लाह अलैह की अजीबो ग़रीब करामातें मशहूर हैं।

एक दिन तकिये में बीस पच्चीस अरब दरवेश यकायक तशरीफ़ ले आए, आप रहमतुल्लाह अलैह ने "हांडी मौक़ूफ़ डेगदान जारी" इरशाद फ़रमाकर हांडी को तो ज़मीन में गड़वा दिया और ख़ाली डेग, डेगदान (यानी वो चूल्हा जिस पर डेग रख कर खाना बनाया जाता है) पर चढ़वा दी और उसी में से निहायत लज़ीज़ खाने निकाल कर मेहमानों को खिलवा दिया, उस दिन से हांडी मौक़ूफ़ शाह आप डीका लक़ब पड़ गया, चुनांचे अब तक आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** और तकिया जो मुहल्ला नाई मंडी में वाक़ेअ है इसी नाम से मौसूम है।

नवाब नजफ़ ख़ां को आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में बहुत ऐतिक़ाद था और एक रुपया यौमिया यानी रोज़ाना तकिया के अखराजात के वास्ते मुक़र्रर कर दिया था जिसे महाराजा सिंधी ने भी अपनी हुकूमत के ज़माने में जारी रखा, उसी ज़माने से अब तक सरकारी ख़ज़ाने से सफ़दर शाह जो मौजूदा गद्दी नशीन है उनको मिलते हैं।

फ़िदा शाह, हुदा शाह, निहायत शाह आप रहमतुल्लाह अलैह के तीन चेले बहुत ज़बरदस्त और साहिबे कमाल थे, इन तीनों के मज़ार तकिया के अंदर मौजूद हैं।

16 शाबान को आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता है, तकिया के क़रीब की ज़मीन जिसमें गल्ला वग़ैरा की मंडी लगती है उसी तकिया के मुताल्लिक़ माफ़ यानी वक़्फ़ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज250)

मौजूदा हालत 2025

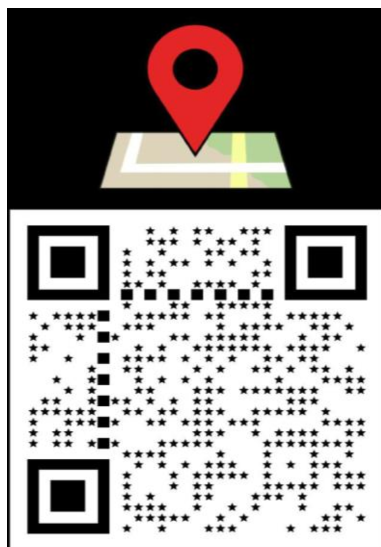
हज़रत शाह बा यज़ीद अल मारूफ़ हांडी मौक़ूफ़ शाह रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक ढाकरान चौराहे से गल्ला मंडी की तरफ़ जाते हुए उल्टे हाथ पर दुकानों के बीच गली के अंदर है। मज़ार से क़िब्ला की जानिब एक मस्जिद है जिसका नाम **'मस्जिद हांडी मौक़ूफ़ शाह'** है। अभी मज़ार पर तामीरी काम जारी है लोगों ने बताया कि इंशाअल्लाह मज़ार के ऊपर एक शानदार गुंबद बनाया जाएगा। आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स 16 शाबान को होता है।

मज़ार के क़रीब रहने वाले एक शख़्स ने आप रहमतुल्लाह अलैह की एक करामत येह बयान की कि ग्वालियर के राजा सिंध्या के औलाद नहीं हो रही थी, किसी ने कहा तुम आगरा में मौजूद शाह बा यज़ीद अल मारूफ़ हांडी मौक़ूफ़ रहमतुल्लाह अलैह के पास जाओ अगर उन्होंने दुआ कर दिया तो ज़रूर तुम को औलाद की नेअमत मिल जाएगी। चुनांचे वो आप रहमतुल्लाह अलैह के पास आया, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया नौ महीने बाद तुम्हारे यहां बेटा पैदा होगा। नौ महीने के बाद यक़ीनन उस के यहां बेटा हुआ। राजा सिंध्या आप रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में दोबारा हाज़िर हुआ और कहने लगा :हुज़ूर मैं आप रहमतुल्लाह अलैह को कुछ नज़र पेश करना चाहता हूँ, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया मुझे उस की हाजत नहीं। राजा सिंध्या ने इसरार किया और सोने, चांदी, हीरे, जवाहिरात से भरा हुआ थाल आप रहमतुल्लाह अलैह के सामने रख दिया। आप रहमतुल्लाह अलैह ने उस थाल को देख कर वहां पर मौजूद नीम के दरख़्त को हिलाया, जिससे सोने,

चांदी, हीरे, जवाहिरात गिरने लगे। आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया तेरे सोने, चांदी, हीरे, जवाहिरात से ज़्यादा मेरे पास पहले से ही हैं लिहाज़ा तुम उनको अपने साथ ले जाओ।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के आप पास कई और मज़ारात और क़ब्रें बनी हैं लेकिन आप रहमतुल्लाह अलैह के तीनों चेलों के मज़ारात कौन से हैं नहीं पता चल सका।

शाह बा यज़ीद अल मारूफ़ हांडी मौक़ूफ़ शाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए।

Like Share & Subscribe Channel



(50) हाथी शाह

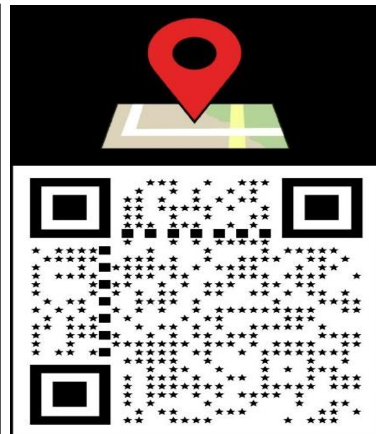
आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने बुज़ुर्गों में से हैं, ख़िरक़े आदात की अक्सर रिवायतें अब तक मशहूर चली आती हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** नई की मंडी के मुहल्लों में से एक मुहल्ला कटरा हाथी शाह में वाक़ेअ है, जो आप रहमतुल्लाह अलैह ही के नामे नामी से मौसूम है। (बोस्ताने अख्यार, पेज251)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत हाथी शाह रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक को तलाश करने में काफ़ी वक़्त लगा कि जिससे पूछते थे ग़लत रास्ता बताते थे बिल आख़िर अल्लाह पाक के करम से घूमते घुमाते मज़ार मुबारक पर पहुंच गए। आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक नाई की मंडी के मुहल्ला डेरा सरस के क़ब्रिस्तान के क़रीब तेराहे पर बना हुआ है।

मज़ार मुबारक के तीन तरफ़ स्टील की रेलिंग लगी है, तख़्ती पर बोस्ताने अख्यार की पूरी इबारत लिखी हुई है जिसके आधे हुरूफ़ पढ़ने में आते हैं और आधे नहीं। फ़र्श बालू और सीमेंट का है। काश कि कोई आशिक़े औलिया तख़्ती और फ़र्श पर मार्बल वग़ैरा लगवा दे।

हाथी शाह रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(51) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह के असली नाम का कुछ पता नहीं चल सका, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** झजरी वाले सैय्यिद के नाम से मशहूर और बहुत से लोगों को गिरवीदा किए हुए है, नाई की मंडी और मोती कटरा के बीच में पक्की सड़क के किनारे मज़ार वाक़ेअ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज104)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



(52) सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब

अल मशहूर ब अलादिल बलादिल

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद सुलैमान रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़न्द यानी बेटे और सैय्यिद हसन हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह के पोते हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के जद्दे अमजद (यानी दादा) सैय्यिद हसन हुसैनी रहमतुल्लाह अलैह मदीनए मुनव्वरा से आकर हिन्दुस्तान की सैर से इबरत हासिल करते थे कि क़स्बा रुदौली (ज़िला बाराबंकी) में इत्तिफ़ाक़ से गुज़र हुआ, यहां की ख़ाक दामनगीर हुई और आबो हवा ऐसी पसंद आई कि सय्याही को छोड़कर यहीं आबाद हो गए।

चंद रोज़ के बाद मुताहिल हुए यानी शादी की और रफ़्ता रफ़्ता मकान, ख़ानदान, फ़र्ज़ंद, ख़्वेश, मुतअ़ल्लिक़ीन, दरवेश बहुत से फ़राहम हो गए, उनकी वफ़ात के बाद उनके फ़र्ज़ंदे रशीद सैय्यिद सुलैमान ने बहुत कुछ तरक़्क़ी की और दरवेशी से इमारत के दर्जे पर पहुंचे, जब उनकी हयात यानी ज़िंदगानी का पैमाना लबरेज़ हुआ तो उन्होंने अपना मालो सामान, देहातो ज़राअत यानी ज़मीन जाइदाद बहुत कुछ छोड़ा, जिसकी तक़्सीम पर उनके बेटों के बीच झगड़ा पैदा हुआ, शैख़ अलादिल रहमतुल्लाह अलैह नजीबुत्तरफ़ैन सैय्यिद हैं लेकिन सब भाईयों में सबसे छोटे थे इस वजह से चंद भाईयों ने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों की तरह आप रहमतुल्लाह अलैह के मार डालने का इरादा किया, माँ की मामता मशहूर है किसी तरह आप रहमतुल्लाह अलैह की माँ को बेटों के हसद का हाल मालूम हो गया और वो सब मालो दौलत पर लात मार कर अपने फ़र्ज़ंदे अज़ीज़ यानी बेटे को ले कर पोशीदा तौर से क़स्बे से निकल खड़ी हुईं।

सफ़रे हिजाज़ यानी मक्का मदीने का अज़्म बिल्जज़्म करके रवाना हुईं, दिन में भेड़िया सिफ़त भाईयों के पीछा करने के ख़ौफ़ से किसी अँधेरी

जगह में छुपी रहतीं और रात में जितनी ताक़त साथ देती थी रास्ता चलती रहती थीं, ग़र्ज़ येह कि इसी तरह जंगलो बयाबान को पार कर के हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुईं और दोनों मक़ामाते मुक़द्दसा में अपने बेटे के लिए रातो दिन दुआएं मांगती रहीं।

चंद साल के बाद मेहरबान माँ का साया भी आप रहमतुल्लाह अलैह के सर से उठ गया, एक तो ग़ुर्बत की कोफ़्त थी इस पर येह दर्दो रिक़्क़त और बढ़ गया, चूँकि मशीय्यते इलाही शामिले हाल थी आपका ख़्याल इल्म की तरफ़ माइल हुआ और एक मुद्दत तक उन अतराफ़ में रह कर रस्मी उलूम की तहसील की, फिर बुज़ुर्गाने इस्लाम की सुन्नत पर कमर बांध कर प्रकार की तरह तमाम जहान का गश्त लगाया और सैकड़ों बुज़ुर्गाने दीन की ख़िदमत से फ़ैज़ो कमालात के ज़ख़ीरे फ़राहम कर के हिन्दुस्तान वापस आए।

कुछ मुद्दत तक सामाना में क़ियाम किया, फिर दिल्ली में तशरीफ़ लाए और इफ़ादते दस्तगाह मियां लाडन कंबोह मुफ़्तिये देहलवी के दर्स में बैठ कर तफ़्सीरों का मुतालआ किया और हमेशा मज़ार फ़ाइज़ुल अन्वार ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह पर हाज़िर होकर फ़रोग़े मा'नवी की दुआएं मांगा करते थे, आख़िरे कार मेहरबान माँ की और आप रहमतुल्लाह अलैह की दुआओं ने बारगाहे इलाही में शर्फे क़बूलियत का ख़िलअत पाया और जज़्बे मुतलक़ ने जो हक़ीक़ी वह्दत से मुक़य्यद था आप रहमतुल्लाह अलैह को उचक लिया और आप रहमतुल्लाह अलैह साहिबे विलायत के ख़िलअत से मुशर्रफ़ हो कर दारुल खिलाफ़त आगरा में रौनक अफ़रोज़ हुए।

बाबर बादशाह की सल्तनत का ज़माना था कि आप रहमतुल्लाह अलैह ने जमुना के किनारे पर एक हुजरा तजवीज़ कर लिया और क़ुरआन शरीफ़

की तिलावत और तफ़सीरे क़ुरआन के मुतालअ़ा में मसरूफ़ हुए, शाह फ़ख्रुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैह के तशरीफ़ लाने तक जिसका हाल उन के ज़िक्रे ख़ैर में बयान किया जाएगा आप रहमतुल्लाह अलैह उसी जगह मुक़ीम रहे, उस के बाद उस मक़ाम पर जहां अब आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक वाक़ेअ और मुहल्ला दरबार शाह जी या शाह विलायत के नाम से मौसूम है आप रहमतुल्लाह अलैह चले आए।

आप रहमतुल्लाह अलैह की नज़र में कीमियाई असर और बात में मक़बूलियत की तासीर थी, जज़्बाते इलाही में बेखुद और दरियाए तौहीद में ग़र्क़ रहते थे, सीने पर ख़ुदाई इल्म तहरीर था जो कुछ ज़बान से निकल जाता वो तक़दीरे इलाही का नविश्ता होता था, कश्फो करामात बेशुमार और ख़िरक़े आदात बे तादाद हैं, अबुल फ़ज़्ल ने आईने अकबरी में लिखा है और ख़ुद शैख़ मुबारक से गुलज़ारे अबरार में मन्क़ूल है कि जब मैं गुजरात से आगरा में आया तो सबसे पहले आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हो कर उम्मीद वारे बिशारत हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि इसी सईद शहर में तुमको क़ियाम करना चाहिए, तुम्हारे ख़ानदान में आली दर्जा फ़र्ज़ंद, वाफिर इल्म और कसीर दौलत येह सब नेअमतें बहुत जल्द नसीब होने वाली हैं, लेकिन इस के साथ येह भी है कि तुम्हारे सिल्सिले में एक जांगुज़ा आफ़त और मोहलिक फ़ित्ना पैदा होगा जो तोहमत और बदनामी का बाइस होने वाला है, अंदेशा ना करना क्योंकि क़ुरआने पाक के सूरए दुहा में अल्लाह पाक का इरशाद है :

"तुम्हारा परवरदिगार ना तो तुम से दस्त बरदार हुआ और ना नाख़ुश हुआ और तुम्हारा अंजाम आग़ाज़ से बेहतर है"

अंजामे कार ख़ैरीयत है, आप रहमतुल्लाह अलैह के दिल को ख़ुश करने वाले कलिमात फ़रमान के ब मूजिब आख़िरे कार रोज़ अफ़्ज़ूँ आसार नज़र आने लगे यानी जैसा आप रहमतुल्लाह अलैह ने फरमाया वैसा ही हुआ।

अख्बारूल अख्यार में शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने लिखा है कि मेरे चचा मुकर्रम शैख़ रिज़्क़ुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि एक दिन बेटे की खबर ना मिलने की वजह से सख़्त परेशान और बड़ी सोच में था और दिल में ख़्याल करता था, कि उस की ख़ैरीयत के वास्ते सदक़े की मन्नत मानूँ या क़ुरआन शरीफ़ पढ़ूं या अल्लाह पाक के नामों में से किसी नाम का विर्द करूँ, इसी ख़्याल व शक में हज़रत अलाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में गया आप रहमतुल्लाह अलैह ने मुझे देखते ही आयते करीमा "فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ" पढ़ कर फ़रमाया: क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना सबसे बेहतर है।

शैख़ हातिम संभली रहमतुल्लाह अलैह जो आप रहमतुल्लाह अलैह के हम अस्र यानी ज़माने और हिन्दुस्तान के मशहूर बा अमल उलमाए किराम में से थे किसी से येह सुनकर कि आप रहमतुल्लाह अलैह शरई अहकाम के दायरे से बाहर क़दम रख कर करामात और मक़ामात के दावे करते हैं, आगरा में आए, जब आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो इस से पहले कि अपने ऐतिराज़ी मसाइल बयान करें, ख़ुद ब ख़ुद उन ऐतिराज़ी मसाइल का शाफ़ी जवाब आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़बाने मुबारक से सुन कर हैरान रह गए और अक़ीदतो इख्लास के लिबास से मुशर्रफ़ हो कर वापस हुए।

शैख़ निज़ाम नारनौली रहमतुल्लाह अलैह को जो क़ुतुबे ज़माना थे उन के पीर रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में भेजा और फ़रमाया कि जिस मक़ाम के वास्ते वो मज्ज़ूबे इलाही फ़रमाएं वहीं सुकूनत इख्तियार करो यानी वहीं रह कर दीन की खिदमत करो, जब शैख निज़ाम

रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि ऐ सानी निज़ाम! तुम्हारे ज़हूर की जगह नारनौल है और तुम्हारे काम की रौनक और उस का इजरा उसी मक़ाम के साथ वाबस्ता है जो वक़्त पर वक़ूअ में आएगा।

मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह को भी आप रहमतुल्लाह अलैह से बहुत अक़ीदत थी जो कोई ख़ास बात पेश आती किसी को आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में भेज कर दुआ और सलाह की इल्तिमास करते और सब आप रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म की तामील करते थे।

इस किस्म की सैकड़ों उम्दा उम्दा करामतें और ख़िरक़े आदात आप रहमतुल्लाह अलैह की तारीख़ों और तज़्किरों और मल्फ़ूज़ात में बयान की गई और बहुत सी अब तक लोगों की ज़बानों पर हैं, लेकिन चूँकि बोस्ताने अख्यार मुख़्तसर किताब और तवालत से ख़ाली है लिहाज़ा हवाले क़लम करने से मजबूरी है, अब तक मज़ारे अक़्दस की अक़ीदतो मुहब्बत का तौक़ शहर के हज़ारों मुसलमान और ग़ैर मुसलमान बाशिंदों के गलों में पड़ा हुआ है और हज़ारहा लोग आप रहमतुल्लाह अलैह के अस्तानए आलिया से दुनिया व दीन की मुरादें पाते हैं।

आगरा शहर ख़ुसूसन नाई की मंडी में जिस क़द्र शादियां होती हैं, दुल्हन दूल्हा रुख़स्त के बाद सबसे पहले इसी दरबार में हाज़िर हो कर अपने घर जाते हैं।

17 ज़िलक़ादा 953 हिजरी बमुताबिक़ 1546 ईस्वी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने इस दारे फ़ानी से आलमे जावेदानी की तरफ़ कूच फ़रमाया और बहिश्त नशीनों के हम नशीन हुए।

मज़ार मुबारक पर एक गुंबद है जो आठ सुतूनों पर क़ाइम है, गुंबद के क़रीब वो मस्जिद वाक़ेअ है जिसके देखने के वास्ते बहुत से सैर करने वाले आया करते हैं, मशहूर है कि इस मस्जिद की तामीर में ख़ुद आप रहमतुल्लाह अलैह भी शामिल और सुन्नते नबवी ﷺ की पैरवी में सरगर्म थे, एक मौक़े पर आप रहमतुल्लाह अलैह की दुआ से आधी मस्जिद ज़मीन में धस गई थी जो अब तक उसी हालत पर है, वल्लाहु आलम।

(बोस्ताने अख्यार, पेज124.128)

मौजूदा हालत 2025

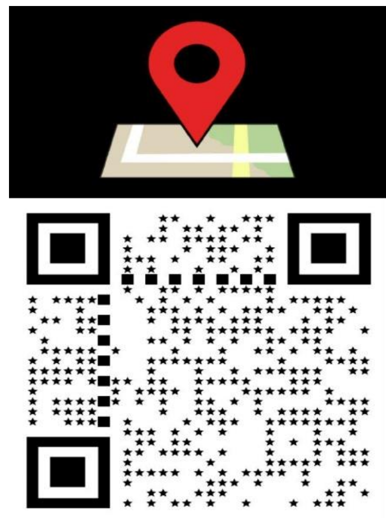
हज़रत अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक ढाकरान चौराहे से सदर भट्टी की जानिब जाते हुए अंदर बस्ती में मौजूद है जो कि **'शाह जी'** के नाम से मशहूर है। अब भी आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार का गुंबद आठ पिलरों पर बना हुआ है। बग़ल में मस्जिद भी है और आप रहमतुल्लाह अलैह के पायँती खजूर का एक दरख़्त है। आस पास कई सारी क़ब्रें हैं। और दक्खिन की जानिब हज़रत मुहम्मद मुजाहिद शहीद रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार है। मज़ार मुबारक के तावीज़ में जो तख़्ती लगी हुई है उस के काफ़ी हुरूफ़ मिट चुके हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह की करामत सगे अत्तार ने भी देखी है और वो येह कि आगरा के औलियाए किराम के मज़ारात को तलाश करने में काफ़ी दुशवारियाँ पेश आ रही थीं, रोज़ाना चार पाँच घंटे घूमने के बावजूद कभी तीन मज़ार पर और कभी चार मज़ार पर हाज़िरी होती, सारा वक़्त तलाश करने में ही गुज़र जाता क्योंकि अब आबादी भी बढ़ चुकी है और मुहल्लों के नाम भी बदल चुके हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर पहुंच कर सगे अत्तार ने फ़ातिहा पढ़ी और हज़रत अलाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में अर्ज़ किया : हुज़ूर मज़ारात को तलाश करने में काफ़ी दुशवारी

हो रही है रोज़ाना तीन से चार मज़ारात पर ही हाज़िरी हो पाती है अगर यही हाल रहा तो कई महीने लग जाऐंगे। अब आप रहमतुल्लाह अलैह मुझे हिम्मत अता कीजिए और मददगार दीजिए वर्ना में कल से येह काम छोड़ रहा हूँ।

येह अर्ज़ करने के बाद मग़रिब की नमाज़ अदा की और नमाज़ अदा करने के बाद फ़ौरन एक शख़्स से मुलाक़ात हुई उसने कहा : मैंने आप को काफ़ी दूर से देखा तो मुलाक़ात के लिए चला आया, आप यहां किस लिए आए हैं ? मैंने उनको सारा हाल बताया, उन्होंने कहा: मैं आप को मज़ारों पर ले चलता हूँ। फिर उस दिन के बाद अल्लाह पाक के करम से कड़ी से कड़ी जुड़ती चली गई और मददगार मिलते रहे और एक एक दिन में कभी दस कभी बारह औलियाए किराम की बारगाहों में हाज़िरी की सआदत मिलने लगी।

सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(53) मुहम्मद मुजाहिद शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह शुहदाए अकबराबाद के ज़ुमरे में हैं, 984 हिजरी ब मुताबिक़ 1576 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने शहादत पाई।

मज़ार मुबारक मुहल्ला शाह विलायत नाई मंडी में मुत्तसिल दरगाह सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह एक गुंबद के अंदर वाक़ेअ है जो दारोगा आशिक़ अली साहिब की मिल्कियत में है, गुंबद के अंदर अब तावीज़ नदारद है और दरवाज़े भी बंद कर दिए गए हैं, अन्दर कलिमा तय्यिबा, अल्लाह, मुहम्मद और बैरूनी मेहराबों की पेशानी पर चूने में आयाते क़ुरआनी मनक़ूश यानी लिखी हुई हैं, जुनूबी पेशानी पर येह तारीख़ लिखी हुई है।

मुहम्मद मुजाहिद जवान हज़्बर
ज़ पीराने देरीं चू ऊ कस नदीद
गुरेज़ां शुदे रुस्तमे दास्ताँ
चे दर मारिका तेग़ कीं मी कशीद

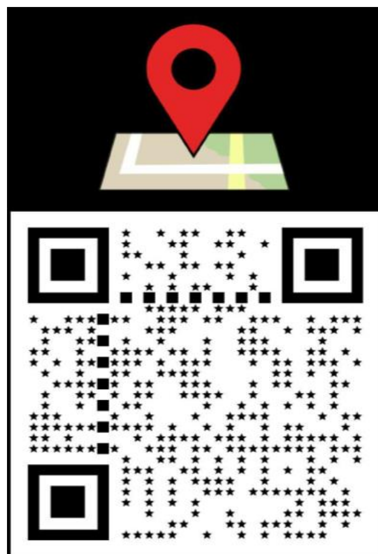
(बोस्ताने अख़्यार, पेज201.202)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत मुजाहिद शहीद रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक अब भी हज़रत अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के दक्खिन की जानिब एक गुंबद के अंदर मौजूद है। अब से दस बारह साल पहले इस मज़ार की ज़मीन एक सिंधी के क़ब्ज़े में थी, उसने मज़ार मुबारक को ख़त्म कर के अपना ऑफ़िस बना लिया था फिर एक मुस्लमान ने इस ज़मीन को ख़रीद कर अपने क़ब्ज़े में लिया और मज़ार मुबारक की तामीर करवाई मज़ार पर नाम व तारीख़ की तख़्ती नहीं लगी है और गुंबद के मेहराबों पर लिखी हुई इबारत भी अब नज़र नहीं आती।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का रास्ता येह है कि ढाकरान क्रासिंग से सदर भट्टी वाले रोड पर जाएं कुछ दूर चलने के बाद उल्टे हाथ पर एक रोड अंदर बस्ती की जानिब जा रहा है इस रोड से अंदर जाएं और किसी से पूछ लें कि हज़रत अलाउद्दीन या विलायत शाह रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक कहाँ है ? हज़रत अलाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर पहुंच कर दक्खिन जानिब देखें तो एक गुंबद नज़र आएगा, वहां मौजूद लोगों से उस गुंबद पर जाने का रास्ता पूछ लें और जा कर हाज़िरी की सआदत हासिल करें।

मुहम्मद मुजाहिद शहीद रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



बेलन गंज

(54) मौलाना सैय्यिद रफ़ीउद्दीन सफवी मुहद्दिस अकबराबादी

आप रहमतुल्लाह अलैह हसनी हुसैनी सैय्यिद हैं और रहने वाले मौज़ा आनुक के हैं जो शीराज़ के क़रीब एक जगह है, आप रहमतुल्लाह अलैह के तमाम बाप दादा उलमा, फुज़ला, सुलहा और अतक़िया में से थे, मीर मुईनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह साहिबे तफ़सीरे मुईनी जो मुद्दत तक रोज़ए मुक़द्दसा हुज़ूर सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुजावर रहे, आप रहमतुल्लाह अलैह के अज्दाद यानी दादाओं में से और शैख़ सफ़ीउद्दीन अब्दुर्रहमान रहमतुल्लाह अलैह के जिनकी निस्बत से उनकी औलाद सादात सफ़विया कहलाती है, आप रहमतुल्लाह अलैह के जद्दे आला हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह ने सब से पहले उलूमे माक़ूल व मन्क़ूल का ज़ख़ीरा अपने वतन के बुज़ुर्गों से हासिल किया।

इस के बाद माक़ूलात में क़ुदवतुल मुहक़्क़िक़ीन मौलाना जलालुद्दीन रवानी रहमतुल्लाह अलैह और इल्मे हदीस में शैख़ हाफ़िज़ शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान सख़ावी रहमतुल्लाह अलैह (जो कि इब्ने हजर अस्क़लानी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द हैं) से कमाल का दर्जा हासिल किया।

शैख़ शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान सख़ावी रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह के इल्मो फ़ज़्ल का शोहरा सुन कर आप रहमतुल्लाह अलैह के हाज़िर होने से पहले ही 50 किताबों से ज़्यादा की सनद लिख कर आप रहमतुल्लाह अलैह के पास भेज दी थी उस के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह मुहद्दिस शैख़ शम्सुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान सख़ावी रहमतुल्लाह अलैह की

ख़िदमत में हाज़िर हुए और मुद्दत तक उनसे हदीस शरीफ़ सुनकर सनद हासिल की।

आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद वतन से हिजरत कर के हरमैन शरीफ़ैन चले गये, आप रहमतुल्लाह अलैह भी एक अरसे तक वहां रहे, उस के बाद मुद्दत तक इराक़ और अरब में सय्याही फ़रमाते रहे, इसी सय्याहत के दौरान आप रहमतुल्लाह अलैह अरब से गुजरात और वहां से दिल्ली होते हुए आगरा में वारिद हुए।

आगरा में सुल्तान सिकन्दर लोदी की इल्मी क़दर दानी, कमाल पर्वरी और आगरा की ख़ाक ऐसी दामन गीर हुई कि सय्याही छोड़ कर जमुना के किनारे आबाद हो गए, बादशाह हद से ज़्यादा आप रहमतुल्लाह अलैह की ताज़ीमो तकरीम करता था और हमेशा "हज़रत मुक़द्दस" कह कर मुख़ातब किया करता था।

आगरा के तमाम उलमा, फुज़ला और मशाईख़ीन में आप रहमतुल्लाह अलैह मुमताज़ बल्कि सब के उस्तादो मुक़तदा समझे जाते थे, तमाम मुसलमान और हुनूद के दिलों पर आप रहमतुल्लाह अलैह का नेक असर था, वक़्त के बादशाह भी आपसे फ़तवे तलब करते और हमेशा उमूराते सल्तनत में आप रहमतुल्लाह अलैह के नेक मशवरों पर कारबन्द होते थे, सिकन्दर, इबराहीम, बाबर, हुमायूँ, शेरशाह सूरी, सलीम शाह, छः बादशाह आप रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने में गुज़रे, तरह तरह के फ़ित्ने व फ़साद और मुल्की इन्क़िलाब इस अर्से में ज़हूर में आए, बाज़ उलमा व मशाईख़ीन एक ज़माने में मक़बूल और दूसरे ज़माने में मर्दूद हो कर हुकूमत के दुश्मन समझे गए मगर आप रहमतुल्लाह अलैह का तर्ज़े अमल ऐसा मक़बूलो पसंदीदा था कि तमाम बादशाह आप रहमतुल्लाह अलैह के मुतीअ व

फ़रमांबर्दार रहे, बाबर के हिन्दुस्तान फ़तह करने पर अक्सर इलाक़ों के हाकिम आप रहमतुल्लाह अलैह की मारिफ़त मुलाज़मते शाही हाज़िर हुए।

हुमायूँ जब दोबारा शेरशाह से शिकस्त खा कर आगरा आया तो बग़र्ज़े सलाह व मशवरा आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि जब यगाना व बेगाना का येह हाल है तो आप चंद रोज़ के वास्ते इस मुल्क से बाहर तशरीफ़ ले जाईए और क़ुदरते इलाही के मुंतज़िर रहिए कि क्या ज़ुहूर होता है।

शेरशाह के ज़माने में जब आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपने वतन जाने का इरादा फ़रमाया तो उस ने निहायत इसरारो मिन्नत से आप रहमतुल्लाह अलैह को इस इरादे से रोके रखा, शेरशाह सूरी के बेटे सलीम शाह के वक़्त में भी आप रहमतुल्लाह अलैह मुअज़्ज़ज़ व मोहतरम रहे।

आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह मुसाफ़िर खाना और आप रहमतुल्लाह अलैह का दस्तर ख़्वान खलीली दस्तर ख़्वान था, हज़ारों उलमा, फ़ुज़ला, ग़ुरबा, उमरा, दूर दराज़ मुल्कों से आ आकर आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह में फ़ैज़याब होते और आप रहमतुल्लाह अलैह की सख़ावतो दरिया दिली से अक्सर आप रहमतुल्लाह अलैह ही के मोहल्ले में आबाद हो जाते थे, अगरचे आप रहमतुल्लाह अलैह दुनियवी कारोबार से तअल्लुक़ रखते थे मगर जो कुछ हासिल होता था सब मसारिफे ख़ैर ख़ुसूसन मुसाफ़िरों, ग़रीबों और तालिबे इल्मों की परवरिश में सर्फ कर देते थे, तमाम उम्र आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह में दर्सो तदरीस ख़ुसूसन इल्मे हदीस का चर्चा रहा और आप रहमतुल्लाह अलैह के हज़ारों शागिर्द कमाल के दर्जे पर पहुंचे, शैख़ मुबारक जो कि अबुल फ़ज़्ल के वालिद हैं जब मुसाफ़िराना तौर से आगरा में आये तो पहले आप रहमतुल्लाह अलैह ही की ख़ानक़ाह में ठहरे थे

और फिर आप रहमतुल्लाह अलैह ही के मोहल्ले में आबाद हुए, आप रहमतुल्लाह अलैह हमेशा नाज़ुक हालतों में उनकी मदद फ़रमाते रहे।

954 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह आलमे नासूत को छोड़ कर आलमे मलकूत की सैर को रवाना हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात हो गई :

"पेशवाए यक़ीं रफ़ीउद्दीन साहिबे रिफ़अत ज़माना", वफ़ात की तारीख है।

मज़हरे ख़ालिक़े ज़मानो ज़मीं
शाह दुनिया व दीं रफ़ीउद्दीन
सफवी बूद आँ ख़ुदा आगाह
तय्यिबुल्लाह रूहु हू व सराह
साल नक़लश चू दर शुमार आमद
ना सद व पंजाह व चहार आमद

जिस जगह आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह थी वहीं आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** वाक़ेअ और ज़ियारत गाह ख़ासो आम है, शाहजहाँ के वक़्त में ख़ानक़ाह के आस पास आसिफ़ ख़ान की आलीशान हवेली तामीर हुई जिसमें बावन चौक और छप्पन फाटक थे।

अब ना मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का मुहल्ला रहा, ना हवेली रही, ना हवेली वाले, सिर्फ़ चंद आसार, एक फाटक यादगार रह गया है जहां सैंकड़ों हज़ारों मुसलमानों बीसियों उलमा, फुज़ला के घर थे वहां अब एक मुसलमान भी आबाद नहीं, क़ुरबो जवार में बनिए और दीगर ग़ैर मुस्लिम आबाद और मुहल्ला बेलनगंज के नाम से मशहूर है, दर्मियान में मुख़्तसर क़ब्रिस्तान यादगार के तौर पर बाक़ी रह गया है जिससे पता चलता है कि यहां मुसलमान रहते थे और इस क़ब्रिस्तान में बड़े बड़े मर्दाने

ख़ुदा और अहलुल्लाह आराम फरमा हैं, येह भी निहायत कसमा पुरसी के आलम में मुसलमानों के दौर का नौहा पढ़ रहा है।

हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** एक वसीअ व संगीन गुंबद के अंदर था जिसका ऊपर वाला हिस्सा गिर गया है, आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिब ज़ादे मीर मुर्शिदुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की सीरत इस किताब में मौजूद है। (बोस्ताने अख्यार, पेज76.79)

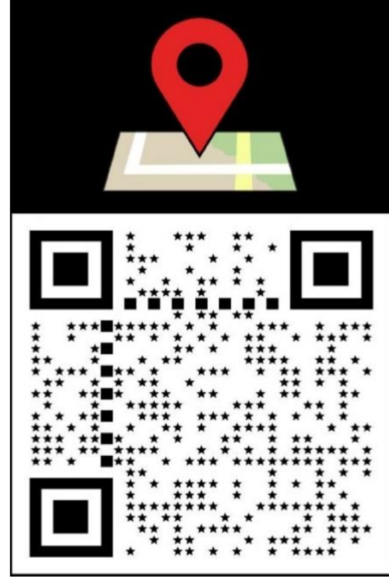
मौजूदा हालत 2025

हज़रत मौलाना सैय्यिद रफ़ीउद्दीन सफ़्वी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक बेलन गंज में अब भी मौजूद है जो कि आबादी के अंदर गली से हो कर जाना पड़ता है। मज़ार मुबारक निहायत सादा, मज़ार मुबारक के चारों तरफ़ बारह पिलरों पर क़ाइम कुछ इमारत है जिस पर गुंबद तामीर होना था लेकिन नहीं हो सका।

जिस भाई के साथ सगे अत्तार आप रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में गया था उन्होंने बताया कि कई बादशाहों ने मज़ार पर गुंबद बनवाने का इरादा किया लेकिन आप रहमतुल्लाह अलैह किसी को बिशारत देकर मना फ़रमा देते। वल्लाहु आलम

मज़ार मुबारक के इहाते में कई और मज़ारात हैं लेकिन उन पर कोई तख़्ती नहीं। मज़ीद मुत्तसिल छोटा सा क़ब्रिस्तान भी है जिसमें बाज़ क़ब्रें ज़ाहिर और बाज़ ज़मीन से मिल चुकी हैं।

मौलाना सैय्यिद रफ़ीउद्दीन सफ़्वी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(55) सैय्यिद मुर्शिदुद्दीन

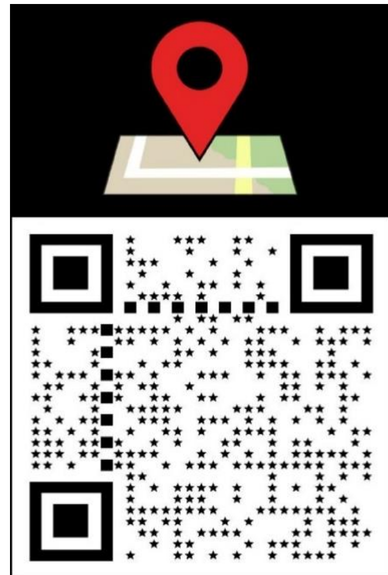
आप रहमतुल्लाह अलैह मीर रफ़ीउद्दीन सफवी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंद रशीद यानी बेटे हैं, तमाम उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी में अपने वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द और सूफ़िया के तमाम औसाफो अख्लाक़ बिलखुसूस सीरतो सख़ावत और ईसार के साथ मौसूफ़ थे और ज़ाहिरी व बातिनी तसर्रुफ़ात में कमाल का दर्जा रखते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह अपने वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह के पहलू में सो रहे हैं यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** बेलनगंज में मौजूद है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज208.209)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह

मौलाना सैय्यिद रफीउद्दीन सफ़्वी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(56) सैय्यिद शाह मीर शीराज़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद मुहम्मद इब्ने मीर मुईनुद्दीन हसनी शीराज़ी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे दिलबन्द यानी बेटे और चार वास्ते से मीर सैय्यिद शरीफ़ जुरजानी रहमतुल्लाह अलैह से जा मिलते हैं।

मीर रफीउद्दीन मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैह के भतीजे और उन्ही के मोहल्ले में रहते थे,सिकन्दर लोदी के अख़ीर ज़माने में आप रहमतुल्लाह अलैह गुजरात के रास्ते से आगरा में तशरीफ़ लाए, शैख़ अमानुल्लाह पानीपती रहमतुल्लाह अलैहकी मुलाज़िमत से तरीक़त का हिस्सा मिला था, ख़ुश सोहबत, नेक सीरत और नज़्म व नसर के साथ आरास्ता और हुक्कामे वक़्त के इख़्तिलात में सरगर्म थे।

4 शव्वाल 996 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई, **मज़ार मुबारक** ग़ालिबन क़ब्रिस्तान मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह बेलनगंज में है।

जिस जगह मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह थी वहीं मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक वाक़ेअ और उसी जगह क़ब्रिस्तान है शाहजहाँ बादशाह के वक़्त में ख़ानक़ाह के आस पास आसिफ़ ख़ान की आलीशान हवेली तामीर हुई जिसमें बावन चौक और छप्पन फाटक थे।

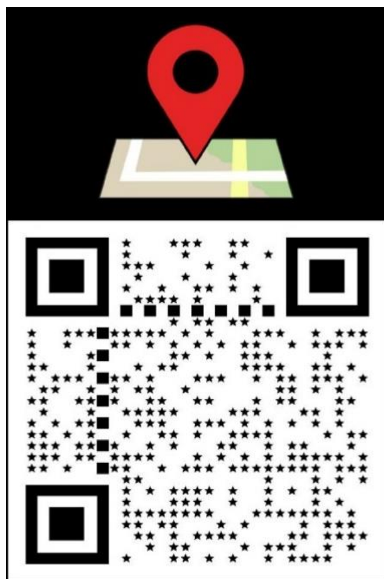
अब ना मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का मुहल्ला रहा, ना हवेली रही, ना हवेली वाले, सिर्फ़ चंद आसार, एक फाटक यादगार रह गया है जहां सैंकड़ों हज़ारों मुसलमानों, बीसियों उलमा, फुज़ला के घर थे वहां अब एक मुसलमान भी आबाद नहीं, अब येह अलाका मुहल्ला बेलनगंज के नाम से मशहूर है, बीच में मुख़्तसर क़ब्रिस्तान यादगार के तौर पर बाक़ी रह गया है जिससे पता चलता है कि यहां मुसलमान रहते थे और इस

क़ब्रिस्तान में बड़े बड़े मर्दाने ख़ुदा और अहलुल्लाह आराम फरमा हैं, येह भी निहायत कसमा पुरसी के आलम में मुसलमानों के दौर का नौहा पढ़ रहा है काश आगरा के मुसलमान इस की तरफ़ मुतवज्जेह हों और उसे पाक व साफ़ रखें। (बोस्ताने अख़्यार, पेज87.88)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह

मौलाना सैय्यिद रफीउद्दीन सफ़्वी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



आगरा के **औलियाए किराम** की सीरत की **Video** देखने और सुनने की लिए इस **QR Code** को **Scan** कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



(57) सैय्यिद मुनव्वर मज्ज़ूब

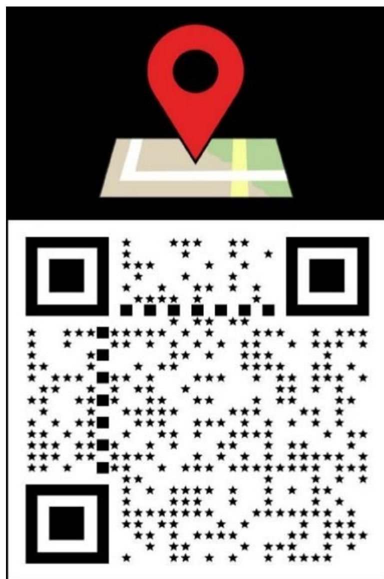
आप रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के ज़माने के एक साहिबे कमाल और साकित मज्ज़ूब थे, सैकड़ों ख़ासो आम लोग आप रहमतुल्लाह अलैह के गिरवीदए अक़ीदत और हल्क़ा ब गोश थे, बहुत से लोग आप रहमतुल्लाह अलैह से फ़ैज़याब हुए, **मज़ार मुबारक** बेलनगंज के क़ब्रिस्तान दरगाह मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैह में वाक़ेअ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज215)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह

मौलाना सैय्यिद रफीउद्दीन सफ़्वी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(58) शैख़ यूसुफ़ लिंक

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ दाऊद मुल्तानी के फ़र्ज़ंदे रशीद और आगरा के निहायत पुराने और मशहूर औलिया अल्लाह से हैं, शैख़ जलाल थानेसरी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद थे, आप रहमतुल्लाह अलैह का दिल तहक़ीक़ के नूर से मुनव्वर और आप रहमतुल्लाह अलैह का दिमाग़ नूरे तौहीद से आरास्ता था, इल्मे तसव्वुफ़ की मुश्किलात को निहायत फ़सीहुल बयानी से हल फ़रमाया करते थे, सादगी और ख़ाकसारी को निहायत ख़ूबी के साथ फ़राहम किया था।

अपने घर की ज़रूरियात ख़ुद बाज़ार में ख़रीदने जाया करते थे, अक्सर रास्ते में लड़के शोख़ी व तमस्ख़ुर से पेश आते मगर आप रहमतुल्लाह अलैह मुस्कुराते हुए निकल जाते और कभी पेशानी पर शिकन नहीं आने देते थे।

हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह से मन्क़ूल है कि आप रहमतुल्लाह अलैह की मुलाज़िमत यानी सोहबत में ख़ास तासीर हासिल थी, आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात के वक़्त जो अस्हाब हाज़िर थे उन में से बाज़ ने आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक़िदीन के हालात की निस्बत दरयाफ्त किया यानी पूछा तो हर एक के बारे में एक जुदागाना इनायत फ़रमाई जब मेरी नौबत आई तो फ़रमाया :

اَلسَّابِقُوْنَ السَّابِقُوْنَ أُوْلَٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ

(जो आगे हैं येह आगे ही हैं, येह ही मुक़र्रब हैं) मैंने अभी इस इल्तिफ़ात के इसरार पर आगाही नहीं पाई लेकिन उम्मीदवार हूँ कि आप रहमतुल्लाह अलैह के मुअस्सर बयान और फ़ैज़ बख्श मुलाज़िमत की बरकत से

दुन्यवी और उखरवी फ़लाह को इंशाअल्लाह ज़रूर पहुँचूगा। (ख़ुदावंदे क़दीर के फ़ज़्ल व करम से उम्मीदे क़वी है कि पहुंच गए)।

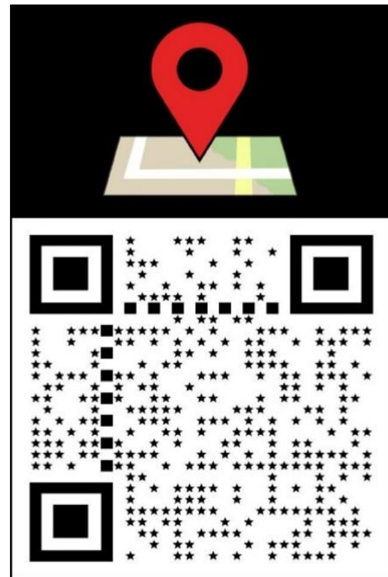
मज़ार मुबारक बेलन गंज के क़ब्रिस्तान मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के रौज़े के पहलू में वाक़ेअ मगर अब ग़ैर मारूफ़ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज253)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह

मौलाना सैय्यिद रफीउद्दीन सफ़्वी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की Location का QR Code इस को अपने मोबाइल से Scan कीजिए, आप के मोबाइल पर Location खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए।

Like Share & Subscribe Channel



(59) मीरज़ा ऐज़द बख़्श रसा

आप रहमतुल्लाह अलैह जहांगीर बादशाह के वज़ीर मीर जाफ़र आसिफ़ ख़ां के पोते हैं, तमाम उलूमो फ़ुनून में शोहरए आफ़ाक़ और फ़साहत व बलाग़त और इंशा पर्दाज़ी में यगाँना ए अस्र गिने जाते थे, आलमगीर बादशाह के ज़माने में मीर मुंशी के ओहदे पर सरफ़राज़ थे, फ़र्ख़मीर ने 1124 हिजरी में महज़ इस क़ुसूर में कि उस के बाप शाहज़ादा अज़ीमुश्शान की निस्बत कोई सख़्त कलिमा आपकी ज़बान से निकल गया था आप रहमतुल्लाह अलैह को शहीद करा दिया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** हवेली ऐज़द बख्श में जो अब मुहल्ला बेलनगंज में रेट साहिब की कोठी के नाम से मौसूम है वाक़ेअ है, 1849 ईस्वी तक आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार का तावीज़ मौजूद था। (बोस्ताने अख्यार, पेज52)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर ना मिल सका, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

मुहल्ला ड्योढ़ी बेगम (माई थान)

(60) शैख़ मुनव्वर चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ नूरुल्लाह इब्ने क़ाज़ी मुइज़्ज़ुद्दीन इब्ने क़ाज़ी अल हद्दाद इब्ने क़ाज़ी मुहम्मद शरई रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के चौथे दादा क़ाज़ी मुहम्मद शरई रहमतुल्लाह अलैह तूरान से हिन्दुस्तान में तशरीफ़ ला कर क़स्बा झुमरादत सरकार मेवात में सुकूनत पज़ीर हुए थे, चूँकि आप रहमतुल्लाह अलैह निहायत नेक किरदार और रास्त गुफ़्तार बुज़ुर्ग थे लिहाज़ा क़स्बे वालों ने मुत्तफ़िक़ हो कर निहायत इसरार से आप रहमतुल्लाह अलैह को अपना क़ाज़ी बना लिया था, उस वक़्त से क़ज़ा का ओहदा नसलन बाद नसलिन इस ख़ानदान में चला आता था।

शैख़ मुनव्वर रहमतुल्लाह अलैह के वलीयुल्लाह होने की निशानियां बचपन के ज़माने ही से नुमायां यानी ज़ाहिर थीं चुनांचे आप रहमतुल्लाह अलैह होश सँभालते ही जज़्बे इलाही में महवो बेखुद हो कर पीर रौशन ज़मीर की तलाश में सरगर्दां फिरने लगे, जहां किसी दरवेश का नाम सुना फ़ौरन उस की मुलाज़िमत में हाज़िर हो कर रूहानी फ़ैज़ हासिल किया, उन्ही दिनों में एक दिन आप रहमतुल्लाह अलैह को आलमे ख़्वाब में एक दिलकुशा मैदान नज़र आया जिसमें एक मज़ार बना हुआ था, चाहते थे कि उस मज़ार मुबारक को बोसा दें, यकायक उस मज़ार में से एक हाथ ज़ाहिर हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़ौरन पीरों की तरह उस से मुसाफ़ा किया।

जब वो हाथ ग़ायब हो गया तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने मुजावरों से साहिबे मज़ार का नाम दरयाफ्त किया यानी पूछा, तो मालूम हुआ कि वो मज़ार ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाह अलैह का है, नाम सुनते ही

दिल बाग़ बाग़ हो गया और ख्वाब से चौंक पड़े, सुब्ह होते ही अजमेर शरीफ़ की तरफ़ कूच किया, रास्ते में ब मक़ाम नागौर हज़रत ख़्वाजा ख़ानूं ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में नियाज़ हासिल हुआ, पहले ही दीदार में आप रहमतुल्लाह अलैह ने गिरविदए ऐअतिक़ाद हो कर ख़्वाजा साहिब रहमतुल्लाह अलैह से बैअत करने का मुसम्मम इरादा कर लिया, अभी येह इरादा दिल से आलमे गुफ़्तार यानी ज़बान में ना आया था कि ज़मीर शनास ख़्वाजा खानूं रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया : मुनव्वर मैंने तुमको अपनी बैअत में क़बूल कर लिया, अब दस्त बोसी की कोई ज़रूरत नहीं है पहले ही दस्त बोसी की दौलत से कामयाब हो चुके हो। येह लगती हुई बात सुनकर और ज़्यादा ऐअतिक़ाद बढ़ा और ख़्वाजा ख़ानूं के साथ हो लिए।

मुद्दत तक साथ साथ रहे और कमालाते बातिनी का ज़ख़ीरा हासिल करते रहे, नागौर से चंदेरी और चंदेरी से ग्वालियर साथ आए, आख़िरे कार ग्वालियर में खिरक़ए ख़िलाफ़त मर्हमत फरमा कर अपने साथ आगरा में लाए, हज़रते ख़्वाजा ख़ानूं ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया: अब यहीं अपना तकिया बना कर बैठे रहो, चुनांचे आप रहमतुल्लाह अलैह मुर्शिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म के मुताबिक़ वफ़ात तक आगरा ही में मुक़ीम रहे।

27 ज़िलक़ादा 970 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने विसाल फ़रमाया और उसी जगह अब भी आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक मौजूद है।

मन्क़ूल है कि एक दिन अदहम ख़ां शैख़ जुनैद मुफ़्ती रहमतुल्लाह अलैह के साथ आपकी ज़ियारत के वास्ते हाज़िर हुआ और देर तक खड़ा रहा, जब देर हुई तो मुफ़्ती जुनैद रहमतुल्लाह अलैह ने अर्ज़ किया कि अदहम ख़ां हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर है, आप रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि बैठ

क्यों नहीं जाता, उस ने बैठने से पहले नज़र पेश की, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया: कि मुझे इस की ख़्वाहिश नहीं, शहर में जो लोग इस के ख़्वाहिशमंद हों उन्हें तक़सीम कर दो।

इस के बाद अदहम ख़ां ने दुआ के वास्ते अर्ज़ किया, आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ामोश हो गए, अदहम ख़ां परेशान हाल हो कर वापस आ गया, जब उस के जाने के बाद हम नशीनों ने दुआ ना करने की वजह दरयाफ्त की तो आप रहमतुल्लाह अलैहने फ़रमाया कि इस के सर में फ़रमां रवाई का सौदाए ख़ाम भरा हुआ है मगर उस के तन पर सर नहीं है, चंद ही दिन बाद इस पेशनगोई का इज़्हार हो गया और अदहम ख़ां को अकबर बादशाह ने क़िले से गिरा कर मरवा डाला।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुहल्ला ड्योढ़ी बेगम (माई थान) में एक गुंबद के नीचे वाक़ेअ है, शैख़ ज़ैनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, जिनका मज़ार भी आप रहमतुल्लाह अलैह के पहलू में बना हुआ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज213.215)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत शैख़ मुनव्वर चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक पाए चौकी के मुहल्ला माई थान डेयोढ़ी बेगम में मौजूद है जो कि लोगों में गुंबद वाली दरगाह से मशहूर है।

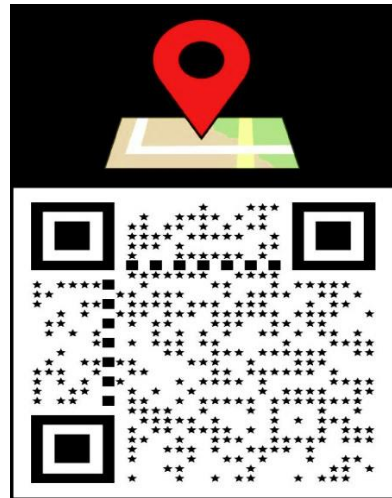
आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक के आस पास और कई मज़ारात थे जो घरों के अंदर आ चुके हैं। दो मज़ार आप रहमतुल्लाह अलैह के सर की जानिब हैं और एक मज़ार आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के दरवाज़े से पहले है, लेकिन किसी में कोई तख़्ती वग़ैरा नहीं लगी। आप रहमतुल्लाह अलैह के शहज़ादे हज़रत शैख़ जैनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार भी आप रहमतुल्लाह अलैह के पहलू में मौजूद है मगर कौन सा है इस की पहचान नहीं हो

पाई, हो सकता है जो मज़ार दरवाज़े से पहले है वही मज़ार आप रहमतुल्लाह अलैह के शहज़ादे का हो, वल्लाह।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की तख़्ती पर जो तारीख़ लिखी हुई है वो 28 सफ़र 997 हिजरी है जबकि बोस्ताने अख्यार में 27 ज़िलक़ादा 970 हिजरी लिखी है।

मज़ार मुबारक के चारों तरफ़ स्टील की रेलिंग लगी है और आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स मुबारक 27,28 ज़िलक़ादा को शानो शौकत के साथ मनाया जाता है।

शैख मुनव्वर चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



(61) शैख़ ज़ैनुद्दीन

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ मुनव्वर रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, उलूमे रस्मी की तहसील क़ाज़ी जलालुद्दीन मुल्तानी रहमतुल्लाह अलैह के मदरसे में की, उलूमे बातिनी का फ़ैज़ अपने वालिद बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह से पाया, बाप की पैरवी का ख़्याल आप रहमतुल्लाह अलैह के सर में भरा हुआ था और हमेशा बाप के क़दम बा क़दम चलने के सिवा कभी एक क़दम नहीं रखा।

'ضَمِنَ اللّٰهُ رِزْقَ كُلِّ اَحَدٍ'

(यानी अल्लाह पाक हर एक के रिज़्क़ का ज़ामिन है) की बरकत से आप रहमतुल्लाह अलैह का दिल ग़नी था और तवक्कुल आप रहमतुल्लाह अलैह का बहुत बढ़ा हुआ था, तमाम उम्र किसी दौलतमंद के दौलत ख़ाने पर जाने का इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ, उमूमन मुसाफ़िरों और दरवेशों की ख़िदमत में मसरूफ़ रहते थे।

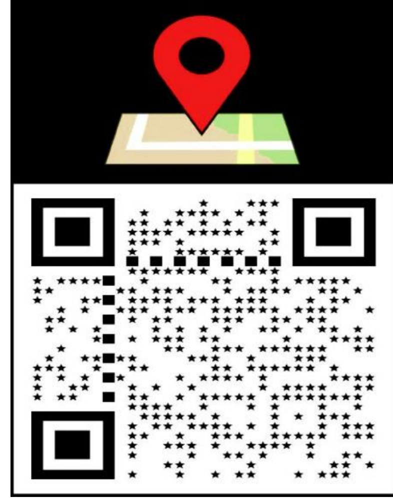
7 रमज़ान 1005 हिज्री या 20 रमज़ान 1006 हिज्री को आप रहमतुल्लाह अलैह आख़िरत का सफ़र फ़रमाया और मुहल्ला डेयुढ़ी बेगम (माई थान) में अपने वालिदे माजिद शैख मुनव्वर चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के क़रीब आराम फरमा हैं यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मौजूद है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज81.82)

मौजूदा हालत 2025

हो सकता है आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक वही हो जो आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे मोहतरम रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार से पहले दरवाज़े के पास बना हुआ है।

शैख मुनव्वर चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



चिड़ीमार टोला

(62) शाह राफ़ेअ

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के कमालात की अक्सर रिवायतें लोगों की ज़बानों पर हैं, **मज़ार मुबारक** चिड़ीमार टोला में छत्ता के अंदर वाक़ेअ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज76)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



(63) बीबी क़ुतुबन

आप रहमतुल्लाह अलैहा आरिफ़ बिल्लाह और ख़ानदाने क़ादरिया में मुरीद थीं, यूसुफ़ अली शाह चिश्ती साबरी रहमतुल्लाह अलैह की अहलिया यानी बीवी और क़ौम की मुग़लानी थीं, जुमा के दिन 5 ज़िलक़ादा 1279 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैहा ने वफ़ात पाई।

मज़ार मुबारक मुहल्ला चिड़ीमार टोला में मस्जिद यूसुफ़ शाह के इहाते में वाक़ेअ है, मज़ार मुबारक की तख़्ती पर बिस्मिल्लाह और कलिमए तय्यिबा के नीचे येह इबारत लिखी हुई है :

"बीबी क़ुतुबन क़ौम मुग़लानी दर तरीक़ा ए क़ादरिया अहले ख़ाना फ़क़ीर, यूसुफ़ अली शाह साबरी चिश्ती बीबी मौसूफ़ा अहले दिल मुहब्बत अज़ पीराने उज़्ज़ाम बदरजा कमाल व दर रोज़ा व नमाज़ दर राह परवरदिगार अज़ जानो दिल निसार उम्र शस्त दो साल ब तारीख़ पंजुम, माह ज़िलक़ादा 1279 हिजरी अल क़ुदसी यौमे जुमा वक़्ते नमाज़े फ़ज्र जां बहक़ तस्लीम कर्द व बाद नमाज़े जुमा मदफ़ून शुदन्द, इलाही आफ़ियत ब ख़ैर बाद आमीन"

(बोस्ताने अख़्यार, पेज140.141)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(64) यूसुफ़ अली शाह चिश्ती साबरी

मशहूर है कि आप रहमतुल्लाह अलैह अस्ल में फ़्रांसीसी यानी फ़्रांस के रहने वाले थे और तस्लीस परस्ती को छोड़कर तौहीद परस्त हुए थे, फिर किसी बुज़ुर्ग के फ़ैज़े सोहबत से आरिफे कामिल हो कर औलिया के ज़ुमरे में शामिल हुए।

मुहल्ला चिड़ीमार टोला में आप रहमतुल्लाह अलैह की तामीर कराई हुई आलीशान मस्जिद मौजूद है जो मस्जिद यूसुफ़ शाह के नाम से मौसूम और ज़ेरे ऐहतिमाम कमेटी लोकल एजेंटी है, मस्जिद के इहाते के अंदर शुमाली यानी उत्तर की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** है, जिस के तावीज़ पर काले पत्थर का क़दम शरीफ़ नसब है और येह शेअर लिखा हुआ है :

बर ज़मीन कि निशान कफ़े पाए तू बुवद
सालहा सज्दा साहिबे नज़रां ख़्वाहद बुवद

1279 हिजरी के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह रेहलत फ़रमा कर आलमे बक़ा हुए। (बोस्ताने अख्यार, पेज254.255)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

फल्पस गंज

(65) सैय्यिद ज़ैनुल आबिदीन शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद, सही हुन्नसब और अकबराबाद के शहीदों में से हैं, 1190 हिज्री ब मुताबिक़ 1776 ईस्वी में ब मक़ाम हरका शहीद हुए, **मज़ार मुबारक** फल्पस गंज के अंदर गोशा शुमाल यानी उत्तर और मशरिक़ यानी पूरब में मस्जिद से मुत्तसिल है मज़ार के तावीज़ पर येह तारीख़ लिखी हुई है :

सर गिरोहे फ़िर्क़ा ए सादात ज़ैनुल आबिदीन
आं कि बूदा शमअ जानश रौशन नूरे यक़ीं
आसमाने नजमे ईमां ख़ास अहफ़ादे बतूल
बंदए शाह शहीदो रौशनिये नर्म दीं
शुद चू बा कुफ़्फ़ार हरका अरसए अराए नबर्द
ज़द दर आं साअत यके बे दीं तफ़नगी अज़ यमीं
खुरदन ज़ख़मश हमाँ व जां बहक़ दादन हमाँ
शुद दिले आलम अज़ीं मातम ब सद हसरत क़रीं
साले तारीख़श चू हातिफ़े ऊ सरे बागे जिनाँ
गुफ़्त बादा मस्कने ऊ क़स्रे फ़िरदौसे बरीं

(बोस्ताने अख्यार, पेज82)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक का पता काफी लोगों से मालूम किया मगर पता ना चल सका, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल**

नंबर (8808693818) पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

دلچسپ معلومات کا ایک اچھوتا انداز "سب سے پہلے فلاں کام کس نے کیا" پر مشتمل کتاب بنام

سب سے پہلے سب سے افضل

اس کتاب میں آپ ملاحظہ کریں گے

☆...سب سے پہلے کس نے منبر پر خطبہ پڑھا؟
☆...سب سے پہلے کس نے ثرید تیار کیا؟
☆...سب سے پہلے کس نے ہتھیار بنائے؟
☆...اسلام میں سب سے پہلی مسجد کس نے بنائی؟
☆...اسلام میں سب سے پہلا خطبہ کون سا پڑھا گیا؟
☆...سب سے پہلے قلم نے کیا لکھا؟
☆...دنیا میں سب سے افضل دن کب ہوتا ہے؟
☆...سب سے افضل متولی کون ہے؟
☆...سب سے پہلے کس نے راہِ خدا میں جہاد کیا؟
☆...سب سے پہلے ترازو کس نے بنایا؟
☆...سب سے پہلے "أمّا بعدُ" کس نے کہا؟
☆...اسلام میں سب سے پہلی سولی کس کو دی گئی؟
☆...سب سے پہلے کس نے تاج شاہی اپنے سر پر رکھا
☆...سب سے افضل چوپایہ کون سا ہے؟
☆...سب سے افضل علم کون سا ہے؟
☆...سب سے افضل کمائی کون سی ہے؟

☆راہب کے 62 سوالات اور ابو یزید بسطامی رحمۃ اللہ علیہ کے جوابات☆

مصنف

مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان عطاری مدنی فتحپوری

مکتبہ دار السنہ دھلی

(66) सैय्यिद कल्लन शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह शुहदाए आली मक़ाम में से हैं, **मज़ार मुबारक** कचहरी घाट में पक्की सड़क के किनारे पेश दरवाज़े शुमाली यानी उत्तरी फल्पस गंज वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज81.82)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक का पता काफी लोगों से मालूम किया मगर पता ना चल सका, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



मुहल्ला कटरा दकबयान

(67) सल्लू शाह मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह फ़तह अली रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और आगरा के मशहूर मज्ज़ूबों में से हैं, हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन कादरी रहमतुल्लाह अलैह के हम ज़माना हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह की अजीबो ग़रीब और हैरत अंगेज़ करामतें मशहूर हैं, हकीम सैय्यिद महेर अली को ख़िनाक़ की बीमारी थी, जब उस का दौरा होता था तो ईलाज के वास्ते आप रहमतुल्लाह अलैह को बुलाया जाता था, आप रहमतुल्लाह अलैह कभी मज्ज़ूबाना बातों और कभी शर्बत वग़ैरा दवाओं से फ़ौरन अच्छा कर देते थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह कुछ दिनों के लिए किसी बात पर ख़फ़ा हो कर फ़तेहपुर सीकरी चले गए थे, जब लोग लेने गए, तो बोले मैं शैख़ सलीम रहमतुल्लाह अलैह की गोद में खेल रहा हूँ, अब नहीं जाऊँगा, आख़िरे कार जब लोगों ने बहुत ख़ुशामद की तो आगरा वापस चले आए।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मकान मुत्तसिल दीवानख़ाना हकीम नूरुद्दीन में एक दिन अल्लाह का नारा मार कर फ़िरदौसे बरीं को सिधारे यानी आप वफ़ात पा गए, कफ़न पास रखा मिला, मुहल्ला कटरा दकबयान में आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** ज़ियारत गाह ख़ासो आम है। (बोस्ताने अख्यार, पेज84)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक का पता काफी लोगों से मालूम किया मगर पता ना चल सका, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल**

नंबर (8808693818) पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

کئی لڑکیاں پیدا ہونے کے بعد لوگ کہتے ہیں "اس عورت کو طلاق دے دو"
آخر لڑکیوں کی پیدائش میں

قصور کس کا

مرد کا یا عورت کا

اسلام اور سائنس کی روشنی میں

آپ اس کتاب میں ملاحظہ فرمائیں گے:

- زمانۂ جاہلیت کی کچھ یادیں
- پانچ لرزہ خیز واردات
- بیٹیوں کے فضائل
- سائنس کیا کہتی ہے؟
- دلچسپ سوالات وجوابات
- عِلْمُ الْجَنِیْن کیا ہے؟
- بچے کی پیدائش کا سبب کیا ہے؟
- بچے کی پیدائش کا مرحلہ
- بے اولادی کے 4 روحانی علاج
- اولادِ نرینہ کے روحانی علاج

مصنف

مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان عطاری مدنی فتحپوری

مکتبہ دارُالسُّنَّہ، دِھلی

जीवनी मंडी आगरा मिल

(68) शाह फ़खरुद्दीन मदारी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ दाऊद इब्ने शाह सिद्दीक़ी के फ़र्ज़ंद रशीद यानी बेटे हैं। इब्तिदाए हाल में सिपहगरी का पेशा करते थे यानी बादशाह की फ़ौज में सिपाही थे। अक्सर उलूमे मुतादावला हुसामुल औलिया शैख़ हुसामुद्दीन मुल्तानी रहमतुल्लाह अलैह के दर्स से हासिल कर के शैख़ुल हद्दाद, सालेह चिश्ती सरहिंदी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हुए। एक रोज़ जबकि आप रहमतुल्लाह अलैह मुमालिक शर्क़ी में सिपाहियाना हालत रखते और हौज़ पर वुज़ू फरमा रहे थे कि यकायक मश्की घोड़े का एक सवार निक़ाब डाले हुए उधर से गुज़रा और आप रहमतुल्लाह अलैह के पीठ पर ज़ोर से एक कोड़ा मार कर अरदली में साथ ले लिया। चंद क़दम चल कर सवार तो नज़र से ग़ायब हो गया और आप रहमतुल्लाह अलैह को ऐसे जज़्बा का सैलाब आया जिसके अंदर मआश का होश बह गया और ऐसी हैरत पैदा हुई जिसने ज़बान बंद कर दी, यहां तक कि बारह साल तक आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़बान हुरूफ़ के अदा करने पर क़ादिर नहीं हुई। बारह साल बाद एक दिन फिर वही सवार रास्ते में मिल गया और ताज़ियाना दिखा कर डराया और कहा कि बात कर। फ़ौरन आप रहमतुल्लाह अलैह में बोलने की ताक़त पैदा हो गई, लेकिन ज़बान में किसी क़द्र गिरिफ़्तगी यानी लुकनत बाक़ी रही। उस के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह क़स्बा चंदलौस सरकार बिहार में शैख़ुल हद्दाद इब्ने ज़ियाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में गए और दोनों बुज़ुर्गों की सोहबत गर्म होने लगी,क्योंकि दोनों सुहरवर्दिया सिल्सिले में से थे, कमो बेश नौ साल आप रहमतुल्लाह अलैह वहां रहे और बहुत से इल्म के प्यासों को आप रहमतुल्लाह अलैह ने इल्म व फज़्ल के दरिया से सैराब किया।

इसी अस्ना में सैय्यिद आदम इब्ने सैय्यिद जुम्मन मदारी रहमतुल्लाह अलैह अपने बाप के हुक्म से हलीसा से फ़ातिहा के वास्ते शैख़ुल हद्दाद रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में आए, सैय्यिद आदम नौजवान और दाढ़ी मुंडवाया करते थे, हज़रत शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने सैय्यिद आदम का रुख़्सार यानी चेहरा दाढ़ी से साफ़ देख कर नसीहत की कि सादात को सुन्नत को छोड़ना सख़्त ना पसंदीदा है, सैय्यिद आदम को येह नसीहत बहुत नागवार गुज़री और हलीसा वापस पहुंच कर अपने बाप हज़रत सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह से शिकायत की, शैख़ जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया : साहिबज़ादे उस दरवेश का कहना सही और सच्ची नसीहत है, जो अमल करने के लाइक़ है, सैय्यिद आदम अपने बाप की तस्दीक़ करने से शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की हिदायत के गिरवीदा हो गये, इस के बाद सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह ने एक ख़ादिम के हाथ चंद लौंगें और किसी क़द्र तज शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के पास भेज कर पैग़ाम भेजा कि अज़ रुये मुलाक़ात बेहद है लेकिन पीरी यानी बुढ़ापा हाज़िरी से रुकावट है, जिस वक़्त ख़ादिम शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह में पहुंचा, दर्स जारी था, खादिम ने तबर्रुक और पैग़ाम दोनों पेश किया, शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह फ़ौरन मुलाज़िमत के इरादे से उठ खड़े हुए, जब सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह के क़स्बे के क़रीब पहुंचे तो सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से सैय्यिद आदम ने शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का इस्तिक़बाल किया, जब दोनों बुज़ुर्ग आपस में मिले, तमाम काग़ज़ी नुक़ूश आप रहमतुल्लाह अलैह के सफ़्हा ए ख़ातिर यानी दिल से साफ़ हो गए, सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह ने आप रहमतुल्लाह अलैह को ख़ानक़ाह के एक हुजरे में ठहराया, चंद रोज़ आप रहमतुल्लाह अलैह वहां रहे । फिर ग़ुलामाने जां निसार में शामिल होने की इल्तिमास की।

सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया: फखरे आलम जुम्मन जाहिल के मुरीद हो जाएं येह बात ज़ेबा यानी अच्छी नहीं, जब आप रहमतुल्लाह अलैह ने बहुत कुछ आजिज़ी और नियाज़ मंदी के साथ बार बार इल्तिमास यानी गुज़ारिश पेश की तो सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह ने अपने मुँह का पान (यानी उगाल) शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह को दिया, इस के खाते ही इल्मी चिराग़ जो गुल हो गया था अज सरे नौ रौशन हो गया। फिर हुक्म दिया कि बिहार में जाकर शैख़ शर्फ़ुद्दीन यहया मुनीरी रहमतुल्लाह अलैह के रौज़े पर मोअतकिफ़ हो कर उनकी रूहे पाक से हिदायत चाहो।

शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म की तामील की। चंद रोज़ के बाद शैख शर्फुद्दीन यहया मुनीरी रहमतुल्लाह अलैह की जानिब से ख्वाब में इरशाद हुआ कि तुम्हारी रहनुमाई सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह की हिदायत पर मौक़ूफ़ है उन्ही की ख़ानक़ाह में लौट जाओ। शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने वहां से आकर येह सब माजरा बयान फ़रमाया। सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह ने हुक्म दिया कि आगरा की तरफ़ जाओ और रास्ते में ख्वाह किसी भी किस्म की बात सुनने में आए वापस मत लौटो। जब बदीउद्दीन शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर पहुँचो तो आगरा की इजाज़त माँगना। सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह रास्ते में येह हिदायत फ़रमा कर वापस चले गए।

शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने जौनपूर पहुंच कर सैय्यिद जुम्मन रहमतुल्लाह अलैह की विसाल की ख़बर सुनी, येह हाल सुन कर बेक़ाबू हो गए, पहले वापसी का इरादा किया मगर नसीहत का ख़्याल आया और ना चाहते हुए आगे को रवाना हुए। क़स्बा बांगुर मऊ में पहुंच कर हौज़ के किनारे पर रात गुज़ारी। उसी रात को शाह बदीउद्दीन शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह ने आलमे मिसाल में जल्वा अफ़रोज़ हो कर आगरा रहने की इजाज़त

दे दी और हुक्म दिया कि किसी की मुताअय्यन जागीर आपने गुज़र औक़ात के लिए क़बूल ना करना और जो दरवेश उस शहर का साहिबे विलायत हो उस की रिजामंदी से मकान बनाना।

आख़िरे कार बाबर बादशाह के ज़माने में आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा में तशरीफ़ लाए। उस वक़्त शैख़ ख़लील रहमतुल्लाह अलैह ज़ाहिदे ज़माना थे, सबसे पहले उनकी ख़िदमत में गए, वहां आप रहमतुल्लाह अलैह का दिल गिरवीदा नहीं हुआ। उस के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुए, शैख़ अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया :तुम हलीसा से आते हो लेकिन तुम्हारी जगह तो सरहिंद है। शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने कुछ जवाब नहीं दिया और ख़ामोश रहे। फिर मज्ज़ूबे इलाही रहमतुल्लाह अलैह ने एक रोटी का टुकड़ा कजकौल से आप रहमतुल्लाह अलैह को दिया और फ़रमाया पंजाब को चले जाओ वहां गेहूँ अर्ज़ां यानी सस्ता हैं। इस पर भी आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ामोश रहे, तीसरी मर्तबा इरशाद हुआ: एक सेर है, आधा तुम्हारा आधा मेरा। उस का भी आप रहमतुल्लाह अलैह ने कुछ जवाब नहीं दिया। चौथी मर्तबा शैख अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह ने ख़िताब किया। इस वक़्त तक यहां मैं था अब तुम रहो। आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़ौरन जवाब दिया कि अगर आप रहमतुल्लाह अलैह की येह राये है तो आप रहमतुल्लाह अलैह मेरे वास्ते जगह छोड़ दें और ख़ुद दूसरी जगह तजवीज़ फरमा लें।

शैख़ अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह उसी वक़्त उस जगह से जो कि जमुना के किनारे मीर रफ़ीउद्दीन मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के मुहल्ला में वाक़ेअ थी उठ कर खड़े हुए और नई की मंडी तशरीफ़ ले गये जहाँ अब आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक है।

शैख अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह के जाने के बाद शाह फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने वहां की सुकूनत इख्तियार फ़रमाई।

आप रहमतुल्लाह अलैह के औसाफ़ और कमालात और ख़िरक़े आदात वाकिआत बेशुमार हैं, साहिब अख्बारुल अस्फ़िया का बयान है कि मेरे जद्दे बुज़ुर्गवार शैख़ यूसुफ़ अंसारी रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाया करते थे कि जब तक मैंने शाह फ़खरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह को ना देखा था, क़ुतुबुल मदार शाह बदीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की बुज़ुर्गी और कमालात के हालात किताबों में पढ़ कर या बुज़ुर्गों से ज़बानी सुन कर पूरे तौर से मुझे यक़ीन ना आया था, आप रहमतुल्लाह अलैह के कमालातो औसाफ़ को देख कर मैं आप रहमतुल्लाह अलैह के दादा पीर यानी शाह मदार रहमतुल्लाह अलैह की बुज़ुर्गी का क़ाइल हो गया।

मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह **मुंतख़बुत्तवारीख** में लिखते हैं कि शैख़ फ़खरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह एक पीर नूरानी मुतवक्किल, साहिबे ख़ल्वत बुज़ुर्ग थे। रियाज़त भी बहुत करते थे। कभी अपने घर से बाहर ना निकलते थे। हर जुमा को आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह में सूफ़ियों का मज्मा होता था और निहायत ऐहतिमाम से मज्लिसे सिमाअ मुंअक़िद होती थी। हाज़िरीन में कोई कैसा ही सिमाअ का मुन्किर क्यों ना हो उस को भी हाल आ जाता था।

शैख़ फखरूद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का वज्द और लोगों पर असर करता था। मजलिस से फ़ारिग़ हो कर दस्तरख़्वान बिछाया जाता था। बादशाह, अमीर, ग़रीब, फ़क़ीर सब बराबर बैठ कर खाना खाते थे। ख़ान ख़ाना बैरम ख़ां हमेशा जुमा को आप रहमतुल्लाह अलैह की ही मस्जिद में नमाज़ पढ़ कर मजलिस में शरीक हुआ करता था। आप रहमतुल्लाह अलैह की सोहबत के असर से उस पर भी बड़ी रिक़्क़त तारी हुआ करती थी, नशिस्त

और बर्ख़ास्त यानी उठने बैठने, खुर्दो नोश यानी खाने पीने में और लोगों से कुछ उस को इम्तियाज़ ना होता था।

जब आप रहमतुल्लाह अलैह को किसी किस्म की बीमारी पेश आती तो आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ुशगुलू यानी अच्छी आवाज़ वाले कव्वालों को बुला कर सिमाअ की मजलिस मुनअक़िद फ़रमाया करते थे और वज्द की हालत में मिज़ाज की बद मज़्गी तंदरुस्ती से बदल जाती थी मगर जब मरज़ुल मौत आरिज़ हुआ तो मजलिसे सिमाअ आप रहमतुल्लाह अलैह ने नहीं की। एक रोज़ आप रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने के मशाईख़ीन में से शैख़ यूसुफ़ अंसारी रहमतुल्लाह अलैह, सैय्यिद जलाल क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह, शैख़ अब्दुल मोमिन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह और दीगर चंद अस्हाब इयादत के वास्ते आए थे, सब ने बिल इत्तिफ़ाक़ इरादा किया कि इस बीमारी में सिमाअ ना सुनने का सबब दरयाफ्त फ़रमाएं यानी पूछें लेकिन इस से पहले कि लब हिलाएँ आप रहमतुल्लाह अलैह ने राजी नाम के एक शख़्स को बुलाया और फ़रमाया कि येह ग़ज़ल गाओ :

मा क़िस्सा नौ शुतेम ब सुल्ताँ कि रसानद
जां साख़ता करदेम ब जानां कि रसानद

जब ग़ज़ल तख़ल्लुस तक पहुंच गई तो फ़रमाया फ़ुर्सत कम और शरीअत की रिआयत वाजिब है,गाना बंद करो।

तीन रोज़ बाद 19 जुमादस्सानी 970 हिजरी, ब मुताबिक़1562 ईस्वी को आप रहमतुल्लाह अलैह पहली मर्तबा अपनी ख़ानक़ाह से बाहर निकले और उस मक़ाम पर जहां अब आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक वाक़ेअ है क़ियाम फरमा कर उसी दिन बहिश्ते बरीं को रवाना हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह विसाल फरमा गए, 147 बरस की उम्र पाई।

मज़ार मुबारक आबादी से मुत्तसिल मुहल्ला जीवनी मंडी शुमाल यानी उत्तर की जानिब वाक़ेअ है, पहले मज़ार पर आलीशान इमारत मौजूद थी, मराठों के ज़माने में गुंबद गिर पड़ा जिसको बहाव नाम का एक आगरा के हाकिम ने ख्वाब में देख कर साफ़ करा दिया और आप रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म के मुताबिक कोई इमारत तामीर नहीं कराई, अब दरगाह की चहार दीवारी भी खुद गई है, ग़दर के दिनों यानी 1857 ईस्वी की जंगे आज़ादी तक निहायत धूम धाम से आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता था और बहुत सारी ज़मीन दरगाह के अखराजात के वास्ते माफ़ यानी वक़्फ़ चली आती थी लेकिन अब येह मौजूद नहीं।

सैय्यिद मीर जान रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह की औलाद में थे, उनके नवासे मीर अली हुसैन साहिब, सैय्यिद मुज़फ़्फ़र हुसैन साहिब पेशकार कलेक्टरी साकिन चिड़ीमार टोला मौजूद हैं, उनके पास आप रहमतुल्लाह अलैह के तबर्रुकात यानी हुज़ूर सरवर आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अबरु मुबारक और दाढ़ी मुबारक के बाल मुबारक नस्लन बाद नस्लिन चले आते हैं, जिनकी ज़ियारत हर साल 11 रबीउल अव्वल को कराई जाती है। (बोस्ताने अख्यार, पेज133.138)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(69) शाह समुंदर

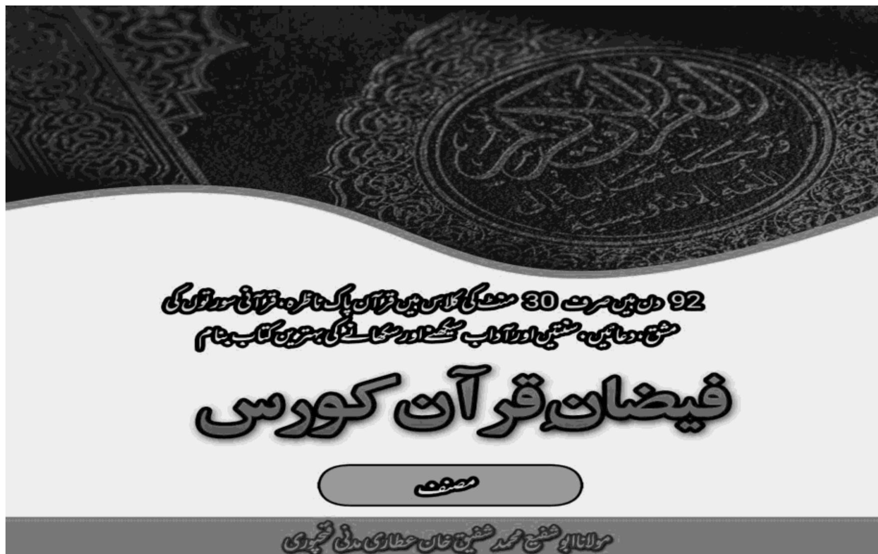
आप रहमतुल्लाह अलैह के असली नाम और हालात का पता नहीं चलता। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार को पुराना बताया जाता है जिससे क़ुरबो जवार के लोगों को ख़ास अक़ीदत है और बहुत सी ख़ुश ऐअतिक़ादगी की रिवायतें मशहूर हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुत्तसिल जीवनी मंडी आगरा मिल के क़रीब वाक़ेअ है, पास ही एक मस्जिद बनी है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज84.85)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



घटिया आज़म ख़ां

(70) मख्दूम सिधारी चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम मुबारक शैख़ सादुल्लाह है, हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ए आज़म, क़ुतुबुल अकताब शैख़ इबादुल्लाह मख्दूम भिकारी नरवरी रहमतुल्लाह अलैह के भाई और बनी इसराईल से थे।

अपने पीर रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से अकबराबाद (आगरा) में सुकूनत इख्तियार फ़रमाई, तमाम उम्र आगरा में बंदगाने ख़ुदा को फ़ैज़ पहुंचाते रहे।

994 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई, **मज़ार मुबारक** घटिया आज़म ख़ां की मस्जिद गली न्यारियां के क़रीब वाक़ेअ है, **"शजरतुल इस्लाम"** और **"शमाईलुर्रसूल"** मन्ज़ूम दो किताबें आप रहमतुल्लाह अलैह की यादगार हैं। वफ़ात की तारीख़ येह है:

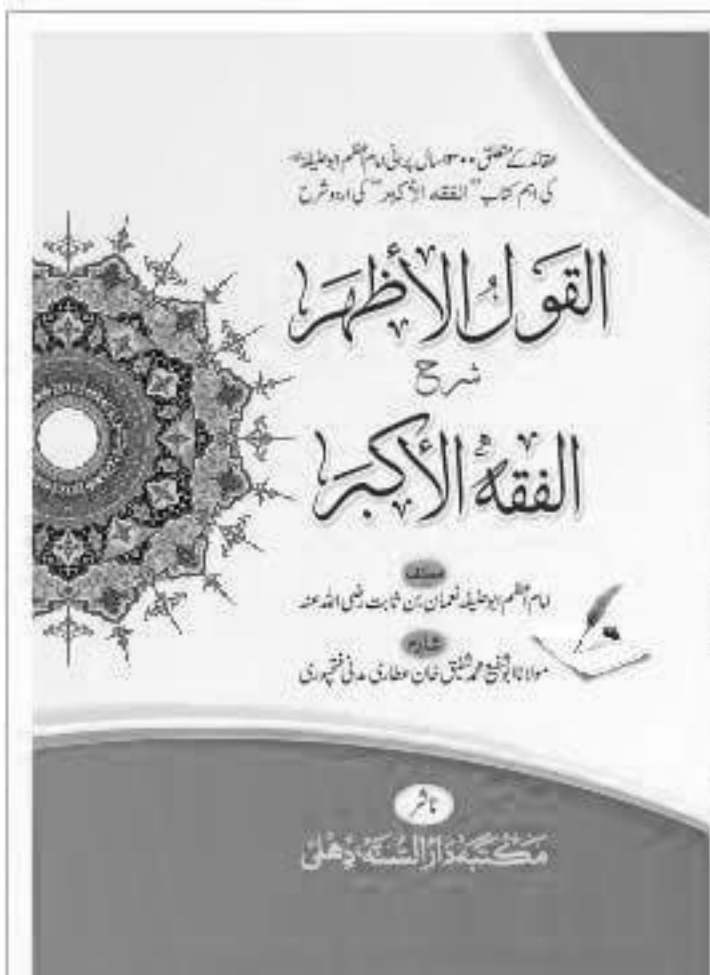
चूँ शैख़ सिधारी आँ वली अहद
अज़ क़ैद वुजूद ख़ो बशतन रस्त
अल हक़ ब विसाले हक़ शर्फ़ याफ़्त
मस्ताना बदोस्त दोस्त पैवस्त
तारीख़े विसाले ऊ नविश्तम
अज़ बादए जाम वस्ल शुद मस्त

"अज़ बादए जाम वस्ल शुद मस्त" इस के अदद 994 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज85.86)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



(71) शैख़ मुहम्मद सालेह क़ादरी आज़मी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ इबादुल्लाह (शैख़ भिकारी बनी इसराईल) रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं जो हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती फ़तेहपुरी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा थे।

बारह बरस की उम्र में इल्म हासिल करने के वास्ते जौनपुर तशरीफ़ ले गए और मौलाना अब्दुल मजीद जौनपुरी रहमतुल्लाह अलैह के हल्क़ए दरस से उलूमे ज़ाहिरी में कमाल हासिल किया और अपने वालिद बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह और हज़रत शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह की बा बरकत सोहबत से तरीक़त की आँखें रौशन कीं, आख़िरे कार सिल्सिला क़ादरिया आज़मियह में मुंसलिक हो कर आगरा में उलूमे ज़ाहिरी और बातिनी का फ़ैज़ जारी किया।

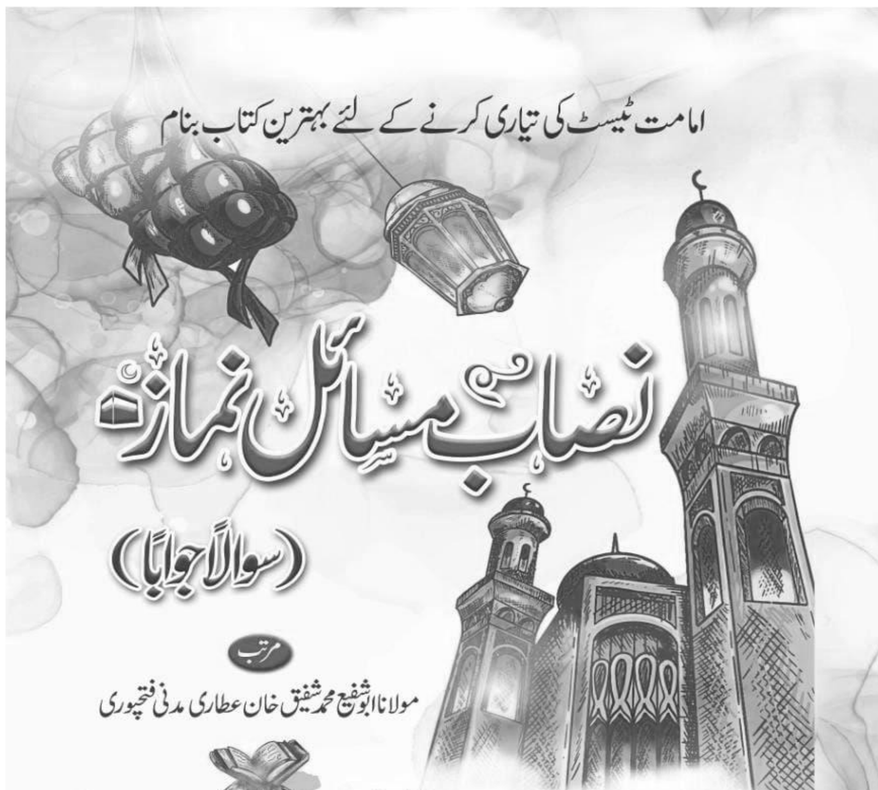
सुकरो जज़्ब, इश्क़ व मुहब्बत, क़नाअतो सब्र और तवक्कुल आप रहमतुल्लाह अलैह का बेमिस्ल था, हर अदना और आला आदमी आप रहमतुल्लाह अलैह से अक़ीदत रखता और शैखुश्शुयूख के ख़िताब से आप रहमतुल्लाह अलैह को याद करता था, अक्सर आप के ज़माने के फ़ुज़ला को आप रहमतुल्लाह अलैह से तलम्मुज़ हासिल था यानी वह सब आप के शागिर्द थे।

जुमा के दिन 13 ज़िलक़ादा 1067 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने इस जहाने फ़ानी से इंतिक़ाल फ़रमाया। **"शाह सालेह मुत्तक़ी"** के अदद आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात की तारीख़ है। **साहिबे मुख़्बिरुल वासिलीन** ने जो आप रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द और खास मुरीदों में से थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल की तारीख़ बहुत तवील लिखी है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** घटिया आज़म ख़ां में अपने वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के क़रीब था मगर अब उस का पता नहीं चलता। (बोस्ताने अख्यार, पेज195.196)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



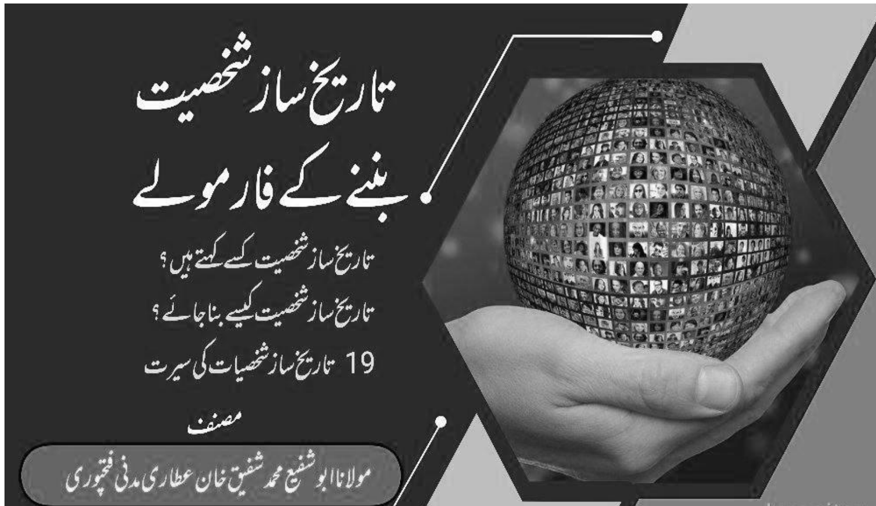
कचहरी घाट, बाँस दरवाज़ा

(72) सुल्तान शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद के शहीदों के सुल्तान हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के कमालात की कई रिवायतें राक़िमे बोसतान से बयान की गई हैं, **मज़ार मुबारक** सड़क के किनारे कचहरी घाट, बाँस दरवाज़ा मुत्तसिल मकानात कालेथ साहिबान वाक़ेअ है, गून्दी का पुराना दरख़्त दीवार मकाने मुल्हिक़ा से टकरा कर आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर साया किए हुए है। (बोस्ताने अख्यार, पेज86)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



छिली ईंट

(73) सैय्यिद शाह आलम (रजब शहीद)

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** छिली ईंट में मुत्तसिल कोठी पण्डित कैलाश नाथ वकील में वाक़ेअ है, लोग आप रहमतुल्लाह अलैह को सैय्यिद शाह आलम के नाम से मौसूम करते हैं, लेकिन गुंबद के दरवाज़ों की पेशानी पर रजब शहीद 1296 हिजरी लिखा हुआ है।

येह तारीख आप रहमतुल्लाह अलैह के गुंबद के तामीर का है। पहले आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर कोई इमारत नहीं थी, जब गोबिंद शाह दरवेश इस जगह आकर मुक़ीम हुए तो राय जोती प्रसाद रईसे आगरा ने जो कि गोबिंद शाह दरवेश का मोअतक़िद था उनके हुक्म से मज़ार पर गुंबद तामीर करवा दिया और आस पास की ज़मीन जो उन्ही की मिल्कियत थी वक़्फ़ कर दी। (बोस्ताने अख्यार, पेज86.87)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

पंजे मदरसा

(74) मौलवी आदिल

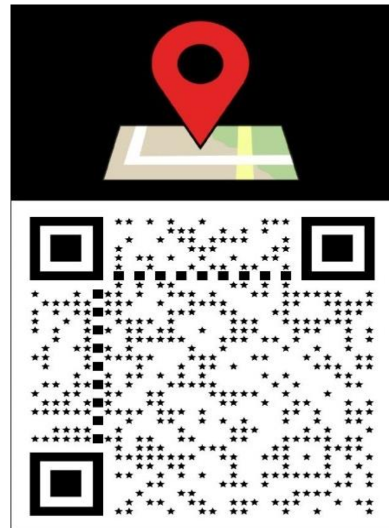
आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद यानी आगरा के उलमा में से हैं, मौलाना अहमदी रहमतुल्लाह अलैह जो मौलाना सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद हैं आपके शागिर्द हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मस्जिद मुहल्ला मदरसा में वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज93)

मौजूदा हालत 2025

मौलवी आदिल रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक पंजे मदरसा की खानकाह की मस्जिद के दरवाज़े के पास बनी हुई है।

पंजा मदरसा में मौजूद तमाम मज़ारात के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(75) मौलाना अहमदी क़ादरी

हज़रत का नाम मुबारक सैय्यिद अहमदुल्लाह और उर्फ मौलाना अहमदी था, आगरा के सादाते इज़ाम और उलमाए किराम में से थे,रस्मी उलूम में मौलाना आदिल अकबराबादी के शागिर्दे रशीद थे, 1216 हिजरी में ख़ुल्दे बरीं की राह ली यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे ने येह तारीखे रिहलत मौज़ूं फ़रमाई जो आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** वाक़ेअ मस्जिद शाही मुहल्ला मदरसा पर लिखा हुआ है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के तीन साहिबज़ादे थे:

(1)बड़े बेटे सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह

(2)मँझले बेटे सैय्यिद मुहम्मद मीर रहमतुल्लाह अलैह और

(3)छोटे बेटे ग़ुलाम मुस्तफ़ा रहमतुल्लाह अलैह

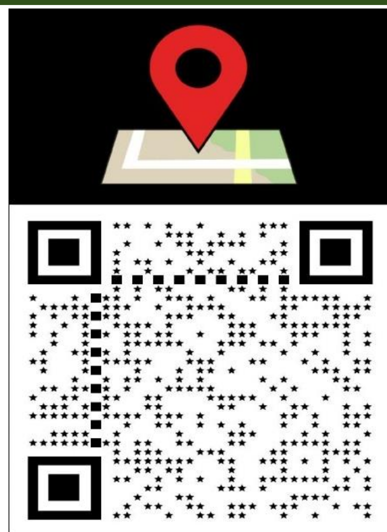
बड़े और मँझले बेटे के हालात इस किताब में मौजूद हैं, छोटे साहिबज़ादे मौलवी डिप्टी इम्दादुल उला मरहूम डिप्टी कलैक्टर के वालिदे माजिद थे। (बोस्ताने अख्यार, पेज43.44)

मौजूदा हालत 2025

मौलाना अहमदी कादरी रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक पंजे मदरसा की खानकाह के दरवाज़े के पास बनी हुई है।

दीवार पर एक पत्थर लगा हुआ है जिस पर **हज़रत सैय्यिद मौलाना अहमदुल्लाह कादरी अहमदी अकबराबादी** लिखा हुआ है और नाम के नीचे फारसी के चार शेअर भी लिखे हैं। और तारीख **1216 हिजरी** लिखी है।

पंजा मदरसा में मौजूद तमाम मज़ारात के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



(76) सैय्यिद अमजद अली शाह जाफ़री क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह 31 वास्ते से शहीदे दश्ते कर्बला इमामे हुसैन रज़ीअल्लाहु अन्हु से जा मिलते हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के पाँचवे दादा क़ुतुबुल अकताब मौलाना सैय्यिद इब्राहीम क़ुतुब जाफ़री रहमतुल्लाह अलैह मदीनए मुनव्वरा से जहांगीर बादशाह के ज़माने में आगरा में तशरीफ़ लाकर सुकूनत पज़ीर हुए थे। ख़ान जहां लोदी जो जहांगीर के ज़माने का मशहूरो मारूफ़ अमीर था आप रहमतुल्लाह अलैह का मोअतक़िदो मुरीद था और उसने आप रहमतुल्लाह अलैह के वास्ते मदरसा, मस्जिद और मकानात अपने महल के क़रीब तामीर कराए थे, जिस जगह येह मकानात थे वो अब लोदी ख़ां का टीला मशहूर और रेलवे स्टेशन आगरा सिटी से मिला हुआ वाक़ेअ है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद मौलाना सैय्यिद अहमदी रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने में इत्तिफ़ाक़ से उन मकानात में आग लगी और तमाम मकानात और कुतुब ख़ाना वग़ैरा जल कर ख़ाकिस्तर हो गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह मौलाना ज़ियाउद्दीन बल्ख़ी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और सैय्यिद अब्दुल्लाह क़ादरी बग़दादी रामपुरी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ए आज़म थे, उलूमे अक़्ली और नक़्ली दोनों में यकताए ज़माना थे, शायरी में **'असग़र'** तख़ल्लुस और शायरी में कमाल हासिल था जिसका सबूत आप रहमतुल्लाह अलैह का मत्बूआ दीवान मौजूद है जो हक़ाइक़ और मआरिफ़ के मोतीयों का ख़ज़ाना है। कमालाते बातिनी के मुताअल्लिक़ सिर्फ येह रिवायत काफ़ी है कि हुज़ूर महबूबे सुब्हानी ग़ौसुल आज़म जीलानी रहमतुल्लाह अलैह के इरशाद फरमाने से आप रहमतुल्लाह अलैह के पीर बुज़ुर्गवार आप रहमतुल्लाह अलैह ही की तालीम के वास्ते बग़दाद से हिन्दुस्तान में आए थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह ग्यारहवीं शरीफ़ निहायत ऐहतिमाम और धूम धाम से किया करते थे जिसका सिल्सिला आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़ानदान में अब तक जारी है जिसके अख़राजात के वास्ते मौज़ा बोदला परगना आगरा माफ़ यानी वक़्फ़ है।

22 रबीउल अव्वल 1230 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने रिहलत फ़रमाई और मस्जिद शाही मुहल्ला मदरसा के इहाते में सिपुर्दे ख़ाक किए गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** वहीं मौजूद है।

"वाक़िफ़े राहे ख़ुदा सैय्यिद अमजद अली" इस के आदाद 1230 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल है।

आगरा के मशहूर अदीब और नक़्क़ादे सुख़न जनाब सैय्यिद निज़ामुद्दीन शाह साहिब **"दिल गीर"** जिनका कलामे पसंदीदा तमाम हिन्दुस्तान में मशहूरो मारूफ़ है आप रहमतुल्लाह अलैह की यादगार और सज्जादा नशीन दरगाह हैं, अल्लाह पाक उनको बुज़ुर्गों के मर्तबा पर पहुंचाए और उन के उलूम और कमालाते ज़ाहिरी को अरूसे अमल के ज़ेवर से आरास्ता व पैरास्ता करे। आमीन (बोस्ताने अख्यार, पेज50.51)

माहताबे अजमेर नामी किताब में ज़िक्र

हज़रत मौलाना सैय्यिद शाह अमजद अली कादरी अल जाफ़री मुताख़ल्लिस असग़र इब्ने मौलवी सैय्यिद अहमदी शाह इब्ने सैय्यिद इल्हामुल्लाह इब्ने सैय्यिद ख़लीलुल्लाह इब्ने सैय्यिद फ़तहुल्लाह इब्ने हज़रत सैय्यिद इब्राहीम मदनी अलमारूफ़ क़ुतुबुल मदनी रहमतुल्लाह अलैहिम सिल्सिला नसब 23 वास्तों से हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ रहमतुल्लाह अलैह तक पहुंचता है।

हज़रत क़ुतुबुल मदनी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़ा मुनव्वरा के सज्जादा नशीन थे। जहांगीर बादशाह के ज़माने में मदीना से हिन्दुस्तान आये और आगरा में इक़ामत डाली यानी रहने लगे। अराकीने सल्तनत में से अक्सर अमीर लोग जैसे ख़ान जहां लोदी आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक़िद थे। ख़ान जहां लोदी ने अपने महल्लात का बड़ा हिस्सा सैय्यिद फ़तहुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में पेश कर दिया था।

मौलवी सैय्यिद अहमदुल्ला शाह अल मशहूर सैय्यिद अहमदी के ज़माना में आगरा में इन्क़िलाबात सियासी रुनुमा हुए जिसका असर अहमदुल्लाह शाह साहिब पर भी पड़ा, हवेली आग के नज़र हो गई, इल्मी सरमाया जो एक हज़ार किताबों पर मुश्तमिल था वो भी जल कर ख़ाक हुआ। अहमदुल्लाह शाह साहिब रहमतुल्लाह अलैह यहां से उठकर मदरसा अफ़ज़ल ख़ां में इक़ामत पज़ीर हो गए। वहीं आप रहमतुल्लाह अलैह के उस्ताद मौलाना शाह आदिल रहमतुल्लाह अलैह रहा करते थे। उनके बाद मस्नदे तदरीस पर बैठे, दर्सो तदरीस और रुशदो हिदायत में लग गए। और 1216 हिजरी में इंतिक़ाल फ़रमाया

हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह ने अक्ली और नक्ली इल्म अपने वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह से हासिल किया, इल्म हासिल करने के बाद दर्सो तदरीस में मशग़ूल हो गए।

मौलवी मुहम्मद हुसैन मुरादाबादी **अन्वारुल आरिफ़ीन** में लिखते हैं सैय्यिद अमजद अली इब्ने मौलवी सैय्यिद अहमद जाफ़री, ख़लीफ़ा अब्दुल्लाह बग़दादी इल्म व फ़ज़्ल के साथ शैख़े तरीक़त भी थे।

हज़रत शाह अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और ख़लीफ़ा थे और सैय्यिद शाह ज़ियाउद्दीन बल्ख़ी रहमतुल्लाह अलैह से भी ख़ानदाने चिश्तिया, नक़्शबंदिया में साहिबे इजाज़त थे।

2 रबीउल अव्वल 1232 हिजरी में ब मकाम हवेली ख़्वाजा नाई मंडी आगरा में इस जहाने फ़ानी से रेहलत फ़रमाई और मदरसा शाही पंजा में दफ़न हुए। (माहताबे अजमेर पेज 106,108)

ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रामपुरी रहमतुल्लाह अलैह बग़दाद से हिन्दुस्तान तशरीफ़ ला कर हज़रत सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह को ख़िलाफ़त और इजाज़त से नवाज़ा जिस का हाल ख़ुद हज़रत सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह की ज़बानी सुनिए चुनांचे फ़रमाते हैं:

जब फ़र्ज़ंदे महबूबे सुब्हानी हज़रत सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी कादरी रहमतुल्लाह अलैह आगरा तशरीफ़ लाए और मुहल्ला ताजगंज में क़ियाम फ़रमाया तो मैं भी हाज़िरे ख़िदमत हुआ और क़दम बोसी की। हज़रत अब्दुल्लाह बगदादी रहमतुल्लाह अलैह ने मेरा सर अपने सीने से लगा लिया और कसीर मजमा के सामने फ़रमाया: ऐ मेरे बेटे अमजद अली! मैं आगरा में अपने जद्द हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से इसलिए आया हूँ कि तुम्हें बुज़ुर्गाने दीन का खिरका, कुलाह यानी टोपी, इल्म और ख़िलाफ़त इनायत करूँ। मैं हज़रत ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म के इत्तिबा में यहां तक पहुंचा हूँ। तुम्हें मुबारक हो कि येह दौलत बे मांगे मिल रही है। येह सुनकर ख़ुशी की हद ना रही और मुझ पर एक बे ख़ुदी तारी हो गई, जब मुझे होश आया तो मैंने अर्ज़ किया : ऐ मेरे आक़ा! कमज़ोर च्यूंटी से पहाड़ का बोझ कैसे बर्दाश्त हो सकता है? हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने तबस्सुम फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया: येह मन्सब मेरे जद्द हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह ने तुम्हें इनायत फ़रमाया है मेरे हाथ से लो और क़ुदरते क़ादिर का तमाशा देखो।

हज़रत ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने एक चोर को एक नज़र में क़ुतुब बना दिया था तुम तो शरीफ़ुल क़ौम और साहिबे इल्म हो और सैय्यिद हो और दरवेशों से निस्बत रखते हो, तुम्हारे वालिद रहमतुल्लाह अलैह भी इस सिल्सिले से ताअल्लुक़ रखते हैं। अगर तुम्हें अपनी शफ़क़त की वजह से इस नेअमत से नवाज़ा गया तो क्या बईद है।

हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते: हैं कि चंद मवानिआत यानी रुकावट की वजह से ख़िलाफ़त अता करने में कुछ ताख़ीर होती रही यहां तक कि ग्यारहवीं के दिन मुझे तलब फ़रमाया और शोरफा, नोजबा और मशाईख़ के एक बड़े मजमा के सामने अपने हाथ से मुझे खिरकए ख़िलाफ़त पहनाया और अपने सर मुबारक की टोपी मेरे सर पर रखी और अलमे कादरी और ख़िलाफ़त नामा जो मेरे पास मौजूद है अता फ़रमाया और मुरीदों को हुक्म दिया कि उनको मेरा क़ाइम मक़ाम और नाइब समझते हुए हर महीने की ग्यारहवीं और ख़ास कर बड़ी ग्यारहवीं की फ़ातिहा में उनके मददगार और मुआविन रहें और मेरे जद्द की नियाज़ उनको पहुंचाएं और बाल बराबर उनके हुक्म से इन्हिराफ़ ना करें यानी ना हटें, जो कोई उनके ख़िलाफ़ होगा वो मेरे और मेरे जद्द बुज़ुर्गवार यानी गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के ख़िलाफ़ है। और इसी रोज़ ख़्वाजा मुहम्मद मीर साहिब रहमतुल्लाह अलैह को खिरकए ख़िलाफ़त, ख़ास टोपी और इल्म मर्हमत फ़रमाया।

इस के बाद मौलवी शम्सुद्दुहा रहमतुल्लाह अलैह और सैय्यिद हसन अली साहिब रहमतुल्लाह अलैह को खिरकए ख़िलाफ़त, टोपी मुबारक और ख़िलाफ़त नामा अता हुआ।

जब हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह आगरा से रामपुर तशरीफ़ ले गए जहां अब हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह का

मज़ार मुबारक है तो वहां पहुंच कर मुझे तलब फ़रमाया और वहां ख़िल्अते ख़ास, दस्तार अपने सर मुबारक की और पंजए बग़दादी और अलम नामा अता फ़रमाया।

येह पंजा बग़दाद शरीफ़ का बना हुआ है और इस में **"या सैय्यिद सुल्तान अब्दुल क़ादिर जीलानी शैइन लिल्लाह अल मदद"** लिखा हुआ है। येह अलम हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह बग़दाद शरीफ़ से हिन्दुस्तान तशरीफ़ आवरी के वक़्त साथ लाए थे। हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि येह अलम मुबारक मेरे जद्द और मेरे आक़ा ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार अक़्दस के सिरहाने लगा हुआ था, मैं उसे हिन्दुस्तान ले आया था, अब हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की येह अमानत उनके हुक्म के मुताबिक़ तुम्हें इनायत करता हूँ। इस की ताज़ीम जैसी चाहिए वैसी करना।

हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं चुनांचे वो अलम शरीफ़ मेरे पास है और ग्यारहवीं शरीफ़ की मजलिस में एक मकान में जो कटरा आब रेशम ताजगंज में है और जिसके मालिकों ने वो मकान हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की नज़र कर दिया है। और हज़ारों मुरीदीन और तालिबीन उस रोज़ उस की ज़ियारत करते हैं।

(फ़र्ज़ंदे ग़ौसे आज़म पेज 116,117)

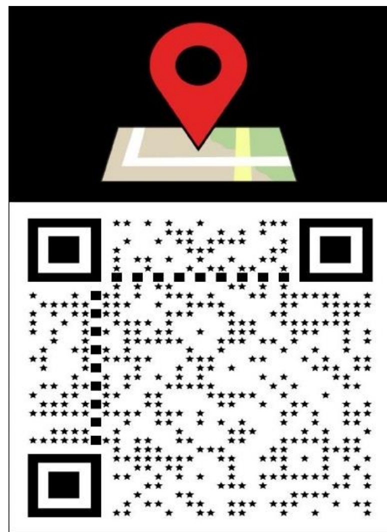
मौजूदा हालत 2025

सैय्यिद अमजद अली शाह ज़ाफरी कादरी रहमतुल्लाह अलैह की मज़ार मुबारक पंजे मदरसा की खानकाह में बनी हुई है। एक लाइन में 6 मज़ार हैं, इन मज़ारात के ऊपर एक खूबसूरत गुंबद बना हुआ है, खानकाह के इहाते में और भी कई कब्रें हैं जिन में से बाज़ में नाम लिखे हुए हैं और

बाज़ में नहीं। खानकाह के गुंबद के नीचे जो मज़ारात हैं उनकी तफ़सील येह है :

1	2	3	4	5	6
मुहम्मद अली शाह	असगर अली शाह	**अमजद अली शाह**	मुज़फ्फ़र अली शाह	मुनव्वर अली शाह	सैय्यिद अब्दुल उला शाह

पंजा मदरसा में मौजूद तमाम मज़ारात के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



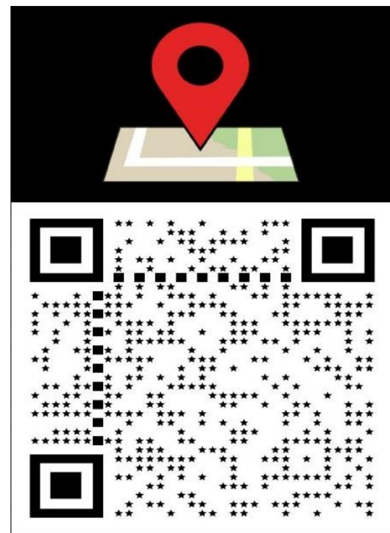
(77) हकीम सैय्यिद मीर

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अहमदी के मँझले बेटे हैं, तबीबे हाज़िक़, ख़ुदा दोस्त और दीगर औसाफ़े हमीदा और अख़्लाक़े पसंदीदा से मौसूफ़ थे ।अपने वालिद माजिद रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से तमाम उम्र तबाबत के लिबास में मख़्लूक़े ख़ुदा को फ़ैज़ पहुंचाते रहे जिसका सिल्सिला अब तक आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़ानदान में जारी है, चुनांचे हकीम मासूम अली इब्ने सैय्यिद इमाम अली आप रहमतुल्लाह अलैह के पोते इस ख़िदमत को अब तक अंजाम दे रहे हैं।

1223 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने इंतिक़ाल फ़रमाया आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** शाही मस्जिद मुहल्ला मदरसा के इहाते में वाक़ेअ है, लौहे मज़ार पर तारीख़ लिखी हुई है।

"चश्मए सिदक़ो सफ़ा कुदवए दीं सैय्यिद मीर" इस के आदाद 1223 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल है। (बोस्ताने अख्यार, पेज220)

पंजा मदरसा में मौजूद तमाम मज़ारात के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(78) सैय्यिद मुनव्वर अली शाह

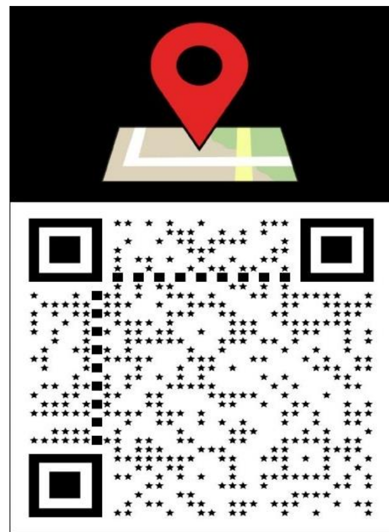
आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे, मुरीद और सज्जादा नशीन थे, ख़ुदा शनासों के पसंदीदा अफ़आल आप रहमतुल्लाह अलैह में मौजूद थे। आप रहमतुल्लाह अलैह के ज़माने में मराठों की हुकूमत थी, महाराजा सिंधिया बहादुर और अक्सर मराठा सरदार आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक़िद और हल्क़ा ब गोश थे।

और हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की फातिहा यानी ग्यारहवीं शरीफ़ के अख़राजात और दीगर मसारिफ़ के वास्ते बेश क़रार जागीरें आप रहमतुल्लाह अलैह को दी थीं।

1235 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई और अपने वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के क़रीब यानी मस्जिद शाही मुहल्ला मदरसा के इहाते में महव राहत हैं यानी **मज़ार मुबारक** है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज216)

पंजा मदरसा में मौजूद तमाम मज़ारात के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



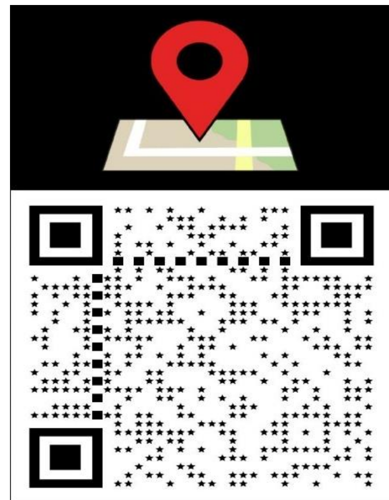
(79) सैय्यिद मुज़फ़्फ़र अली शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद मुनव्वर अली शाह इब्ने सैय्यिद अमजद अली शाह के फ़र्ज़ंद रशीद यानी बेटे और शैख़ निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के बेटे मौलाना नियाज़ अहमद बरेलवी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा थे, तमाम उम्र तालिबाने राहे हक़ीक़त को तालीम व तल्क़ीन फरमा कर 1299 हिजरी में विसाल फ़रमाया, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** सेहन मस्जिद मुहल्ला मदरसा में वाक़ेअ है और मज़ार के तख्ती पर येह तारीख़ लिखी हुई है :

शाह मुज़फ़्फ़र निस्फ़ शब अज़ आशिर अव्वल रबीअ
आसूदा दर क़ुर्ब इलाह अहलन व सहलन मरहबा
साल विसालश अज़ सर अल्लाहु अकबर ऐ हसन
शम्सुल हुदा बदरुद्दुजा नज्मुल उला नूरुल हबा

तसव्वुफ़ में एक ज़ख़ीम किताब **'जवाहिरे ग़ैबी'** आप रहमतुल्लाह अलैह के कमालात की बेहतरीन यादगार है जो मत्बअ नवल किशोर लखनऊ में छुप गई है। (बोस्ताने अख्यार, पेज210.211)

पंजा मदरसा में मौजूद तमाम मज़ारात के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार तक पहुँच सकते हैं।



आगरा सिटी स्टेशन

(80) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह उन्हीं बुज़ुर्गों में से हैं जिन का आख़िरी निशान बाक़ी और नाम बेनाम हो गया यानी आप रहमतुल्लाह अलैह के नाम का कुछ पता नहीं चल सका। आगरा सिटी के जदीद स्टेशन के क़रीब एक बुलंद टीला है जहां शाही ज़माने में ख़ान जहां लोदी के आलीशान महल्लात बने हुए थे, ख़ान जहां लोदी जहांगीर और शाहजहाँ बादशाह के ज़माने का मशहूर अमीर आदमी था।

और इसी मुनासिबत से अब तक वो लोदी ख़ां का टीला कहलाता है, इस पर मुत्तसिल मकान स्टेशन मास्टर एक चबूतरे पर येह **मज़ार मुबारक** वाक़ेअ है, जो बहुत मुताबर्रिक ख़्याल किया जाता है, इस के क़रीब में दो तीन मज़ार और भी हैं, अब तक बहुत से मुनक़्क़श और ख़ुशनुमा पत्थर, सुतून, मेहराबें, फूल वग़ैरा बने हुए हैं, जिनसे ज़ाहिर है कि पुराने ज़माने में इस मज़ार पर आलीशान ख़ुशनुमा इमारत बनी हुई थी।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज104.105)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

लाल किर्ती (बाग़ सुल्तानपुर)

(81) बीबी ख़ाकी शाह

आप रहमतुल्लाह अलैहा शेर अली शाह दरवेशे कामिल रहमतुल्लाह अलैह की मुरीदा और बाज़ लोगों के कहने के मुताबिक़ बीवी थीं, आप रहमतुल्लाह अलैह की अक्सर करामात मशहूरो मारूफ़ हैं। लाल करती की मस्जिद के क़रीब अपने पीर रहमतुल्लाह अलैह के मक़बरे में महवे राहत हैं, येह पक्का मक़बरा आप रहमतुल्लाह अलैहा ही के नाम से मौसूम और तकिया ख़ाकी शाह कहलाता है। (बोस्ताने अख्यार, पेज74)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

مرنے والے کو موت کے وقت پیش آنے والے

دردناک و عبرت ناک معاملات پر مشتمل واقعات کا مجموعہ بنام

موت کے وقت



مصنف

مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان عطاری مدنی فتحپوری

مکتبہ دار السنہ دہلی

(82) शेर अली शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह बारहवीं सदी के कामिल दरवेश हैं। किसी तज्किरे की किताब में आप रहमतुल्लाह अलैह के हालाते ज़िंदगी नज़र से नहीं गुज़रे। मगर ख़िरक़े आदात और करामात की अक्सर रिवायतें ज़बानी लोगों में मशहूर चली आती हैं।

शर्फ़ुन्निसा बेगम बिंते आबिद ख़ां ज़ौजा मुहम्मद अमीन ख़ां ने एक सौ बीगा ज़मीन जो कि मुहम्मद अमीन ख़ां के मकबरे से मिली हुई है तअल्लुक़ा बाग़ सुल्तान पुर शहर आगरा आप रहमतुल्लाह अलैह के उर्स और मजालिस के अख़राजात के वास्ते हिबा की थी, जिसका फ़रमान मुआफ़ी नामा यानी वक़्फ़ नामा **ब तारीख 24 रजब, शाह आलम बादशाह के तख़्त नशीन होने के 48 वें साल ब मुताबिक़ 1211 हिजरी बनाम मुसम्मात ख़ाकी शाह (आप रहमतुल्लाह अलैह की मुरीदा)**

साहिबे बोस्ताने अख़यार फ़रमाते हैं :येह नक़ल हसन बेग साकिन दर्ज़ी पाड़ा के पास मौजूद है और मेरी नज़र से गुज़रा है।

मक़बरा मुहम्मद अमीन ख़ां का तो अब निशान भी बाक़ी नहीं रहा मगर आप रहमतुल्लाह अलैह का मक़बरा यानी **मज़ार मुबारक** मौजूद और लाल किर्ती के क़रीब तकिया ख़ाकी शाह के नाम से मौसूम है। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के लिए वक़्फ़ की हुई ज़मीन छावनी में आ गई जिसके मुआवज़ा यानी बदले में सौ रुपये सालाना के क़रीब मुख़्तलिफ़ लोगों को पैंशन मिलती है। (बोस्ताने अख्यार, पेज90)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो

सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

کامیابی کے 10 اصول

مایوسی کا خاتمہ کرکے کامیابی کی جانب گامزن کرنے والے اصولوں
کا مجموعہ " کامیابی کے 10 اصول" یہ کتاب اپنے موضوع
کے اعتبار سے منفرد ہے کیونکہ اس کتاب میں ان اصولوں کو جمع کیا
گیا ہے جن سے مایوسی کا خاتمہ ہونے کے ساتھ ساتھ آگے بڑھ کر
کچھ کرگزرنے کا جذبہ نو پیدا ہوتا ہے۔

مصنف

مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان عطاری مدنی فتحپوری

मैडिकल स्कूल

(83) अब्दुल्लाह शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के शुहदाए नामदार और मशहूर बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह की अजीबो ग़रीब होश रुबा, ख़ारिक़े आदात करामात मशहूर हैं, अक्सर लोग बयान करते हैं कि आप रहमतुल्लाह अलैह तरीक़त में सिल्सिला नक़्शबंदिया की सिल्क में मुंसलिक और हज़रते शैख़ अबैदुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के ख़ुलफ़ाए आज़म में से थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **सर या उंगली** सेंट जॉन्स कॉलेज और गिरजा सेब बाज़ार की दर्मयानी सड़क के किनारे पर **हुजरे के अंदर दफ़न** है, जहां एक कनाती मस्जिद भी मौजूद है, और **तन यानी जिस्म मुबारक** मैडीकल स्कूल के बोर्डिंग और शिफ़ाख़ाना के दर्मियान में एक बुलंद टीले पर मदफ़ून है। जहां पक्की चहार दीवारी के अंदर एक बुलंद चबूतरे पर मज़ार बना हुआ है जिसके सिरहाने बहुत बड़ा चिराग़दान भी मौजूद है, इहाता के अंदर एक मस्जिद और बहुत सी पुरानी क़ब्रें वाक़ेअ हैं।

17 और 18 ज़िलहिज्जा को आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता है और कुछ अराज़ी ज़मीन भी पुराने ज़माने से माफ़ यानी वक़्फ़ चली आती है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज101)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

मुहल्ला ढाकरान (नॉर्थ ईदगाह कॉलोनी)

(84) आग़ा सफ़दर ख़ां ग़ाज़ी यज़्दी

आप रहमतुल्लाह अलैह आलमगीर बादशाह के ज़माने में यज़्द से जो ईरान का मशहूर शहर है तशरीफ़ लाए थे, इल्म व फ़ज़्ल से मौसूफ़ और बड़े आरिफ़ कामिल बुज़ुर्ग थे, बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह को आगरा की ईदगाह का ख़तीब मुक़र्रर किया था, आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़ानदान में ख़िताबत का ओहदा अब तक क़ायम था, अब अगर्चे ईदगाह कमेटी लोकल एजेंटी के ज़ेरे ऐहतिमाम है। मगर आग़ा मिर्ज़ा को जो कलेक्टरी आगरा में अराइज़ नवेस और आप रहमतुल्लाह अलैह की नस्ल से हैं। कुछ वज़ीफ़ा अब तक मिलता है,

मज़ार मुबारक मुहल्ला धाकरान (नाई की मंडी) के क़रीब नाला के क़रीब वाक़ेअ और लोगों में नवाब अब्दुल शाह ग़ाज़ी के मज़ार के नाम से मौसूम है।

एक बुलंद लंबे चौड़े और पक्के चबूतरे पर मज़ार का गुंबद चार संगीन सतूनों पर क़ाईम है, चबूतरे पर कई नीम के दरख़्त साया किए हुए हैं। यहां का मंज़र निहायत दिलकश और ख़ुशनुमा और मज़ार से फ़ैज़ और बरकत के आसार ज़ाहिर हैं, ख़ुश अक़ीदा लोग पुराने बुख़ार के वास्ते यहां की ईंट उठा कर ले जाते हैं और बुखार सही होने के बाद मलीदा पर आप रहमतुल्लाह अलैह की नियाज़ दिलाते हैं। चबूतरे के आस पास में कई संगीन तावीज़ पड़े हैं। जिनमें पाँच तावीज़ों पर येह नाम लिखे हुए हैं:

(1) आक़ा मुहम्मद बाक़िर वल्द अली रज़ा,1096 हिजरी

(2) आक़ा मुहम्मद ताहिर वल्द आक़ा अली रज़ा

(3) मुहम्मद बाक़िर,1070 हिजरी

(4) असदुल्लाह उर्फ़ मिर्ज़ा दौला, 1093 हिजरी

(5) होरी बिंते सुल्तान मिर्ज़ा

इन नामों में पहले और दूसरे आप रहमतुल्लाह अलैह के भांजे और आलमगीर बादशाह के ज़माने के अमीर लोगों में से थे।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज90.91)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत आग़ा सफ़दर ख़ां ग़ाज़ी यज़्दी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर जाने का रास्ता येह है कि नाई की मंडी से सुंदर पाड़ा, नॉर्थ ईदगाह कॉलोनी की तरफ़ जाएं, इसी कॉलोनी में घरों के बीच में ऊंची जगह पर मज़ार मुबारक मौजूद है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के नीचे एक और मज़ार है लेकिन कुछ पता नहीं चल सका कि वो किन का मज़ार है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के पास आप रहमतुल्लाह अलैह के भाँजों की क़ब्रों के साथ मज़ीद तीन और क़ब्रें थीं लेकिन अब इन क़ब्रों को ख़त्म कर के उस जगह को मस्जिद में शामिल कर लिया गया है सिर्फ आप रहमतुल्लाह अलैह के पायँती एक क़ब्र अब भी मौजूद है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के बग़ल में क़िब्ला की जानिब मस्जिद भी है। आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक गुंबद चार पिलरों पर क़ाइम है और अब पिलरों के दर्मियान की जगह को दीवार से बंद कर दिया गया है।

मज़ार मुबारक के पास ना अब कोई नीम का दरख़्त है और ना मज़ार मुबारक पर तख़्ती लगी है, जिसकी वजह से हमें भी तलाश करने

और आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की पहचान करने में काफ़ी दुशवारी हुई लेकिन अल्लाह पाक के करम से पहचान हो गई।

आज कल लोग आप रहमतुल्लाह अलैह को अब्दुल्लाह ग़ाज़ी के नाम से जानते और पहचानते हैं।

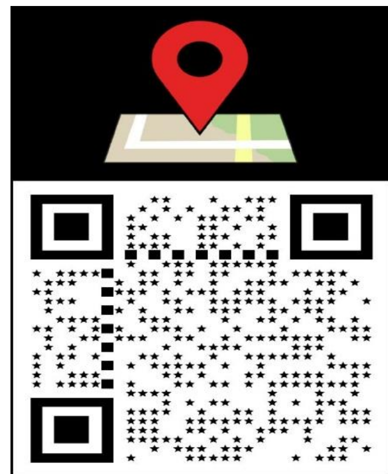
आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स सैय्यिदुना सरकार हज़रत सैय्यिद अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के उर्स के एक हफ़्ते बाद यानी 13,14 सफ़र को होता है। मज़ार मुबारक की देख भाल करने वालों ने बताया कि दस, बारह साल पहले आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स तीन दिन तक काफ़ी शानो शौकत के साथ मनाया जाता था और आशिक़ाने औलिया बड़ी तादाद में शिरकत भी करते थे लेकिन अब चंद लोगों के सिवा कोई नहीं आता और अब सिर्फ 13 सफ़र को अस्र से मग़रिब तक फ़ातिहा ख़्वानी वग़ैरा कर ली जाती है।

ऐ आशिक़ाने औलिया! सुना आपने, येह हालत सिर्फ एक मज़ार की नहीं बल्कि येह हालत आगरा के कई मज़ारों की है कि पहले काफ़ी शानो शौकत के साथ उर्स होता था लेकिन अब नहीं होता और कहीं होता भी है तो मुख़्तसर सा।

सगे अत्तार (अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी) की दिली ख़्वाहिश है कि काश! आगरा में आशिक़ाने औलिया की एक कमेटी बन जाये और उनका काम ही यही हो कि जिस बुज़ुर्ग के उर्स की तारीख़ आए, उस इलाक़े वालों से राबिता कर के उनका उर्स धूम धाम से मनाएं। इसी लिए इस किताब के आख़िर में आगरा के औलियाए किराम के उर्स की तारीख़ महीने के ऐतिबार से लिख दी गई है ताकि हमें मालूम हो सके कि किस महीने में कितने औलियाए किराम का उर्स है।

अल्हम्दु लिल्लाह! मुझे येह कलिमात लिखते हुए काफ़ी फ़ख़र महसूस हो रहा है कि आशिक़ाने औलिया की दीनी तहरीक दावते इस्लामी ने एक शोबा इस काम के लिए **'मज़ाराते औलिया'** के नाम से बना दिया है जिसका काम शरीअत के मुताबिक़ उर्स के तमाम काम अंजाम देना और हाज़िरीन को सहूलियात फ़राहम करना है, लिहाज़ा आप सब मिलकर इस शोबे का साथ दें ताकि आगरा के हर बुज़ुर्ग का उर्स शानो शौकत के साथ किया जा सके। साथ देने के लिए **(8808693818)** पर राबिता करें।

आगा सफ़दर खां गाज़ी यज़्दी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।





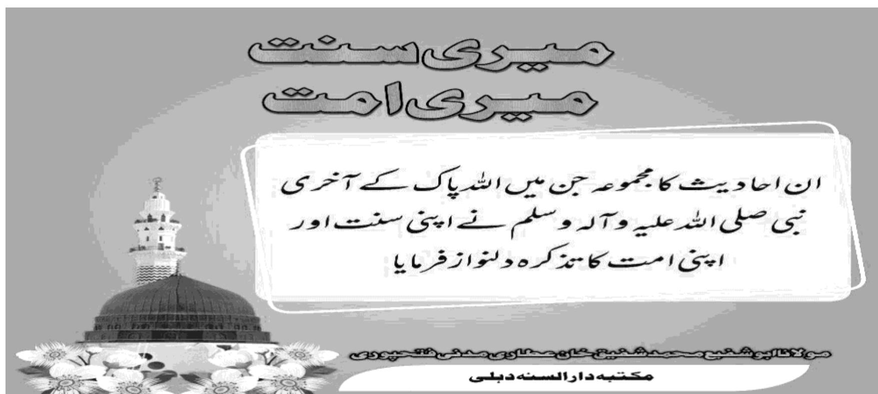
ईदगाह

(85) शैख़ मुहम्मद मारूफ़ क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह सादात सहीहुन्नसब और अकबराबाद के मशहूर बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह की करामात और ख़िरक़े आदात की अक्सर रिवायतें अब तक मशहूर हैं, किसी तारीख़ या तज़्किरा में आप रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक्रे ख़ैर नज़र से नहीं गुज़रा मगर आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** ज़ियारत गाह ख़ासो आम है जो ईदगाह के इहाता से मिला हुआ गोशए जुनूबो मग़रिब में एक मुख़्तसर चार दीवारी के अंदर वाक़ेअ है, नीम के 3 दरख़्त मज़ार पर साया किए हुए हैं, रबीउस्सानी के महीना में उर्स होता है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज202.203)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



क़ब्रिस्तान ईदगाह

(86) मौलवी अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह मौलवी शैख़ अब्दुर्रहमान अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, जो निहायत नेक और बा बरकत बुज़ुर्ग थे, आप रहमतुल्लाह अलैह बड़े आबिद व ज़ाहिद, साहिबे तक़्वा, कनाअत करने वाले और ख़ामोशी पसंद बुज़ुर्ग थे, फ़ारसी के उलूम और इंशा पर्दाज़ी में आप रहमतुल्लाह अलैह यकता ए ज़माना थे, सुख़न गोई में भी ख़ास मलिका हासिल था, तालिब तख़ल्लुस और कलाम निहायत पसंदीदा होता था, उर्दू में आप रहमतुल्लाह अलैह का ग़ैर मत्बूआ दीवान मौजूद है। दीवान क्या है हक़ीक़तो मारिफ़त के बेश बहा मोतीयों का ख़ज़ाना है होश संभालने से अंजामे ज़िंदगी यानी आखिरी उम्र तक आप रहमतुल्लाह अलैह का पाए सुलूक शरीअत की शाह राह के बाहर एक क़दम भी नहीं चला। तमाम उम्र दर्सो तदरीस का फ़ैज़ आप रहमतुल्लाह अलैह से जारी रहा और इसी कस्बे हलाल से अपनी और अपने मुताअल्लिक़ीन की गुज़र बसर करते रहे।

पहले दस बरस तक आप रहमतुल्लाह अलैह का मकतब मुहल्ला शहज़ादी मंडी में जारी रहा। इस के बाद अख़ीर वक़्त तक आप रहमतुल्लाह अलैह अपने मकान वाक़ेअ नौलखा छावनी में दर्स देते रहे। आप रहमतुल्लाह अलैह का तरीक़ए तालीम इस किस्म का था कि ज़हीन तालिब इल्म तीन बरस के अर्से में फ़ारसी की तमाम दर्सी किताबें ख़त्म कर लेता था, दर्स के इलावा आप रहमतुल्लाह अलैह का तमाम वक़्त इबादतो रियाज़त में सर्फ होता था।

तिब्ब में भी आप रहमतुल्लाह अलैह को महारत हासिल थी, ख़ालिसन लिल्लाह मरीज़ों का ईलाज करते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह की दुआ और दवा से सैकड़ों मरीज़ सेहतयाब हुए। जुमा की नमाज़ के वास्ते आप रहमतुल्लाह अलैह हमेशा अव्वल वक़्त तशरीफ़ लाया करते थे, पहली सफ़ में एक जगह मख़सूस कर ली थी हमेशा उसी जगह नमाज़ो वज़ाइफ़ में मसरूफ़ रहते थे। नूरानी पेशानी पर मक़बूलियत के आसार नुमायां यानी ज़ाहिर थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह अक्सर आरिज़ा फ़तक़ में मुब्तला रहते थे। उसी आरिज़ा में रात **5 जुमादस्सानी 1328** हिजरी ब मुताबिक़ **13 जुलाई 1910** ईस्वी को दारुस्सुरूर को रवाना हो गए यानी वफ़ात फरमा गये और क़ब्रिस्तान ईदगाह में (महाज़ दरवाज़ा जुनूबी) अपने वालिद बुज़ुर्गवार के पहलू में आराम फरमा हैं यानी **मज़ार मुबारक** मौजूद है।

लड़कियों के इलावा अब्दुल हफ़ीज़ नाम का एक लड़का यादगार छोड़ा है। (बोस्ताने अख्यार, पेज101.103)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

आबादी कस्साबान मुहल्ला सुल्तानपुरा

(87) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम मालूम नहीं हो सका। मगर आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** पक्की सड़क के किनारे मुत्तसिल आबादी कस्साबान मुहल्ला सुल्तानपुरा में वाक़ेअ है, जिस से क़ुर्बो जवार के लोगों को बेहद अक़ीदत है, पहले मज़ार पर आलीशान गुंबद बना हुआ था, मिन जानिबे नुज़ूल पुराना होने की वजह से गिरा दिया गया और मज़ार के बजाये संगीन चबूतरे और कटहरा बना दिया गया है। (बोस्ताने अख्यार, पेज103)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

रसूलपुर

(88) अब्दुल्लाह

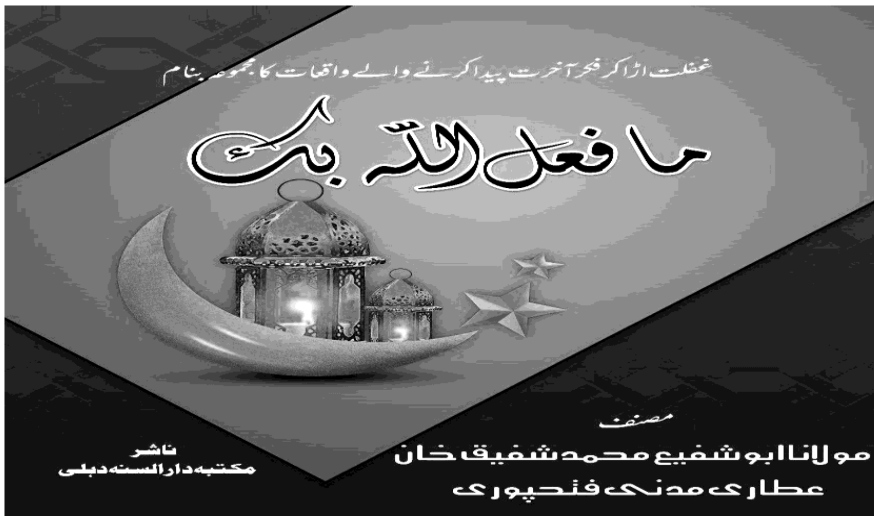
आप रहमतुल्लाह अलैह के असली नाम का कुछ पता नहीं चल सका। आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़िरक़े आदात की गर्मागर्मी का हाल कसरत से लोग बयान करते हैं।

मज़ार मुबारक अंदर इहातए रेलवे मुत्तसिल आगरा कंटोमेंट आबादी की तरफ़ रसूलपुर वाक़ेअ और शाने जलाली रखता है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज104)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



रुई मंडी

(89) हाफ़िज़ अब्दुल्लाह नक़्शबंदी मुजद्दिदी

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के हम अस्र यानी ज़माने के हैं और तेरहवीं सदी के नामवर मशाईख़ीने अकबराबाद से थे, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुहल्ला रुई मंडी की मस्जिद के इहाते में वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज108.109)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

احادیث کی مشہور و معروف کتاب جس میں مذہب
احناف کے مسائل کو دلائل سے مزین کیا گیا ہے
آپ اس کتاب میں ملاحظہ فرمائیں گے :
مصنف کا تعارف
شارح کا تعارف
متن مع اعراب
متن کا سلیس اردو ترجمہ
اختلاف فقہائے کرام مع دلائل
ترجیحات مذہب احناف

عرفان الآثار
شرح
معانی الآثار
اردو شرح

شارح
مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان عطاری مدنی فتحپوری

सराय ख़्वाजा (खेड़ा गढ़)

(90) शैख़ फ़तह मुहम्मद

आप रहमतुल्लाह अलैह के ज़माना या तारीख़ी हालात का पता नहीं चला, **मज़ार मुबारक** मुत्तसिल आबादी सराय ख़्वाजा कच्ची सड़क के के किनारे खेड़ा गढ़ ज़ियारत गाह है। (बोस्ताने अख्यार, पेज132)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



कब्रिस्तान दीवानख़ाना

(91) हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन रज़वी क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद सदरुद्दीन इब्ने सैय्यिद अमजद वल्द सैय्यिद हाफ़िज़ इनायतुल्लाह मुल्तानी के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के आबाओ अज्दाद मुल्तान में सुकूनत पज़ीर और सब सोलहाए उम्मत में से थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के तीसरे दादा हाफ़िज़ इनायतुल्लाह जहांगीर बादशाह के ज़माने में अपने बाल बच्चों के साथ आगरा में रौनक अफ़रोज़ हो कर आबाद हुए, उस वक़्त से माहवार वज़ीफ़ा दरबारे शाही से मुक़र्रर हुआ जो आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद सैय्यिद सदरुद्दीन की हयात तक बराबर मिलता रहा। जब आप रहमतुल्लाह अलैह का ज़माना आया तो तसदीक़ के वास्ते साहिबे कलैक्टर ज़िला के रूबरू जाना लाज़िमी हुआ। आप रहमतुल्लाह अलैह ने बावजूद लोगों के बेहद इसरार के इस अमर को मंज़ूर ना फ़रमाया और रज़्ज़ाक़े हक़ीक़ी की रोज़ी पर क़नाअत करते हुए उस वज़ीफ़े पर लात मार दिया।

बचपन ही से विलायत की निशानी आप रहमतुल्लाह अलैह की पेशानी पर ज़ाहिर थी, चुनांचे तमीज़ की उम्र को पहुंच कर बहुत जल्द आप रहमतुल्लाह अलैह ने उलूमो फ़नून ख़ुसूसन हिक्मत में कमाल हासिल कर लिया और ख़ुदा शनासी के शौक़ में अपने ज़माने के बुज़ुर्गाने दीन की ख़िदमत में हाज़िर रहने लगे। सबसे पहले आप रहमतुल्लाह अलैह को शैख़ मुहम्मद चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत से फ़ैज़ हासिल हुआ और इन्ही की बदौलत तरीक़त शनास सालिकों के हालात से पूरी वाक़िफ़ीयत पैदा कर के हुक्म के मुताबिक सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हुए और आप रहमतुल्लाह अलैह के अन्फ़ास और तवज्जोह की

बरकत से बहुत जल्द माअनवी अज़मत हासिल करके ख़िलाफ़तो दामादी के शर्फ़ से मुशर्रफ़ हुए यानी सैय्यिद अमजद अली शाह क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी बेटी का निकाह आप रहमतुल्लाह अलैह से कर दिया।

आप रहमतुल्लाह अलैह में ख़ुदा शनासाँ बा कमाल के तमाम पसंदीदा अफ़आल मौजूद थे। साहिबे अन्वारुल आरिफ़ीन का बयान है कि मैं दो मर्तबा आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैह के अख्लाक़े हमीदा और अक़्वाल संजीदा ना काबिले बयान हैं, अगर किसी से इत्तिफ़ाक़ीया या जानबूझ कर कोई ख़ता आप रहमतुल्लाह अलैह के हक़ में सरज़द हो जाती है तो आप रहमतुल्लाह अलैह उस के इंतिक़ाम में उस को राहत पहुंचाने की तमाम तर कोशिश फ़रमाते हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह अपने आरामो आसाईश पर दोस्तों और मुख्लिसों की राहत को तर्जीह देते हैं, हर शख़्स की ताज़ीम के वास्ते उठते हैं, उलमा, फ़ुक़रा के दोस्त और उनकी ताज़ीम व तकरीम में कोई कमी नहीं उठा रखते। दीवानख़ाना के दरवाज़ा तक उनका इस्तिक़बाल फरमा कर अपने ख़ास मस्नद को उन के वास्ते छोड़ देते हैं, इसी तरह रुख़स्त के वक़्त दरवाज़े तक साथ जाते हैं।

अख़ीर उम्र में मसंदो तकिया तर्क कर के दीवानख़ाना में रुई का फ़र्श बिछवा दिया था सब के साथ उसी पर बैठते थे, चुनांचे जब मैं (यानी सईद अहमद मरहरवी) दोबारा मुरादाबाद से अकबराबाद गया और आप रहमतुल्लाह अलैह की मुलाज़िमत में हाज़िर हुआ तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया: कि ख़ल्क़े ख़ुदा को फ़र्श पर बैठा हुआ देख कर मुझे मस्नद पर तकिया लगा कर बैठने में बहुत शरम मालूम होती थी लिहाज़ा मैंने मस्नदो तकिया तर्क कर दिया है।

रोज़ाना अक्सर मर्दो औरतें हाज़िरे ख़िदमत हो कर ख़ानदाने क़ादरिया में आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद होते थें, ख़ुसूसन माहे रबीउस्सानी में लोग बहुत कसरत से मुरीद होते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के औक़ात निहायत मुंज़बित थे, नमाज़े तहज्जुद से सुब्ह की नमाज़ तक आप रहमतुल्लाह अलैह अल्लाहपाक के जिक्र में मशग़ूल रहते फिर फ़ज्र की नमाज़ अदा कर के दुरूदो वज़ाइफ़ का विर्द फ़रमाते हैं, फिर नमाज़े इशराक़ से फ़ारिग़ हो कर दोस्तों, हम नशीनों से हमसुहबत हो कर बातचीत करते हैं, दोपहर के क़रीब खाना तनावुल फ़रमाते और अक्सर मुख्लिसाने ख़ास से मिलते जुलते हैं। ज़वाल के बाद नमाज़े ज़ुहर अव्वल वक़्त में पढ़ कर इस्तिराहत यानी कुछ आराम फ़रमाते हैं, फिर बेदार हो कर वुज़ू के बाद आम मजलिस का वक़्त होता है और लोग ख़िदमते बा बरकत में बारयाब होते हैं, इस के बाद नमाज़े अस्र जमाअत के साथ अदा फ़रमाते हैं, बाद नमाज़ मग़रिब वरज़िश वग़ैरा से फ़ुर्सत पा कर आप रहमतुल्लाह अलैह खाना खाने के वास्ते घर में जाते हैं थोड़ी देर बाद वापिस आकर मुरीदों और मोअतक़िदों को इल्मे बातिन की तालीम व तल्क़ीन फ़रमा कर और नमाज़े इशा बा जमाअत अदा कर के आराम फ़रमाते हैं।

अजीब तसख़ीर और तसर्रुफ़ आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात में है। हर अमीरो ग़रीब जो दीगर शहरों से आगरा में आते हैं आप रहमतुल्लाह अलैह की मजलिस में ज़रूर हाज़िर होते हैं, राक़िम (सईद अहमद मरहरवी) ने दो साल के क़रीब कभी इन औक़ात में ख़लल नहीं देखा। यहां तक मशहूर है कि जिस दिन आप रहमतुल्लाह अलैह के जवान, ख़ुश रु, लाइक़ो फ़ाइक और अहले इल्म साहिबज़ादा सैय्यिद शेर अली ने इंतिक़ाल फ़रमाया उस दिन भी आप रहमतुल्लाह अलैह के मामूलात में कुछ फ़र्क़ नहीं आया था और आप

रहमतुल्लाह अलैह ने क़ज़ा व रिज़ाए इलाही पर साबिरो शाकिर रह कर कुछ जज़ा फ़ज़ा नहीं फ़रमाया था।

बहादुर शाह ज़फ़र को आप रहमतुल्लाह अलैह से ख़ास अक़ीदत थी। कई मर्तबा बहुत इसरार से आप रहमतुल्लाह अलैह को दिल्ली में बुलाया मगर आप रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ़ नहीं ले गए। एक मर्तबा जबकि नवाब ऐहतिशामुद्दौला अमीनुर्रहमान ख़ान के इसरार से जो आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदाने जान निसार से थे आप रहमतुल्लाह अलैह दिल्ली तशरीफ़ ले गए थे, हर चंद बादशाह ने कोशिश की कि आप रहमतुल्लाह अलैह हाज़िरे दरबार हो कर मुलाक़ात फ़रमाएं मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ने क़बूल नहीं फ़रमाया, आख़िरे कार एक दिन जबकि आप रहमतुल्लाह अलैह हज़रत क़ुतुबुल अकताब क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की ज़ियारत के वास्ते गए तो बहादुर शाह ज़फ़र ने वहीं हाज़िरे ख़िदमत हो कर नज़र पेश की। आप रहमतुल्लाह अलैह ने नज़र तो मंज़ूर नहीं फ़रमाई सिर्फ़ बादशाह का दीवान ले लिया।

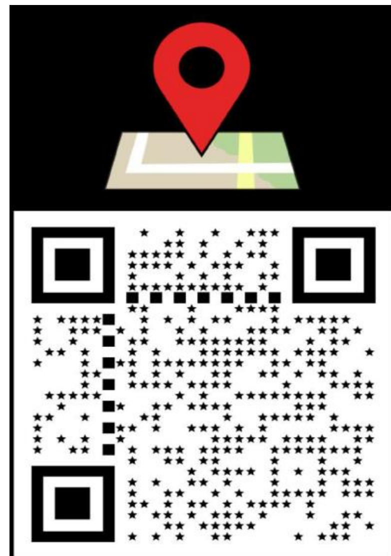
आप रहमतुल्लाह अलैह की करामात के बयान की इस मुख़्तसर किताब में गुंजाइश नहीं। रिसाला **"ख़वारिक़े आदात"** में जो हकीम सैय्यिद इरफ़ान अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के कुतुब ख़ाना में मौजूद है आप रहमतुल्लाह अलैह की एक सौ चार करामतों का मुफ़स्सल हाल कलमबंद है, जिसे शौक़ हो मुलाहज़ा कर सकता है।

23 सफ़र 1207 हिजरी को जुमा के दिन आप रहमतुल्लाह अलैह ने इस दारे ना पाएदार से कूच फ़रमाया और बहिश्त नशीनों के हम नशीन हुए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया। **मज़ार मुबारक** मुत्तसिल शिफ़ाख़ाना दीवानख़ाना के इहाते में ज़ियारत गाह ख़ासो आम है, लौहे मज़ार पर येह तारीख़ लिखी हुई है:

मुर्शिदे आफ़ाक़ नूरुद्दीन हबीबे मुस्तफ़ा
सर्वे बाग़े मुर्तज़ा मक़बूल रब्बुल आलमीं
सैय्यिद आली नसब ज़ीनए अन्वारे हक़
आलम वाला हस्बे गंजीना इल्मुल यक़ीं

आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे हकीम महर अली रहमतुल्लाह अलैह के हालात इस किताब में मौजूद हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज231.235)

कब्रिस्तान दीवान खाना में मौजूद औलियाए किराम की मज़ारात के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



(92) हकीम सैय्यिद महर अली रिज़वी क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह हकीम नूरुद्दीन अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे, मुरीद ख़लीफ़ा और सज्जादा नशीन थे, उलूमो फ़नून के जामेअ, पाकीज़ा अख्लाक़ सितूदा सिफ़ात और ज़ाहिदाना अफ़आल आप रहमतुल्लाह अलैह में मौजूद थे।

चौदहवीं सदी में आप रहमतुल्लाह अलैह ही की ज़ात बा बरकात से आगरा में ख़ुदा शनासी की अंजुमन को रौनक और यूनानी हिक्मत को अज़मत हासिल थी, बड़े शब बेदार, आबिदो ज़ाहिद, आजिज़ नवाज़, बे यारों के यार, कमज़ोरों के क़ुव्वते बाज़ू और सख़ी बुज़ुर्ग थे।

अपने वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह की सुन्नत पर पूरे पाबंद और उनकी हयात ही में सनदे इजाज़त और ख़िलअते ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ हो गए थे, आप रहमतुल्लाह अलैह की नज़र में कीमियाई असर और बात में क़बूलियत की तासीर थी सैकड़ों ना मुराद आप रहमतुल्लाह अलैह की दुआ से अपनी मुराद को पहुंचे। बहुत से लोगों ने आप रहमतुल्लाह अलैह के हिदायतो इरशाद से कमालात और हालात का मज़ा पाया, हज़ारों लाखों मायूसुल अमराज़ मरीज़ आप रहमतुल्लाह अलैह की कोड़ियों की दवा और दुआ से सेहतयाब हुए।

राक़िमे बोस्तान (अल्लामा सईद अहमद मरहरवी) को आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ियारत और ईलाज का फख्र बारहा हासिल हुआ था, अमीर ग़रीब, अदना आला सबसे अख्लाक़े बुज़ुर्गाना से पेश आते और एक नज़र से देखते और सब के वास्ते मामूली क़ीमत का नुस्ख़ा लिखते थे, अफ़सोस कि इस मुख़्तसर किताब में आप रहमतुल्लाह अलैह की तफ़सीली हालात और करामात कलमबंद करने की गुंजाइश नहीं जिसे शौक़ हो वो **मस्नवी शीराज़ा मारिफ़त** मत्बूआ मतबए मुस्तफ़ाई आगरा को

मुलाहज़ा करे जिसमें आप रहमतुल्लाह अलैह के एक मुरीद मुहम्मद अब्दुल्लाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह की करामात का हाल लिखा है।

87 साल की उम्र में शुरू रमज़ानुल मुबारक 1313 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह अलील हुए चूँकि पैमानए हयात लबरेज़ हो चुका था लिहाज़ा मर्ज़ बराबर बढ़ता गया, मगर बावजूद ज़ोफ़ो नक़ाहत के इबादतो रियाज़त में ता दमे अख़ीर किसी किस्म का फ़र्क़ ना आया चुनांचे 22 रमज़ान इतवार का दिन गुज़रने पर 8 बजे रात को नमाज़ो वज़ाइफ़ से फ़ारिग़ हो कर अपने बेटे और जांनशीन सैय्यिद क़ुदरत अली रहमतुल्लाह अलैह को अपने सामने बुलवाया और उनके आने पर एक नज़र उन पर डाली, थोड़ी देर बाद **'अल्लाहु हुवा'** कह कर विसाल फरमा गए।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** क़ब्रिस्तान दीवानख़ाना में वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के पहलू में वाक़ेअ है और मज़ार मुबारक की तख़्ती पर येह इबारत लिखी हुई है

सैय्यिद महर अली वाला हसब आली नसब
हामिए दीने मुहम्मद सालिके राहे ख़ुदा
बूद ज़ाते पाक हज़रत बिल यक़ीन अंदर जहां
चूँ मसीह रूह परवर ख़िज़र आसा रहनुमा
बिस्त दोम अज़ माहे सौम बादे मग़रिब अज़ जहां
शुद बह गुल्ज़ारे इरम आँ सर्वे बागे मुस्तफ़ा
ईं करामत बीं कि बाद अज़ मर्ग ता देर लब
मान्द दर जुंबिश ब ज़िकरे ला इलाह बरमला
मिसरए तारीख़ रेहलत फ़र्रुख नाशाद गुफ़्त
आफ़ताबे अहले ईक़ान माहताबे अस्फ़िया

आप रहमतुल्लाह अलैह के तीन शहज़ादे हैं:

(1) हकीम सैय्यिद क़ुदरत अली

(2) हकीम सैय्यिद सख़ावत अली

(3) हकीम सैय्यिद सिकन्दर अली

आप रहमतुल्लाह अलैह के सात ख़लीफ़ा हैं:

(1) सैय्यिद क़ुदरत अली (2) सैय्यिद शेर अली

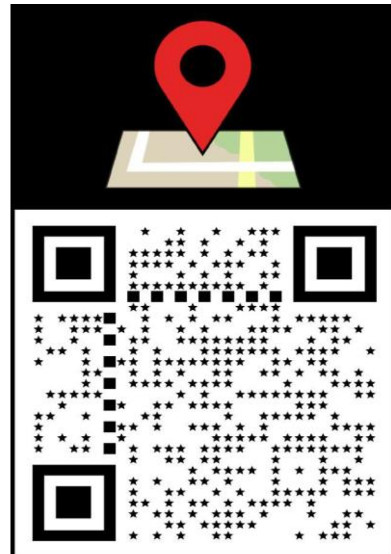
(3) सैय्यिद मुबारक अली (4) सैय्यिद क़ुर्बान हुसैन

(5) सैय्यिद हशमत अली (6) सैय्यिद इसरार अली

(7) मीर विलायत अली

आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदाने जांनिसार और मोअतक़िदीन की तादाद सैकड़ों से मुतजाविज़ है। आप रहमतुल्लाह अलैह के बेटे और जानशीन हज़रत हकीम सैय्यिद क़ुदरत अली कादरी रहमतुल्लाह अलैह की सीरत इस किताब में मौजूद है। (बोस्ताने अख्यार, पेज216.218)

कब्रिस्तान दीवान खाना में मौजूद औलियाए किराम की मज़ारात के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



(93) हकीम सैय्यिद क़ुदरत अली क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह हकीम सैय्यिद महर अली इब्ने हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे, मुरीद और पहले ख़लीफ़ा और सज्जादा नशीन थे। ज़ाहिरी और बातिनी अमराज़ के तबीब हाज़िक़, बड़े साहिबे निस्बत और आरिफ़े कामिल बुज़ुर्ग थे, मकबूलाने इलाही के बहुत से अफ़आलो औसाफ़ आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात में जमा थे। आग़ाज़ सुलूक से दमे आखिर तक सूरहए हिजर की आयत नंबर 99 पर कारबंद रह कर अल्लाह पाक की इबादत में मसरूफ़ रहे, जिस का तर्जमा येह है :

तर्जमा: और अपने रब की इबादत में लगे रहो यहां तक कि तुम को अम्रे यक़ीनी यानी मौत आ जाए।

मंगल के दिन 21 रबीउस्सानी 1318 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपने बेटों और अज़ीज़ों को मकान ही पर हाज़िर रहने का हुक्म दिया और मग़रिब की नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर दुरूद शरीफ़ और कलिमए तय्यिबा का विर्द करते करते क़सरे जिनाँ का रास्ता लिया यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

मज़ार मुबारक सेहन दीवानख़ाना में आप रहमतुल्लाह अलैह के दादा रहमतुल्लाह अलैह और वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के क़रीब वाक़ेअ है।

(1)सैय्यिद फ़हमीद अली साहिब

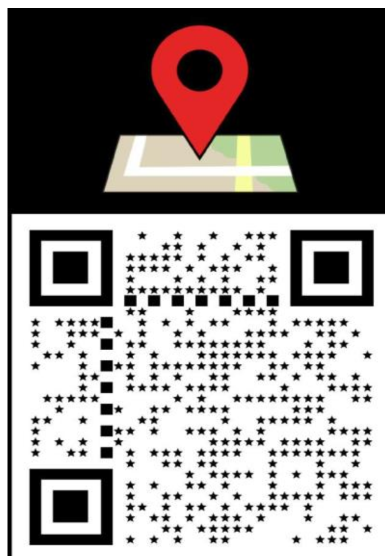
(2)हकीम सैय्यिद इसरार अली साहिब

(3)हकीम सैय्यिद इरफ़ान अली साहिब

तीन साहिबज़ादे आप रहमतुल्लाह अलैह की यादगार हैं, हकीम सैय्यिद इसरार अली निहायत हलीमो करीम और ख़लीक़ हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह अपने दादा हकीम महर अली रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा और निहायत

गुमनामी पसंद बा बरकत बुज़ुर्ग हैं, हकीम सैय्यिद इरफ़ान अली रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक्रे ख़ैर इसी किताब में मौजूद है।(बोस्ताने अख्यार, पेज141)

कब्रिस्तान दीवान खाना में मौजूद औलियाए किराम की मज़ारात के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।





(94) हकीम सैय्यिद इरफ़ान अली शाह क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह हकीम सैय्यिद क़ुदरत अली इब्ने हकीम सैय्यिद महर अली क़ादरी के फ़र्ज़ंद यानी बेटे और ख़ानकाहे नूरी (हकीम नूरुद्दीन) के सज्जादा नशीन हैं।

आप बहुत नेक हैं, जमाले ज़ाहिरी के साथ दरवेशाना सूरत, सूफियाना लिबास, सादे दिल और नूरानी बातिन रखते हैं, पेशानी से मक़बूलियत के आसार नुमायां और ऐन जवानी में मक़बूलाने इलाही के निशान मौजूद हैं, ग़रज़ कि आप रहमतुल्लाह अलैह का जमालो हाल सलाहिय्यत व परहेज़गारी से आरास्ता और आपका सीना इरफ़ाने इलाही से मुनव्वरो पैरास्ता है। आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपने दादा बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह की फ़ैज़े सोहबत से रुहानी परवरिश हासिल की थी।

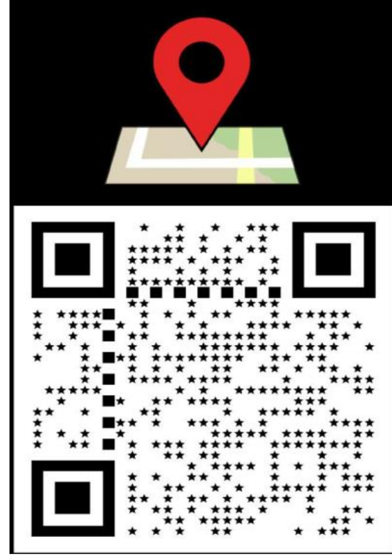
22 बरस की उम्र थी कि दादा बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह का साया सर से उठ गया उस के बाद वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह से तकमीले ज़ाहिरी कर के सनदे ख़िलाफ़त पाई।

28 बरस की उम्र में 21 रबीउस्सानी 1318 हिजरी को वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह के विसाल के बाद सज्जादा नशीन हुए। आगरा की हर मजालिसे उर्स में आप रहमतुल्लाह अलैह का फ़ैज़ान शुरकाए मजालिस पर निसार होता है और पुराने बुज़ुर्गों की यादगार आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात बा बरकात से जारी है। अकसर पुराने मशाईख़ीन के हालात और मज़ारात से आप रहमतुल्लाह अलैह को वाक़फ़ीयत हासिल है। अगरचे आप रहमतुल्लाह अलैह का अख्लाक़ आम है मगर राक़िमे बोसतान पर ख़ास नज़रे इनायत है, चुनांचे बोस्ताने अख्यार की नख़लबंदी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने बहुत मदद फ़रमाई है और बहुत से पौदे आप रहमतुल्लाह अलैह ही ने अपने गुल्ज़ारे याददाश्त से बोस्ताने अख्यार के वास्ते मरहमत फरमा कर राक़िमे बोस्तान

को मुशर्रफ़ व मशकूर फ़रमाया है और आप रहमतुल्लाह अलैह ही की तवज्जोह, दुआ और अन्फ़ास की तासीर की बरकात से येह गुलिस्तान पुर बहार इस क़द्र जल्द सरसब्ज़ो शादाब हुआ है, अल्लाह पाक आप रहमतुल्लाह अलैह का फ़ैज़ मुद्दत तक जारी करे। आमीन

(बोस्ताने अख्यार, पेज122.123)

कब्रिस्तान दीवान खाना में मौजूद औलियाए किराम की मज़ारात के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



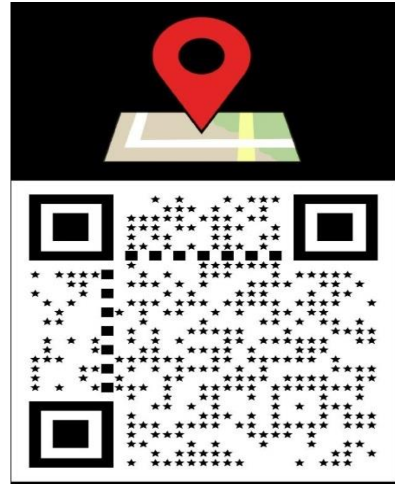


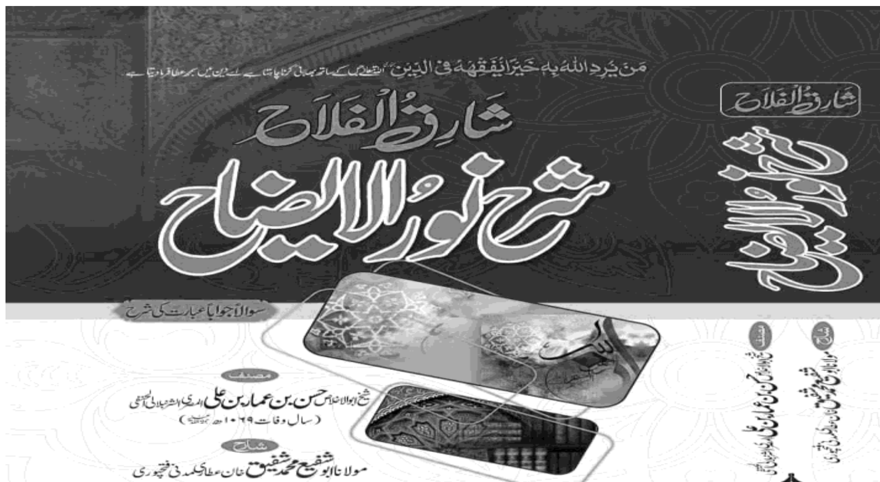
मुहल्ला टीला मुन्ना लाल

(95) लोटन शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह शुहदाए अकबराबाद के ज़ुमरे में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** पक्की सड़क के किनारे मुहल्ला टीला मुन्ना लाल में वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज145)

लोटन शहीद रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।





नई बस्ती

(96) मौलाना शाह मुहम्मद अफ़ज़ल बुख़ारी चिश्ती साबरी

आप रहमतुल्लाह अलैह फख्रे अकबराबाद, मशाईख़ीने सल्फ़ का नमूना, तस्लीम, तवक्कुल, तक़्वा व तहारत और ज़ोहदो रियाज़त की फ़ज़ीलतों के मालिक हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के अफ़आल से शरीअत ज़ाहिर और असरार में तरीक़त का ख़ज़ाना पोशीदा है, आप रहमतुल्लाह अलैह के औसाफ़े हमीदा और सिफ़ाते पसंदीदा तारीफ़ के कालिब में नहीं समा सकते।

राक़िमे बोस्तान (अल्लामा सईद अहमद मरहरवी) अपने मुहिब शैख अज़ीज़ुद्दीन साहिब पीरज़ादा फ़तेहपुर सीकरी का ममनूनो मशकूर है जिनकी बदौलत बोसताने अख्यार के औराक को आपके ज़िक्रे ख़ैर का फख्र हासिल हुआ, अक्सर मोअतक़िदीन ख़ास और मुरीदाने जां निसार ने हज़रत के हालात कलमबंद करना चाहे लेकिन बावजूद इसरार आप रहमतुल्लाह अलैह ने किसी को अपने पुराने हालात नहीं सुनाए और कभी किसी को कलमबंद करने यानी लिखने की इजाज़त भी नहीं दी।चूँकि मुझे ज़ाती तौर से इल्म था कि मेरे दोस्त अज़ीज़ जहां आप रहमतुल्लाह अलैह को सब मुरीदों से ज़्यादा अज़ीज़ हैं लिहाज़ा मैंने हुज़ूर के हालात के वास्ते उनसे इसरार किया और उन्होंने निहायत आजिज़ी और इन्किसारी से आपकी ख़िदमत बा बरकत में इसरार किया, इस पर आप रहमतुल्लाह अलैह ने उनकी ख़ातिर और इसरार से मजबूर हो कर कुछ हालात इरशाद फ़रमाए जिनकी मदद से बोसताने अख्यार को गुले अफ़शाँ और पुर बहार करता हूँ।

आप रहमतुल्लाह अलैह मुहम्मद अकरम उर्फ़ सूफ़ी के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे और राना ख़ैल पठानों की शाख़ जलाल ज़ी में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह की पैदाइश की जगह मौज़अ मबनाआबाद है जो कि गज़नी अफ़ग़ानिस्तान के पास है, तमीज़ की उम्र को पहुंच कर इब्तिदाई तालीम आपने गज़नी में पाई और 14 या 15 बरस की उम्र में हज़रत मियां ग़ुलाम सिद्दीक़ आग़ा ग़ज़नवी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हो कर ख़ुदा शनासी की आँखें रौशन कीं, और हज़रत मियां ग़ुलाम सिद्दीक़ आग़ा ग़ज़नवी रहमतुल्लाह अलैह चार वास्ते से हज़रते शैख़ अहमद सरहिन्दी, मुजद्दिद अल्फ़े सानी के ख़लीफ़ा हैं, । आख़िरे कार आप रहमतुल्लाह अलैह ने सय्याही पर कमर बांध कर पुराने बुज़ुर्गाने दीन की सुन्नत अदा फ़रमाई और गज़नी से रवाना हो कर दारुल उलूम बुख़ारा शरीफ़ में अपने चचाज़ाद भाई के यहां क़ियाम फ़रमाया और बुख़ारा के बुज़ुर्गाने दीन के अन्फ़ासो तवज्जोह की बरकत से फ़ैज़ो बरकत का ज़ख़ीरा हासिल किया ।

कुछ अर्से के बाद वहां से पैदल रवाना हो कर मुख़्तलिफ़ शहरों और जंगलों का गश्त करते हुए सवाद के रास्ते से हिन्दुस्तान में तशरीफ़ लाए और सबसे पहले रियासत रामपुर में क़ियामो आराम फ़रमाया, उस वक़्त नवाब कलब अली ख़ां ख़ुल्द आशियाँ का ज़माना था और रामपुर उलमा, फुज़ला और मशाईख़ीन बा कमाल का मर्कज़ था, नवाब कलब ख़ां निहायत अक़ीदतो इख्लास से पेश आया और मीर मुजावर अली मदार के ज़रिए से मुलाक़ात फ़रमाई, उस वक़्त आप रहमतुल्लाह अलैह की उम्र 18 बरस की थी, आलमे नौजवानी में पीरी के कमालात से आरास्ता और पेशानी से मक़बूलियत के आसार नुमायां थे ।

उस वक़्त तक आप रहमतुल्लाह अलैह सिल्सिलए आले नक़्शबंदिया में मुंसलिक और सिमाअ से नफ़रत करते थे, जब रामपूर में कियाम के दौरान

आप रहमतुल्लाह अलैह मौलाना शाह जमालुद्दीन निज़ामी ख़लीफ़ए आज़म मौलाना फ़ख़रे जहां रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार फ़ाइज़ुल अन्वार पर चिल्ला कश हुए तो आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़्यालात में हैरत अंगेज़ तब्दीली पैदा हुई और ख्वाजगाने चिश्त अहले बहिश्त से अक़ीदतो इख्लास पैदा हो कर इस सिल्सिले के रहनुमा पीर की तलाश पैदा हुई।

चूँकि रामपूर में ख़लाइक़ यानी लोगों का आना जाना भी ज़्यादा होने लगा था लिहाज़ा आप वहां की सुकूनत तर्क फरमा कर सरहिंद शरीफ़ का रास्ता लिया और हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर हाज़िर हुए, वहीं आप रहमतुल्लाह अलैह से मौलवी रफ़ीउद्दीन साहिब, मौलवी अज़ीज़ुर्रहमान साहिब, हाफ़िज़ अब्दुल हैय्य साहिब से मुलाक़ात हुई, यहां से आप रहमतुल्लाह अलैह का इरादा झंग सियाल चिश्तिया सिल्सिला के एक बुज़ुर्ग की ख़िदमत में जाने का था लेकिन मौलवी रफ़ीउद्दीन साहिब ने हज़रत मुजद्दिद अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के इशारे से आप रहमतुल्लाह अलैह को इस इरादा से बाज़ रखा और अपने साथ इसरार कर के देवबंद ले आए, वहां पहुंच कर ख़ानदाने नक़्शबंदिया का सुलूक तै करा कर सनदे इजाज़त अता फ़रमाई।

देवबंद से रुख़स्त हो कर दोबारा आप रहमतुल्लाह अलैह रामपुर में आए, फिर बरेली जा कर शैख़ निज़ामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की मुलाज़िमत में हाज़िर हो कर फ़ैज़ हासिल किया, वहां से शाहजहाँ पुर, लखनऊ, रुदौली शरीफ़ वग़ैरा बहुत से शहरों और देहातों के शहरी और सहराई बुज़ुर्गों की ख़िदमत से अज़मत हासिल की। रुदौली शरीफ़ के पास एक गांव में एक साहिबे कमाल दरवेश से जिनका नाम दाता शाह रहमतुल्लाह अलैह था मुलाक़ात हुई, आप रहमतुल्लाह अलैह निहायत ज़ईफ़, शरीअत की पैरवी करने वाले और क़ुरआने मजीद के आशिक़े ज़ार थे और रात दिन निहायत

ज़ौक़ो शौक़ से कलामे पाक की तिलावत में महव रहते। शाने जलाली के आसार आप रहमतुल्लाह अलैह के चेहरे पर ताबां थे, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि अल्लाह पाक की मशीय्यत ने तुम्हारा हिस्सा हिन्दुस्तान में नहीं रखा। बैतुल्लाह शरीफ़ जाओ, वहां अपने मक़ासिद में कामयाब होगे।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने ज़ादे राह के मौजूद ना होने का हाल बयान फ़रमाया, इस पर इशारा हुआ कि अल्लाह पाक मुसब्बिबुल असबाब यानी सबब को बनाने वाला है, किसी शहर में तीन चार महीने क़ियाम करो, वहां इंशा अल्लाह ज़ादे राह का इंतिज़ाम हो जाएगा। इस ख़ुशख़बरी से आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ुश दिल हो कर गोरखपुर तशरीफ़ ले गए और चंद रोज़ तक मियां सब्ज़ पोश साहिब की ख़िदमत में रहे, फिर आज़मगढ़, मछली शहर होते हुए इलाहाबाद में आए और शाह मुहम्मदी साहिब रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत से सआदत हासिल की। फिर कानपुर में आकर मौलवी सलामतुल्लाह साहिब और मौलवी आदिल साहिब से मुलाक़ात फ़रमाई, वहां से इटावा होते हुए आगरा में रौनक अफ़रोज़ हुए और सब से पहले जामा मस्जिद में क़ियाम फ़रमाया, चूँकि तक़दीर इलाही ने आप रहमतुल्लाह अलैह के क़ियाम का फख्र आगरा को मर्हमत किया था लिहाज़ा आबो दाना की कशिश ने यहां के क़ियाम का ख़्याल आप रहमतुल्लाह अलैह के दिल में पैदा किया और आप रहमतुल्लाह अलैह ने यहां क़ियाम फरमा कर मौलवी अब्दुल्लाह साहिब मुदर्रिस मदरसा जामा मस्जिद से उलूमे ज़ाहिरी की तकमील शुरू कर दी, जामा मस्जिद से हाजी अल्ताफ़ हुसैन साहिब सौदागर अपने मकान जो कि मुहल्ला नई बस्ती में था आप रहमतुल्लाह अलैह को ले आए। हाजी अल्ताफ़ हुसैन साहिब सिल्सिला नक़्शबंदिया में सैय्यिद क़ुर्बान अली शाह जयपुरी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और निहायत

आबिदो ज़ाहिद और नेक बुज़ुर्ग हैं, उनका बयान है कि मैं उस ज़माने में अलीगढ़ एक काम के वास्ते जाता था सुब्ह के चार बजे का वक़्त था कि वुज़ू के वास्ते जामा मस्जिद में गया, वहां आप रहमतुल्लाह अलैह को ज़िक्रे ख़ैर में मशग़ूल पाया, उसी वक़्त अक़ीदत का बीज दिल की खेती में पड़ गया और एक ख़ासा असर दिल में पैदा हुआ, उस वक़्त रेल गाड़ी आने का वक़्त था लिहाज़ा जल्दी में चला गया, वापस आकर मौलवी सिराजुल इस्लाम रहमतुल्लाह अलैह जो जामा मस्जिद के इमाम थे उनसे आप रहमतुल्लाह अलैह का हाल दरयाफ्त किया और आप रहमतुल्लाह अलैह की मुसाफ़िरत और तालिबे इल्मी का हाल मालूम कर के आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और इसरार कर के आप रहमतुल्लाह अलैह को मकान पर ले आया हस्बे इर्शाद दाता शाह रहमतुल्लाह अलैह मुकम्मल चार महीने आप रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा में क़ियाम फ़रमाया, दाता शाह रहमतुल्लाह अलैह का फ़रमाना गोया तक़दीरे इलाही का नविश्ता था कि इस अरसे में मुसब्बिबुल असबाब यानी अल्लाह पाक ने दस्ते क़ुदरत से ज़ादे राह मुहैय्या कर दिया और आप रहमतुल्लाह अलैह हाजी अल्ताफ़ हुसैन साहिब सौदागर के साथ मक्कए मुअज़्ज़मा को रवाना हुए, वहां पहुंच कर गौहरे मक़्सूद हाथ आया और मुद्दत से जिस बुज़ुर्ग की तलाश में सरगरदा फिरते थे अल्लाह पाक की इनायत ने उस के आस्ताने पर पहुंचा दिया यानी आप रहमतुल्लाह अलैह को क़ुदवतुस्सालिकीन ज़ुबदतुल आरिफ़ीन हज़रत शाह इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह की गुलामी का फख्र हासिल हुआ और आप रहमतुल्लाह अलैह उनके मुरीदों में शामिल हो कर सिल्सिलए चिश्तिया में मुंसलिक हो गए, मुकम्मल दो साल आप रहमतुल्लाह अलैह ने ख़िदमत बा बरकत में हाज़िर रह कर ख़ानदाने चिश्तिया के सुलूक और मदारिज तै

फ़रमाए और खिरक़ए ख़िलाफ़त और सनदे इजाज़त ख़ानदाने क़ादरिया, नक़्शबंदिया, सुहरवर्दिया ख़ुसूसन ख़ानदाने चिश्तिया से मुशर्रफ़ हुए।

हज़रत इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह ने खिरके शरीफ़ और टोपी मुबारक, इमामा शरीफ़ और दीगर तबर्रुकात इनायत फरमा कर आगरा के क़ियाम का हुक्म सादिर फ़रमाया, बैअत होने से पहले आप रहमतुल्लाह अलैह अपने असली नाम मुहम्मद अकबर और ख़िताब बुख़ारी साहिब से मौसूम थे, पीर रौशन ज़मीर ने बैअत के बाद आपका नाम मुहम्मद अफ़ज़ल और मुहम्मद फ़ाज़िल रखा। चुनांचे अब आप रहमतुल्लाह अलैह अपना नाम मुहम्मद अफ़ज़ल तहरीर फ़रमाते हैं लेकिन आम तौर से आप रहमतुल्लाह अलैह बुख़ारी शाह साहिब के नाम से मशहूरो मौसूम हैं।

आख़िरे कार आप रहमतुल्लाह अलैह दो हज अदा फरमा कर आगरा वापस आए और पीर साहिब रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म के मुताबिक़ सबसे पहले दरिया के किनारे एक चिल्ला खींचा। उस ज़माने में गैरों और मुसलमानों की लड़ाई का मशहूर मुक़द्दमा चल रहा था जिसमें बहुत से बेगुनाह मुसलमान क़ैद थे, बज़ाहिर उनके बचने की कोई उम्मीद ना थी, हाजी अल्ताफ़ हुसैन साहिब सौदागर ने जो आप रहमतुल्लाह अलैह के चिल्ला की जगह में आप रहमतुल्लाह अलैह के पास आया जाया करते थे येह हाल आप रहमतुल्लाह अलैह से बयान कर के दुआ की इल्तिजा की। आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया इंशा अल्लाह सब बरी हो जाएंगे। चुनांचे ख़िलाफ़े उम्मीद तमाम मुसलमान बरी हो गए।

चंद रोज़ बाद आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपने वतन जाने का इरादा फ़रमाया मगर हाजी अल्ताफ़ हुसैन साहिब ने निहायत इसरार से आप रहमतुल्लाह अलैह को इस इरादा से बाज़ रखा और आप रहमतुल्लाह अलैह को मुताहिल बना दिया यानी आप रहमतुल्लाह अलैह की शादी करवा दी। आप

रहमतुल्लाह अलैह ख़ानए काअबा के तवाफ़ और नबी अलैहिस्सलाम के रौज़े की ज़ियारत से हर वक़्त बेताब रहते इसी वजह से आप रहमतुल्लाह अलैह पाँच मर्तबा हरमैन शरीफ़ैन के तवाफ़े हज और रौज़ए मुक़द्दसा की ज़ियारत से दोनों जहान की सआदत हासिल कर चुके हैं।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत मख्दूम ताजुल औलिया शैख़ अलाउद्दीन अली अहमद साबिर रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत शाह अब्दुल हक़ रूदौलवी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत शाह अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह, हज़रते शैख़ सलीम चिश्ती फ़तेहपुरी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत शाह मुहिब्बुल्लाह इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह वग़ैरा मशाईख़ीन उज़्ज़ाम के मज़ारात पर आप रहमतुल्लाह अलैह ने अक्सर हाज़िर हो कर चिल्ला कशी फ़रमाई और फुयूज़े बातिनी से माला माल हुए, हज़रत शाह मुहम्मदी अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार एक ग़ैर मुस्लिम के मकान के अंदर था उसे आप रहमतुल्लाह अलैह ने ख़रीद कर दालान वग़ैरा बनवा दिया है।

आसमानी ख़ज़ानों के दरवाज़े आप रहमतुल्लाह अलैह के हाथ पर खुले हुए थे, जिस क़द्र जिस चीज़ की ज़रूरत होती अल्लाह पाक अपने गैब के ख़ज़ाने से पहुंचा देता है, आप रहमतुल्लाह अलैह की दो बीवियां, पाँच साहिब ज़ादियाँ और तीन साहिबज़ादे अल्लाह पाक के फज़्ल से मौजूद हैं। सात आठ ख़ुद्दाम और मोअतक़िदीन हर वक़्त हाज़िर रहते हैं। मेहमानों की आमद रफ़त यानी आने जाने का सिल्सिला बराबर जारी रहता है ग़रज़ कि दो तीन रुपये यौमिया से किसी तरह कम ख़र्च नहीं है, इसके इलावा हफ़्ता दस दिन में मजलिसे मौलूद शरीफ़ या दावत नियाज़ वग़ैरा होती रहती है,

साल में दो मर्तबा हज़रत शाह नूर मुहम्मद झंजानवी (6 शव्वाल से 11 शव्वाल तक) और हज़रत हाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की (12 जुमादस्सानी) के उर्स के दिन आम लंगर जारी रहता है जिसमें अमीर, ग़रीब, रईस, फ़क़ीर हर शख़्स बिला किसी तख़सीस के दावत में शरीक होता है।

आगरा जैसा शहर और ऐसी आम दावत, सिवाए, मर्दाने ख़ुदा के कौन कर सकता है ? हम दुनिया दार लोग एक मर्द मुतावक्किल के ऐसे शाहाना अख़राजात देखकर हैरत में पड़ जाते हैं, कोई कीमिया गर बताता है, कोई कुछ और ख़्याल करता है मगर हक़ीक़त येह है कि अल्लाह पाक जिसको चाहता है बिला हिसाब रिज़्क़ देता है।

बावजूदे कि रोज़ाना अहले ख़ाना, ख़ानक़ाह में रहने वालों और मेहमानों के वास्ते ख़ुसरवाना खाने पकते हैं। हर किस्म की उम्दा से उम्दा चीज़ें आती हैं मगर आप फ़क्र को अपना फख्र समझ कर निहायत सादा और क़लील ग़िज़ा तनावुल फ़रमाते हैं और बड़े बड़े मुजाहिदे और रियाज़तें करते रहते हैं,

नमाज़े मग़रिब के बाद हलक़ा होता है जिसमें इस्मे ज़ात और नफ़ी व इस्बात का ज़िक्रे जहरी होता है जिसका असर मुहल्ला नई बस्ती में ऐसा नुमायां है कि मुहल्ले के बच्चे इस ज़िक्र का खेल खेलते हैं, सिमाअ की तरफ़ अगरचे निहायत मैलान है मगर शरीअत की रिआयत और मशाईख़ीने उज़्ज़ाम की सुन्नत को मलहूज़ रख कर तमाम क़वाइदो ऐहतियात के साथ सुनते हैं। अगरचे आप रहमतुल्लाह अलैह को मुतअद्दद सिल्सिलों मैं बैअत करने की इजाज़त हासिल है मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ानदाने चिश्तिया साबिरिया में लोगों को मुरीद करते हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदों की तादाद सैकड़ों से मुतजाविज़ है और हिन्दुस्तान के दूर

दराज़ शहरों में आप रहमतुल्लाह अलैह का फ़ैज़ जारी है। ग़ालिबन हज़रत हाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की रहमतुल्लाह अलैह के ख़ुलफ़ाए नामवर में अब आप रहमतुल्लाह अलैह ही का दम बाक़ी है। (बोस्ताने अख्यार, पेज161.169)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को काफी तलाश किया मगर हाज़िरी नसीब ना हो सकी, बाद में लोगों से पता चला कि अब मज़ार घर के अंदर है, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(97) मीरन शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने शहीदों में से हैं, **मज़ार मुबारक** मुहल्ला नई बस्ती में मत्बए अकबरी की एक कोठरी के अंदर वाक़ेअ और क़ब्र मुबारक का निशान (यानी ताक़) सड़क के किनारे मत्बए अकबरी की दीवार में बना हुआ है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज218)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

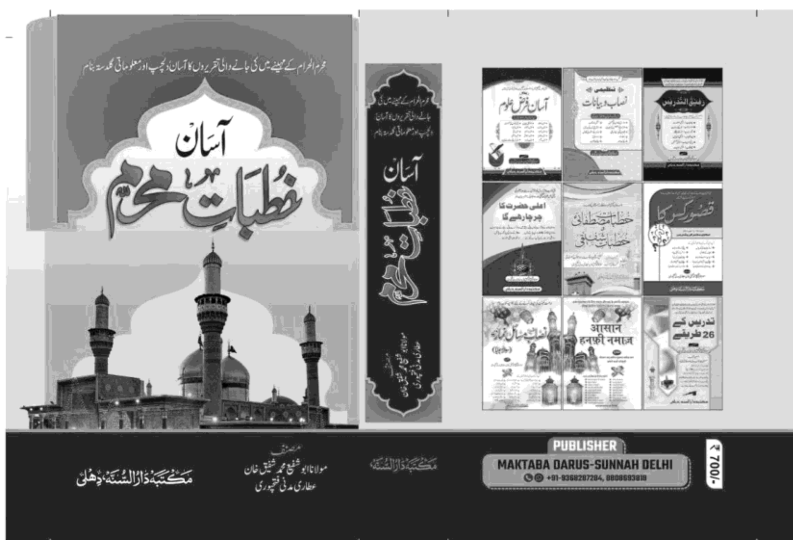
(98) शाह नजफ़

आप रहमतुल्लाह अलैह का असली नाम मालूम नहीं। लोग शाह नजफ़ के नाम से आप रहमतुल्लाह अलैह को मौसूम कर के बुज़ुर्गी और करामात की बहुत सी रिवायतें बयान करते हैं, **मज़ार मुबारक** मुहल्ला नई बस्ती की गली उमर दराज़ ख़ां में वाक़ेअ है, लौहे मज़ार पर नादे अली के नीचे शाह नजफ़ दस्तगीर, तारीख़े वफ़ात 1143 हिजरी लिखा हुआ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज224)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

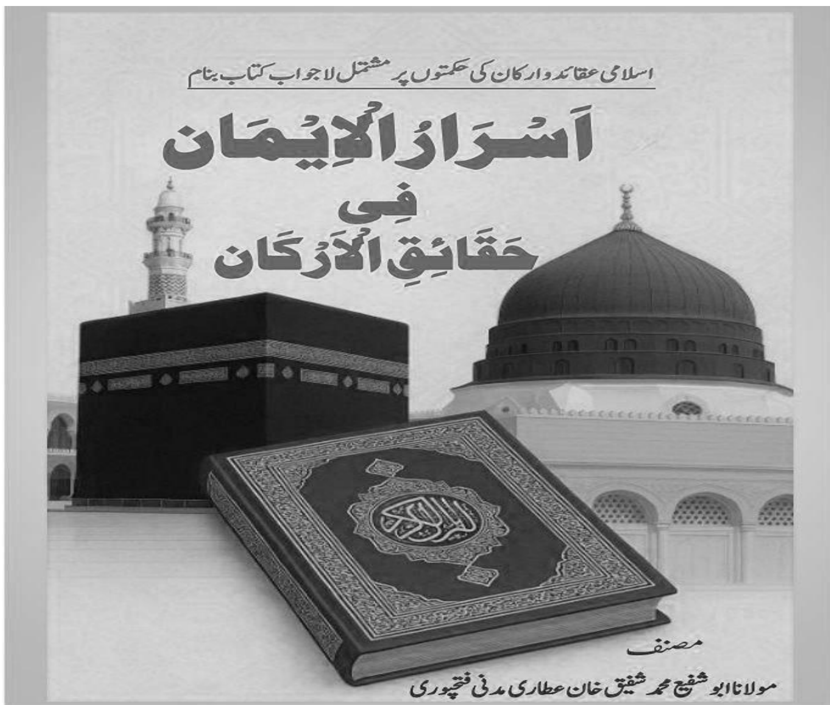


(99) शाह नेअमतुल्लाह चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने बुज़ुर्गों में से हैं, सुल्तान सिकन्दर लोदी और लश्कर शाही के अक्सर सरदार और तमाम सिपाही आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक़िदीन से थे, **मज़ार मुबारक** मुहल्ला नई बस्ती में इहाता नंबर 5205 के अंदर वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज229)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



मुहल्ला सैय्यिद पाड़ा (आलम गंज, लोहामंडी)

(100) पीर बहाउद्दीन

आप रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक्रे ख़ैर किसी तारीख़ व तज़्किरा की किताबों में मेरी नज़र से नहीं गुज़रा सिर्फ इस क़द्र पता चला है कि आप रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के ज़माने में काबुल से आगरा में तशरीफ़ लाए थे।

मज़ार मुबारक मुहल्ला सैय्यिद पाड़ा (आलम गंज, लोहामंडी) की मस्जिद में जो आप रहमतुल्लाह अलैह ही के नाम से मौसूम है ज़ियारत गाह ख़ास व आम है। (बोस्ताने अख्यार, पेज58)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत पीर बहाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक अब भी **'मस्जिद पीर बहाउद्दीन'** के अंदर मौजूद है। मज़ार मुबारक के चारों तरफ़ स्टील की रेलिंग लगी हुई है।

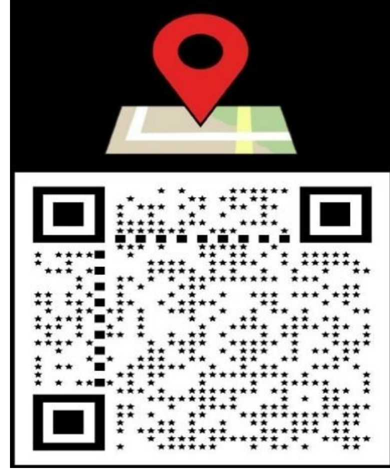
मज़ार की तावीज़ की तख़्ती पर

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हज़रत बाबा पीर वहाबुद्दीन शाह रहमतुल्लाह अलैह चिश्ती कादरी लोहा मंडी तेली पाड़ा आगरा, 17 रबीउस्सानी

लिखा हुआ है। आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम **“बहाउद्दीन”** की जगह गलती से **“वाहबुद्दीन”** लिख दिया गया है।

पीर बहाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



دینِ اسلام کی اہمیت وضرورت اور عقلی و نقلی خوبیوں پر مشتمل فکر انگیز

کتاب بنام

دینِ اسلام کی خوبیاں

☆--- درودِ پاک کی انوکھی فضیلت
☆--- اللہ پاک کی سب سے بڑی نعمت کون سی ہے؟
☆--- ہمارا دین اور ہماری حالت
☆--- کون سا دین مقبول ہے؟
☆--- دین اور اسلام کا معنیٰ کیا ہے؟
☆--- اسلام کیوں آیا؟
☆--- دینِ اسلام کی کیا خوبیاں ہیں؟
☆--- مسلمانوں سے دردمندانہ اپیل

مصنف

مولانا ابو شفیع محمد شفیق خان عطاری مدنی فتحپوری

(101) बीबी जीवनी

आप रहमतुल्लाह अलैहा क़ौम की तेलिन यानी उस्मानी बिरादरी से तअल्लुक़ रखती थीं और निहायत आरिफ़ा कामिला थीं, शाह शौक़ा रहमतुल्लाह अलैह से आप रहमतुल्लाह अलैहा को फ़ैज़ हासिल हुआ था।

29 रबीउस्सानी 1201 हिजरी ब मुताबिक़ 1786 ईस्वी को आप रहमतुल्लाह अलैहा ने रिहलत फ़रमाई, नवाब नजफ़ ख़ां आप रहमतुल्लाह अलैहा का बहुत मोअतक़िद था जिसने अपने अय्यामे हुकूमत में मौज़ रे पुरा जाट परगना फ़रह, ज़िला मथुरा आप रहमतुल्लाह अलैहा की ख़ानक़ाह के मसारिफ़ के वास्ते वक़्फ़ किया था।

मज़ार मुबारक मुहल्ला आलमगंज लोहामंडी में ज़ियारत गाह ख़ासो आम है लौहे मज़ार पर येह तारीख़ लिखी हुई है :

जीवनी शाह मारिफ़त आई
बूद साबित क़दम बराहे यक़ीं
चूँकि रिहलत नमूद अज़ आलम
शुद अज़ां ख़ातिर जहां ग़मगीं
हातिफे ग़ैब गुफ़्त तारीख़श
जाए ऊ बाद दर बहिश्त बरीं

'जाए ऊ बाद दर बहिश्त बरीं' के अदद 1201 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैहा की वफ़ात का साल है। (बोस्ताने अख्यार, पेज68.69)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(102) चांद बीबी

आप रहमतुल्लाह अलैहा बीबी जीवनी रहमतुल्लाह अलैहा की छोटी बहन हैं और अपनी बहन की तरह ज़माने की राबिया बसरिया थीं, आप रहमतुल्लाह अलैहा का **मज़ार मुबारक** अपनी बड़ी बहन बीबी जीवनी रहमतुल्लाह अलैहा के पहलू में वाक़ेअ है यानी आलमगंज आगरा में बना हुआ है, आप रहमतुल्लाह अलैहा की ख़ानक़ाह के अख़राजात के वास्ते भी नवाब नजफ़ ख़ां ने एक सौ कई बीगा ज़मीन वक़्फ़ की थी। (बोस्ताने अख्यार, पेज69)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(103) मौलाना मुहम्मद सआदत अली कादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह क़ाज़ी सैय्यिद महर अली (जिनका मज़ार मुबारक बोदला कदम रसूल के पास है इनका तज़्किरा इस किताब में मौजूद है)के फ़र्ज़ंद यानी बेटे और सैय्यिद मुज़फ़्फ़र अली शाह कादरी रहमतुल्लाह अलैह (जिन का मज़ार पंजे मदरसा में मौजूद है) के मुरीदाने जानिसार में से थे, इल्म व फ़ज़्ल से मौसूफ़ और बड़े आबिद व ज़ाहिद बुज़ुर्ग थे, मौज़ू तबअ और सईद तख़ल्लुस था, उर्दू फ़ारसी दोनों ज़बानों में आप रहमतुल्लाह अलैह का कलाम मौजूद और कुल्लियाते सईद के नाम से मौसूम है, जिसकी ज़ियारत का फख्र निगारिन्दए बोसताने अख्यार (यानी सईद अहमद मरहरवी) को हासिल है, तमाम तर उम्र दर्सो तदरीस का सिल्सिला आप रहमतुल्लाह अलैह से जारी रहा।

1331 हिजरी में वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुहल्ला सैय्यिद पाड़ा में वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज184)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

मुहल्ला सैय्यिद पाड़ा नौबस्ता आलमगंज में लोधों की आबादी

(104) सैय्यिद बाक़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह अमल में यगाना ए आफ़ाक़ और निहायत साहिबे तक़्वा और अहले करामत बुज़ुर्ग थे, 5 शव्वाल 1065 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हुआ।

क़ताए तारीख़:

उम्दा ए दुनिया दर दीन व क़ुदवए कौनो मकां
क़िब्ल ए अहले जहाँ व काबए अर्श आस्तां
मीर बाक़ी मुर्शिद आफ़ाक़ अज़ लुत्फे ख़ुदा
चूँ अज़ीं दारे फ़ना शुद जानिबे क़स्रे जिनाँ
साअते रोज़ व मह व साल विसालश अक़्ल गुफ़्त
सुब्ह शंबा पंचुम शव्वाल बाक़ी दाद जां

मज़ार मुबारक मुहल्ला सैय्यिद पाड़ा नौबस्ता आलमगंज में लोधों की आबादी के क़रीब एक मुख़्तसर हुजरे में वाक़ेअ है जो 7 फ़ुट 10 इंच लंबा, 5 फ़ुट, 5 इंच चौड़ा और सिर्फ 4 फुट बुलंद है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज52.53)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

आलमगंज (लोहामंडी)

(105) रौशन शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के शुहदाए नामदार के ज़मुरे में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** पागलख़ाने के इहाते की जुनूबी यानी दख्खिन की जानिब की दीवार के क़रीब वाक़ेअ हैं, क़ुरबो जवार के लोगों को बहुत अक़ीदत है।

पुराने लोगों का बयान है कि अक्सर जुमेरात और जुमा के दर्मियानी रात को मज़ार से रौशनी शुरू हो कर गुमानी की मस्जिद तक जो थोड़े फ़ासले पर जंगल ही में वाक़ेअ है, जाया करती थी, ग़ालिबन उसी मुनासिबत से आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम रौशन शहीद मशहूर है, आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार 8 फुट ऊंचा,पक्के चबूतरे पर वाक़ेअ है जिस पर दो नीम और एक पीलू का दरख़्त साया किए हुए हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज80)

मौजूदा हालत 2025

रौशन शहीद रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक लोहामंडी के मुहल्ला आलमगंज में आंधी वालों के क़ब्रिस्तान में मौजूद है। येह जगह पीर बहाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार और मस्जिद से तक़रीबन 500 मीटर की दूरी पर है। जाने का रास्ता मस्जिद पीर बहाउद्दीन के दरवाज़े से सीधे हाथ की तरफ़ वाले रास्ते से जाएं कुछ दूर चल कर गुमानी की मस्जिद आएगी, गुमानी की मस्जिद से 100 मीटर की दूरी पर क़ब्रिस्तान का गेट आएगा, उस गेट से दाख़िल हो कर तक़रीबन 100 मीटर क़ब्रिस्तान के अंदर जा कर चबूतरे में मज़ार मुबारक मौजूद है। पागलख़ाना की दीवार इस क़ब्रिस्तान से मिली हुई है।

मज़ार मुबारक पर मामूली छत है, लोहे के तार का दरवाज़ा है और नाम वग़ैरा की तख़्ती नहीं है। अब मज़ार पर सिर्फ एक नीम का दरख़्त बाक़ी है। रबीउल अव्वल की 27 और 28 तारीख़ को आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स मनाया जाता है।

रौशन शहीद रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।

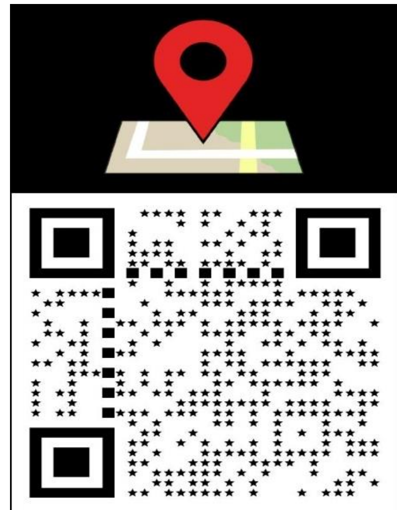
बिल्लोच पुरा (लोहामंडी)

(106) अहमद शाह नक़्शबंदी

आप रहमतुल्लाह अलैह तेरहवीं सदी के आखिरी दौर में एक साहिबे निस्बत बुज़ुर्ग थे, आप रहमतुल्लाह अलैह मुहब्बते इलाही में हर वक़्त मस्त रहते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह की करामात और खिरके आदात की अक्सर रिवायतें मशहूर हैं।

मज़ार मुबारक मुहल्ला बिल्लोच पुरा में वाक़ेअ है, आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा मुहब्बत शाह साहिब जो एक साहिबे हाल और ख़ुदा शनास बुज़ुर्ग थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के जांनशीन हुए थे, वो भी आप रहमतुल्लाह अलैह के क़रीब ही आसूदा हैं यानी उनका **मज़ार मुबारक** भी अहमद शाह नक़्शबंदी के क़रीब मुहल्ला बिल्लोच पुरा में मौजूद है। (बोस्ताने अख्यार, पेज43)

अहमद शाह नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



लोहा मंडी

(107) यतीम शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपने कमालात को मुख़न्नसों के लिबास में छुपा रखा था, मुख़न्नसों की सोहबत में रहते और यतीमा के नाम से मशहूर थे, एक साल आगरा में बारिश नहीं हुई कहत साली के ख़ौफ़ से वक़्त का हाकिम और रिआया सब परेशान और उस ज़माने के तमाम बुज़ुर्गों से बारिश के वास्ते दुआ के मुल्तजी थे, मीर बाक़ी रहमतुल्लाह अलैह ने जो आप रहमतुल्लाह अलैह के हम असर यानी ज़माने के थे लोगों को आप रहमतुल्लाह अलैह का पता बताया कि अगर वो साहिब दुआ फरमा देंगे तो बारिश ज़रूर होगी। सब लोग आप रहमतुल्लाह अलैह को तलाश कर के हाज़िरे ख़िदमत हुए, पहले आप रहमतुल्लाह अलैह बहुत नाज़ो नखरों से लोगों को टालना चाहा मगर जब लोग किसी तरह ना माने और आप रहमतुल्लाह अलैह का पीछा ना छोड़ा तो बोले: ख़ुदा करे जिस मोए ने मेरा पता बताया हो उस की क़ब्र पर गधे लौटें। आख़िरे कार एक टीले पर चढ़ गए और एक पत्थर उठा कर बोले पानी बरसा वर्ना अभी चूड़ियां तोड़े डालती हूँ। ख़ुदा की क़ुदरत से उसी वक़्त ख़ूब बारिश हो गई और खेती का कारोबार शुरू हो गया, येह करामत देखकर लोग बहुत गिरवीदा हुए, हाकिमे वक़्त ने कुछ रुपया बतौरे नज़र इरसाल किया यानी भेजा मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ने क़बूल नहीं फ़रमाया, आख़िरे कार इस रुपया से एक आलीशान लाल पत्थर की मस्जिद बना दी गई जो मुहल्ला लोहामंडी में अब तक मौजूद और मस्जिद मुख़न्नसान के नाम से मशहूर है।

इस वाकिये के चंद ही रोज़ बाद आप रहमतुल्लाह अलैह का इंतिक़ाल हो गया, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** उसी मस्जिद के नीचे

वाक़ेअ है, मीर बाक़ी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की वीरानी को लोग इसी बददुआ का नतीजा समझते हैं, वल्लाह आलम बिस्सवाब।

(बोस्ताने अख्यार, पेज251.252)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

मुहल्ला गुड़िया अलहद्दाद,लोहामंडी

(108) शैख़ अलहद्दाद क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह आलमगीर बादशाह के ज़माने के ख़ुदा शनासाने बा कमाल में से थे 1078 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने रेहलत फ़रमाई, **मज़ार मुबारक** मुहल्ला गुड़िया अलहद्दाद मुत्तसिल लोहामंडी में वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज50)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

वज़ीरपुरा

(109) अमीर तपां चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह का असली नाम शैख़ हमीद है चूँकि आप रहमतुल्लाह अलैह हमेशा अपने सामने एक बड़ी ऊंची आग जला कर रखते थे लिहाज़ा तपा या तपां के नाम से मशहूर हो गए, चुनांचे अब तक आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मीर तपां के नाम से मशहूर चला आता है।

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ निज़ाम नारनोई रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और आगरा के मशहूर बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के नज़्दीक मालो दौलत कुछ क़द्र ना रखता था, इस हाथ लेना उस हाथ देना आप रहमतुल्लाह अलैह की आदत थी और कमाले बातिनी से एक चीज़ को पलक झपकते एक मुल्क से दूसरे मुल्क पहुंचा देते थे, जब जज़्ब पैदा हुआ तो आगरा में तशरीफ़ लाकर एक दरख़्त के नीचे नशिस्त गाह यानी बैठने की जगह इख्तियार कर ली, चंद रोज़ के बाद उस दरख़्त की शाख़ें चारों तरफ़ से ऐसी बढ़ीं कि सूरज की धूप आप रहमतुल्लाह अलैह तक नहीं पहुँचती थी, आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़िरक़े आदात की अक्सर रिवायतें अब तक मशहूर हैं।

1019 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह दारुल फ़ना से दारूल बक़ा को तशरीफ़ ले गए, **मज़ार मुबारक** मुत्तसिल वज़ीरपुरा में एक बुलंद चबूतरे पर वाक़ेअ है जिसके ऊपर इमली का एक बड़ा दरख़्त साया किए हुए है, ग़ालिबन येह वही दरख़्त है जिसका अभी ज़िक्र हुआ।

(बोस्ताने अख्यार, पेज61.62)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

तोता ताल लोहा मंडी

(110) शाह बरवी

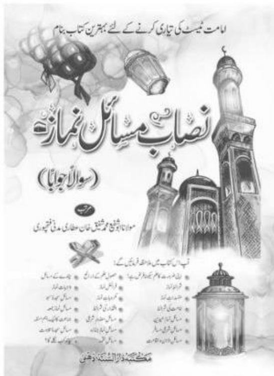
आप रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के ज़माने के बुज़ुर्ग हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुत्तसिल तोता ताल लोहा मंडी पक्की सड़क के किनारे निहायत बुलंदी पर वाक़ेअ है और लोगों में लाल सैय्यिद या लाल शहीद के नाम से मशहूरो मारूफ़ हैं।

मज़ार की तावीज़ पर 971 हिजरी तारीख़ लिखी हुई है जिससे आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल की तारीख़ का पता चलता है।

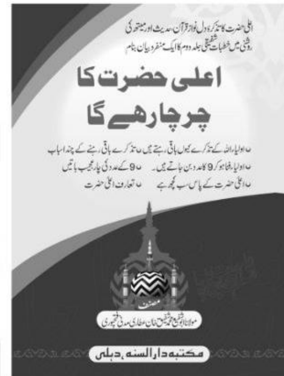
(बोस्ताने अख्यार, पेज88)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।







सुल्तानगंज

(111) सैय्यिद कबीर

आप रहमतुल्लाह अलैह मशाईख़ीने अकबराबाद में से हैं, 1018 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई, **मज़ार मुबारक** मुत्तसिल सुल्तानगंज में वाक़ेअ है, **“बा रहमत क़रीं बाद”** के अदद 1018 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का हिजरी साल है। (बोस्ताने अख्यार, पेज142)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(112) सुल्तान मुहम्मद मासूम

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के ज़माने के बुज़ुर्गों में से हैं, **मज़ार मुबारक** मुत्तसिल सुल्तानगंज पक्की सड़क से मशरिक़ यानी पूरब की जानिब खेतों के दर्मियान में वाक़ेअ है, बराबर बराबर लाल पत्थर के दो तावीज़ हैं जो सड़क से नज़र आते हैं, एक नीम और चंद बबूल के दरख़्त इन मज़ारात पर साया किये हुए हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार का तावीज़ मुनक़्क़श और ख़ुशनुमा है और उस चंद शेअर लिखे हुए हैं।

सिरहाने पर सुल्तान मुहम्मद मासूम और पांइती पर हमीदुद्दीन हुसैन 989 हिजरी लिखा हुआ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज202)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(113) शाह यार मुहम्मद चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह शाहजहाँ बादशाह के ज़माने के अकबराबाद के बुज़ुर्गाने दीन में से हैं, विलायत और करामत में शाने आली और बुलंद मर्तबा हासिल था, उस्ताद ईसा आफ़न्दी जो रौज़ा मुमताज़ महल (ताज महल) के नक़्शे को बनाने वाला बा कमाल नक़्शा नवेस था आप रहमतुल्लाह अलैह के खास मोअतक़िदीन में से था, आप रहमतुल्लाह अलैह ही की दुआ से आलमे ख्वाब में उन्होंने इमारत की मौजूदा शक्ल व हैअत देख कर नक़्शा बना कर बादशाह की ख़िदमत में पेश किया जो पसंदे ख़ातिर हो कर मंज़ूर किया गया।

अब तक ईसा आफ़न्दी के ख़ानदान के लोग जो नाला पीपल मंडी में आबाद और नक़शा नवेस कहलाते और अक्सर अब तक नक़्शा नवेसी में उस्ताद हैं, येह लोग आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार से ख़ास अक़ीदत रखते और हर साल रबीउस्सानी के महीने के पहले जुमा को मज़ार पर हाज़िर हो कर उर्स किया करते हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** सुल्तानगंज पक्की सड़क के क़रीब एक टीले पर वाक़ेअ है, मज़ार हुजरे के अंदर है जिसके क़रीब एक मस्जिद बनी हुई है। (बोस्ताने अख्यार, पेज251)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(114) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम ग़ैर मारूफ़ और **मज़ार मुबारक** बुज़ुर्गी और कमालात में मशहूर और तकिया मुत्तसिल बाग़ चोखे लाल चावल वाला पक्की सड़क के किनारे सुल्तानगंज में वाक़ेअ है, लौहे मज़ार सादा मगर चिरागदान में एक पत्थर लगा हुआ है जिस पर

قَالُوْا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَیْهِ رَاجِعُوْنَ

और इसके नीचे येह शेअर लिखा हुआ है :

ज़ तारीख़े हिजरी शुदा आशकार
बयक रोज़ पांसद व बर सद चहार

(बोस्ताने अख्यार, पेज105)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



(115) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह के नाम मुबारक का कुछ पता नहीं चल सका, बाग़ चोखे लाल चावल वाला वाक़ेअ सुल्तानगंज में एक कनाती मस्जिद बनी है उस के सेहन में आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** ज़ियारत गाह है। (बोस्ताने अख्यार, पेज105)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

इस ग्रुप में जॉइन होने के लिए
इस QR Code को scan कीजिए



नगला धुनी मुत्तसिल सुल्तानगंज

(116) मीर मुहम्मद नोमान बदख़शी नक़्शबंदी मुजद्दिदी

आप रहमतुल्लाह अलैह काने बदख़शाँ के लाले बे बहा और मीर शम्सुद्दीन यहया इब्ने मीर ख़्वाजा जलालुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंद रशीद यानी बेटे हैं, 977 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने आलमे दुनिया में ज़हूर फ़रमाया यानी पैदा हुये, आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह बदख़शाँ के मशहूर मशाईख़ीन से थे, आप रहमतुल्लाह अलैह की पैदाइश से एक रात पहले उन्होंने हज़रत इमामे आज़म रहमतुल्लाह अलैह को ख्वाब में देखा। आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि आज तेरे एक बड़ा बुज़ुर्ग फ़र्ज़ंद यानी बेटा पैदा होगा उस को मेरे नाम पर नामज़द करना।

चुनांचे उसी दिन आप रहमतुल्लाह अलैह पैदा हुए और वालिद बुज़ुर्ग रहमतुल्लाह अलैह ने मुहम्मद नोमान आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम रखा। तमीज़ करने के उम्र पर पहुंच कर आप रहमतुल्लाह अलैह ने तमाम उलूमे अक़्ली व नकली में कमाल पैदा किया और जहांगीर बादशाह के ज़माने में हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए और दिल्ली में सुकूनत पज़ीर हो कर हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हुए, ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह इल्म व फ़ज़्ल की वजह से आप रहमतुल्लाह अलैह पर ख़ास नज़रे इनायत रखते थे। जब ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह ने अपने चंद ख़ास मुरीद हज़रते शैख़ अहमद सरहिन्दी मुजद्दिद अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के सिपुर्द फ़रमाया तो मीर मुहम्मद नोमान रहमतुल्लाह अलैह भी उन्ही में से थे, आप रहमतुल्लाह अलैह को ख़्वाजा बाकी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह की जुदाई नागवार थी लिहाज़ा जाने में तवक़्क़ुफ़ किया, इस पर हज़रत ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह ने ग़ज़बनाक हो कर फ़रमाया कि

शैख़ अहमद सरहिन्दी रहमतुल्लाह अलैह एक ऐसे आफ़ताब हैं कि हमारे जैसे हज़ारों सितारे उनकी ज़मीर में कम हैं, इस के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत बा बरकत में हाज़िर हुए और आप रहमतुल्लाह अलैह के अन्फ़ास और खास तवज्जोह की बदौलत आफ़ताबे तरीकत हो कर चमके।

मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह ने अपने बेटों के बाद सबसे पहले आप रहमतुल्लाह अलैह ही को मन्सबे ख़िलाफ़त अता फरमा कर सनदे इजाज़त मर्हमत फ़रमाया जिसमें आप रहमतुल्लाह अलैह की निस्बत येह जुमला दर्ज था :

"बेशक अल्लाह पाक की मारिफ़त रखने वाले और कामिल सरदार"

हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह ने खिरकए ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ फरमा कर आप रहमतुल्लाह अलैह को दक्कन में मुतय्यन किया, वहां आप रहमतुल्लाह अलैह के इरशाद को वो रौनक हुई कि बेशुमार प्यादों के इलावा चार सौ सवार आप रहमतुल्लाह अलैह के साथ शाम के हल्क़े में मुराक़िब होते थे, आख़िरे कार जहांगीर बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह के कमालात का हाल सुन कर दारुल खिलाफ़त अकबराबाद यानी आगरा में आप रहमतुल्लाह अलैह को तलब कर लिया और दारुल खिलाफ़त की सदारते उज़्मा के मन्सब पर आप रहमतुल्लाह अलैह को सरफ़राज़ किया।

आप रहमतुल्लाह अलैह आलिमे बा अमल, साहिबे कश्फ़ो इल्हाम, ज़ोहदो तक़्वा में बे नज़ीर, शरीअत पर साबित क़दम और असरारे तरीक़त के मुश्किल कुशा थे। आप रहमतुल्लाह अलैह की हिदायतो रहनुमाई से हज़ारों आदमियों ने ख़ुदा शनासी की आँखें रौशन कीं। बहुत सी करामतें और खिरके आदात आप रहमतुल्लाह अलैह से ज़हूर में आएं जिनका कुछ बयान **रौज़ए क़ैयूमियह** में मौजूद है।

एक मर्तबा आलमे मिसाल में हुज़ूर, फख्रे दो आलम महबूब मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए, उस वक़्त हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ीअल्लाहु अन्हु भी हम रिकाब यानी साथ थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ीअल्लाहु अन्हु की तरफ़ मुख़ातब हो कर फ़रमाया कि नोमान से कहो कि जो शैख़ अहमद का मक़बूल है वो हमें भी मर्ग़ूब (यानी पसंद) और ख़ुदा को महबूब है और जो शैख़ अहमद का मर्दूद है वो मेरा और ख़ुदा का मर्दूद है, येह सुनते ही मीर मुहम्मद नोमान रहमतुल्लाह अलैह के दिल में ख़्याल गुज़रा कि शुक्र है कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक़बूल हूँ। इस ख़्याल के गुज़रते ही हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो तेरा मक़बूल है वो शैख़ अहमद और मेरा और ख़ुदा का मक़बूल है और जो तेरा मर्दूद है वो शैख़ अहमद और मेरा और ख़ुदा का मर्दूद है।

आगरा में आप रहमतुल्लाह अलैह का मकान और ख़ानक़ाह मुहल्ला सूफ़ीपुरा में वाक़ेअ थी जहां अब मज़ार मुबारक वाक़ेअ है, सदारत का इज्लास एक वसीअ और क़दीम जामा मस्जिद में होता था जो मौजूदा जामा मस्जिद के क़रीब वाक़ेअ और मोहकमा की मस्जिद के नाम से मौसूम थी, येह मस्जिद अय्याम ग़दर यानी 1857 ईस्वी की जंग में शहीद हो गई।

हज़रत मुजद्दिदे अल्फ़े सानी रहमतुल्लाह अलैह के इंतिक़ाल के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह ने 63 माद्दाहाए तारीख़ निकाले जिनका शुमार हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम की उम्र शरीफ़ के सालों के बराबर है, इन में से चंद जुमले येह हैं: जाने शरीअत। शहबाज़े तरीक़त। ख़ुसरु मारिफ़त।

सैय्यिद मुहिब्बुल्लाह मानिक पुरी और ख़्वाजा हाशिम कश्मी साहिबे ज़ुब्दतुल मक़ामात व बरकातुल अहमदियह आप रहमतुल्लाह अलैह के मशहूर मुरीदों में हैं।

18 सफ़र 1058 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने विसाल फ़रमाया, जिस्मे ख़ाकी ख़ानक़ाहे आली में सिपुर्दे ख़ाक किया गया।

मज़ार मुबारक नगला धुनी मुत्तसिल सुल्तानगंज में वाक़ेअ है, मज़ार पर एक मुख़्तसर गुंबद और अतराफ़ में लाल पत्थर की ग़ुलाम गर्दिश बनी थी जो अब बहुत शिकस्ता हालत में है, अगर मरम्मत ना हुई तो चंद रोज़ में बिल्कुल गिर जाएगी।

हाजी अल्ताफ़ हुसैन साहिब सौदागर दरगाह शरीफ़ की मरम्मत में इम्दाद देने पर आमादा हैं अल्लाह पाक मुसलमानाने आगरा को मरम्मत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, नवाब इस्लाम ख़ां बदख़शी (मीर ज़ियाउद्दीन हुसैन को जो आलमगीर बादशाह के ज़माने में मंसबे पंज हज़ारी पर सरफ़राज़ और अकबराबाद के सूबादार थे, पास हम वतनी मीर मुहम्मद नोमान से बहुत अक़ीदत थी, उन्होंने 1058 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह का येह मक़बरा और इस के क़रीब एक आलीशान मस्जिद तामीर कराई थी जिसकी तारीखे तामीर **"बानी इस्लाम ख़ान बहादुर"** (1058) है

अब वो मस्जिद मुन्हदिम हो गई जिसका पत्थर अकबराबादी मस्जिद में लगा हुआ है, नवाब इस्लाम ख़ान ने 1074 हिजरी में वफ़ात पाई और गुंबद के अंदर आप रहमतुल्लाह अलैह के साथ हम ख़्वाब हैं।

हज़रत बाक़ी बिल्लाह रहमतुल्लाह अलैह का जुब्बा शरीफ़ और मीर मुहम्मद नोमान रहमतुल्लाह अलैह की दस्तार मुबारक सैय्यिद मुज़फ़्फ़र हुसैन साहिब पेशाकार कलेकटरी आगरा साकिन मुहल्ला चिड़ीमार टोला के पास नस्लन बाद नस्लिन चली आती है जिसकी ज़ियारत दीगर तबर्रुकात शाह फखरुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैह के साथ ग्यारह रबीउल अव्वल को कराई जाती है, मीर मुहम्मद नोमान रहमतुल्लाह अलैह का शजरए नसब मिर्ज़ा हाफ़िज़ क़मरुद्दीन बेग साहिबे सज्जादा नशीन दरगाह अबुल उला

रहमतुल्लाह अलैह के पास मौजूद है, मीर मुहम्मद नोमान रहमतुल्लाह अलैह मिर्ज़ा साहिब के जद्दे मादरी यानी नाना हैं, (बोस्ताने अख़्यार, पेज204.207)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

मकतबा दारुस्सुन्ना की किताबों की PDF डाउनलोड करने के लिए इस QR Code को Scan कीजिए



Maktaba Darussunna Agra
ki kitabon ka QR code

(117) मीर इब्राहीम नक़्शबंदी

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर मुहम्मद नोमान नक़्शबंदी मुजद्दिदी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे अर्जुमंद यानी बेटे, इस्लाम ख़ां बदखशी रहमतुल्लाह अलैह के दामाद हैं, निहायत साहिबे तक़्वा और अहले दिल बुज़ुर्ग थे, शाहंशाह आलमगीर ने तख़्त नशीन हो कर छः लाख साठ हज़ार रुपये की नक़दो जिन्स आप रहमतुल्लाह अलैह के हमराह हरमैन शरीफैन के मुस्तहिक़्क़ीन के वास्ते रवाना की थी। आप रहमतुल्लाह अलैह ज़ियारत और हज की सआदत से मुशर्रफ़ हो कर वापस तशरीफ़ लाए और 1071 हिजरी ब मुताबिक़ 1660 ईस्वी में आलमे बाला को परवाज़ कर गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया, आप रहमतुल्लाह अलैह की आराम गाह यानी **मज़ार मुबारक** आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिद मीर मुहम्मद नोमान रहमतुल्लाह अलैह के दरगाह के पास है यानी नगला धुनी मुत्तसिल सुल्तानगंज। (बोस्ताने अख्यार, पेज38)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(118) हिम्मत ख़ान

आप रहमतुल्लाह अलैह का असली नाम मीर ईसा था, नवाब इस्लाम ख़ान (मीर ज़ियाउद्दीन हुसैन) बदखशी अकबराबादी के फ़र्ज़ंद रशीद यानी बेटे हैं, फ़ज़ाइलो ख़साइल और क़ाबिलियत व कमालात का मजमुआ और मरजए सुख़न, फ़हमाने नुक्ता परवाज़ थे, निहायत सलीमुन्नफ्स, नेक ज़ात, करीमुल अख्लाक़, ख़ैर ख्वाहे कायनात, इल्म दोस्त और अरबाबे इल्मो हुनर के क़द्र दान और कमाल परवर थे।

मौज़ूं तबअ और मीरन तख़ल्लुस था, अरबी, फ़ारसी के इलावा हिन्दी ज़बान में भी ख़ास महारत और सलीक़ा हासिल था।

आलमगीर बादशाह के ज़माने में उमराए शाही के सिल्सिले में मुंसलिक और मुद्दत तक आगरा के सूबादार और दीगर मनासिब जलीला मिसाल के तौर पर क़िलादारी वग़ैरा पर सरफ़राज़ रहे, मगर तमाम उम्र इल्मी मशाग़िल का सिल्सिला जारी रखा। 5 मुहर्रम 1092 हिजरी को अपनी फ़साहतो बलाग़त और नज़्मो नसर की बहुत सी यादगारें सफ़्हाए रोज़गार पर छोड़ कर आलमे बक़ा को रवाना हुए यानी विसाल फरमा गये।

मज़ार मुबारक ग़ालिबन मीर मुहम्मद नोमान रहमतुल्लाह अलैह की दरगाह के पास है यानी नगला धुनी मुत्तसिल सुल्तानगंज।

(बोस्ताने अख्यार, पेज249)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(119) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह ने नामवरी के मुक़ाबला में गुमनामी को पसंद फ़रमाया है, जिसकी वजह से आप रहमतुल्लाह अलैह के नाम का कुछ पता नहीं चल सका।

मज़ार मुबारक चोखे लाल चावल वाले के बाग़ के दर्मियान और आबादी नगला धुनी कच्चे रास्ते पर वाक़ेअ है।

मज़ार मुबारक का तावीज़ संग मर मर का है जिस पर आयतुल कुर्सी और कलिमए तय्यिबा मन्क़ूश है। पुरानी इमारत के कुछ आसार यानी निशानियाँ और पत्थर अब तक मौजूद है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज105.106)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

राजा मंडी (रेलवे स्टेशन के क़रीब)

(120) मीर रफ़ीउज़्ज़मान

आप रहमतुल्लाह अलैह बादशाह आलमगीर के ज़माने के बुज़ुर्ग हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह ने 1104 हिज्री में एक ख़ुशनुमा मस्जिद तामीर कराई थी जो मुत्तसिल रेलवे स्टेशन राजा मंडी में वाक़ेअ़ है।

मस्जिद के क़रीब शुमाली यानी उत्तर की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** है जिसके ऊपर इमली का दरख़्त साया किए हुए हैं, मस्जिद के क़रीब जुनूबी यानी दख्खिन की जानिब मीर महबूब आलम रहमतुल्लाह अलैह और मीर सैय्यिद आलम रहमतुल्लाह अलैह नाम के दो और बुज़ुर्गों के भी मज़ार मौजूद हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज79.80)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक को तलाश किया लेकिन नहीं मिल पाया, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

नगला जवाहिर

(121) मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी (मश्कीं क़लम)

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह नेअमतुल्लाह वलीयुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह की नस्ल से हैं, दुन्यवी उलूम में शाह ग़यास और मौलाना राक़मी के शागिर्दे रशीद और तरीक़त में शैख़ फ़ैज़ुल्लाह चिश्ती सहारनपुरी के दस्त गिरिफ़्ता थे। हफ़्त क़लम में उस्ताद और ख़त्ते नस्तालीक़ में अपना सानी ना रखते थे, सुख़न गोई में ख़ास मलका हासिल था और कलाम निहायत पसंदीदा होता था, **वस्फ़ी** तख़ल्लुस और जहांगीर बादशाह के दरबार से **मश्कीं क़लम** ख़िताब मिला हुआ था।

आप रहमतुल्लाह अलैह दिल बयार और दस्त ब कार के मिस्दाक़ और मुलाज़िमत शाही में दाख़िल थे, इलाहाबाद वग़ैरा में अक्सर कतबे आप रहमतुल्लाह अलैह की जादू निगारी की यादगार हैं,

आप रहमतुल्लाह अलैह के दो साहिब ज़ादे हैं जिनका नाम मीर मुहम्मद सालेह कश्फ़ी रहमतुल्लाह अलैह और मीर मोमिन रहमतुल्लाह अलैह है, इन दोनों का ज़िक्रे ख़ैर इस किताब में मौजूद है।

1035 हिजरी ब मुताबिक़ 1625 ईस्वी आप रहमतुल्लाह अलैह की रेहलत का साल है, **मज़ार मुबारक** कोठी कंधारी (महाराजा भरतपुर) के क़रीब मुत्तसिल नगला जवाहिर एक गुंबद के अंदर वाक़ेअ है जिसमें यकई अशआर ख़त्ते नस्तालीक़ से लिखे हुए हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज99.100)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(122) मीर मुहम्मद सालेह कशफ़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का बातिन इख़्लासो अख़्लाक़ से आरास्ता और ज़ाहिर ज़ोहदो सलाह के साथ पैरास्ता था, इल्मो फ़ज़्ल से मौसूफ़ और ख़त्ताती में अपने वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के बाकमाल शागिर्द थे।

कलाम निहायत शीरीं और सूफियाना होता था, **कश्फ़ी** तख़ल्लुस और **मश्कीं क़लम** विरासती ख़िताब था, इब्तिदाए हाल में फ़क्रो क़नाअत में ख़ुशहाल थे, आखिरे कार शाहजहाँ बादशाह के इसरार से अमीर ख़ुसरो देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के एक शेअर पर अमल कर के शाही मुलाज़िमत यानी नौकरी मंज़ूर फ़रमाई और पाँच सौ सिपाहियों के सरदार के मन्सब पर सरफ़राज़ हुए, आप रहमतुल्लाह अलैह **'मनाक़िबे मुर्तज़वी'** और **'मज्मुअए राज़'** नामी किताब के मुसन्निफ़ हैं।

12 शाबान 1060 हिजरी बमुताबिक़ 1649 ईस्वी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने इस दारे फ़ानी से सफ़रे आख़िरत इख्तियार फ़रमाया और नगला जवाहिर में अपने वलिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के गुंबद के क़रीब मशरिक़ी जानिब यानी पूरब की जानिब चौखंडी के नीचे आराम फरमा है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज196.197)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(123) मीर मुहम्मद मोमिन अर्शी

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी रहमतुल्लाह अलैह के छोटे बेटे और मीर मुहम्मद सालेह कश्फ़ी रहमतुल्लाह अलैह के भाई हैं, अक्सर उलूम में आप रहमतुल्लाह अलैह कामिल महारत रखते थे, सुख़न गोई में ताक़, नस्तालीक़ नवीसी में शोहरए आफ़ाक़ और **अर्शी** तख़ल्लुस करते थे। साहिबे ज़ौक़ो शौक़, आशिक़े वज्दे सिमाअ और साहिबे निस्बत बुज़ुर्ग थे।

इब्तिदाए हाल में शाहज़ादा सुलैमान शिकोह बिन दारा शिकोह की तालीमो तर्बीयत पर मामूर थे। आख़िरे कार मुतावक्किल हो कर गोशा नशीन हो गए।

90 बरस की उम्र और 1091 हिजरी ब मुताबिक़1680 ईस्वी में रेहलत फरमा कर आलमे बक़ा को कूच कर गए और अपने वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के क़ब्रिस्तान नगला जवाहिर में आसूदा हैं।

(बोस्ताने अख्यार, पेज203)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(124) अमीर मुहम्मद शरीफ़

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी रहमतुल्लाह अलैह के बहन के बेटे, मुरीद और सज्जादा नशीन थे, इल्मो फ़ज़्ल से मौसूफ़ और ख़ते नस्तालीक़ बहुत ख़ूब व मर्ग़ूब लिखते थे।

मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी रहमतुल्लाह अलैह ने लड़कों की तरह आप रहमतुल्लाह अलैह की परवरिश और तालीम व तर्बियत की थी और इन्ही की वजह से आप रहमतुल्लाह अलैह ने ख़ुदा सनासी की आँखें रौशन की थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह निहायत गुमनामी पसंद थे, किताबत से अपनी गुज़र बसर फ़रमाते थे, जहांगीर बादशाह ने कातिबुस्सुल्तान का ख़िताब दिया था।

1054 हिजरी ब मुताबिक़ 1644 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हुआ, नगला जवाहिर के क़रीब अपने मामूं की दरगाह में आसूदा हैं यानी वहीं आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज184.185)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(125) मौलाना मक़सूद अली तबरेज़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह मुल्ला फ़ज़्लुल्लाह बेग के बेटे थे, इल्मो फ़ज़्ल ख़ुसूसन कमालाते शायरी से मौसूफ़ और अक्सर औसाफ़े हमीदा से आरास्ता थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने ख़्वाजा सलमान के मशहूर क़सीदा के जवाब में एक उम्दा क़सीदा क़ाज़ी यहया क़ज़वेनी की तारीफ़ में लिखा था, आप रहमतुल्लाह अलैह साहिबे दीवान हैं।

977 हिजरी ब मुताबिक़ 1569 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** क़ब्रिस्तान मुत्तसिल नगला जवाहिर मक़बरा मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी रहमतुल्लाह अलैह में एक चबूतरे पर वाक़ेअ है।

तावीज़ पर मौलाना मक़सूद अली तबरेज़ी लिखा हुआ है, बराबर में दूसरा तावीज़ है जिस पर फ़ातिमा सुल्तान बिन्ते मौलाना अब्दुल हैय्य नीशापुरी लिखा हुआ है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज212.213)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

बोदला (क़दम रसूल)

(126) क़ाज़ी सैय्यिद महर अली क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह बड़े आबिदो ज़ाहिद और सालिके राहे ख़ुदा थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के बाप दादा शाही ज़माने में सब्ज़वार से आगरा में तशरीफ़ लाए थे, मुहल्ला बिल्लौच पुरा में आप रहमतुल्लाह अलैह का मस्कन था, ख़ानदान में शाही ज़माना से नस्लन बाद नस्लिन क़ज़ा का ओहदा चला आता था, मौलाना अमजद अली शाह क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के आप रहमतुल्लाह अलैह मुरीद और मुख़्तारे आम थे।

सफ़र 1270 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हुआ। **मज़ार मुबारक** मौज़ा बोदला में दरगाह क़दम शरीफ़ के इहाते के बाहर वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज218)

मौजूदा हालत 2025

काज़ी सैय्यिद महर अली कादरी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक बोदला क़दम रसूल से पहले गली में मौजूद है, मज़ार मुबारक निहायत बोसीद और गुंबद की हालत खस्ता है, मज़ार का फर्श बालू और सीमेन्ट का है, तख्ती में नाम और तारीख गलत लिखी हुई है, कई साल से पेंट ना होने की वजह से गुंबद और दीवारों पर काई जमी हुई है।

काश ! कोई आशिके औलिया आगे आये और फर्श पर मार्बल, गुंबद और दीवारों पर पेंट और कुछ मरम्मत का काम करवा कर नाम व तारीख की तख्ती लगवा कर सवाब कमाए और औलियाए किराम के फ़ैज़ान से मालामाल हो।

काज़ी सैय्यिद महर अली कादरी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के Location का QR Code इस को अपने मोबाइल से Scan कीजिए, आप के मोबाइल पर Location खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



इस QR Code को Scan कीजिए और You Tube Channel को Subscribe कीजिए



गोकुल पुरा (आगरा कॉलेज)

(127) शैख़ नासिर (शैख़ नाज़िर)

आप रहमतुल्लाह अलैह का असली नाम नासिर मुहम्मद बिन सैय्यिद हाजी और मशहूर नाम शैख़ नासिर और शैख़ नाज़िर है, हनफ़ी मज़हब और सिपाहियाना पर्दा में बड़े आरिफ़ कामिल और बहुत बड़े साहिबे बातिन बुज़ुर्ग थे, ख़ानवादए क़ादरिया, चिश्तिया, नक़्शबंदिया और शत्तारिया में सैय्यिद अहमद इब्ने सैय्यिद रफ़ीउद्दीन इब्ने सैय्यिद जाफ़र शीराज़ी गुजराती रहमतुल्लाह अलैह से इजाज़तो ख़िलाफ़त हासिल थी।

इब्तिदाए हाल में मुद्दत तक अहमदाबाद गुजरात में मुक़ीम रहे फिर बुज़ुर्गाने इस्लाम की सुन्नत पर कारबन्द हो कर बरसों सय्याही फ़रमाई और बहुत से ख़ुदा शनासों की सोहबत से फ़ायदा उठाया, उसी दौराने सयाहत शाहजहाँ बादशाह से कहीं मुलाक़ात हो गई और बादशाह के इसरार से यौमिया मंज़ूर फ़रमा कर मुलाज़िमत में रहना क़बूल फ़रमाया हमेशा सिपाहियाना लिबास में मुसल्लह और हाज़िरे ख़िदमत रहते मगर जो वज़ीफ़ा मिलता था वो अपने खर्च में ना लाते बल्कि ख़ैरात कर दिया करते थे, ख़िदमत से फ़ारिग़ हो कर जंगल से घास या लकड़ी ला कर बाज़ार में बेचा करते और उस की क़ीमत अपने खर्च में लाते थे, अक्सर औक़ात रोटी की जगह घास पत्ते आप रहमतुल्लाह अलैह की ग़िज़ा होती थी।

रात भर मुसल्लह बादशाही ख़्वाबगाह दरवाज़ा पर इबादतो रियाज़त में मसरूफ़ रहते, बादशाह, बेगमात, उमरा, वुज़रा वग़ैरा सब आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक़िद थे, आप रहमतुल्लाह अलैह की अजीबो ग़रीब और होश रुबा ख़ारिक़ आदात उस ज़माने की मशहूर तारीख़ों, बादशाह नामा, मुल्ला अब्दुल हमीद लाहौरी, मिरातुल आलम, मुख़्बिरुल

वासिलीन, तज़्किरतुल कुदमा और सियारुल मुताअख़्खिरीन वग़ैरा किताबों में दरज हैं, अक्सर आप रहमतुल्लाह अलैह ने पानी के क़तरे से मोती, बर्फ़ से सब्ज़ ज़मुर्रद, ठेकरियों से रुपये और अशर्फ़ियां, ख़ाक से नमक और मिस्री, चोबी मेख़ से मछली, रूमाल से कबूतर, संगरेज़ो से ख़ुश रंग अक़ीक़ व लालो मर्जान बना देते थे।

सब लोग इस किस्म की करामतें देखकर महवे हैरत होते थे, साहिबे तज़्किरतुल कुदमा का बयान है कि तमाम वहशी जानवर और परिंदे और जिन्नात आप रहमतुल्लाह अलैह के ताबे फ़रमान थे गोया कि सुलैमानी बादशाहत आप रहमतुल्लाह अलैह को हासिल थी।

एक दिन मजलिस में इल्मे कीमिया का कुछ ज़िक्र छिड़ रहा था, आप रहमतुल्लाह अलैह ने थोड़ी सी ख़ाक उठा कर एक शख़्स के हाथ में दे दिया, देखा तो ख़ालिस सोना था।

एक मर्तबा बादशाह के रूबरू क़व्वाली की मजलिस मुन्अक़िद हुई, आप रहमतुल्लाह अलैह ने जज़्बए इलाही में बेख़ुद हो कर पानी मांगा थोड़ा सा ख़ुद पिया, बाक़ी दीगर हाज़िरीने मजलिस में तक़सीम कर दिया, जिसने पिया ख़ालिस शहद का मज़ा पाया।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने ज़िक्रे क़ुर्बान को कमाल के दर्जा तक पहुंचा दिया था, जब उस का शुग़ल फ़रमाते तो तमाम जिस्म के आज़ा बंद बंद कर के जुदा हो जाते थे, जो ज़िक्र के बाद फिर यकजा हो कर अपनी असली हालत पर आ जाते थे, एक मर्तबा राजा बिक्रमाजीत शाहजहानी ने रात के वक़्त जबकि वो भी चौकी पर हाज़िर था इस हालत में आप रहमतुल्लाह अलैह को देखा था।

बहुत से तालिबाने ख़ुदा आप रहमतुल्लाह अलैह की बदौलत ख़ुदा शनास हो गए। 13 जुमादस्सानी 1057 हिजरी ब मुताबिक़ 1647 ईस्वी को आप रहमतुल्लाह अलैह विसाल फरमा गए।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** पक्की सड़क के किनारे (डेरेमंड रोड या ठंडी सड़क) मुत्तसिल मुहल्ला गोकुल पुरा आगरा कॉलेज वाक़ेअ है, जिसका तावीज़ ताबूत नुमा एक बुलंद चबूतरे पर बना हुआ है, पहले इस पर आलीशान गुंबद था जो मुन्हदिम यानी गिरा दिया गया, लौहे मज़ार पर तारीख़ लिखी हुई है

वासिले हक़ शैख़ नाज़िर शाह ज़ीं दारे फ़ना
राही मुल्के बक़ा गश्तो रसीदा शाद काम

(बोस्ताने अख्यार, पेज222.224)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



सदर डाकख़ाना आगरा

(128) नत्थन शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह के सिल्सिले और ज़माने का कुछ हाल मालूम नहीं है, बुज़ुर्गी और कमालात की अक्सर रिवायतें अब तक मशहूर हैं, **मज़ार मुबारक** सदर डाकख़ाना आगरा के इहाते के अंदर में ज़ियारत गाह ख़ासो आम है। (बोस्ताने अख्यार, पेज224)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



मदार दरवाज़ा

(129) सैय्यिद नज्मुद्दीन मुहम्मद (मौलाना क़ासिम काबुली)

आप रहमतुल्लाह अलैह के पैदाइश की जगह काबुल है ।उर्फ़े आम **"मियां काले"**, ख़िताब मौलाना क़ासिम और तख़ल्लुस **"काही"** था। ख़ुद फ़रमाते हैं:

काही तो बुलबुले चमन आराए काबुली
ज़ाग़ो ज़ग़न ना कि बह हिन्दुस्तान शवी

आप रहमतुल्लाह अलैह को इल्मे तफ़सीर, हैयत, तसव्वुफ़, मुअम्मा और तारीख़ में कामिल महारत हासिल थी, शायरी में तो ऐसा कमाल हासिल था कि सब औसाफ़ इस में छुप गए थे। अक्सर बुज़ुर्गों की ख़िदमत से फ़ैज़ हासिल था।

15 बरस की उम्र में मौलाना अब्दुर्रहमान जामी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत से भी अज़मत हासिल की थी, अकबर बादशाह के ज़माने में भक्कर के रास्ते से हिन्दुस्तान में वारिद हुए और एक क़सीदा के सिला में एक लाख टंका इनाम पाया। फिर किसी बात से बरदाश्ता खातिर हो कर बनारस को बहादुर ख़ान बिरादर ख़ान ज़माँ के पास चले गए, कुछ मुद्दत वहां रह कर फिर आगरा में तशरीफ़ लाए और बक़ीया उम्र गोशाए तन्हाई में बसर कर के 2 रबीउस्सानी 988 हिजरी को 110 बरस की उम्र में रेहलत फरमा गए।

मौलाना क़ासिम बुख़ारी शागिर्दे रशीद ने **'रफ़्त मुल्ला क़ासिम काही'** तारीख़ मौज़ूं की।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मदार दरवाज़ा के क़रीब वाक़ेअ था जिसका अब पता नहीं चलता । और **"मस्नवी गुल अफ़्शाँ"** जो बोसतान के जवाब में है आप रहमतुल्लाह अलैह की यादगार है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज225.226)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



मस्जिद मदन मोहन दरवाज़ा और सेंट जोंस कॉलेज

(130) नन्हे मियां

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने ख़ुदा शनासों में हैं, किसी को आप रहमतुल्लाह अलैह का असली नाम मालूम नहीं है, नन्हे मियां के नाम से मशहूर हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह की कई करामतें मशहूर हैं जिनमें एक येह भी है कि एक बनिया नूरी दरवाज़ा से जहां आप रहमतुल्लाह अलैह मुक़ीम थे शकर ख़रीद कर के घोड़े पर लादे हुए आप रहमतुल्लाह अलैह के पास से गुज़रा आप रहमतुल्लाह अलैह ने दरयाफ्त किया कि गौन में क्या है ? उस की ज़बान से निकल गया कि नमक है, गांव में पहुंच कर जब गौन को खोला तो शकर की जगह नमक देखा। येह देख कर बहुत घबराया और रोता पीटता आप रहमतुल्लाह अलैह के पास आ कर क़दमों पर गिर पड़ा। आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया जाकर देख शकर ही तो है। जब घर पहुंचा तो गौन में शकर को पाया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मस्जिद मदन मोहन दरवाज़ा और सेंट जोंस कॉलेज की दीवारों के दर्मियान में वाक़ेअ है, वहां तक पहुंचने का अब कोई रास्ता बाक़ी नहीं, मस्जिद की दीवार या कॉलेज की इमारत मुल्हिक़ा से अलबत्ता ज़ियारत हो सकती है, राक़िमे बोसतान मस्जिद की छत पर चढ़ कर ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ।

दोनों दीवारों के दर्मियान में एक छोटा सा हिस्सा छूटा हुआ है, अगर मस्जिद की जुनूबी यानी दख्खिन दीवार में एक दरवाज़ा खोल दिया जाये तो बहुत मुनासिब है।(बोस्ताने अख्यार, पेज229.230)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

रोज़ी में बरकत का वज़ीफ़ा

यकुम (1st) रमज़ानुल मुबारक को मग़रिब की नमाज़ के बा'द जो कोई 21 बार सूरतुल क़द्र (اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ) पढ़े तो उस की रोज़ी में ऐसी बरकत होगी जैसे ऊंची जगह से पानी नीचे की तरफ़ तेज़ी से आता है इस तरह उस की तरफ़ मालो दौलत तेज़ी से बढ़ेगा और यूं उस की तंगदस्ती दूर होगी।

(माहे रमज़ान और अमीरे अहले सुन्नत, स. 18)

FOLLOW DAWATEISLAMIINDIA



कचहरी दीवानी

(131) मौलाना शैख़ हसन शीराज़ी अंसारी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ महमूद अंसारी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंद यानी बेटे हैं, उलूमे दर्सी की तहसील अपने शहर शीराज़ में कर के ख़ुश नवेसी में कमाल हासिल किया, जब शाह इस्माईल या शाह तहमासप इब्ने शाह इस्माईल सफवी ने शीराज़ पर क़ाबिज़ हो कर लोगों को मज़हबे इमामिया यानी शिया मज़हब क़बूल करने पर मजबूर किया तो आप रहमतुल्लाह अलैह अपनी वालिदा माजिदा को साथ लेकर हरमैन शरीफ़ैन चले गए और एक अरसे तक उन मुक़द्दस व बा फ़ैज़ मक़ामात में रह कर इल्मे हदीस हासिल किया, वहां से बहरी यानी समंदर के रास्ते से सुल्तान मुज़फ़्फ़र गुजराती के ज़माने में अहमदाबाद में तशरीफ़ लाए, यहां चंद रोज़ क़ियाम रहा, जब सुल्तान सिकन्दर लोदी ने आगरा बसाया तो आप रहमतुल्लाह अलैह अहमदाबाद से आगरा चले आए, सुल्तान सिकन्दर लोदी ने निहायत दिलजोई और ताज़ीम व तकरीम से आप रहमतुल्लाह अलैह को आगरा में आबाद किया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मकान मुहद्दिस मीर रफ़ीउद्दीन सफवी रहमतुल्लाह अलैह (जिनका मज़ार मुबारक बेलनगज में है और इनकी सीरत इस किताब में मौजूद है) के पड़ोस में था, आप रहमतुल्लाह अलैह क़ुरआने मजीद और अहादीस शरीफ़ की किताबत से गुज़र बसर फ़रमाते थे, तमाम वक़्त के हाकिम आप रहमतुल्लाह अलैहकी ताज़ीम व तकरीम करते रहे, शैख़ ज़ैनुद्दीन ख़्वानी रहमतुल्लाह अलैह आपकी फ़ज़ीलत में फ़रमाते हैं :

हस्त शेअर मन ज़ अक़्लो नक़्ल ख़्वाहम बशुनूद
जामिउल मा'कूल वल मनकूल मौला हसन

4 रजब 956 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हुआ, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** कचहरी दीवानी के इहाते के अंदर उस अज़ीमुश्शान गुंबद में है जिसमें पहले कमिशनरी का गोदाम था और अब मुंसरिम जजी रहता है, ग़दर यानी 1857 की जंगे आज़ादी से पहले मज़ार मुबारक का तावीज़ मौजूद था जिस पर बा क़ौल साहिबे मिफ़्ताहुत्तवारीख येह अशआर लिखे हुए थे :

दर हक़्क़ा फ़ज़्ल मौलाना हसन
हुनर मंद बे मिस्ल आली जनाब
सर अहले दानिश अज़ीज़े जहां
जहानी मआनी व कोहो वक़ार
चू कर्दह अज़ीं दारे फ़ानी सफ़र
बदा ज़ लिक़ा आं सर नामदार
ब औनो ब रहमत ब लुत्फे अमीम
जहां आफ़रीं दावर किर्दगार
बफर मूरता रूह पाकश बरन्द
मलाइक ब फिरदौस अज़ ऐतिबार
ब जन्नत करारश चू शुद ज़ीं जिहत
शुदा साल फ़ौतश ब जन्नत क़रार

'ब जन्नत क़रार' के अदद 956 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल है, आप रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे मियां कमालुद्दीन हुसैन रहमतुल्लाह अलैह की सीरत भी इस किताब में मौजूद है। (बोस्ताने अख्यार, पेज70.71)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए।

Like Share & Subscribe Channel



(132) शैख़ कमालुद्दीन हुसैन

आप रहमतुल्लाह अलैह मौलाना शैख हसन शीराज़ी अंसारी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह में ख़ुदा शनासों के तमाम अफ़आल मौजूद थे, इल्म को अमल के साथ रफ़ीक़ यानी साथी बना कर अपनी मुसाहबत से लोगों को फ़ैज़ पहुंचाते थे।

साहिबे मुंतख़बुत्तवारीख का बयान है कि उनके कमालात और अख्लाक़ हद्दे बयान से बाहर हैं, इब्तिदाए जवानी (यानी जवानी के शुरू) से अख़ीर उम्र तक सिवाए तस्बीहो तहलील और तिलावते क़ुरआन मजीद और इबादतो रियाज़त और सख़ावत के कोई काम उनको ना था।

वो आदमी ना थे बल्कि आदमी की सूरत में फ़रिश्ता थे, इल्मो फ़ज़्ल में कमाल का दर्जा हासिल और इंशा, इमला, ख़ुश नवेसी तो उनके मौरूसी इल्म थे, अकबर बादशाह उनका बड़ा मोअतक़िद था और चाहता था कि वो हमेशा मुलाज़िमत में रहें, मगर वो दूर भागते थे, आख़िर में तअ़ल्लुक़ाते दुनिया से बिल्कुल क़तए तअल्लुक़ कर के गोशा नशीनी इख्तियार कर ली थी।

22 रबीउस्सानी 1018 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई और कचहरी दीवानी के इहाते के अंदर अपने वालिद बुज़ुर्गवार हज़रत मौलाना शैख़ हसन शीराज़ी अंसारी रहमतुल्लाह अलैह के क़रीब आसूदा यानी आराम फरमा हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज143)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(133) अ़ब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह का नामे मुबारक मालूम नहीं हो सका, हदीसे क़ुदसी के हुक्म के तहत कि 'तुम्हारे नामों में बहुत प्यारा नाम अल्लाह के नज़्दीक अ़ब्दुल्लाह है' आप रहमतुल्लाह अलैह को अ़ब्दुल्लाह के नाम से याद किया गया है।

आप रहमतुल्लाह अलैह की निहायत अजीबो गरीब और हैरत अंगेज़ करामात मशहूर हैं, **मज़ार मुबारक** निहायत नशात अंगेज़, रूह अफ़्ज़ा और अन्वारे इलाही से मुनव्वर है, क़दामत यानी पुराने होने के आसार भी नुमायां हैं।

कचहरी दीवानी के क़रीब साहिबे जज की कोठी है, उस के इहाते के अंदर एक टीले पर आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार वाक़ेअ है, जिस पर लाल पत्थर की ख़ुशनुमा इमारत बनी थी, उस इमारत की छत और गुंबद अब बाक़ी नहीं है। (बोस्ताने अख्यार, पेज103)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

नगला पदी, कचहरी दीवानी

(134) क़ाज़ी सैय्यिद नूरुल्लाह शोस्तरी

आप रहमतुल्लाह अलैह तमाम उलूमे अक़्ली व नक़्ली से मौसूफ़ और दीगर औसाफ़े हमीदा और ख़साइले पसंदीदा से आरास्ता व पैरास्ता थे। साहिबे मुंतख़बुत्तवारीख मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह का बयान है कि इन्साफ़, नेक नफ़्सी, हया व तक़्वा और जितनी सिफ़तें शरीफ़ों में चाहिए वो सब आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात में थीं, इल्मो हिल्म, तेज़िए तबीअत और सफ़ाईए ज़ेहन में मशहूर थे, बहुत सी किताबें आप रहमतुल्लाह अलैह की तसनीफ़ से हैं।

शैख़ फ़ैज़ी की बेनुक़्त तफ़सीर पर एक उम्दा तक़रीज़ लिखी थी। शायर भी थे और कलाम बहुत दिलकश और पसंदीदा होता था, हकीम अबुल फ़तह की सिफ़ारिश से अकबर बादशाह की मुलाज़िमत में दाख़िल हुए। अकबर बादशाह ने शैख़ मुईन की जगह आप रहमतुल्लाह अलैह को लाहौर का क़ाज़ी मुकर्रर कर दिया था, लाहौर के तमाम मुफ़्तियों और क़ाज़ीयों को आप रहमतुल्लाह अलैह ने ख़ूब ठीक किया और रिशवत का दरवाज़ा बिल्कुल बंद कर दिया था।

फ़िक़्हे हनफ़ी में माहिर थे और इसी के मुताबिक़ मुक़द्दमात का फ़ैसला फ़रमाया करते थे जहांगीर ने आप रहमतुल्लाह अलैह को लाहौर से तब्दील कर के अपने लश्कर का मीर अदल मुक़र्रर कर लिया था।

1019 हिजरी बमुताबिक़ 1610 ईस्वी में बादशाह के सामने आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़बान से कोई ऐसा सख़्त कलिमा निकल गया कि जिसकी वजह से बादशाह जहांगीर ने आप रहमतुल्लाह अलैह को शहीद करा दिया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुत्तसिल नगला पदी व कचहरी दीवानी वाक़ेअ है, इहाते में और भी बहुत सी क़ब्रें हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार पर एक कमरा तामीर हो गया है जो फ़र्शो फ़ुरुश से आरास्ता है। (बोस्ताने अख्यार, पेज230.231)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

क़ब्रिस्तान पीर गीलानी (माल गोदाम ईस्ट इंडियन रेलवे)

(135) शाह हरे भरे

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के ख़ुदा दोस्त, सदा सुहागन और अहले दिल बुज़ुर्गों में शुमार होते हैं, असली नाम या तारीख़ी वाक़ियात ला इल्मी में हैं मगर आप रहमतुल्लाह अलैह की अक्सर करामात ख़ास व आम लोगों की ज़बान पर हैं।

मज़ार मुबारक मुत्तसिल क़ब्रिस्तान पीर गीलानी माबैन माल गोदाम ईस्ट इंडियन रेलवे व सड़क रेलवे मैदान में वाक़ेअ है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज248.249)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



Maktaba Darussunna Agra
ki kitabon ka QR code

(136) हर मन शाह मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के मज्ज़ूबाने बा कमाल में से थे, बीस पच्चीस बरस का अरसा हुआ कि वफ़ात पा गए, क़ब्रिस्तान पीर गीलानी में आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** वाक़ेअ है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज249)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

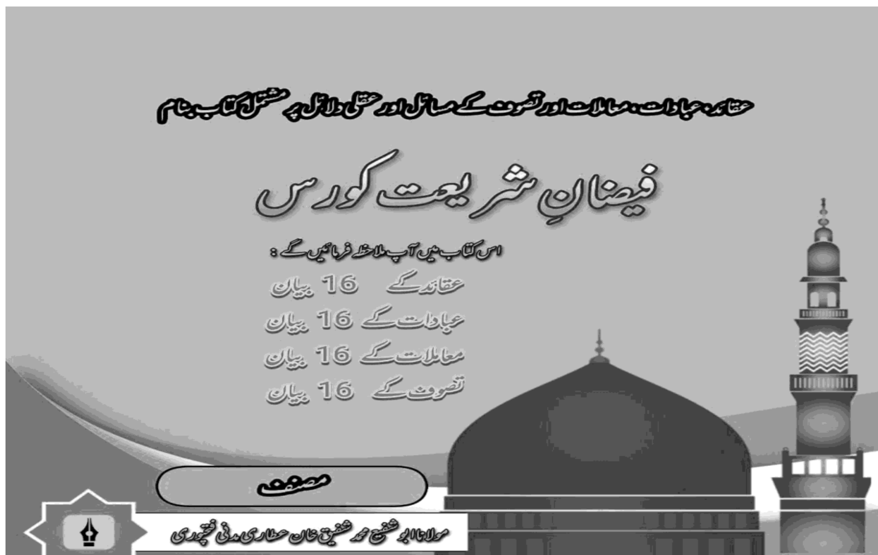


(137) अब्दुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह भी गुमनाम बुज़ुर्गों में हैं यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम भी किसी तरह मालूम नहीं हो सका। आप रहमतुल्लाह अलैह साहिबे करामात बुज़ुर्ग मशहूर हैं। **मज़ार मुबारक** मुत्तसिल क़ब्रिस्तान पीर गीलानी जानिबे शुमाल यानी उत्तर की जानिब खेतों के दर्मियान में एक बुलंद चबूतरा पक्की सड़क से मग़रिब यानी पच्छिम की तरफ़ वाक़ेअ है, जिस पर पीपल का दरख़्त साया किए हुए है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज105)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



(138) ख़्वाजा अब्दुर्रऊफ़

आप रहमतुल्लाह अलैह बादशाह आलमगीर के ज़माने के नेक लोगों में से हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** क़ब्रिस्तान पीर गीलानी में वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज110)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(139) सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी

आप रहमतुल्लाह अलैह मुल्के विलायत के सरताज, असरारे हक़ीक़त के राज़दार और ख़ानदाने क़ादिरिय्या आज़मिय्या के सरबराहों में से हैं, उलूम में अहले ज़माना के उस्ताद और उलमाए ज़माना में मुम्ताज़, ज़ोहदो तक़्वे में बेनज़ीर और इबादतो रियाज़त में शोहरए आफ़ाक़ थे। दिन भर दर्सो तदरीस से बंदगाने ख़ुदा को फ़ैज़ पहुंचाया करते थे, सिर्फ दोपहर को क़ैलूला फ़रमाते बाक़ी किसी वक़्त ना सोते थे।

शुरू आधी रात में मुरीदों को तवज्जोह और तल्क़ीन फ़रमाते और बक़ीया आधी रात इबादतो रियाज़त में गुज़ारते थे। सिर्फ एक वक़्त यानी रात को खाना तनावुल फ़रमाते। बालिग़ होने के बाद से वफ़ात के दिन तक कभी आपने दिन में खाना नहीं खाया।

1050 हिजरी बमुताबिक़ 1640 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हुआ, **मज़ार मुबारक** क़ब्रिस्तान पीर गीलानी में वाक़ेअ और क़रीब में एक छोटी सी मस्जिद मौजूद है।(बोस्ताने अख्यार, पेज114.115)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

नगला संगन

(140) शैख़ बा यज़ीद शेरवानी

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद वली रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हैं। आज़ाद दिली के साथ ज़िंदगी बसर करते थे, वज्दे सिमाअ से इश्क़ था आप रहमतुल्लाह अलैह के शोरो फ़ुग़ां से सिमाअ की मजलिस में नमकीनी पैदा हो जाती थी और आप रहमतुल्लाह अलैह के गिर्या यानी रोने से हमनफ्स और नज़ारा करने वाले अस्हाब पर भी रिक़्क़त तारी हो जाती थी।

दसवीं सदी के अख़ीर में दारुल हुज़ूर को रवाना हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया। सैय्यिद बा यज़ीद के नाम से अब सिर्फ एक मज़ार मौजूद है जो नगला संगन मुत्तसिल तख़्त पहलवान में वाक़ेअ है। (बोस्ताने अख्यार, पेज53)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



क़ब्रिस्तान पच कुईयां

(141) शैख़ अबुल फ़त्ताह

राक़िमुल हुरूफ़ (सईद अहमद मरहरवी) आप रहमतुल्लाह अलैह के तारीख़ी वाक़िआत पेश करने से माज़ूर है। बहुत सी किताबों की वर्क़ गरदानी की मगर गौहरे मक़्सूद हाथ ना आया, आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िरक़े आदात और कमालात की अक्सर ज़बानी रिवायतें मशहूर हैं, जिनमें एक येह भी है कि छः सात मर्तबा आप रहमतुल्लाह अलैह ने नौजवानी के दिनों में पैदल हज अदा फ़रमाए थे।

मज़ार मुबारक आगरा के वसीअ शहरे ख़मोशाँ क़ब्रिस्तान पच कुईयां में ज़ियारत गाह ख़ास व आम और हज़ारहा लोगों को गिरवीदा किए हुए है। तावीज़ व लौहे मज़ार ख़ूबसूरत व मुनक़्क़श और चबूतरा निहायत पुर फ़ज़ा है जिसके अतराफ़ में हाफ़िज़ अब्दुल करीम साहिब मरहूम का पक्का मक़बरा हाल ही में तामीर हुआ है, तावीज़ के सीने पर कलिमए तय्यिबा, अतराफ़ में आयतुल कुर्सी और लौहे मज़ार पर येह तारीख़ लिखी हुई है:

ब तारीख़ याज़दहुम शव्वाल सन नह सद व हफ़्ताद व हश्त 978 हिजरी मरहूमी, मग़फ़ूरी अबुल फ़त्ताह इब्ने बारी सुल्तान दर आग़ाज़े जवानी अज़ीं आलमे फ़ानी ब रहमते हक़ पैवस्त।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज33.34)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(142) शैख़ अबुल फ़तह शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह शोहदा के ज़ुमरे में हैं ख्वाबगाह ख़ाकी यानी **मज़ार मुबारक** क़ब्रिस्तान पच कुईयां के गोशए जुनूबो मशरिक़ में एक खेत के दर्मियान में वाक़ेअ है, एक पक्के चबूतरे पर पाँच क़ब्रें बनी हैं, उनमें जुनूबी आख़िरी कब्र आप रहमतुल्लाह अलैह की है। लौहे मज़ार का पत्थर निहायत पाएदार व ख़ुशनुमा है जिस पर आयाते कुरआनी के नीचे येह तारीख़ लिखी हुई है:

हज़ार अफ़सोस अज़ मर्ग अबुल फ़तह
कि दानिश यक जहाँ दुर्दम फज़ूदा
ब बागे अदन अज़ दस्ते शहादत
दरे रहमत ब रुए ख़ुद कशीदा
चू चश्मश ख़िफ़्फ़त तारीख़ वफ़ातश
ब गुफ़्ता हा तफ़म मज़लूम बूदा

आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात 15 मुहर्रम, जुमेरात के दिन 1033 हिजरी को हुई। (बोस्ताने अख्यार, पेज34.35)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(143) हाफ़िज़ अहमद हुसैन नक़्शबंदी मुजद्दिदी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ मुहम्मद बख्श अकबराबादी सौदागर पंजाबी के फ़र्ज़ंदे सईद यानी बेटे हैं। बचपन ही से ख़ुदा तलबी की चिंगारी आप रहमतुल्लाह अलैह के दिल में सुलग रही थी, अक्सर रातों को जंगल में फिरते थे। और बुज़ुर्गाने अकबराबाद के मज़ारात पर निहायत ज़ौक़ो शौक़ से हाज़िर हुआ करते थे, तमीज़ की उम्र को पहुंच कर आप रहमतुल्लाह अलैह अक्सर मज़ारात पर चिल्ला कश हो कर कमालात से माला माल हुए और हाफ़िज़ वज़ीर अली अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के हल्क़ए दर्स से जो कि एक साहिबे बातिन और मज्ज़ूब सिफ़त बुज़ुर्ग थे क़ुरआन शरीफ़ के नूर से अपने सीने को मुनव्वर किया। शुरू ही से हाल में बेख़ुद थे, आख़िरे कार इनायते इलाही ने आप रहमतुल्लाह अलैह को मौलवी हाजी सैय्यिद मुहम्मद क़ुर्बान अली बुख़ारी जयपुरी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमते बा बरकत में पहुंचा दिया और पीर रौशन ज़मीर की नज़रे तवज्जोह से चंद साल ही के अंदर मंज़िले मक़्सूद पर पहुंच कर खिरकए ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ हुए।

हाजी सैय्यिद मुहम्मद क़ुर्बान अली बुख़ारी जयपुरी रहमतुल्लाह अलैह के विसाल के बाद जब उन के साहिबज़ादे सैय्यिद अब्दुर्रहमान साहिब रहमतुल्लाह अलैह ने तबर्रुकात तक़सीम किए तो सब से पहले आप रहमतुल्लाह अलैह ही को ख़िरक़ा मर्हमत फ़रमाया और तबर्रुकात तक़सीम करने के बाद हलक़ा से फ़ारिग़ हो कर इरशाद फ़रमाया कि: तमाम भाईयों को जान लेना चाहिए कि हाफ़िज़ अहमद हुसैन को ख़ुलफ़ाए आला हज़रत रहमतुल्लाह अलैह क़िब्ला में ख़ास दर्जा हासिल है।

आप रहमतुल्लाह अलैह निहायत मुन्कसिरुल मिज़ाज, सलीमुत्तबा, बा अख्लाक़ और गुमनामी पसंद बुज़ुर्ग हैं, शरीअत पर बड़े साबित क़दम और अक्सर ख़ामोश रहते थे, मुरीदों पर आप रहमतुल्लाह अलैह का निहायत

नेक असर है, कैसा ही बदकार क्यों ना हो, आप रहमतुल्लाह अलैह की गुलामी में आकर ताइब और नेको कार हो जाता है।

पहले आप रहमतुल्लाह अलैह सख़्ती के साथ किसी बुराई से मना नहीं फ़रमाते थे बल्कि साफ़ फरमा देते हैं कि जो चाहो करो और जहां चाहो जाओ मगर हमें ज़रूर साथ ले लिया करो।

राक़िम बोस्तान से बयान किया गया है कि अगर मुरीद कलाल ख़ाना या रंडी के मकान पर भी जाना चाहे तो आप रहमतुल्लाह अलैह को उस के साथ जाने में कुछ दरेग़ नहीं होता और आप रहमतुल्लाह अलैह बे तकल्लुफ़ उस के साथ चले जाते हैं मगर चंद ही दिन में मुरीद पर ऐसा नेक असर पड़ता है कि कुछ से कुछ हो जाता है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मामूल था कि नमाज़ सुब्ह अपने मुहल्ला की मस्जिद में बा जमाअत अदा फरमा कर आठ बजे तक औरादो वज़ाइफ़ से फ़ारिग़ होते थे, फिर खाना खाकर जंगल को तशरीफ़ ले जाते थे, वहां मज़ारात पर मुराक़बा में मसरूफ़ रहते थे वहां से डेढ़ दो बजे बराहे रास्त अकबरी मस्जिद में आकर ज़ुहर की नमाज़ जमाअत से पढ़ते हैं फिर अस्र तक अकबरी मस्जिद में औरादो वज़ाइफ़ में मशग़ूल रह कर अस्र की नमाज़ जमाअत से अदा फ़रमाते, अस्र की नमाज़ पढ़ने के बाद अक्सर अपने साहिबज़ादे मुहम्मद हसन साहिब या भाई हाजी अल्ताफ़ हुसैन साहिब सौदागर की दुकान पर क़ियाम फ़रमाते थे, फिर मग़रिब की नमाज़ अकबरी मस्जिद में पढ़ कर मकान पर तशरीफ़ ले जाते थे। फिर इशा की नमाज़ के वास्ते अकबरी मस्जिद में तशरीफ़ लाते थे।

अल्लाह पाक मुद्दत तक आप रहमतुल्लाह अलैह का फ़ैज़ जारी रखे। अफ़सोस कि किताब की तर्तीब के बाद हाफ़िज़ अहमद हुसैन रहमतुल्लाह अलैह ने बतारीख़ 3 शव्वाल 1331 हिजरी जुमा के दिन सफ़रे आख़िरत

इख़्तियार फ़रमाया और क़ब्रिस्तान पच कुईयां में सिपुर्दे ख़ाक किए गए यानी वहीं आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** है। लौहे मज़ार पर दो तारीख़ें लिखी हुई हैं। (बोस्ताने अख़्यार, पेज41.43)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



(144) शैख़ मुहम्मद आरिफ़

आप रहमतुल्लाह अलैह आरिफ़े ख़ुदा और तालिबाने हिदायत के रहनुमा और असरारे तरीक़त के मुश्किल कुशा थे, आलमगीर बादशाह के ज़माने में यानी 1080 हिजरी बमुताबिक़ 1669 ईस्वी में वासिल ब हक हुए यानी वफ़ात फरमा गये, **मज़ार मुबारक** क़ब्रिस्तान पच कुईयां के मशरिक़ी हिस्से में जो पक्की सड़क के मुत्तसिल है वाक़ेअ है जिसके तावीज़ पर येह तारीख़ ख़त्ते नस्तालीक़ से लिखी हुई है।

चूँ मुहम्मद आरिफ़े ग़ुफ़रां पनाह
जामए तन दर रहे हक़ बूद शक़
साले तारीख़श शुनीदम अज़ ख़िरद
आरिफ़े हक़ नेक वासिल शुद ब हक

(बोस्ताने अख्यार, पेज198)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



(145) मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह मवाशी, साहिबे विलायत इलाहाबाद के मंज़ूरे नज़र और तेरहवीं सदी के एक साहिबे कमाल और शमशीरे बरहना मज्ज़ूब थे, हकीम नूरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के दीवानख़ाना और उस के क़ुरबो जवार में जो कि तमाम मज्ज़ूबाने आगरा का दारुल करार चला आता है अक्सर आमदो रफ़्त रखा करते थे, मकान मुहल्ला डयोढ़ी बेगम माईथान में था।

आप रहमतुल्लाह अलैह की बात तक़दीरे इलाही का नुस्ख़ा और आप रहमतुल्लाह अलैह की मंशा मशीय्यते इलाही का नविश्ता होता था। ज़्यादा तर बुरी बातें आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़बान से निकला करती थीं जिन का ज़हूर फ़ौरन होता था, एक मर्तबा एक मज्ज़ूब ज़ुल करनैन नामी दीवानख़ाना में ठहरा हुआ था, उस का एक मन्का इत्तिफ़ाक़ से गुम हो गया, लोगों ने आप रहमतुल्लाह अलैह की तरफ़ इशारा कर दिया, फिर क्या था, दोनों मज्ज़ूबों में जंग छिड़ गई, वो मन्का आप रहमतुल्लाह अलैह से मांगता था, आप रहमतुल्लाह अलैह इन्कार करते थे कि मैंने नहीं लिया, जब वो किसी तरह ना माना तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने ग़ुस्सा में आ कर उस का प्याला उठा कर तोड़ दिया, प्याला का टूटना ज़ुल क़रनैन की सिकंदरी का ख़त्म होना था, फ़ौरन ज़मीन पर गिरा और गिरते ही जां बहक़ तस्लीम हो गया यानी इंतिकाल कर गया।

अय्यामे ग़दर यानी 1957 की जंगे आज़ादी में जिस दिन बहादुर शाह ज़फ़र दिल्ली में गिरफ़्तार हुआ आप रहमतुल्लाह अलैह ने उसी दिन बल्कि उसी वक़्त अपनी रुहानी तार बर्क़ी लोगों को सुना दी थी, इस किस्म की सैकड़ों हज़ारों करामतें आप रहमतुल्लाह अलैह की मशहूर हैं।

ग़ैर मुस्लिम और मुसलमान सब आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक़िद और जान निसार थे। 15 ज़िलकादा 1277 हिजरी, इतवार के दिन एक सौ पाँच बरस की उम्र में आप रहमतुल्लाह अलैह ने सफ़रे आख़िरत इख्तियार फ़रमाया यानी विसाल फरमा गये।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** क़ब्रिस्तान पच कुईयां (मुत्तसिल नाई मंडी) के शुमाली हिस्से में पक्की सड़क के क़रीब वाक़ेअ है जिस के लौहे मज़ार पर अरबी, फ़ारसी, उर्दू की तारीखें लिखी हुई है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज209.210)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



(146) मुफ़्ती हाफ़िज़ मुहम्मद रमज़ान

आप रहमतुल्लाह अलैह का असली वतन क़स्बा लेदरी ख़तीब ज़िला फ़तेहपुर हंसवा था, वालिदे माजिद का नाम मौलवी बीर अली बेग था, मौलाना अब्दुल हैय्य लखनवी के शागिर्द और मौलाना सलामतुल्लाह साहिब रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद थे।

रस्मी उलूम के आलिम, ख़ुश इल्हान हाफ़िज़ और क़ारी थे, जामा मस्जिद आगरा के मुफ़्ती और एक बुज़ुर्ग हस्ती थे, हर अदना और आला से अख्लाक़ के साथ पेश आते और हत्तल मक़दूर किसी की दिल शिकनी गवारा ना करते थे।

66 बरस की उम्र में 6 रबीउल अव्वल 1334 हिजरी को ब वक़्त 7:30 बजे शाम इंतिक़ाल फ़रमाया और दूसरे दिन दोपहर के क़रीब क़ब्रिस्तान पंच कुईयां में दफ़न किए गए, नमाज़े जनाज़ा में शहर के तमाम मोअज़्ज़िज़ीन और बहुत कसरत से आदमी शरीक थे जिससे इल्मी शानो शौकत का ख़ास जलवा नज़र आता था।(बोस्ताने अख्यार, पेज255)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(147) मौलाना मुहम्मद सिराजुल इस्लाम

आप रहमतुल्लाह अलैह का असली वतन मौज़ा रसूलाबाद परगना ताल ग्राम ज़िला फर्रुखाबाद था, आप रहमतुल्लाह अलैह एक शरीफ़ और मुअज़्ज़ज़ ख़ानदान के फ़र्द थे जिसमें सदीयों से इल्म व फ़ज़्ल का चर्चा और ओहदा क़ज़ा का सिल्सिला चला आता है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के भाई मौलाना मुहम्मद क़मरुल इस्लाम सदर दीवानी आगरा (हाइकोर्ट) के सरिश्ता अपील दोम में अहलकार और ऐसे बा बरकत और मुतदय्यिन यानी दियानत दार बुज़ुर्ग थे कि हुक्कामे ज़िला ने इन को शाही जामा मस्जिद आगरा का मुतावल्ली मुक़र्रर कर दिया था।

जब ग़दर यानी 1857 ईस्वी की जंगे आज़ादी में जामा मस्जिद को मुअत्तल कर के मुक़फ़्फ़ल कर दी गई यानी ताला लगा दिया गया तो इस पर आशोब ज़माने में इसी बा हिम्मत बुज़ुर्ग ने कमरे हिम्मत बाँधी और 25 अगस्त 1857 ईस्वी से मस्जिद को खुलवाने की कोशिश शुरू की और सात आठ बरस की मुसलसल कोशिश और लगातार मेहनत से मई 1864 ईस्वी में मस्जिद को खुलवा लिया।

जब तक सदर दीवानी का दफ़्तर आगरा में रहा वो जामा मस्जिद के मुतवल्ली और इमाम रहे, इनके इलाहाबाद तशरीफ़ ले जाने पर मस्जिद की तौलियत मौजूदा कमेटी अहले इस्लाम के सिपुर्द की गई। मौलाना कमरुल इस्लाम ने ब मुकाम इलाहाबाद इंतिक़ाल फ़रमाया और वहीं दफ़न हुए।

मौलाना मुहम्मद सिराजुल इस्लाम रहमतुल्लाह अलैह अपने भाई के साथ आगरा तशरीफ़ लाए और उनके इलाहाबाद जाने पर जामा मस्जिद के इमाम मुक़र्रर किए गए, आप रहमतुल्लाह अलैह ने ज़ाहिरी और बातिनी दोनों तरह के उलूम हासिल किये थे, क़ादरिया और नक़्शबंदिया सिल्सिला में

मुंसलिक और हज़रत सुब्हान शाह पीली भीति रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा थे।

राक़िमे बोस्ताने अख्यार को आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ियारत का शर्फ़ हासिल हुआ था, ख़ुत्बा और क़ुरआने मजीद निहायत ख़ुश इल्हानी और इस क़द्र बुलंद आवाज़ से पढ़ते थे कि तमाम मस्जिद गूंज उठती थी।

28 रजब 1316 हिज्री को आप रहमतुल्लाह अलैह ने इंतिक़ाल फ़रमाया और क़ब्रिस्तान पंच कुईयां में आसूदा हैं यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मौजूद है।

मौलाना ज़ियाउल इस्लाम साहिब आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिब ज़ादे आप रहमतुल्लाह अलैह के जांनशीन, जामा मस्जिद आगरा के इमाम और मदरसा आलिया जामा मस्जिद के नाज़िम हैं। आप पुराने बुज़ुर्गों का नमूना हैं, क़ुदरत ने आप में बहुत सी फ़ज़ीलतें जमा कर दी हैं।

(बोस्ताने अख्यार, पेज256)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(148) उस्माने गनी मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह एक साहिबे कमाल मज्ज़ूब थे। दिल के ग़नी और उस्माने ग़नी के नाम से मौसूम थे और लाट साहिब की घोड़ी के लक़ब से मशहूर थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के उलटे पांव में लंग था अजीबो ग़रीब और मुख़्तलिफ़ हालतें आप रहमतुल्लाह अलैह पर तारी हुआ करती थीं, कभी कभी जज़्बे का ऐसा सैलाब आता था कि होशो हवास को बहा कर आप रहमतुल्लाह अलैह को नंगा कर देता था, कभी नमाज़ का ख़्याल आ गया तो तमाम तमाम रात एक पांव से नीयत बाँधे खड़े रह कर गुज़ार दी। जिधर ध्यान आ गया उधर मुँह कर के खड़े हो गए और मज्ज़ूबी की हालत के साथ नमाज़ पढ़ने लगे।

अगरचे बोस्ताने अख़्यार के तख़्तहाए चमन तंग हैं मगर आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़िरक़े आदात और करामात के किसी क़द्र हालात से उन को पुर बहार करता हूँ।

येह हालात मिन जुमला उन सैकड़ों वाक़िआत के हैं जो फ़ाज़िले अजल और आलिमे बा अमल जनाब मौलवी मुहम्मद सआदतुल्लाह साहिब संभली ने राक़िम बोस्तान से अपने चश्मदीद बयान फ़रमाए। उस्माने गनी मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह को मौलवी सआदतुल्लाह साहिब से निहायत उन्स था, उस्माने गनी मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह दो तीन बरस तक आप के मकान पर मुक़ीम रहे थे। एक मर्तबा सर्दी के दिनों में जबकि मौलवी साहब मकान के अंदर कमरे में दरवाज़ा बंद किए हुए इस्तिराहत यानी आराम करने में मसरूफ़ थे। रात के दो बजे उस्माने गनी मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह ने दरवाज़े पर आकर आवाज़ दी। दरवाज़ा बंद था अंदर तक आवाज़ पहुंची यकायक मौलवी साहब को मालूम हुआ कि कमरा के अंदर मज्ज़ूब साहिब हू ब हू के नारे मार रहे हैं, फ़ौरन आँख खुल गई।

कमरे को ख़ाली पाया मगर दस्तक की आवाज़ सुनी, उठ कर दरवाज़ा खोला, जब आप रहमतुल्लाह अलैह अंदर आए तो पूछा कि हज़रत येह क्या भेद था ? जवाब दिया कि तुझे आवाज़ देते देते थक गए जब इस तरह ना उठा तो हमने दूसरी तरह उठा दिया।

एक दफ़ा मौलवी साहब रात के वक़्त आराम फरमा रहे थे कि पलंग के पास आकर आप को जगाया। मौलवी साहब ने आँख खोल कर देखा कि एक काला साँप हाथ में है जिसे मज्ज़ूब साहिब रहमतुल्लाह अलैह दर्मियान से पकड़े हुए हैं, बोले कि मैं बावर्ची ख़ाना में जाकर लेटा। वहां एक सुराख़ है उस में पांव का अँगूठा लगा लिया था, येह हज़रत (यानी साँप) अंगूठे से ख़ुश फ़ेलियाँ करने लगे। जब किसी तरह सोने ना दिया तो मैं भी उठकर बैठ गया और उन्हें, हाथ में लेकर खेलने लगा।

एक मर्तबा ज़िंदा साँप कहीं से पकड़ लाए और गाजर मूली की तरह टुकड़े टुकड़े कर के सर के साथ खा गए।

एक दिन हाथों में कांच की चूड़ियां पहने हुए थे। यकायक पत्थर से तमाम चूड़ियां तोड़ डालीं और सिल पर ख़ूब बारीक पीस कर कटोरे में पानी डाल कर शर्बत की तरह पी गए, जो दरदरा हिस्सा बाक़ी रहा उसे आँखों में सुर्मा की तरह लगा लिया मगर किसी किस्म का असर ना महसूस हुआ।

एक दफ़ा भंग लाकर उसे प्याले में भिगो दिया, तीन दिन तक वो भीगी रही, चौथे दिन किसी तक़रीब यानी दावत से मौलवी साहब के घर एक बकरा ज़िबह हुआ जिस क़द्र उस का ख़ून निकला वो लेकर उसी प्याले में डाल दिया और बाज़ार से दही लाकर मिलाया और सब नोश यानी पी गए। इत्तिफ़ाक़ से एक डाक्टर साहिब उस वक़्त मौजूद थे बोले कि येह शख़्स ज़्यादा से ज़्यादा दो तीन घंटे में मर जाये गा मगर आप

रहमतुल्लाह अलैह पर किसी किस्म का असर पैदा ना हुआ। सेंदावर अक्सर फ़ाका करते थे मगर कुछ नुक़्सान ना करना था।

मौलवी साहब का बयान है कि आप रहमतुल्लाह अलैह में करामाती शान मौजूद थी मुश्किल से मुश्किल मसाइल महेज़ ख़्याल आने पर आप रहमतुल्लाह अलैह के शिगुफ़्ता दीदार को देखकर हल हो जाते थे, अगरचे तसव्वुफ़ के हक़ाइक़ व असरार के बयान में वो गुरेज़ करते थे यानी बयान करने से बचते थे मगर दो एक मर्तबा निहायत मेहरबानी के आलम में जब इसरार किया गया तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने निहायत दिलचस्प व दिलकश पैराये में हक़ाइक़ व मारिफ़त के दरिया बहा दिए। हालाँकि उन की सूरतो शक्ल से इस किस्म की क़ाबिलियत का किसी तरह गुमान व ख़्याल भी ना हो सकता था।

वफ़ात से चंद दिन पहले मकान पर तशरीफ़ लाए और बोले कि तुझ से मिलने को बहुत दिल होता था, मिलने को आए हैं, अब हम अपने असली मकान को जाते हैं, वो मकान सूना पड़ा है, उस वक़्त आप रहमतुल्लाह अलैह मर्ज़ इस्तिस्क़ा में मुब्तला थे, थोड़ी देर क़ियाम फ़रमा कर वापस गए। दो तीन दिन बाद मौलवी साहब मंटोला में जहां आप रहमतुल्लाह अलैह मर्ज़ की हालत में मुक़ीम थे इयादत के वास्ते तशरीफ़ ले गए और मिज़ाज पुर्सी की तो फ़रमाया कि अभी कुछ देर है, इल्तिजा की कि मकान पर तशरीफ़ ले चलिए, जवाब दिया कि जी तो यही चाहता है, क्या अच्छा होता कि इस हालत में मैं तेरे मकान पर होता।

एक लड़की, पैर दबाती, दूसरी कलाम मजीद सुनाती। मगर इस हालत में कैसे जा सकता हूँ, ग़र्ज़ कि दो तीन दिन बाद शव्वाल 1329 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह सराए फ़ानी से वतने जावेदानी को रेहलत फरमा गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

ख़्वाबगाह यानी **मज़ार मुबारक** क़ब्रिस्तान पच कुईयां मुत्तसिल नाई मंडी में है।

मौलवी साहब के इलावा बशीरुद्दीन साहिब घड़ी साज़ कनारी बाज़ार ने भी आप रहमतुल्लाह अलैह की बहुत सी चश्मदीद यानी आँखों देखी करामात बयान किया है। रोज़ाना शाम के वक़्त दो तीन घंटा वो बशीरुद्दीन साहिब की दूकान पर बैठा करते थे और उन पर बहुत मेहरबान थे। (बोस्ताने अख्यार, पेज119.122)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

शाहगंज

(149) शैख़ अबू बक्र क़ुरैशी

सुल्तान सिकन्दर लोदी की इल्म दोस्ती और कमाल पर्वरी की कशिश ने शैख़ अबू बक्र क़ुरैशी रहमतुल्लाह अलैह को अपने वतन से आगरा में खींच लिया था, रस्मी उलूम में तबह्हुर यानी कमाल हासिल और ख़ुदा शनासी की आँखें रौशन थीं।

मनक़ूल है कि एक रात को हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुलाज़िमत आप रहमतुल्लाह अलैह को नसीब हुई, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इरशाद हुआ कि जाओ वो ज़मीन जिसमें असा गाढ़ा गया है तुम्हें मर्हमत हुई। उस में एक कुँआं खुदवाओ। सुब्ह को आप रहमतुल्लाह अलैह उस मक़ाम पर जो ख्वाब में बताया गया था पहुंचे तो असा के नोक के बराबर उस जगह को नमनाक यानी गीला पाया। आप रहमतुल्लाह अलैह ने निहायत कोशिशो मेहनत से उस जगह कुँआं खोदा जिसमें निहायत शीरीं और ख़ुशगवार पानी निकला, ख़ुदा मालूम येह मुक़द्दसो बरतर कुँआं कौन सा है यानी उस कुँवें का पता ना चल सका।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने वसाया इमाम मुहम्मद और उसूले बज़्दवी पर एक नुक्ता आरा शरह लिखी थी, हरमैन शरीफ़ैन के सफ़र के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह जोगी पुरा में दफ़न किए गए।

राक़िमे बोस्तान **मज़ार मुबारक** की तलाश में जोगी पुरा गया जो मुहल्ला शाहगंज से एक मील के फ़ासिले पर एक मौज़ा है, बावजूद बहुत तलाश करने के मज़ार का सही पता तो ना चला मगर गुमान ग़ालिब है कि आप रहमतुल्लाह अलैह की आख़िरी आराम गाह वही है जो आबादी मौज़ा से मग़रिब यानी पच्छिम की जानिब थोड़े फ़ासिले पर और फ़तेहपुर सीकरी

की पक्की सड़क से जुनूब यानी दख्खिन को मील नंबर 3 और 4 के बीच वाक़ेअ है।

खेतों के दर्मियान में एक मुख़्तसर सा हिस्सा छूटा हुआ है जो डोरे से घिरा हुआ है। दर्मियान में एक बुलंद कच्चे चबूतरे पर कच्ची क़ब्र बनी है जिस का लौहे मज़ार पुख़्ता यानी पक्का है, नीम के चार पुराने दरख़्त हैं जिनसे पुराने होने के आसार नुमायां हैं और वो दरख़्त मज़ार पर साया अफ़गन हैं, क़ुरबो जवार के ख़ुश ऐतिक़ाद देहातियों ने चंद दरख़्त बेले और गेंदे के लगा रखे हैं, ग़र्ज़ कि बावजूद सादगी दिलकश मक़ाम है, गांव वालों की ज़बानी मालूम हुआ कि अक्सर जुमेरात को यहां बाहर के लोग भी हाज़िर हुआ करते है। (बोस्ताने अख्यार, पेज39.40)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

सुल्तान पुरा, काछी पुरा

(150) मिर्ज़ा अबू तुराब

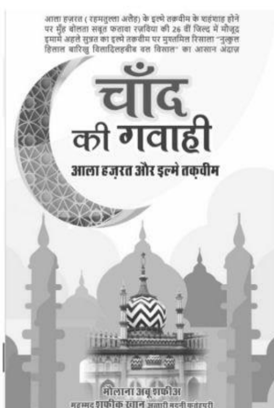
आप रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक्रे ख़ैर किसी किताब में नज़र से नहीं गुज़रा। मुहल्ला सुल्तान पुरा के क़रीब काछी पुरा नाम का एक गांव है इस से मुत्तसिल आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** वाक़ेअ है जिस से क़ुरबो जवार के लोग ख़ास अक़ीदत रखते हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह का नामे नामी और तारीख़े वफ़ात 4, रबीउस्सानी,1063 हिजरी मज़ार पर लिखा हुआ है।

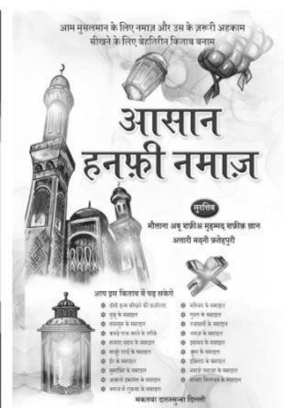
(बोस्ताने अख़्यार, पेज36)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।







नूरी दरवाज़ा

(151) हाफ़िज़ अहमद

आप रहमतुल्लाह अलैह हाफ़िज़े क़ुरआन और अकबराबाद के नेक लोगों में से हैं, मुहल्ला नूरी दरवाज़ा में आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मस्जिद के क़रीब वाक़ेअ है जिसके दालान पर येह इबारत लिखी हुई है: हाफ़िज़ अहमद वक़्फ़ कर्द याज़दह दर काकीन दद्दू क़ित्आ बाग़ सी बीगा हुसूल आन जिहत ख़र्च मस्जिद व मजलिस फ़ुक़रा। 1151हिजरी। (बोस्ताने अख्यार, पेज40.41)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(152) क़ारी हाफ़िज़ जाफ़र अली

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के एक साहिबे तक़्वा और निहायत नेक और बाबरकत बुज़ुर्ग थे मुहल्ला नूरी दरवाज़ा आप रहमतुल्लाह अलैह का मस्कन था, जहां अब तक आप रहमतुल्लाह अलैह की औलाद आबाद है, मौलवी मुहम्मद अमीनुद्दीन साहिब फ़ारूक़ी वकील आगरा ने आप रहमतुल्लाह अलैह के बहुत से औसाफ़े हमीदा और अख़्लाक़े पसंदीदा बयान फ़रमाए हैं।

क़िराअत और क़ुरआन ख़्वानी में कमाल हासिल था, अज़ान इस ख़ुश इल्हानी से देते थे कि तेरहवीं सदी के बिलाल समझे जाते थे, अक्सर लोग जिन्होंने लड़कपन में आप रहमतुल्लाह अलैह की अज़ान को सुना है बयान करते हैं कि जुमा के दिन जबकि आप रहमतुल्लाह अलैह जामा मस्जिद में अज़ान दिया करते थे बहुत से लोग महेज़ आप रहमतुल्लाह अलैह की अज़ान सुनने के वास्ते पहले से आकर इंतिज़ार में बैठ जाते थे, जिस वक़्त आप रहमतुल्लाह अलैह अज़ान देते सब पर एक वज्द की हालत तारी हो जाती थी।

(बोस्ताने अख्यार, पेज63)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

रनथबनोर

(153) अमीर सैय्यिद इस्माईल क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अब्दाल क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे अर्जुमंद यानी बेटे हैं, सिल्सिलए नसब हज़रते शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ इब्ने ग़ौसे आज़म हज़रते शैख़ मुहीय्युद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह तक पहुंचता है।

आगरा के औलियाए ईज़ाम और मशाईख़ीने किराम में मुमताज़ थे, आगरा के इलाक़े में सिल्सिलए क़ादरिया का रिवाज आप रहमतुल्लाह अलैह ही की ज़ाते बाबरकात से हुआ ।अपने वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह से खिरकए ख़िलाफ़त हासिल करके आगरा तशरीफ़ लाए और यहीं की सुकूनत इख्तियार फ़रमाई, शैख़ अमानुल्लाह पानी पती रहमतुल्लाह अलैह और शैख़ मुहम्मद हसन ख़्याली आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक़िद और शैख़ यूसुफ़ तमीमी अंसारी अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा और दामाद थे, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** 'रनथबनोर' है। (बोस्ताने अख्यार, पेज45)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

रेलवे आगरा छावनी

(154) आग़र ख़ां शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह का अस्ल नाम पीर मुहम्मद और ख़िताब क़ौमीयत की मुनासबत से आग़र ख़ां था, औरंगजेब आलमगीर के ज़माने के निहायत बहादुर व शेर दिल अमीर कबीर थे जो 1102 हिजरी बमुताबिक़ 1690 ईस्वी में हस्बतुल्लाह सादात की हिमायत में शहीद हुए।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुत्तसिल रेलवे स्टेशन आगरा छावनी (आगरा रोड) एक चबूतरे पर वाक़ेअ है जिस पर नीम के तीन चार दरख़्त साया किए हुए हैं, लौहे मज़ार पर एक तरफ़ आयतुल कुर्सी और दूसरी तरफ़ एक इबारत लिखी हुई है जिस का तर्जमा येह है :

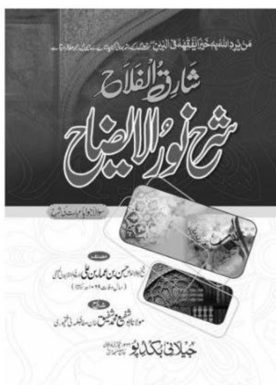
तर्जमा: सन 1102 हिज्री में खान गुफरान निशान, नवाब आग़र ख़ान, सूबा काबुल से बादशाह आलमगीर के फ़रमान के तहत हिन्दुस्तान रवाना हुए और सराये जाजू पहुंचे। इस से दो रोज़ पहले हज के लिए जाने वाले सादात के क़ाफ़िले को दुश्मने इस्लाम ने लूट लिया था और उन्हें क़ैद कर लिया था, चूँकि येह दीनदार ग़ाज़ी दीने सैय्यिद मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तक़वियत में मसरूफ़ रहते थे, इस लिए सवारी करके निकले, उन दुश्मने इस्लाम के गांव को जिला दिया, बहुत से दुश्मने इस्लाम को जहन्नम वासिल किया और मुसलमान क़ैदियों को आज़ाद कराया, यूं सवाबे ग़ज़वा हासिल किया, फिर मर्तबए शहादत जो सबसे बुलंद मक़ाम है, उस की जुस्तजू में अपनी आरज़ू को शहादत की शीरीं शराब से कामयाब बनाया, सन 1119 हिज्री में, मैं हक़ीर बंदए मुग़ल, जिसे वालिदे मुहतरम के ख़िताब मौरिसी से याद किया जाता है, ने येह लौह यादगार अपने दस्तख़त से तहरीर की।

उस चबूतरे पर दो मज़ार हैं एक आग़र ख़ां शहीद रहमतुल्लाह अलैह का और दूसरा मज़ार मीरज़ा अशूर बेग शहीद का है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज49.50)

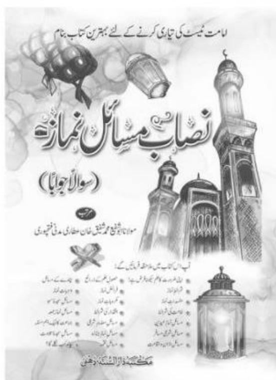
मौजूदा हालत 2025

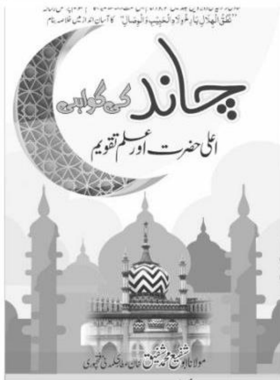
आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

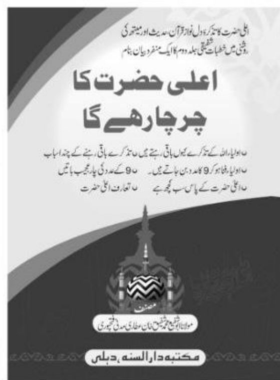












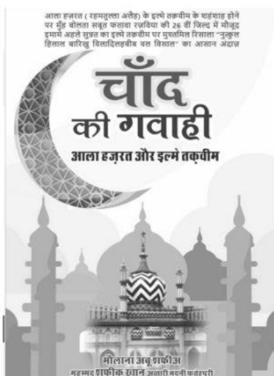
कटरा नंद राम

(155) शैख़ ख़लील

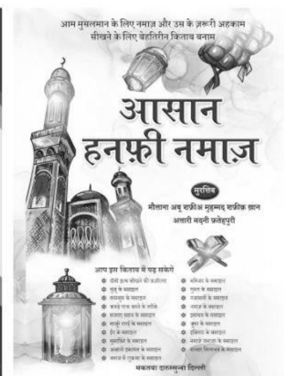
आप रहमतुल्लाह अलैह शाह अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह और शाह फ़खरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के हम असर यानी ज़माने के हैं और निहायत आबिदो ज़ाहिद बुज़ुर्ग थे, **मज़ार मुबारक** कटरा नंद राम, पक्की सड़क के किनारे वाक़ेअ है, सुल्तान शेर शाह सूरी को आप रहमतुल्लाह अलैह से ख़ास अक़ीदत थी। (बोस्ताने अख़्यार, पेज74)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।







कंधारी (खंदारी)

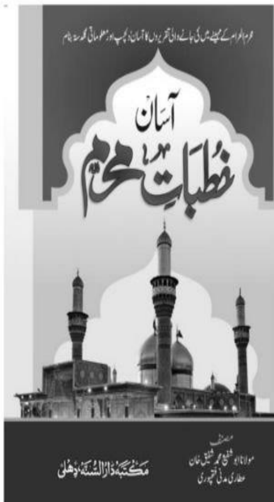
(156) शैख़ अब्दुल्लाह चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद के पुराने बुज़ुर्गों में से हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह के हालात किसी किताब में नज़र से नहीं गुज़रे। **मज़ार मुबारक** पक्की सड़क के किनारे मुत्तसिल कंधारी एक हुजरे के अंदर वाक़ेअ और निहायत बा फ़ैज़ और दिलचस्प मक़ाम है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज101)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।







सिकंदरा और रुंकता के दर्मियान

(157) शाह फ़तह अली

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के मुताअख़्ख़िरीन बुज़ुर्गों में से हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह के हालात ला इल्मी के पर्दा में हैं। **मज़ार मुबारक** सिकंदरा और रुंकता के बीच में पक्की सड़क के किनारे वाक़ेअ है, सल्लू शाह मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह आप ही के मुरीद थे।(बोस्ताने अख़्यार, पेज133)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(158) शैख़ अब्दुल हकीम

आप रहमतुल्लाह अलैह हिन्दुस्तान के उन बा कमाल बुज़ुर्गों में से हैं जिन्होंने इशाअते इस्लाम पर कमर बांध कर हिन्दुस्तान के ज़ुल्मात में **"अल्लाहु नूरुस्समावाति वल अर्द"** (तर्जुमा: अल्लाह ही के नूर से आसमान और ज़मीन की रौशनी है) का बर्क़ी नूरानी लैम्प रौशन किया, कभी आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा में क़दम नहीं रखा, तमाम उम्र उसी जगह जहां आप का मज़ार वाकेअ है क़ियाम फरमा कर लोगों को सीधे रास्ते पर चलाते रहे।

एक मर्तबा एक नौजवान ने आप रहमतुल्लाह अलैह की रहनुमाई से सिराते मुस्तक़ीम पर क़दम रखा और शर्फ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ हो कर आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में रहने लगा। उस के अज़ीज़ों ने अकबर बादशाह के दरबार में हाज़िर हो कर शिकायत की कि फ़ुलां दरवेश ने हमारे अज़ीज़ को ज़बरदस्ती अपने रंग में रंग लिया है। अकबर बादशाह के दरबार से आप रहमतुल्लाह अलैह के दरबार में हाज़िर होने का हुक्म सादिर हुआ, अभी अहकाम जारी ना हुए थे कि आप रहमतुल्लाह अलैह को कश्फ़ो इल्हाम से येह हाल मालूम हो गया, उस वक़्त आगरा की तरफ़ रवाना हुए। जब शहर के किनारे यानी चहार सू दरवाज़ा पर पहुंचे तो जज़्बए इलाही से बे खुद हो कर निहायत ज़ोर से **"इल्लल्लाहु"** का नारा मारा, उस नारा की आवाज़ सुनते ही जिस क़द्र लोग उस जगह मौजूद थे बे इख़्तियार हो कर आप रहमतुल्लाह अलैह के पास जमा हो गए और इसरार करने लगे कि हमें अपने रंग में रंग लीजिए।

इसी अर्से में इत्तिफ़ाक़ से बादशाह की सवारी उधर से गुज़री और येह जमाव देख कर हाल पूछा, जब येह हाल मालूम हुआ तो दरबार में हाज़िर होने का हुक्म मंसूख़ करके उसी जगह आप रहमतुल्लाह अलैह को

रुख़स्त फ़रमाया, हर चंद अकबर बादशाह ने इसरार किया मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ने कोई जागीर या रोज़ीना क़बूल नहीं फ़रमाया।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मथुरा की सड़क पर सिकंदरा से कुछ आगे वाक़ेअ है, एक शाबान को आप रहमतुल्लाह अलैह का उर्स होता है। शहर के तमाम तकियादार फ़क़ीर सवा सवा सेर हर आदमी मुख़्तलिफ़ खाने पका कर ले जाते हैं और यकजा करके फ़ातिहा के बाद तक़सीम करते हैं, येह अजीब बात है कि इस में से चंद हिस्सा कव्वों के वास्ते अलैहिदा कर के रख दिए जाते हैं, जिनके खाने के वास्ते बहुत से कव्वे जमा हो जाते हैं, येह सिल्सिला एक करामत की यादगार में चला आता है। शाह मुश्ताक़ रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़ास मुरीदों में थे। (बोस्ताने अख़्यार, पेज111.112)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



(159) शाह मुश्ताक़

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ अब्दुल हकीम रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और आगरा के पुराने बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** सिकंदरा के रास्ते में पक्की सड़क के किनारे पर वाक़ेअ है, आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार की वजह से इस मक़ाम पर सड़क को ख़म यानी मोड़ दिया गया है। (बोस्ताने अख्यार, पेज210)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

पड़ाओ काली पल्टन

(160) मीर दुस्तम ख़ां शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर रुस्तम ख़ां तुर्किस्तानी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे और अकबर बादशाह के मंज़ूरे नज़र, तीन हज़ार लश्कर के अमीर थे, 990 हिजरी में जबकि सूबा अजमेर की हुकूमत पर सरफ़राज़ थे शाही हुक्म के मुताबिक़ उचला, मोहन, सूरदास, तलौकसी, राजा भारामल कच्छवाहा जो कि जयपुर का वाली था की सरकूबी पर मामूर हुए और इसी लड़ाई में उचला के बरछे से ज़ख्म खा कर शहीद हुए। आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** पड़ाव काली पल्टन के क़रीब मुत्तसिल पक्की सड़क एक चबूतरे पर वाक़ेअ है, मज़ार के तावीज़ पर तारीख़ लिखी हुई है।

फ़ौत दुस्तम के हुरूफ़ के आदाद 990 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल का हिज्री साल है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिद माजिद मीर रुस्तम रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार भी इसी चबूतरा पर है और उस पर भी इबारत लिखी हुई है।

रुस्तम बआलम नमान्द के हुरूफ़ के आदाद 988 बनते हैं और यही आप यानी मीर रुस्तम रहमतुल्लाह अलैह के विसाल का हिज्री साल है।

इन दोनों बुज़ुर्ग के इलावा तीन मज़ार इस चबूतरे पर और हैं जिनमें एक बीबी "नजिया बेगी" मीर दुस्तम रहमतुल्लाह अलैह की वालिदा माजिदा और मीर रुस्तम की अहलिया का है। (बोस्ताने अख्यार, पेज75)

मौजूदा हालत 2025

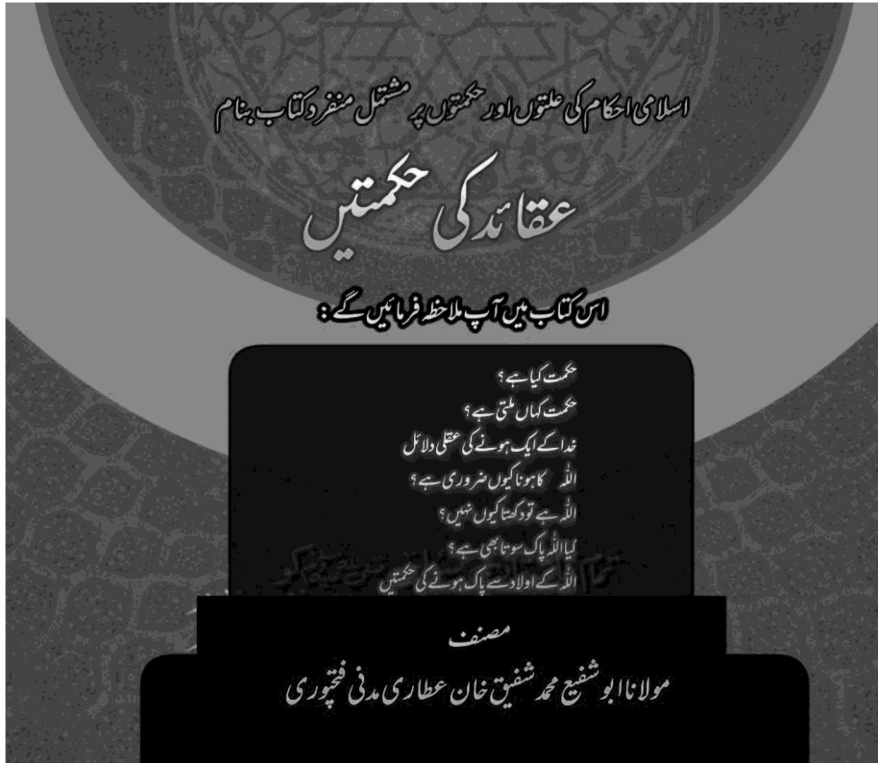
आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो

सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए।

Like Share & Subscribe Channel





मौज़ा मऊ के सिवाना

(161) शैख़ मुबारक क़ुरैशी

आप शैख़ ख़िज्र नागौरी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, आपके पाँचवे दादा शैख़ मूसा रहमतुल्लाह अलैह 800 हिजरी में यमन से तर्के सुकूनत कर के सीस्तान के क़स्बा रेल में आबाद हो गए थे, एक सौ साल तक उन की औलाद उस क़स्बे में आबाद रही। दसवीं सदी हिज्री के शुरू में उन के पर पोते शैख़ ख़िज्र ने इरादा किया कि हिन्दुस्तान के बुज़ुर्गों और सूफ़ियों की ज़ियारत करते हुए अपने असली वतन यमन की सैर करें, इस इरादा से वो अपने चंद अका़रिब और दोस्तों के साथ हिन्दुस्तान में तशरीफ़ लाए और मुख़्तलिफ़ शहरों में आरिफ़ाने ख़ुदा से मिलते मिलाते क़स्बा नागौर में वारिद हुए। यहां सैय्यिद यहया बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह जो मख्दूम जहानियां रहमतुल्लाह अलैह के जांनशीन थे और शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ क़ादरी बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह और शैख़ यूसुफ़ सिंधी रहमतुल्लाह अलैह की ज़ियारत का फख्र हासिल हुआ और उन तीनों बुज़ुर्गांने बा कमाल की मुहब्बतो अक़ीदत तमाम ख़्यालात को बालाए ताक़ रख कर नागौर में सुकूनत का बाइस हुई, यहीं 911 हिजरी में शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह ने दुनिया में क़दम रखा यानी पैदा हुए।

चार बरस की उम्र से आप रहमतुल्लाह अलैह की तालीम शुरू हुई चूँकि निहायत ज़हीन थे, 14 बरस की उम्र में उलूमे मुतादावला की तहसील से फ़ारिग़ हो गए।

इब्तिदा में शैख़ मुबाक रहमतुल्लाह अलैह को शैख़ फ़य्याज़ी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में निहायत अक़ीदत थी और आलमे नौजवानी ही में दुनिया की सैर करने का ख्याल दिल में मौजें मार रहा था, चुनांचे आप

रहमतुल्लाह अलैह ने शैख़ फ़य्याज़ी रहमतुल्लाह अलैह से इस की इजाज़त चाही लेकिन शैख़ फ़य्याज़ी रहमतुल्लाह अलैह ने उस वक़्त आप रहमतुल्लाह अलैह को इस इरादा से बाज़ रखा।

शैख़ फ़य्याज़ी रहमतुल्लाह अलैह और उनके जांनशीन शैख़ अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात के बाद शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह ने नागौर से बाहर क़दम रखा और अहमदाबाद गुजरात में पहुंचे जो उस वक़्त उलमा, फ़ुज़ला की बरकत से उलूम व फ़नून का गढ़ बना हुआ था और ख़तीब अबुल फ़ज़्ल गाज़रोनी रहमतुल्लाह अलैह और मौलाना इमाद लारी रहमतुल्लाह अलैह वग़ैरा से जुमला उलूम व फ़नून में इज्तिहाद का दर्जा हासिल किया और शैख़ उमर तीतवी रहमतुल्लाह अलैह और शैख़ यूसुफ़ रहमतुल्लाह अलैह वग़ैरा बहुत से मशाईख़ीने किबार की मुलाज़िमत से ख़ुदा शनासी की आँखें रौशन कीं और सिल्सिलए शत्तारिया, तैफ़ूरिया, चिश्तिया और सोहर्वर्दिया में इजाज़त हासिल की।

जब कमालाते दीनी व दुन्यवी का काफ़ी ज़ख़ीरा मुहय्या कर लिया तो शैख़ यूसुफ़ रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से आगरा का रुख किया 39 बरस की उम्र में 6 मुहर्रम 950 हिजरी को बुध के दिन सर ज़मीने आगरा में क़दम रख कर सब से पहले शैख़ अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुए, शैख़ अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह ने अपने उस फरमान से जिसका बयान शैख़ अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह के ज़िक्रे ख़ैर में हो चुका है, शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह को बिशारत दी कि फरमाने इलाही येह है कि तुम इस शहर में क़ियाम करो।

ग़र्ज़ेकि शैख़ अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म के मुताबिक़ आप रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा में सबसे पहले मीर रफ़ीउद्दीन सफवी मुहद्दिस अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाहे आली में जो कि

उलमा, फुज़ला का मुसाफ़िर ख़ाना था, क़ियाम फ़रमाया, कुछ दिन बाद शैख़ चंदन क़ुरैशी रहमतुल्लाह अलैह की दुख्तर नेक अख्तर यानी बेटी से शादी कर के दरिया के किनारे मीर रफ़ीउद्दीन सफवी रहमतुल्लाह अलैह के मुहल्ले में सुकूनत इख्तियार की।

मीर रफ़ीउद्दीन सफवी रहमतुल्लाह अलैह अपनी ज़िंदगी भर आप रहमतुल्लाह अलैह की हर किस्म की मदद फ़रमाते रहे, जब मीर रफ़ीउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने इंतिक़ाल फ़रमाया तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने गोशे तवक्कुल में बैठ कर दर्सो तदरीस का सिल्सिला जारी किया, कामिल पच्चास बरस उलूमे दीनी व दुन्यवी के दर्स में मशग़ूल रहे और सैंकड़ों हज़ारों मख्लूक़े ख़ुदा को अपने इल्म व फ़ज़्ल से सैराब किया।

चूँकि आप रहमतुल्लाह अलैह हनफ़ी, शाफ़ेई, मालिकी, हन्बली, इमामिया वग़ैरा इस्लाम के सब फ़िर्क़ों के उसूल से वाक़िफ़ और सब में इज्तिहाद का मर्तबा रखते थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने दरबारे शाही से किसी किस्म के तअल्लुक़ पैदा करने की कोशिश की, ना किसी हाकिमे वक़्त से किसी किस्म की जागीर, मददे मआश या वज़ीफ़ा क़बूल किया, बल्कि हमेशा इस बात की वजह से गनी रहे कि दरवेश मुहताज नहीं होता, और रज़्ज़ाके मुतलक़ यानी अल्लाह पाक की रोज़ी पर क़ानेअ रह कर दरवेशाना हालत में अपनी औक़ाते बसरी करते रहे मगर इस पर भी मुताअस्सिब लोगों ने कभी चैन से बैठने नहीं दिया, कभी सुन्नी, कभी शिया, कभी महदवी, कभी दहरिया बना कर जो कुछ हो सका तकलीफ़ पहुंचाते रहे, अकबर बादशाह के इब्तिदाई ज़माने में भी उन लोगों का बहुत ज़ोर रहा और अगर इन्साफ़ की नज़र से देखा जाये तो अकबर बादशाह की बे दीनी का इल्ज़ाम भी ज़्यादा तर बल्कि बिल्कुल उन्हीं की गर्दनों पर है।

976 हिजरी में मौक़ा पा कर लोगों ने शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह और उन के बेटों की तलबी का हुक्म हासिल किया और इस की तामील इस तरीक़ा से शुरू कराई गई कि मजबूरन शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह को आगरा छोड़ना पड़ा और जो सिपाही उनकी गिरफ़्तारी के वास्ते भेजे गए थे वो उन की मस्जिद का मिंबर तोड़ कर नाकाम वापिस हुए।

शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह पहले फतेहपुर सीकरी में शैख़ सलीम चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में पहुंचे आप रहमतुल्लाह अलैह ने कुछ ज़ादे राह की मदद कर के गुजरात जाने की सलाह दी, गुजरात में मिर्ज़ा अज़ीज़ जो कि सूबादार था उसने आप रहमतुल्लाह अलैह के साथ अच्छा सुलूक किया और बहुत ख़ातिरदारी से रखा और बादशाह को लिखा कि शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह एक आलिम और परहेज़ आदमी है, इन के बेटे भी होशयार व लाइक़ हैं, इस के पास कोई जागीर भी नहीं है फिर सताने और तआक़ुब करने से क्या हासिल है।

इस सिफ़ारिश नामा के पहुंचने पर अकबर बादशाह ने शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह को मुलाक़ात के वास्ते तलब फ़रमाया, आखिरे कार शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह ने दरबार में हाज़िर हो कर बादशाह से मुलाक़ात की। उसी तारीख़ से इस ख़ानदान की अज़मत की तारीख़ शुरू हुई और पहले आप रहमतुल्लाह अलैह के बड़े बेटे शैख़ फ़ैज़ी और चंद साल बाद दूसरे बेटे अल्लामा अबुल फ़ज़्ल हाज़िरे दरबार हो कर बड़े मन्सबो पर सरफ़राज़ और नवाज़िश हाए बादशाही से मुफ़्तख़िर हुए, अब शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह को आरामो चैन से बैठना नसीब हुआ और 24 साल तक अपने लाइक़ो होनहार बेटों की रोज़ अफ़ज़ूँ तरक़्क़ी को शुक्र और ख़ुशी से देखते रहे और अपने बेटों और बादशाह को अक्सर उमूरे

सल्तनत में नेक सलाह और मशवरे देते रहे लेकिन अपनी पुराने तरीके को ना छोड़ा और बराबर दर्सो तदरीस और तसनीफ़ो तालीफ़ में मसरूफ़ रहे।

शैख़ अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं कि शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह अपने ज़माने के बड़े नामी आदमी थे और सलाह तक़्वे, तवक्कुल में सबसे बढ़े हुए थे, इब्तिदाए हाल में उन्होंने बहुत रियाज़त और मुजाहिदे किए थे, अम्र बिल मारुफ़ और नही अनिल मुन्कर यानी नेकी का हुक्म देने और बुराई से मना करने में बहुत कोशिश करते थे।

हमेशा उलूमे दीनी के दर्स में मशग़ूल रहे, इल्मे शेअर, मुअम्मा और बहुत सारे फ़ुनून में बहुत दख़ल था ख़ुसूसन इल्मे तसव्वुफ़ को कमाल के दर्जा पर पहुंचा दिया था, शातबी उनको ख़ूब याद थी और उस किताब के दर्स में यकता थे, क़ुरआने मजीद दस किराअत के साथ उन को याद था, वो किसी अमीर के घर ना जाते थे।

अख्यारुल अस्फ़िया के मुसन्निफ़ जो शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह के नवासे हैं लिखते हैं कि उनके कुतुब ख़ाना में 500 ज़ख़ीम किताबें ख़ुद उनके क़लम की लिखी हुई मौजूद थीं, आख़िरी उम्र में अगर्चे उन्होंने चश्मे ज़ाहिरी से चश्मपोशी कर ली थी लेकिन चश्मए बीना मौजूद थी, उसकी रौशनी और क़ुव्वते हाफ़िज़ा की मदद से एक ज़ख़ीम तफ़्सीर कलमबंद कराई थी जो **मंबाउल उयूनुल मआनी व मतलउ शुमूसिल मसानी** के नाम से मौसूम है। येह तफ़सीर तफ़सीरे कबीर के मुक़ाबिल चार या चौदह जिल्दों में कलमबंद की गई थी, इस के इलावा **जवामिउल कलिम** भी आप रहमतुल्लाह अलैह की तसनीफ़ात में से यादगार है।

17 ज़िलकादा 1001 हिजरी को बमक़ाम लाहौर शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह ने इस दारे ना पाएदार से सफ़रे आख़िरत इख्तियार किया और आगरा में सिपुर्दे ख़ाक किए गए। शैख़ फ़ैज़ी ने **'फ़ख़रुल कमलि'**

और मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह ने **'शैखे कामिल'** माद्दए तारीखे विसाल निकाला है यानी इनके अदद 1001 बनते हैं और 1001 आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल का हिजरी साल है।

शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह का मक़बरा यानी **मज़ार मुबारक** आगरा और सिकंदरा के दर्मियान में अकबर बादशाह के मक़बरा से एक या डेढ़ मील पहले मौज़ा मसउ के सिवानह में वाक़ेअ था, इस का शुमार आगरा की काबिले दीद और आलीशान इमारतों में होता था, 1849 ईस्वी तक उस की इमारत मौजूद थी, मुंशी सील चंद ने शुरू अंग्रेज़ी दौर में आगरा की तारीख़ लिखी है उस में इस मक़बरा और इस के बाग़ का हाल कलमबंद किया है, इस के बाद 1849 ईस्वी में मिस्टर बेल साहिब ने मिफ़्ताहुत्तवारीख में इस के मुताल्लिक़ लिखा है।

जिस मक़ाम पर येह मक़बरा था वो सतेला की पक्की सड़क के क़रीब मुत्तसिल बाग़ लक्खो सीधू वाक़ेअ और अब तक लाडली ही के नाम से मशहूर है, राक़िमे बोस्तान (सईद अहमद मरहरवी) ने पहली मर्तबा 1900 ईस्वी के आस पास इस मक़ाम को देखा था उस वक़्त तक एक आलीशान बावली, चार दीवारी की नमूद और दर्मियानी इमारत या गुंबद के निशानात मौजूद थे।

27 फरवरी 1907 ईस्वी को जब दोबारा गुज़र हुआ तो बावली को बिल्कुल खुदा और दर्मियानी तहख़ाना की बुनियादों को खुदता देखा। सिर्फ चार दीवारी की किसी क़द्र नमूद और रविशों के कुछ निशान बाक़ी थे, कोई क़ब्र या तावीज़ बाक़ी ना था, 18 अप्रेल 1912 ईस्वी को फिर उसे जाकर देखा तो मालूम हुआ कि इहाता और मक़बरा की बुनियादें भी खुद गईं। थोड़ा सा हिस्सा बाक़ी है जो खुद रहा है। ख़ास मक़बरा का हिस्सा ऊपर से मज़बूत होने की वजह से खुद नहीं सका सिर्फ़ वो बाक़ी रह

गया है लेकिन इस के अंदर से भी सुरंग लगा कर ईंट और पत्थर निकाल लिया है, बमक़ाम कन्हैया लाल व जगनाथ जो कि चुन्नी लाल बनिया साकिन आगरा का मक़बूज़ा और मौज़ा मसउ के नंबर 707, तादादी में वाक़ेअ है।

शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह के सात बेटे थे :

(1) शैख़ अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी फ़य्याज़ी

(2 अल्लामी अबुल फ़ज़्ल

(3 शैख़ अबुल ख़ैर

(4 शैख़ अबुल बरकात

(5 शैख़ अबुल मकारिम

(6)अबू तुराब

(7)अबुल हामिद

इन में से पहले, दूसरे और तीसरे बोस्ताने अख्यार में अपनी अपनी जगह बहार दिखा रहे हैं यानी इनकी सीरत इस किताब में बयान की गई है, चौथे बेटे शैख़ अबुल बरकात इल्म व फ़ज़्ल से मौसूफ़ और उमराए शाही के सिल्सिला में दाख़िल थे, 18 शाबान 1016 हिजरी को अपने बड़े भाई के पहलू में जा सोए। पांचवें साहिबज़ादे शैख़ अबुल मकारिम भी 1016 हिजरी तक बक़ैदे हयात थे। (बोस्ताने अख्यार, पेज147.153)

मौजूदा हालत 2025

आप के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(162) शैख़ अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी फ़य्याज़ी

असली नाम अबुल फ़ैज़ और तख़ल्लुस फ़ैज़ी और फ़य्याज़ी है, शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे सआदत मंद यानी बेटे और शागिर्दे रशीद हैं, शेअर व मुअम्मा अरूज़ व काफ़ियह, तारीख़ व लुग़त, हैअतो हिंदसा और इंशा में बेनज़ीर और अरबी, फ़ारसी उलूम के इलावा संस्कृत में भी लासानी समझे जाते थे, 954 हिजरी में पैदा हुए और 14 बरस की उम्र में फ़ारिग़ुत तहसील हो कर कमाल के दर्जा को पहुंच गए।

जब आपके इल्म व फ़ज़्ल ज़हनो ज़का और कमालाते शायरी की ख़बरें दरबारे अकबरी तक पहुंचीं तो क़द्र दानो कमाल परवर बादशाह ने जुलूस में जब वो चित्तौड़ की जंग पर जा रहा था, तलबी का फ़रमान सादिर किया। आपने हाज़िरे दरबार हो कर नफ़रई पिंजरा (कटहरा) से जहां आप खड़े थे फ़िल बदीह एक क़ता पढ़ा। येह क़ता बादशाह को ऐसा पसंद आया कि बादशाह ने आपको फ़ौरन अपने पास बुला लिया और उसी वक़्त से आपको तक़र्रुबे शाही यानी बादशाह अकबर के पास रहने का फख्र हासिल हुआ, चंद दिन के बाद आपने दो सौ पच्चास शेअर का एक पुर ज़ोर कसीदा दरबार में पढ़ा जो निहायत मक़बूल हो कर आपके क़ुरबो मंजिलत और शोहरतो अज़मत का बाइस हुआ।

अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी के दरबार में पहुंचने के वक़्त मशहद ग़ज़ाली नाम का एक शख्स मलिकुश्शुअरा यानी शाइरों का बादशाह के ख़िताब से मौसूफ़ था, मशहद ग़ज़ाली की वफ़ात के बाद जब फ़ैज़ी ने महाभारत का मंज़ूम तर्जमा पेश किया तो बादशाह ने इस के सिला में मलिकुश्शुअरा का ख़िताब मर्हमत फ़रमाया।

फ़ैज़ी के सिपुर्द शाहज़ादों की तालीम व तर्बीयत और सफ़ारत का काम भी था चुनांचे आप फ़रमांरवायाने दक्कन के पास बतौर सफ़ीर भेजे

गए थे, इस काम को आप ने बहुत ख़ूबी से अंजाम दिया, मासरुल उमरा में आपकी **तसानीफ़ व तालीफ़ की तादाद 101** लिखी है जिसमें सबसे मशहूर तसनीफ़ **सवातिउल इल्हाम** है जो क़ुरआने मजीद की बेनुक़त तफ़सीर और आपके अरबी इल्मे अदब और तबह्हुर की ऐसी बेनज़ीर यादगार है जिसकी कोई और दूसरी नज़ीर मौजूद नहीं है, इस में हुरूफ़ मुहमला का इतना इल्तिज़ाम किया है कि नाम भी बाज़ जगह बदल डाले हैं, शुरू में बिस्मिल्लाह की जगह कलिमए तय्यिबा लिखा है जिसमें एक भी मनक़ूत हर्फ़ नहीं है। येह तफ़्सीर मतबआ नवल किशोर में छप गई है सबसे ज़्यादा येह तअज्जुब की बात है कि ऐसे मुश्किल काम को दो बरस की मुद्दत में कलिमए तय्यिबा के लाम से वन्नास के सीन तक अंजाम को पहुंचाया है। फ़ुज़लाए ज़माना ने इस लासानी तफ़्सीर पर बहुत सी तक़रीज़ें और तारीखें लिखी थीं, मीर हैदर मुअम्माई ने सूरह इख्लास 1002 हिजरी तारीख़ पाई और दस हज़ार रुपये सिला हासिल किया। उस के इलावा इल्म अख्लाक़ पर **मवारिदुल कलिम** नाम की एक बेनुक़त किताब लिख कर इंशा परदाज़ी का कमाल दिखाया है, नज़म में ग़ज़लों और क़सीदों का बारह हज़ार बैत (अशआर) का दीवान ख़मसा निज़ामी के जवाब में मर्कज़ दव्वार बजवाब मख़्ज़ने असरार, सुलैमान, हफ़्त पैकर, अकबर नामा, और संस्कृत के तरजमो में तर्जमा महाभारत मंज़ूम, लीला वती वग़ैरा मशहूर हैं।

साहिब गुलज़ारे अबरार लिखते हैं कि आपकी फ़ारसी शेअर गोई में ख़ुसरो का सोज़, सादी की मलाहत और हसन देहलवी का हुस्न मौजूद था। आपकी मुट्ठी तही दस्तों की ख़ज़ान्ची और आपकी ज़बान आजिज़ों का सरमाया थी। आप उन सूफ़ियों में हैं जो वहदते वुजूद के मुकिर हैं।

राक़िम ने आपके हालात सुने हुए नहीं लिखे बल्कि उन हालात में से लिखे हैं जो मुआइना कर के और पास बैठ कर मालूम किए हैं।

शैख़ मुबारक और अबुल फ़ज़्ल की तरह फ़ैज़ी के मज़हबी ख़्यालात के मुताल्लिक़ भी मुख़्तलिफ़ रिवायतें हैं जहां बहुत से लोग आप को काफ़िर व मुल्हिद ख़्याल करते हैं वहीं अक्सर बुज़ुर्गों ने आपका ज़िक्र सूफ़ियाए किराम के ज़िम्न में करके औलिया अल्लाह में शुमार किया है, राक़िमे बोस्तान तफ़सीर सवातिउल इल्हाम और आपकी तसनीफ़ की हुई नाअतो मुनाजात को देख कर बाद वाले गिरोह का हम ख्याल है यानी उनको औलिया अल्लाह में मानता है, **नल व मन** नामी किताब में हुस्ने फ़साहतो बलाग़त, वुसअत बयानी और ज़ोर कलामी से आपने हुज़ूर रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नाअत और मोजिज़ात लिखे हैं या **मर्कज़े दव्वार** वग़ैरा में हुस्ने ख़ूबसूरती, ख़ुश ऐअतिक़ादगी से हम्दो मुनाजात और तौहीद वग़ैरा का बयान नज़म किया है उसे पढ़ कर कोई शख़्स आपको मुन्किरे इस्लाम नहीं ख़्याल कर सकता, वल्लाहु आलम बिस्सवाब

इतवार के दिन 10 सफ़र 1004 हिज्री को इस जामेअ कमालात फ़ाज़िल ने मर्ज़ ज़ैक़ुन्नफ्स में मुक़य्यद हो कर सफ़रे आख़िरत इख्तियार किया, अकबर बीमारी का हाल सुन कर इयादत के वास्ते ख़ुद मकान पर आया, सिरहाने बैठ कर तकिया से आप का सर उठाया और निहायत मुहब्बत व उल्फ़त से चंद मर्तबा आवाज़ दी फ़ैज़ी आँखें खोलो, देखो मैं तुम्हारे पास आया और हकीम अली गिलानी को ईलाज के वास्ते साथ लाया हूँ। मगर आप शहंशाहे हक़ीक़ी के दरबार में हाज़िर होने की तैयारी में ऐसे मसरूफ़ थे कि बादशाह मजाज़ी की बात का कुछ जवाब ना दिया, अबुल फ़ज़्ल लिखते हैं कि मरने से चार रोज़ पहले मुझ से फरमाया: कि

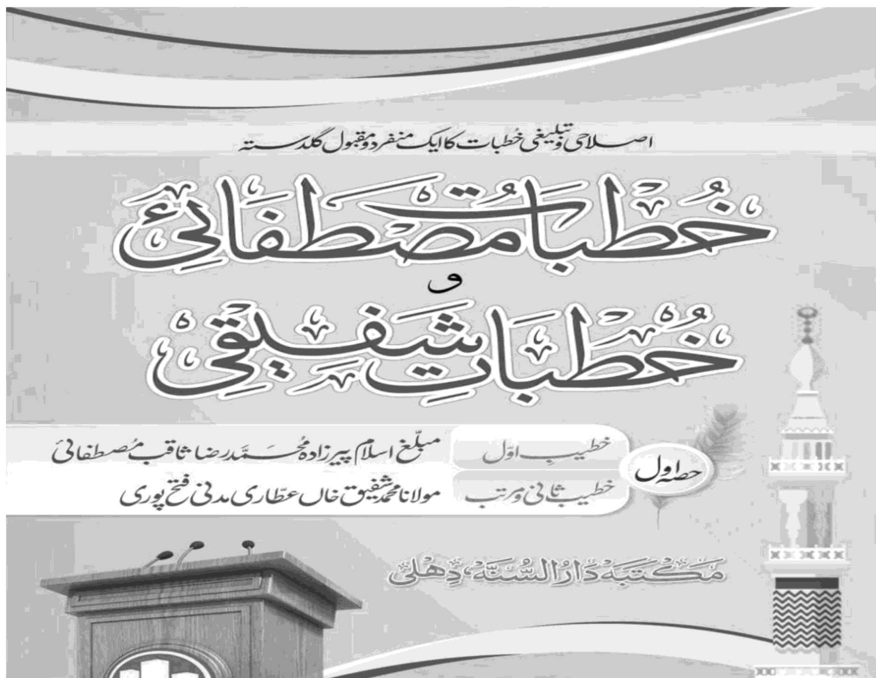
बादशाह से चार दिन की रुख़स्त लेकर मेरे पास रहो, मैंने चार दिन की रुख़स्त ले ली, चौथे रोज़ ही इंतिक़ाल हो गया।

चार 4300 नफीस किताबें जिनमें अक्सर आपके क़लम की लिखी हुई थीं आपके कुतुब ख़ाना में निकलीं। **'फ़य्याज़े अजम'** वफ़ात की तारीख़ है, **मज़ार** आगरा में वालिदे बुज़ुर्गवार के पहलू में वाक़ेअ था।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज28.31)

मौजूदा हालत 2025

आप के मकबरे पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



(163) अल्लामी फ़हहामी शैख़ अबुल फ़ज़्ल

आप शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे अर्जुमंद यानी बेटे, शागिर्दे रशीद हैं, ना सिर्फ आगरा बल्कि पूरे हिन्दुस्तान के मायए फख़्र, साहिबुस्सैफ़ वल कलम, बेनज़ीर मुअर्रिख और लासानी इंशा पर्दाज़ थे, सख़ावत, अमानत, दियानत, शुजाअत, ज़हानत, मेहमान नवाज़ी, ख़ुदा तरसी, बेतअस्सुबी और बेशुमार औसाफ़े हमीदा व अख्लाक़े पसंदीदा आपकी ज़ात में जमा थे।

आप हिन्दुस्तान में सबसे पहले मुसलमान हैं जो अपने इल्म व फ़ज़्ल की बदौलत **अल्लामी, फ़हहामी** के मुअज़्ज़ज़ ख़िताब से सरफ़राज़ हुए।

6 मुहर्रम 957 हिजरी बमुताबिक़ 1651 ईस्वी को इतवार के दिन आप आगरा में पैदा हुए, शैख़ अबुल फ़ज़्ल ख़तीब गाज़रोनी मशहूर फ़ाज़िल के नाम पर आप का नाम अबुल फ़ज़्ल रखा गया, चार बरस की उम्र से फ़ाज़िल बाप ने तालीमो तर्बीयत शुरू की।

15 बरस की उम्र में फ़ारिग़ुत् तहसील हो कर 24 बरस की उम्र में अल्लामा हो गए। आप की जूदतो ज़हानत का येह आलम था कि अय्यामे तालिबे इल्मी ही में अक्सर पुराने मुसन्निफीन की तसानीफ़ और उन के कलाम और रावियों पर निहायत क़ाबिलिय्यत से ऐतिराज़ किया करते थे, 20 बरस की उम्र थी कि हाशिया फ़ाज़िल सफ़ा बानी की आधी किताब जिस को दीमक ने खा लिया था आपके हाथ आई, इस से बहुत मुद्दत पहले येह किताब आपकी नज़र से गुज़र चुकी थी, आपने अपने हाफ़िज़ा और ख़ुदादाद ज़हानत की मदद से उस दीमक खाई हुई किताब को मुकम्मल कर लिया, कुछ मुद्दत बाद जब उस का सही और अकमल नुस्ख़ा मिल गया और उस से इस नुस्खे का मुक़ाबला किया गया तो सिर्फ

दो जगह लफ़्ज़ों में फ़र्क़ पाया गया और चार लफ़्ज़ क़रीबुल मानी इस्तिमाल किए गए थे बाक़ी तमाम तहरीर हर्फ़ ब हर्फ़ सही निकली।

981 हिजरी बमुताबिक़ 1675 ईस्वी में अपने बड़े भाई शैख अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी के वसीले से आप दरबारे अकबरी में हाज़िर हुए लेकिन इस साल कोई ख़िदमत सिपुर्द नहीं हुई दूसरे साल दोबारा हाज़िरे दरबार हो कर अपनी लिखी हुई आयतुल कुर्सी की तफ़सीर पेश की जिसको देखकर तमाम दरबार के उलमा रश्को हसद से जल मरे। किसी ने इस को सरक़ा यानी चोरी बताया, किसी ने कहा कि दर अस्ल येह उनके वालिद माजिद शैख़ मुबारक की तसनीफ़ है, लेकिन जब येह उलमा और जुमला फ़ुज़ला इल्मी मुबाहसों में इस नौजवान फ़ाज़िल से हार गए तो तमाम दरबार वाले और ख़ुद बादशाह अकबर पर आपकी अज़मतो वुक़अत का सिक्का बैठ गया और सिर्फ आपकी इल्मिय्यत व क़ाबिलिय्यत ही दरबारे अकबरी में आपकी सिफ़ारिशी हो कर रोज़ अफ़्ज़ूँ तरक़्क़ी का बाइस हुई और बहुत थोड़ी मुद्दत में आप एक छोटे मन्सब से दो हज़ारी के मन्सबे जलीला और वज़ारते आज़म के दर्जा पर पहुंच गए, अफ़सोस कि इस मुख़्तसर किताब में इस क़द्र गुंजाइश नहीं है कि आप के मुल्की और फ़ौजी कारनामों को बयान किया जाये, ना इस किताब का मक़सद इस किस्म के वाक़िआत का बयान करना है लिहाज़ा उन वाक़िआत से दर गुज़र किया जाता है।

अबुल फ़ज़्ल के मज़हबी ख़्यालात पर तरह तरह के ऐतिराज़ किए जाते हैं, कोई उसे हिंदू मज़हब का मुक़ल्लिद बताता है, कोई आफ़ताब परस्त कहता है, कोई काफ़िर, मुल्हिद ख़्याल करता है, सबसे बड़ा इल्ज़ाम दीने इलाही अकबर शाही की ख़िलाफ़त क़बूल करने का है लेकिन येह सब इल्ज़ाम बे बुनियाद और ज़्यादा तर तअस्सुब का नतीजा हैं। इस में शक नहीं कि वो तक़लीद का मुन्किर किसी क़द्र आज़ाद

ख़्याल, सुलह कुल और बादशाहे वक़्त का सच्चा ख़ैरख्वाह और मस्लिहते वक़्त की मजबूरियों की वजह से बादशाह का हद से ज़्यादा ख़ुशामदी था, लेकिन येह क़तई ग़लत है कि इस्लाम का मुन्किर और बानिए इस्लाम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत से ख़ाली था, इस के सबूत में इस के बेशुमार मज़हबी फ़िक्रों, मुनाजातों, नाअतों वग़ैरा के इलावा कई तारीख़ी शहादतें भी मौजूद हैं चुनांचे साहिबे ज़ख़ीरतुल खवानीन लिखते हैं कि वो रातों को दरवेशों के घर जाकर रुपये अशर्फ़ियां नज़र किया करता और अपने ईमान की सलामती के वास्ते दुआ का मुल्तमिस रहता था।

शैख़ अबुल मआली क़ादरी से जो कि लाहौर के अकाबिर मशाईख़ीन और औलिया अल्लाह से थे मंक़ूल है कि मैं शैख़ अबुल फ़ज़्ल की तरफ़ से अच्छा ख़्याल ना रखता था। शहादत के बाद एक रात मैंने ख्वाब में देखा कि हुज़ूर सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मजलिस आली में शैख़ को हाज़िर किया गया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जुब्बा मुबारक शैख़ अबुल फज़ल के मुँह पर डाल दिया और मजलिस में बैठा कर फ़रमाया: अगरचे येह शख़्स अपनी हयात चंद रोज़ में बुरे कामों का मुर्तक़िब हुआ है। लेकिन येह मुनाजात उस की मक़्बूले बारगाह हो कर उस की नजात का बाइस हुई।

एक मर्तबा शहज़ादा सलीम शैख़ के मकान पर गया तो देखा कि चालीस कातिब मकान पर बैठे हुए क़ुरआन व तफ़सीर लिख रहे हैं सब कातिबों को उन के नविश्तों साथ के लाकर अकबर के रूबरू पेश किया और शिकायत की।

अबुल फ़ज़्ल की तस्नीफ़ात में आईने अकबरी और अकबर नामा दो बेनज़ीर किताबें ऐसी हैं जो आप की ग़ैर मामूली लियाक़त बल्कि

फ़ौक़ुल आदत की ऐसी यादगारें हैं जिनसे आप का नाम हमेशा यादगार रहेगा।

इनके इलावा आप की इंशा पर्दाज़ी की यादगार में बहुत से फ़रामीन व ख़ुतूत, तक़रीज़ें वग़ैरा मौजूद हैं जो अबुल फ़ज़्ल के नाम से मशहूर और फ़ारसी के मुंतहियाना दर्स में दाख़िल हैं, अक्सर मुअर्रिख़ीन लिखते हैं कि एशिया के बादशाह अकबर की तलवार से इस क़द्र ना डरते थे जिस क़द्र अबुल फ़ज़्ल की क़लम के ख़ौफ़ से काँपते थे।

जुमा के दिन, 4 रबीउल अव्वल 1011 हिजरी को सराय बीर से आधा कोस और नरवर से छः कोस के फ़ासिला पर येह फ़र्ज़ानए रोज़गार शहज़ादा सलीम यानी जहांगीर के इशारा और राजा नर्सिंगा देव बुंदेला वाली अरछा के लोगों के हाथ से जामे शहादत पी कर फ़िरदौसे बरीं को सिधारा। सर शाहज़ादा के पास इलाहाबाद भेजा गया और लाशा बे सर क़स्बा आंतरवी (रियासत ग्वालियर में सिपुर्दे ख़ाक किया गया, **'बंदए अबुल फ़ज़्ल'** 1011 हिजरी शहादत की तारीख़ है, ख़ुद आपने ख्वाब में आ कर बताई, अकबर को इस क़द्र सदमा हुआ कि बे इख़्तियार रो दिया और कहा कि अगर शाहज़ादे सलीम को सल्तनत की तमन्ना थी तो मेरा असर काटना चाहिए था बेचारा शैख़ का क्या क़सूर था, शैख़ अब्दुर्रहमान आपके साहिबज़ादा उमराए अहदे अकबरी व जहांगीरी में से थे।

(बोस्ताने अख्यार, पेज24.28)

मौजूदा हालत 2025

आप के मकबरे पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(164) शैख़ अबुल ख़ैर

आप शैख़ मुबारक रहमतुल्लाह अलैह के मँझले बेटे और अल्लामी अबुल फ़ज़्ल के छोटे भाई हैं। 22 जुमादल ऊला 967 हिजरी को बमक़ाम आगरा में पैदा हुए, अपने वालिदे बुज़ुर्गवार की शागिर्दी में तमाम उलूमो फ़नून में ऐसा कमाल हासिल किया कि शोहरए आफ़ाक़ हो गए, मलिकुश्शुअरा फ़ैज़ी, अल्लामी अबुल फ़ज़्ल और हकीम आरिफ़ इराक़ी ने आपकी तारीफ़ में कई कलाम लिखे हैं।

आप **"बेटा अपने बाप का राज़ होता है"** की पूरी तफ़्सीर थे, इल्मो फ़ज़्ल के इलावा बहुत से औसाफ़े हमीदा व अख़्लाके पसंदीदा आपकी ज़ात में जमा थे। उलमा, फुज़ला, शोअरा और मशाईख़ीन से निहायत मुहब्बतो अक़ीदत से पेश आते और सब के साथ मस्लूक होते थे। बे यारों के यार और मज़्लूमों और कमज़ोरों के मददगार थे।

शाहज़ादों की तालीमो तर्बीयत और सफ़ारत का काम आपके सिपुर्द था। 25 जुमादल ऊला 1014 हिजरी को आप ने रेहलत फ़रमाई, **"ख़ैरुल आक़िब"** के अदद वफ़ात की तारीख़ है। अपने वालिदे मुहतरम के साथ हम ख़्वाब हैं यानी आप का **मज़ार** आपके वालिदे माजिद के पास बना हुआ है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज23.24)

मौजूदा हालत 2025

आप के मकबरे पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(165) बेदार शाह

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के तारिकुद दुनिया यानी दुनिया को छोड़ने वाले बुज़ुर्गों में से हैं, **मज़ार मुबारक** मौज़ा मऊ के सिवानह में पक्की सड़क के किनारे सतीला मुत्तसिल मील नंबर, 1, एक बुलंद टीले पर वाक़ेअ है, क़रीब ही आप रहमतुल्लाह अलैह का तकिया मौजूद है, जिसमें एक छोटी सी कनाती मस्जिद और चंद इमली और नीम के दरख़्त बाक़ी है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज60)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



(166) शैख़ महमूद बंजारा

आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ूबान सकना आगरा में बड़े साहिबे निस्बत और आरिफ़े हक़ीक़त बुज़ुर्ग थे। आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ास करामत येह थी कि जिस किसी को जिन या भूत वग़ैरा किसी किस्म का आसेब होता था तो जिस वक़्त आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम उस के सामने लिया जाता या आप रहमतुल्लाह अलैह के हाथ से फूल ले जा कर उस को सुन्घाया जाता तो वो फ़ौरन होशियार और तंदरुस्त हो जाता था। ग़र्ज़ कि सुलैमानी विलायत आप रहमतुल्लाह अलैह को हासिल थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** दरिया के किनारे सिवानह मौज़ा मऊ में सतीला के क़रीब एक बुलंद टीले पर वाक़ेअ और महमूद पातली के मज़ार के नाम से मौसूम है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज208)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

मौज़ा घटवासन

(167) मीर सैय्यिद जलालुद्दीन क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद शैखैन क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे और आगरा के अकाबिर सादात से हैं। बड़े आबिदो ज़ाहिद और मुतावक्किल बुज़ुर्ग थे, इब्तिदा से इंतिहा तक गोशए उज़्लत में बैठे रहे, **"फ़क़ीरों में से बुरा फ़क़ीर वो है जो अमीरों के दरवाज़े पर जाये"** पर कारबन्द और अमीरों की सोहबत से बहुत परहेज़ करते यानी बचते थे।

हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की तरफ़ से लोगों को मुरीद किया करते थे, सैय्यिद मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह और सैय्यिद दाऊद रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह दो साहिब ज़ादे थे, आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात के बाद सैय्यिद दाऊद आप रहमतुल्लाह अलैह के जांनशीन हुए।

25 सफ़र 983 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई, **मज़ार मुबारक** मौज़ा घटवासन मुत्तसिल आगरा में मौजूद है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज66.67)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(168) हाजी शम्सुद्दीन अली हरवी

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के ज़माने के मशाईख़ीने किराम में से हैं, **मज़ार मुबारक** अंदर सिवानह मौज़ा घटवासन बलूनता काछी के खेत में वाक़ेअ है, जिस पर येह इबारत लिखी हुई है:

तारीख़े वफ़ात मरहूम मग़फ़ूरी हाजी हरमैन शरीफ़ैन हाजी शम्सुद्दीन अली हरवी 1010 हिजरी।

(बोस्ताने अख्यार, पेज89)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

राजघाट (जमना पार)

(169) ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी

आप रहमतुल्लाह अलैह ख़्वाजा अबुल फ़ैज़ इब्ने ख़्वाजा मुहम्मद अब्दुल्लाह पिसरे कलां ख़्वाजा मुहम्मद अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के दादा पीर हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह जुमला उलूमे अक़्ली व नक़ली ख़ुसूसन तिब्ब व हिक्मत में उस्तादे ज़माना और हफ़्त क़लम की ख़ुश नवेसी में शोहरए आफ़ाक़ थे, तमाम औसाफ़े हमीदा और ख़साइले पसंदीदा से मौसूफ़ और तालिबाने ख़ुदा के रहनुमा थे।

सख़ावतो दरिया दिली का येह आलम था कि जो कुछ जागीर से आता सब ग़रीबों में तक़सीम कर देते थे, 987 हिजरी बमुताबिक़ 1579 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह को हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत और हज्जे बैतुल्लाह का शौक़ पैदा हुआ, अकबर बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह को मीरे हाज मुक़र्रर कर के और बहुत सा ज़ादे राह देकर निहायत ऐज़ाज़ से रुख़सत किया, हज से फ़ारिग़ हो कर आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा में तशरीफ़ लाए और दरबारे शाही से किनारा कशी कर के बक़ीया उम्र इबादतो रियाज़त में बसर की। आख़िरे कार 12 रबीउल अव्वल 999 हिजरी बमुताबिक़ 1590 ईस्वी को सफ़रे आख़िरत इख्तियार फ़रमाया।

मज़ार मुबारक जमना पार दरिया के किनारे राजघाट के सामने वाक़ेअ है, एक साथ तीन मज़ार हैं। उन में मशरिक़ी मज़ार आप रहमतुल्लाह अलैह का, मग़रिबी मज़ार आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा अमीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह का जो कि हज़रत अमीर अबुल उला

रहमतुल्लाह अलैह के पीर हैं और तीसरा ग़ालिबन आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे ख़्वाजा मुहम्मद ज़करिया रहमतुल्लाह अलैह का है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज207.208)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह सरताजे आगरा हज़रत अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के दादा पीर हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक राजघाट जमना पार है।

जिसका रास्ता बेलनगंज के बिरिज से पार हो कर एत्मादुद्दौला की जानिब जाकर थाना एत्मादुद्दौला आएगा, थाना के सामने से एक रास्ता मज़ार मुबारक के लिए गया है ,अगर रास्ता समझ में ना आए तो थाना के पास किसी से पूछ लें कि दादा पीर की दरगाह का रास्ता कौन सा है?

मज़ार मुबारक निहायत सादा है मगर पुर बहार है, आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के बग़ल में आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा और हज़रत अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब हज़रत मीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक भी जलवा लुटा रहा है। एक क़तार में तीन मज़ार हैं, क़िब्ला की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा हज़रत मीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह की, बीच में आप रहमतुल्लाह अलैह की और पूरब की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह के शहज़ादे ख़्वाजा मुहम्मद ज़करिया रहमतुल्लाह अलैह का है।

उर्स 21,22 ज़िलक़ादा को होता है। नामों की तख़्ती सिरहाने की दीवार में लगी है जिसमें येह लिखा हुआ है:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ला इलाहा इल्लल्लाह

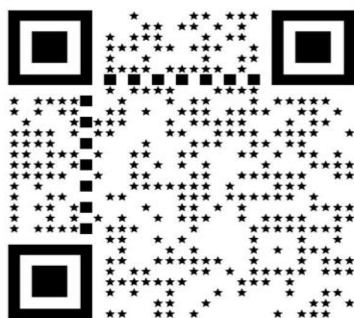
तारीखे वफ़ात ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी अलमारूफ़ दादा पीर रहमतुल्लाह अलैह

12 रबीउल अव्वल 999 हिजरी बमुताबिक़ 1690 ईस्वी

फिर फ़ारसी के तीन अशआर लिखे हैं।

ख्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।

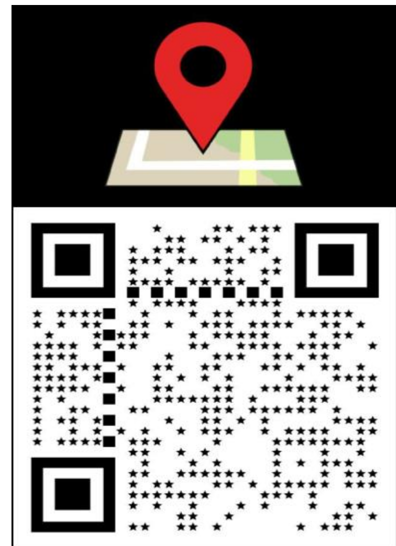




(170) ख़्वाजा मुहम्मद ज़करिया

आप रहमतुल्लाह अलैह ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे, मुरीदो, ख़लीफ़ा और सज्जादा नशीन हैं निहायत बुज़ुर्ग और बा बरकत शख़्स थे, अपने वालिद बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह क़रीब जमना पारा आराम फरमा रहे हैं । (बोस्ताने अख्यार, पेज170)

ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।





(171) मीर अब्दुल्लाह अहरारी

आप रहमतुल्लाह अलैह ख़्वाजा मुहम्मद यहया इब्ने अबुल फ़ैज़ अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा और हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह अम्मे बुज़ुर्गवार यानी चचा और सुसर और पीर हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह साहिबे विलायत और क़ुतुबे वक़्त थे। अपने कमालात को मुलाज़िमते शाही के पर्दा में पोशीदा कर रखा था, अकबर बादशाह के ज़माने में सबसे पहले दिल्ली के नाज़िम थे।

इस के बाद बुरहानपुर में किसी ख़िदमत पर मामूर हुए। आख़िरे कार मुलाज़िमत यानी नौकरी को छोड़ कर आगरा में तशरीफ़ लाए और गोशा नशीनी इख्तियार की।

23 ज़िलक़ादा को आप रहमतुल्लाह अलैह ने रेहलत फ़रमाई और जमना पार दरिया के किनारे अपने पीर के क़रीब (जानिब मगरिब इस्तिराहत में मसरूफ़ हैं यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** वहीं है। (बोस्ताने अख्यार, पेज98.99)

मौजूदा हालत 2025

हज़रत मीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह सरताजे आगरा हज़रत अमीर सैय्यिद अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के चचा, सुसर और पीर हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक राजघाट जमना पार है , जिसका रास्ता बेलनगंज के बिरिज से पार हो कर एत्मादुद्दौला की जानिब जाकर थाना एत्मादुद्दौला आएगा, थाना के सामने से एक रास्ता मज़ार मुबारक के लिए गया है, अगर रास्ता समझ में ना आए तो थाना के पास किसी से पूछ लें कि दादा पीर की दरगाह का रास्ता कौन सा है ?

मज़ार मुबारक निहायत सादा है मगर पुर बहार है, मज़ार मुबारक के ऊपर टीन शैड लगा हुआ है, दो दरख़्त मज़ार पर साया किए हुए हैं, एक पुरानी और बावक़ार मस्जिद और मेहमान ख़ाना भी मौजूद है। मज़ार मुबारक की देख भाल करने के लिए दरगाह के इहाते में कई लोग रहते हैं।

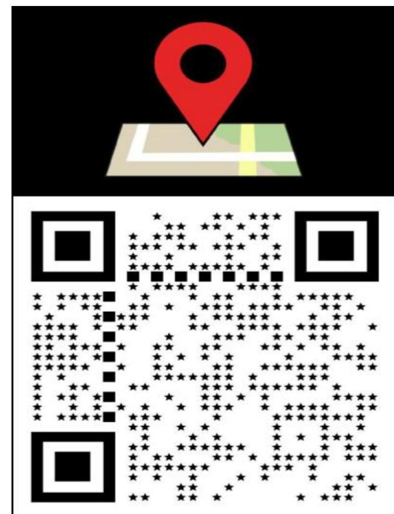
आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के बग़ल में आप रहमतुल्लाह अलैह के पीर हज़रत ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक भी जल्वे लुटा रहा है। एक क़तार में तीन मज़ार हैं क़िब्ला की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह का, बीच में आप रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब रहमतुल्लाह अलैह का और पूरब की जानिब आप रहमतुल्लाह अलैह के पीर साहिब के शहज़ादे ख़्वाजा मुहम्मद ज़करिया रहमतुल्लाह अलैह का है।

उर्स 21,22 ज़िलक़ादा को होता है। नामों की तख़्ती सिरहाने की दीवार में लगी है जिसमें येह लिखा हुआ है:

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हुज़ूर पुरनूर क़ुतुबुल अबरार सैय्यिदुना मौलाना हज़रत अमीर अब्दुल्लाह अहरारी नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह

ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



चीनी का रौज़ा(जमना पार)

(172) अल्लामी अफ़ज़ल ख़ां शीराज़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह का असली नाम मुल्ला शुक्रुल्लाह है, शीराज़ के रहने वाले और मीर इब्राहीम हम्दानी और मीर तक़ीउद्दीन मुहम्मद शीराज़ी जैसे मशहूर फुज़ला के शागिर्दे रशीद थे, जुमला उलूमे अक़्ली व नक़्ली में कमाल हासिल कर के मुद्दत तक अपने वतन शीराज़ में दर्सो तदरीस में मसरूफ़ रहे। फ़साहतो बलाग़त में हस्साने वक़्त और हैअतो हिंदसा में कामिल महारत रखते थे।

जहांगीर बादशाह के ज़माने में बतौरे सैर सयाहत सूरत गुजरात होते हुए बुरहानपुर में आए, येह शहर उस वक़्त मुग़लिया गवर्नर का दारुल हकूमत और बहुत बड़ा तिजारती और फ़ौजी मर्कज़ था, ख़ान ख़ानां अब्दुर्रहीम ख़ां यहां के गवर्नर थे, जिनके दरबार में ऐसे ऐसे अहले कमाल जमा थे कि सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा और मीर शेर अली का ज़माना याद आता था। आप रहमतुल्लाह अलैह की मुलाक़ात ख़ान ख़ानां से हुई वो निहायत दरिया दिल, कमाल परवर बल्कि अहले कमाल के आशिक़ थे,पहली ही मुलाक़ात में कुछ ऐसी आलिमाना बातें और मदारातें हुईं कि आप रहमतुल्लाह अलैह गिर्वीदा हो गए और सब सैरो सयाहत के मन्सूबों से दस्त बर्दार हो कर ख़ान ख़ानां की मुसाहिबत इख्तियार कर ली।

चंद मुद्दत तक उनकी ख़िदमत में रहे जब अकबर बादशाह का बेटा शाहज़ादा ख़ुर्रम ने आप रहमतुल्लाह अलैह के इल्मो कमालात का हाल सुना तो ख़ान ख़ानां से मांग कर अपनी सरकार में ले लिया और अपने लश्कर का मीर अदल मुक़र्रर फ़रमाया, राना अमर सिंगा की मुहिम में आप रहमतुल्लाह अलैह शहज़ादे खुर्रम के साथ थे। राना से मुसालिहत होने में

आप रहमतुल्लाह अलैह की हुस्ने ख़िदमत से जहांगीर ने ख़ुश हो कर अफ़ज़ल ख़ां ख़िताब मर्हमत किया, रोज़ बरोज़ शाहज़ादे की ख़िदमत में भी आप रहमतुल्लाह अलैह की इज़्ज़त और ऐतिबार बढ़ता गया यहां तक कि मीर अदल से तरक़्क़ी कर के आप रहमतुल्लाह अलैह शाहज़ादे की सरकार के दीवाने कुल हो गए। इन्ही दिनों में आप रहमतुल्लाह अलैह बीजापुर के सफ़ारत पर रवाना किए गए। येह काम भी आप रहमतुल्लाह अलैह ने निहायत ख़ुश उस्लूबी से अंजाम दिया।

जब बादशाह जहांगीर और शहज़ादे में मुख़ालिफ़त पैदा हुई तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने हाज़िरे दरबार हो कर बाहमी मुसालिहत की पूरी कोशिश की मगर चूँकि नूरजहां बेगम इस मुख़ालिफ़त की बानी मुबानी थी इसलिए कोई कोशिश और तदबीर कारगर ना हुई और बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह को अपनी सरकार में रखकर ख़िदमत खान सामानी के ख़िलअत से मुफ़्तख़िर किया।

शाहजहाँ बादशाह ने तख़्त नशीन होते ही मन्सब चार हज़ारी (यानी चार हज़ार सिपाहियों का अमीर) पर सरफ़राज़ और मीर सामानी की ख़िदमत से मुम्ताज़ किया और दूसरे साल यानी 1048 हिजरी में मन्सबे पंज हज़ारी से मुताफख्खिर कर के वज़ारते आज़म के सबसे बड़े ओहदे से सरफ़राज़ किया।

शाहजहाँ बादशाह ने अपने तख्त नशीन होने के ग्यारहवें साल में मन्सब हफ़्त हज़ारी (यानी सात हज़ार सिपाहियों का अमीर) पर आप रहमतुल्लाह अलैह को मुक़र्रर किया और इस से बड़ा और कोई मन्सब ना था और बारहवें साल में आप रहमतुल्लाह अलैह बीमार हुए, 9 रमज़ान 1048 हिजरी को बादशाह ख़ुद इयादत के वास्ते मकान पर आया, शाही तबीबों से ईलाज कराया मगर चूँकि पैमानए हयात लबरेज़ हो चुका था किसी के

ईलाज ने फ़ायदा ना बख़्शा और 12 रमज़ान 1048 हिजरी को मक़ाम लाहौर, 70 बरस की उम्र में आप रहमतुल्लाह अलैह ने रेहलत फ़रमाई।

शाहजहाँ बादशाह को आप रहमतुल्लाह अलैह के इंतिक़ाल का सख़्त सदमा हुआ, कई मर्तबा कहा: वज़ीर ब तदबीर ने अपनी 28 साला मुलाज़िमत में किसी एक शख़्स की भी बुराई हम से नहीं की।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा में एक आलीशान हवेली तामीर कराई थी जिसके इख्तितामे तामीर की तारीख़ 1030 हिजरी है। इस के इलावा एक हवेली लाहौर में और एक बाग़ कश्मीर में बनवाया था, हवेली का कोई निशान अब बाक़ी नहीं रहा लेकिन आगरा में आप रहमतुल्लाह अलैह का मक़बरा यानी **मज़ार मुबारक** अब तक मौजूद है और जमना पार दरिया के किनारे चीनी के रौज़ा के नाम से मौसूम और बावजूद शिकस्ता हाल होने के आगरा की काबिले दीद ख़ुशनुमा इमारतों में शुमार होता है।

अब्दुल हक़ शीराज़ी मशहूर खुश नवेश जो अमानत ख़ां के ख़िताब से मौसूफ़ और मुम्ताज़ महल के रौज़ा (यानी ताज महल के कतबों का बेनज़ीर कातिब और सन्नाअ था आप रहमतुल्लाह अलैह का हक़ीक़ी भाई था, उस के बेटे इनायतुल्लाह को जो आक़िल ख़ां के ख़िताब से मौसूम है आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपना मुताबन्ना बेटा यानी गोद लिया हुआ बेटा बनाया था।(बोस्ताने अख्यार, पेज47.49)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

एत्मादुद दौला

(173) बेगम सुल्तान

आप रहमतुल्लाह अलैहा मौलाना कमाल की नेक बेटी और हुमायूँ के ज़माने की एक आरिफ़ा थीं, आप रहमतुल्लाह अलैहा का **मज़ार मुबारक** पक्की सड़क के किनारे मुत्तसिल रौज़ा एत्मादुद दौला वाक़ेअ है, तावीज़े मज़ार पर आयतुल कुर्सी और पाईंती पर

वफ़ात मरहूमा मग़फ़ूरा बेगम सुल्तान बिंत मौलाना कमाल दर सन नह सद व चहल व पंज अज़ हिज्रत यानी 945 हिजरी

लिखा हुआ है, कुछ अराज़ी उस के अख़राजात के वास्ते माफ़ यानी वक़्फ़ चली आती है, (बोस्ताने अख्यार, पेज61)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



Maktaba Darussunna Agra
ki kitabon ka QR code

तकिया मानुल्लाह (जमना के किनारे)

(174) शैख़ अब्दुल लतीफ़ बरी

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा के पुराने बुज़ुर्गों में से हैं, किसी तज़्किरा या तारीख़ की किताब में आप रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक्रे ख़ैर नज़र से नहीं गुज़रा, मगर ग़ालिब गुमान है कि आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद बदरुद्दीन इब्ने सैय्यिद जलाल मुतावक्किल रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे और शाह अज़मतुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुत्तसिल पक्की सड़क जमुना के किनारे तकिया मानुल्लाह में गुंबद के अंदर वाक़ेअ है, क़रीब में एक कनाती मस्जिद बनी है। दोनों से क़दामत यानी पुराने होने के आसार नुमायां यानी ज़ाहिर हैं। (बोस्ताने अख्यार, पेज112)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए।

Like Share & Subscribe Channel



बाग़ जहाँ आरा बेगम (बाग़ सैय्यिद) जमना पार

(175) सैय्यिद मुहम्मद शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद के शहीदों के ज़ूमरे में हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** बहुत पुराना है, जो जमना पार दरिया के किनारे बाग़ जहाँ आरा बेगम मौसूमा बाग़ सैय्यिद में एक हुजरे के अंदर ज़ियारत गाह ख़ासो आम है।

क़रीब में एक छोटी सी मस्जिद बनी है, रौशनी के वास्ते रौज़ा मुमताज महल (ताज महल) के खज़ाने से अब तक आठ आना माहवार मिलता है। (बोस्ताने अख्यार, पेज154.155)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



नवल गंज(जमना पार,ऐतिमादपुर)

(176) काले ख़ां शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह शहीदों के ज़ुमरे में हैं, क़ुरबो जवार के लोगों को आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार से बेइंतिहा अक़ीदत है, **मज़ार मुबारक** जमना पार ऐतिमादपुर की सड़क पर नवल गंज के क़रीब वाक़ेअ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज143)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

कुछपुरा (जमना पार)

(177) मुफ़्ती शैख़ बहाउद्दीन

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ शम्सुद्दीन महबूब मुल्तानी इब्ने शैख़ पीर अल कुरैशी अल असदी अल हाशमी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे और शैख़ुल मशाईख़ हज़रत बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी रहमतुल्लाह अलैह की नस्ल में हैं, उलूमे अक़्ली व नक़्ली में यगानए रोज़गार और कमालाते बातिनी में शोहरए आफ़ाक़ थे, बहुत सी पोशीदा बातें आप रहमतुल्लाह अलैह के आईना नुमा दिल पर ज़ाहिर हो जाती थीं।

ख़िलाफ़तो सआदत वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह से पाई थी। जिस ज़माने में सुल्तान हुसैन ने भक्कर से मुल्तान में आकर फ़ित्ना व फ़साद मचा रखा था बहुत से शुरफ़ा, नोजबा और सादात ने वहां से जिला वतनी इख़्तियार की। आप रहमतुल्लाह अलैह भी वतन छोड़ कर आगरा में तशरीफ़ लाए और बादशाह बाबर शाह के ज़माने में यहां की सुकूनत इख़्तियार फरमाई।

आप रहमतुल्लाह अलैह बेचारों के चारा साज़, बेकसों के यार और तालिबाने दीनो दुनिया के रहनुमा और मददगार थे, बेचारों, बेकसों, मज़लूमों की मतलब बर आरी के वास्ते अपनी बुज़ुर्गी का लिहाज़ नजर अंदाज़ कर के अहले दुनिया के दौलत ख़ानों पर बिला तकल्लुफ़ जाते और जहां तक मुम्किन होता ख़ल्क़े ख़ुदा को फ़ैज़ पहुंचाते थे।

एक मर्तबा आप रहमतुल्लाह अलैह हाफ़िज़ इसहाक़ नामी एक शख़्स को सिफ़ारिशी ख़त सुलैमान कर्रानी वालिए बंगाल के नाम दिया, जब ग़रीब हाफ़िज़ येह ख़त लिख कर सुलैमान के पास पहुंचा तो उस की ज़बान से इत्तिफ़ाक़िया येह जुमला निकल गया कि ईरानी और तूरानी

बाशिंदों को हमारे नाम सिफ़ारिशी ख़त लिखने का कोई हक़ नहीं है, बेचारा हाफ़िज़ जो इस क़द्र दूरो दराज़ मुसाफ़त तै कर के वहां पहुंचा था येह ना उम्मीदाना तक़रीर सुनकर सख़्त ना उम्मीद हुआ। रात के वक़्त शैख रहमतुल्लाह अलैह ने आलमे ख़्वाब में आकर सुलैमान को मुतनब्बा और नादिम किया जिस ने सुब्ह सवेरे हाफ़िज़ को तलब करके उस का काम बना दिया।

अब्दुर्रज़्ज़ाक़ सौदागर मुल्तानी से रिवायत है कि शैख रहमतुल्लाह अलैह के इंतिक़ाल के बाद एक मर्तबा मेरा नौकर तमाम नक़दो सामान लेकर आगरा से भाग गया, मैं सख़्त परेशान था कि इसी हालत में शैख रहमतुल्लाह अलैह की रूहे पाक की तरफ़ मुतवज्जेह हुआ, रात को ख्वाब में देखा कि आप रहमतुल्लाह अलैह मुसल्ला कंधे पर डाले हुए मस्जिद की तरफ़ जा रहे हैं, मैंने जल्दी से दौड़ कर अपना सर आप रहमतुल्लाह अलैह के क़दमों पर रख दिया, आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया इतनी ख़ुशामद ना कर और इत्मीनान रख कि भागे हुए शख़्स और माल दोनों का पांव तेरी रोज़ी की ज़ंजीर में फंसा हुआ है, लिहाज़ा जल्द पहुंचा हुआ समझना। दो रोज़ के बाद इस ख़ुशख़बरी का ज़हूर हो गया और ग़ुलाम तमाम मालो अस्बाब के साथ पकड़ा हुआ आया, एक कौड़ी की भी ख़ियानत नहीं हुई।

आप रहमतुल्लाह अलैह तमाम उम्र दर्सो तदरीस और लोगों को फ़ैज़ पहुंचाने में मशग़ूल रह कर, 11 शव्वाल 978 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने सफ़रे आख़िरत इख्तियार फ़रमाया और जमना पार अपने मुहल्ला मौसूमा मुफ़्ती पुरा में सिपुर्दे ख़ाक किए गए, अब इस मुहल्ला का नामो निशान तक मिट गया है, आसारे क़दीमा रेल की वजह से नीस्तो नाबूद हो गए सिर्फ मस्जिद हुमायूँ चंद पुराने मज़ारात के साथ यादगारे क़दीम बाक़ी रह गए हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता भी निहायत तलाशो तहक़ीक़ात से चला है जो जमना पार मौज़ा कछ पुरा के क़रीब मशरिक़ी जानिब वाक़ेअ है, साकिनाने हवेली जो अपने आपको सिंधी कहते हैं हर साल 7 सफ़र को इस मज़ार पर हाज़िर हो कर उर्स किया करते हैं, ग़ालिबन उन लोगों के मूरिसाने आला यानी दादा पर दादा मुल्तान से हज़रत शैख बहाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के साथ तशरीफ़ लाए होंगे।

(बोस्ताने अख्यार, पेज56.58)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(178) मौलाना शैख़ ज़ैनुद्दीन ख़वाफ़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह बाबर बादशाह के ज़मानए सल्तनत में काबुल से आगरा में तशरीफ़ ला कर जमना पार आबाद हुए। अक्सर उलूमो फ़ुनून में यगानए रोज़गार ख़ुसूसन फ़न्ने मुअम्मा, तारीख़, फ़िल बदीह शेअर गोई और नज़मो नस्र के तमाम कमालात में बेनज़ीर थे, **वफ़ाई** तख़ल्लुस और **मुअम्माई** ख़िताब था।

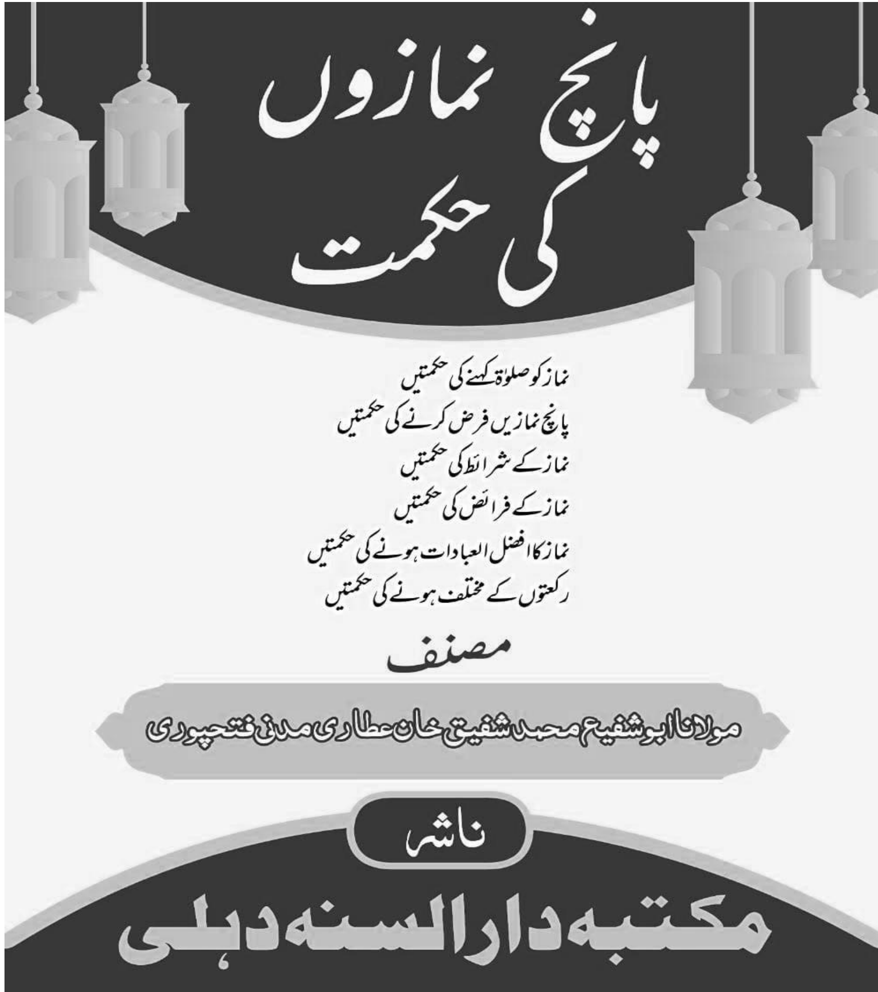
जब आप रहमतुल्लाह अलैह बाबर बादशाह की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो उसने उम्र दरयाफ्त की, आप रहमतुल्लाह अलैह फ़िल बदीह जवाब दिया, बाबर बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह के इल्मो फ़ज़्ल को देख कर सदारते कुल के मन्सबे जलीला पर सरफ़राज़ किया, आप रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा में एक मदरसा और मस्जिद तामीर कराई थी मदरसा का अब पता नहीं मस्जिद मौजूद है और जमना पार मौज़ा कछपुरा में वाक़ेअ और मस्जिद हुमायूँ के नाम से मौसूम है।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने हिन्दुस्तान के हालात और उस की फ़तह के बयान में एक तारीख़ लिखी थी जिसमें अपने कमालाते सुख़न वरी के जौहर दिखाए थे, **"वाक़िआते बाबरी"** का (जो ख़ुद बाबर की लिखी हुई तारीख़ है) तुर्की ज़बान से फ़ारसी ज़बान में निहायत फ़सीहो बलीग़ इबारत में तर्जमा किया था।

940 हिजरी बमुताबिक़ 1533 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने चुनार के मक़ाम पर इंतिक़ाल फ़रमाया और अपने मदरसा में दफ़न किए गए जो कि आगरा में वाक़ेअ है, ग़ालिबन क़ब्रिस्तान मुत्तसिल मस्जिद हुमायूँ में आप आराम फरमा हैं यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** है। (बोस्ताने अख्यार, पेज80.81)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।



(179) मौलाना अबुल वाजिद फ़ारग़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी दरवेशी और कमालात को शायरी के लिबास से छुपा रखा था। निहायत शीरीं ज़बान और नेक दिल बुज़ुर्ग थे, शैख़ ज़ैनुद्दीन मुअम्माई रहमतुल्लाह अलैह के यारे ग़ार और उन्ही के साथ काबुल से हिन्दुस्तान में आए थे, जब येह दोनों यार काबुल से रवाना हुए तो ऐसे मुफ़लिस थे कि सिवाए एक पुराने पोस्तीन के और कुछ पास ना था, शैख़ ज़ैनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने कहा कि चलो इसी को बाज़ार में बेच कर कुछ ज़ादे राह साथ ले लें, ग़र्ज़कि दोनों यार काबुल के बाज़ार में पहुंचे, एक शख़्स ख़रीदार मिला, क़ीमत में झगड़ा हुआ, ख़रीदार पाँच अशर्फ़ी लगाता था, येह लोग कुछ ज़्यादा मांगते थे। बावजूद क़ौलो क़रार आप रहमतुल्लाह अलैह से ना रहा गया और ख़रीदार से कहने लगे कि ऐ बे इन्साफ़! इस पारा पारा पोस्तीन में पाँच अशर्फ़ी की तो सिर्फ जुएँ और पिस्सू ही हैं, कपड़ा नफ़ा में है, इस गुफ़्तगु से मुआमला दरहम बरहम हो गया, शैख़ ज़ैनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह बहुत ख़फ़ा हो कर कहने लगे कि इस वक़्त एक एक रोटी को मुहताज हैं मगर आप की ख़ुश तबई नहीं जाती।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि अल्लाह रज़्ज़ाक़ है उस पर भरोसा रखो। आख़िरे कार दोनों साहिब आगरा में आकर जमना पार सुकूनत पज़ीर हुए, बाबर बादशाह का ज़माना था, शैख़ ज़ैनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह अपने इल्मो फ़ज़्ल की वजह से सदारते कुल के ओहदे पर सरफ़राज़ हो गए, आप रहमतुल्लाह अलैह उनकी रफ़ाक़त में रहे।

940 हिजरी में जब शैख़ ज़ैनुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने सफ़रे आख़िरत इख्तियार किया तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने भी हक़्क़े रफ़ाक़त अदा किया और चंद ही दिन बाद सराए फ़ानी से कूच कर के दोस्त के बराबर आराम किया।

मज़ार मुबारक का मक़ाम जमना पार मौज़ा कछपुरा में मस्जिद हुमायूँ के क़रीब है मगर कोई मज़ार नामज़द नहीं।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज35.36)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

(180) मौलाना शहाबुद्दीन मुअम्माई

आप रहमतुल्लाह अलैह बाबर बादशाह के साथ हिन्दुस्तान में तशरीफ़ लाए थे, तमाम उलूमे अक़्ली व नकली में महारते कामिला रखते थे लेकिन फ़न्ने मुअम्मा में आप रहमतुल्लाह अलैह की फ़ज़ीलत ऐसी मशहूर हुई कि सब कमालात छुप गए।

इस फ़न में आप रहमतुल्लाह अलैह ने एक बेनज़ीर रिसाला लिख कर हुमायूँ बादशाह की ख़िदमत में पेश किया था, इस के बदले में हुमायूँ बादशाह ने एक माक़ूल ईनाम के साथ एक रुबाई लिख कर आप रहमतुल्लाह अलैह के पास भेजी थी।

हज़रत अमीर ख़ुसरु देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर आप रहमतुल्लाह अलैह ने एक तख़्ती लगवा कर तारीख़ लिखवा दी थी जो अब तक आप रहमतुल्लाह अलैह की यादगार है।

942 हिजरी बमुताबिक़ 1535 ईस्वी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने सफ़रे आख़िरत इख्तियार किया। **'शहाबुस्साकिब'** के अदद 942 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल की तारीख़ है और आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मुत्तसिल मस्जिद हुमायूँ कछपुरा है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज89)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

भरतपुर (मुहल्ला नौबस्ता)

(181) शाह शौका

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह इश्क़ के मुरीद और साहिबे कमाल दरवेश थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़वारिक़े आदत की बहुत कसरत से ज़बानी रिवायतें मशहूर चली आती हैं।

पृथ्वी नाथ मशहूर जोगी और आप रहमतुल्लाह अलैह से इज़्हारे करामत के बड़े बड़े मार्के यानी मुकाबले हुए लेकिन आप रहमतुल्लाह अलैह हमेशा फ़तह याब रहे।

बीबी जीवनी, चांद बीबी और अचपाल बालिका आप रहमतुल्लाह अलैह के खास मोअतक़िदीन में से थे और आप रहमतुल्लाह अलैह ही की नज़रे तवज्जोह से कमाल के दर्जा पर पहुंचे। भरतपुर की पक्की सड़क पर मुत्तसिल मुहल्ला नौबस्ता एक निहायत बुलंदो वसीअ मक़बरा में आप रहमतुल्लाह अलैह अपने पीर और अक्सर मुरीदों के साथ आराम फरमा है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज87)

मौजूदा हालत 2025

आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक पर अभी जाना नहीं हुआ, लिहाज़ा इस किताब को पढ़ने वालों में से अगर किसी को पता चले तो सगे अत्तार को इस **मोबाइल नंबर (8808693818)** पर कॉल कर के ज़रूर बताए ताकि अगले एडीशन में मज़ार मुबारक की मौजूदा हालात शामिल किया जा सके।

दिल्ली

(182) शैख़ मुहम्मद ख़्याली

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ हसन ताहिर रहमतुल्लाह अलैह के बड़े बेटे हैं। आरिफ़े बा कमाल, साहिबे इल्मो अमल, तरीक़ए विलाएत के राज़दार, मैदाने तरीक़त के शह सवार, निहायत साहिबे तक़्वा और तारिकुद् दुनिया बुज़ुर्ग थे। ख़ुदाई इश्क़ में बेख़ुद और हर वक़्त दरयाए तौहीद में ग़र्क़ रहते थे, ख़ौफ़े ख़ुदा से आप रहमतुल्लाह अलैह का दिल रौशन था।

अगर्चे आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे बुज़ुर्गवार चिश्तिया सिल्सिले में मुंसलिक थे मगर आप रहमतुल्लाह अलैह को सिल्सिला आलिया क़ादरिया से वाबस्तगी और हज़रत ग़ौसे आज़म शैख़ मुहीय्युद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह से अक़ीदत और इश्क़ था, शब बेदार, ख़लवत दोस्त बल्कि रात के आशिक़ थे, दिन भर रात के इंतिज़ार में बेचैनो बेक़रार रहते थे, जहां शाम होती रोज़ा दारों की तरह बावुज़ू सूरज के डूबने का इंतिज़ार करते रहते थे।

तमाम रात ख़ल्वत में इबादतो रियाज़त में मसरूफ़ रह कर जब सुब्ह को हुजरे से बाहर निकलते तो चेहरे पर अजीब नूर का आलम होता था, जो चेहरा मुबारक पर नज़र डालता फ़ौरन तकबीर पढ़ कर हाफ़िज़ शीराज़ी का शेअर पढ़ता था।

शैख़ अब्दुल वह्हाब इब्ने शैख़ अबुल फ़तह मक्की अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह से आप रहमतुल्लाह अलैह को बहुत उन्स था, अपने वतन जौनपुर से आगरा में आकर उन्हीं के मकान के क़रीब एक हुजर बना लिया था, मुद्दत तक इसी हुजरे में मुक़ीम रहे।

शैख़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़ जहंजानवी रहमतुल्लाह अलैह, शैख़ अब्दुल्लाह पानीपती रहमतुल्लाह अलैह, शैख़ अमानुल्लाह पानीपती रहमतुल्लाह अलैह, मीर मुहम्मद मौदूद लारी रहमतुल्लाह अलैह, शैख़ अब्दुल वह्हाब मक्की रहमतुल्लाह अलैह इस हुजरे से फ़ैज़ो कमाल हासिल कर के मुल्के विलायत में नामवर हुए, 1016 हिजरी तक आगरा में येह हुजरा मौजूद और ज़ियारत गाह ख़ासो आम था।

सुल्तान सिकन्दर लोदी का ज़माना था कि आप रहमतुल्लाह अलैह को हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत का शौक़ पैदा हुआ और आप रहमतुल्लाह अलैह इसी इरादे से गुजरात तशरीफ़ ले गए, वहां पहुंच कर बेख़ुदी का ऐसा जज़्बा ग़ालिब हुआ कि मुकम्मल 17 बरस तक इस्तिग़राक़ की हालत में जंगल में पड़े रहे, आख़िरे कार इनायते इलाही ने आप रहमतुल्लाह अलैह को मंज़िले मक़्सूद पर पहुंचाया, 12 बरस तक दारुल नूर मदीना शरीफ में महवे जमाले अक़ीदतो इख्लासे नबवी रहे और कोई आप रहमतुल्लाह अलैह के हाल से आगाह ना हुआ, 12 बरस के बाद जब सैय्यिद अब्दुल वह्हाब बुख़ारी देहलवी रहमतुल्लाह अलैह मदीना मुनव्वरा में पहुंचे तो आलमे मिसाल में दरबारे रिसालत मआब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमान मिला कि हमारा फ़ुलां दीवाना फ़ुलां मक़ाम पर पड़ा है उसे अपने साथ हिन्दुस्तान ले जाओ कि बहुत से बंदगाने ख़ुदा वहां उस के मुंतज़िर हैं, ग़र्ज़ कि सैय्यिद अब्दुल वहहाब रहमतुल्लाह अलैह हुक्म के मुताबिक आप रहमतुल्लाह अलैह को अपने साथ दिल्ली लाए, 27 रजब 990 हिजरी को दिल्ली में आप रहमतुल्लाह अलैह विसाल फरमा गए, आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** ज़ेर बजे मंडल दिल्ली है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज155,156)

मौज़ा समधन तेराह (फर्रुखाबाद)

(183) मज़हर अली शाह मज्ज़ूब

पच्चीस तीस बरस पहले एक साहिबे कमाल और मुअम्मर मज्ज़ूब थे जो मौसूमा मानुल्लाह पहलवान में जो कचरी घाट में दरिया के किनारे वाक़ेअ है, गुंबद मज़ार शाह अब्दुल लतीफ़ बरी रहमतुल्लाह अलैह में रहा करते थे।

इब्तिदाए हाल में जज़्बाते इलाही में बेख़ुद और शराब वग़ैरा पिया करते थे मगर अख़ीर में शराब से ताइब हो कर चाय पीने लगे। नमाज़ के पाबंद और बे नमाज़ी फ़क़ीरों को बहुत गालियां दिया करते थे और फ़रमाते थे कि जब उस के दिल में नमाज़ की रौशनी नहीं है तो येह दोनों जहान का अंधा है, ना यहां उसे कुछ सूझता है ना वहां कुछ दिखाई देगा।

जो शख़्स आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर होता तो चार पाँच मिनट तो ख़ामोश रहते फिर उस से फ़रमाते: बाबा! बिस्तर आबाद करो। इस पर अगर वो सलाम कर के उठ गया तो ख़ैर वर्ना फिर डंडे से ख़बर लेते थे, लोगों के सामने आम बातें करते थे मगर अपने ज़माने के बुज़ुर्गों की ख़िदमत में तख्लिया के वक़्त हक़ीक़तो मारिफ़त के दरिया बहाते थे।

हज़रते सैय्यिद मुहम्मद अकबर अबुल उलाई दानापुरी रहमतुल्लाह अलैह अपने वालिदे बुज़ुर्गवार सैय्यिद मुहम्मद सज्जाद रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से अक्सर उम्दा उम्दा खाने पक्वा कर आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में ले जाते थे, सिर्फ उन्हें एक घंटा बैठने की इजाज़त थी। जुमेरात के दिन आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद मुहम्मद सज्जाद रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में तशरीफ़ लाया करते थे।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के उर्स में आप रहमतुल्लाह अलैह ज़रूर हाज़िर हुआ करते थे, वहां आप रहमतुल्लाह अलैह तमाम मस्त और मज्ज़ूबों के शैख़ की हैसियत से एक घोड़े पर सवार हो कर निकला करते थे, तमाम मस्तो मज्ज़ूब घोड़े के पीछे पीछे और एक नक़ीब कुछ पुकारता हुआ आगे चलता था।

मस्जिद मौसूमा ढाई दिन के झोंपड़े में अक्सर आप रहमतुल्लाह अलैह का क़ियाम रहता था। आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मौज़ा समधन तेराह ज़िला फर्रुखाबाद में वाक़ेअ है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज211.212)



बुरहानपुर

(184) क़ारी हाफ़िज़ मुहम्मद सालेह अबुल उलाई

आप रहमतुल्लाह अलैह ख़्वाजा वफ़ा के नाम से मशहूर, बड़े जय्यद हाफ़िज़ और नामवर क़ारी, अमीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और आप रहमतुल्लाह अलैह ही की मस्जिद के इमाम थे जब अमीर अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के इंतिक़ाल का ज़माना क़रीब आया तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह से फ़रमाया कि ख़्वाजा वफ़ा का सुलूक अभी तै नहीं हुआ तुम तै कर देना। चुनांचे अमीर अब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह के इंतिक़ाल के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह मीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की नज़रे कीमिया असर से अपने मक़सद को पहुंचे और जज़्बात इलाही में मुस्तग़रक़ और बादे वहदत से मस्त और खिरकए ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ हो कर हस्बे हुक्म बुरहानपुर रुख़सत हुए।

वहां बहुत से तालिबाने ख़ुदा को सिराते मुस्तक़ीम का रास्ता दिखा कर मंज़िले मक़्सूद पर पहुंचाया और 14 रबीउस्सानी 1118 हिजरी को ख़ुद भी बहिश्ते बरीं को रवाना हो गए, आगरा में आप रहमतुल्लाह अलैह की यादगार तामीर कर्दा मस्जिद मौजूद है जो मस्जिद ख़्वाजा वफ़ा के नाम से मशहूर बाज़ार सेब में वाक़ेअ और बख़ूबी आबाद है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज197.198)

हिजाज़ मुक़द्दस

(185) मौलाना अलाउद्दीन लारी

आप रहमतुल्लाह अलैह दानिशमंद कामिल और तमाम किस्म के उलूम के जामेअ थे, इब्तिदा में आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ान ज़माँ की मुसाहिबत में थे जो अकबर बादशाह के ज़माने का मशहूर अमीर था, फिर आगर में आकर एक मकान मदरसा के वास्ते तामीर करा कर बंदगाने ख़ुदा को फ़ैज़ पहुंचाने लगे। **'मदरसा ख़स'** के आदाद (969) उस की तामीर की हिजरी तारीख़ है।

चंद मुद्दत के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह हज को तशरीफ़ ले गए और वहीं आसूदगाने ख़ाके पाक के साथ हम ख़्वाब हैं, शरह अक़ाइद नस्फ़ी पर आप रहमतुल्लाह अलैह ने एक उम्दा हाशिया लिखा था।

(बोस्ताने अख्यार, पेज128.129)



रामपुर यू पी

(186) हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रामपुरी

हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रामपुरी रहमतुल्लाह अलैह हुज़ूर सैय्यिदुना ग़ौसे पाक शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह की औलाद में से हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह का ख़ानदानी और रुहानी शजरए नसब 11 पुश्त पर हुज़ूर सैय्यिदुना ग़ौसे पाक से जा मिलता है। आप रहमतुल्लाह अलैह अपने वालिद माजिद हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल जलील जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के रुहानी जांनशीन हैं। हुज़ूर सैय्यिदुना ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की तरफ़ से जो फ़ैज़ आप रहमतुल्लाह अलैह ने हासिल किया उसने आप रहमतुल्लाह अलैह को कादरी सिल्सिले का एक बहुत बड़ा वली बना दिया।

हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाने का वाक़िआ येह है कि हुज़ूर सैय्यिदुना ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की तरफ़ से आप रहमतुल्लाह अलैह को हालते ख्वाब में बिशारत हुई और हुक्म हुआ कि हिन्दुस्तान जाएं और हज़रत सैय्यिदुना सरकार शाह नियाज़ रहमतुल्लाह अलैह को कादरी सिल्सिले में बैअत करें और अपना रुहानी जानशीन (ख़लीफ़ा) बनाएं।

इसी तरह हिन्दुस्तान में हज़रत ख़्वाजा सैय्यिुदना फ़ख़रुद्दीन फ़ख़रे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने अपने ख्वाब में हुज़ूर सैय्यिदुना ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की ज़ियारत की और आप रहमतुल्लाह अलैह को हुक्म हुआ कि अन्क़रीब हम अपना फ़र्ज़ंद नियाज़ की बैअत के लिए भेजेंगे और हज़रत सैय्यिदुना फ़ख़रे पाक रहमतुल्लाह अलैह को हज़रत सैय्यिदुना अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह की शबीह यानी सूरत दिखा कर पहचान कराया गया।

छः महीने के बाद हज़रत ख़्वाजा सैय्यिदुना फ़ख़रुद्दीन फ़ख़रे पाक रहमतुल्लाह अलैह को दोबारा हुज़ूर सैय्यिदुना ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की ज़ियारत हुई और सैय्यिदुना ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया: फ़ख़रुद्दीन! हमारी औलाद दिल्ली में है और तुमने उस की ख़बर भी ना ली। हज़रत ख़्वाजा सैय्यिदुना फ़ख़रुद्दीन फ़ख़रे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने अगली ही सुब्ह मिठाई से भरा थाल तैयार कराया और अपने सर पर रखे हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के इस्तिक़बाल के लिए और हज़रत सैय्यिदुना सरकार शाह नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह का हाथ थाम कर जामा मस्जिद दिल्ली का रुख किया, जहां हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह दिल्ली पहुंच कर मुक़ीम थे। हज़रत ख़्वाजा सैय्यिदुना फ़ख़रुद्दीन फ़ख़रे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह को देखते ही पहचान लिया और आप रहमतुल्लाह अलैह से मुलाक़ात फ़रमाई।

हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह ने मुलाक़ात से फ़ारिग़ होते ही हज़रत सैय्यिदुना सरकार शाह नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह को जामा मस्जिद में भारी हुजूम के सामने कादरी सिल्सिले में बैअत किया और हज़रत सैय्यिदुना सरकार शाह नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह को अपना जानशीन मुक़र्रर फ़रमा कर ख़िलाफ़त से नवाज़ा।

हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह दिल्ली की जामा मस्जिद में जब क़ियाम पज़ीर थे। आप रहमतुल्लाह अलैह ने दिल्ली में बहुत इज़्ज़त और मक़बूलियत हासिल की। हिन्दुस्तान में उस वक़्त के अज़ीम सूफ़ियाए किराम में हज़रत ख़्वाजा सैय्यिदुना

फ़ख़रुद्दीन फ़ख़रे पाक रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत मिर्ज़ा मज़हर जाने जानाँ रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत ज़फ़र अली शाह शहाबादी रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत मीर नानू रहमतुल्लाह अलैह, हज़रत फ़तह अली रहमतुल्लाह अलैह मौजूद थे और सबने मिलकर हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह को उनके ऐहतिराम में ख़िराजे अक़ीदत पेश किया, यहां तक कि उन्होंने आप रहमतुल्लाह अलैह की पालकी को अपने कंधों पर उठा लिया।

हज़रत सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह के हिन्दुस्तान आने का सबब **"फ़र्ज़ंदे ग़ौसुल आज़म"** नामी किताब में कुछ यूं लिखा है कि:

जब दिल्ली में हज़रत नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह के कमाल की शोहरत हुई तो हासिदों ने येह मशहूर किया कि उनको किसी से बैअत ही नहीं, कमाल क्या होगा ? येह सुनकर नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह को सख़्त मलाल हुआ, कई रोज़ के बाद मौलाना फ़ख़रुद्दीन देहलवी रहमतुल्लाह अलैह सुब्ह के वक़्त मकान से बरामद हुए, सब ख़ुद्दाम सलाम के लिए हाज़िर थे, मौलाना फ़ख़रुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह की तरफ़ देख कर फ़रमाया: कि मियां! आज रात हज़रत पीराने पीर, ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह ने तुम्हारी बैअत अपने दस्ते मुबारक पर क़बूल फ़रमाई और मुझ को एक सूरत दिखाई है और फ़रमाया कि अपनी ख़ास औलाद में से उनको भेजता हूँ, बज़ाहिर उनके हाथ पर तकमील करा देना। येह सुन कर नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह ने मौलाना फ़ख़रुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के क़दम चूमे। इस बात को छः महीने गुज़र गए कि एक दिन मौलाना फ़ख़रुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह सुब्ह को बरामद हुए और फ़रमाया: कि हज़रत पीराने पीर, ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि हमारे भेजे हुए फ़र्ज़ंद को आज तीन रोज़ दिल्ली पहुंचे हुए गुज़रे और तुम

उन से ग़ाफ़िल हो। येह फ़रमा कर लोगों को तलाश के लिए भेजा, उनमें से एक शख़्स ने आकर बयान किया कि एक साहिब बग़दाद शरीफ़ के रहने वाले जामा मस्जिद दिल्ली में मुक़ीम हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह ने उनकी वज़ा क़ता यानी हुलिया पूछा, जैसा मौलाना फ़ख़रुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने ख्वाब में देखा वही वज़ा और क़ता उसने बयान की। येह सुन कर मौलाना फ़ख़रुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने मिठाई लाने का हुक्म दिया। जब मिठाई आ गई तो उस को ख्वान यानी थाल में रख कर उस ख्वान को अपने सर पर उठाया, हर चंद खादिमों और ख़ुलफ़ा ने अर्ज़ किया कि येह हमारा काम है हुज़ूर हमको दें। मौलाना फ़ख़रुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने क़बूल नहीं फ़रमाया और इस हैसियत से कि मिठाई का ख्वान सर पर और दाहिने हाथ से हज़रत नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह का हाथ पकड़े हुए दिल्ली की जामा मस्जिद में दाख़िल हुए। देखा कि मस्जिद के बीच के दर में जो साहिब बैठे हुए हैं येह वही साहिब हैं जिनकी सूरत मुझे दिखाई गई थी।

उन बुज़ुर्ग ने जिनका नाम मुबारक सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह है हज़रत नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह को देख कर फ़रमाया कि इन्ही की सूरत मुझको दिखाई गई थी जिनके लिए मैं भेजा गया हूँ। ग़र्ज़ कि मिठाई का ख्वान मौलाना फ़ख़रुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह ने सर से उतार कर हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह के सामने रखा और हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने वहीं मस्जिद के मेहराब में दो रकअत नमाज़ अदा करने और तहीय्यत व खानदानी दुआये मासूरा के बाद बैअत फ़रमाई, और हर किस्म की तालीम और तल्क़ीन से नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह को मालामाल कर दिया।

(फ़र्ज़ंदे ग़ौसुल आज़म, पेज 125,126)

हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह के आगरा आने का वाक़िया **"फ़र्ज़ंदे ग़ौसुल आज़म"** किताब में कुछ यूं लिखा है कि ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रामपुरी रहमतुल्लाह अलैह बग़दाद से हिन्दुस्तान तशरीफ़ ला कर हज़रत सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह को ख़िलाफ़त व इजाज़त से नवाज़ा जिस का हाल ख़ुद हज़रत सैय्यिद अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह की ज़बानी सुनिए चुनांचे फ़रमाते हैं:

जब फ़र्ज़ंदे महबूबे सुब्हानी हज़रत सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी कादरी रहमतुल्लाह अलैह आगरा तशरीफ़ लाए और मुहल्ला ताज गंज में क़ियाम फ़रमाया तो मैं भी हाज़िरे ख़िदमत हुआ और क़दम बोसी की। हज़रत रहमतुल्लाह अलैह ने मेरा सर अपने सीने से लगा लिया और कसीर मजमा के सामने फ़रमाया: ऐ मेरे बेटे अमजद अली! मैं आगरा में अपने जद्द हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से इस लिए आया हूँ कि तुम्हें खिरकए बुज़ुर्गान, कुलाह यानी टोपी, अलम और ख़िलाफ़त इनायत करूँ । मैं हज़रत ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म के इत्तिबा में यहां तक पहुंचा हूँ । तुम्हें मुबारक हो कि येह दौलत बे मांगे मिल रही है । येह सुनकर ख़ुशी की हद ना रही और मुझ पर एक बे ख़ुदी तारी हो गई, जब मुझे होश आया तो मैंने अर्ज़ किया ऐ मेरे आक़ा! कमज़ोर च्यूंटी से पहाड़ का बोझ कैसे बर्दाश्त हो सकता है ? हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने तबस्सुम फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया: येह मन्सब मेरे जद्द हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह ने तुम्हें इनायत फ़रमाया है मेरे हाथ से लो और क़ुदरते क़ादिर का तमाशा देखो । हज़रत ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने एक चोर को एक नज़र में क़ुतुब बना दिया था तुम तो शरीफ़ु क़ौम और साहिबे इल्म हो और सैय्यिद हो और दरवेशों से निस्बत रखते हो, तुम्हारे वालिद

भी इस सिल्सिले से तअल्लुक़ रखते हैं। अगर तुम्हें अपनी शफ़क़त की वजह से इस नेअमत से नवाज़ा गया तो क्या बईद है।

हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि चंद रुकावटों की वजह से ख़िलाफ़त अता करने में कुछ ताख़ीर होती रही यहां तक कि ग्यारहवीं के दिन मुझे तलब फ़रमाया और शुरफा, नुजबा और मशाईख़ के एक बड़े मजमा के सामने अपने हाथ से मुझे खिरकए ख़िलाफ़त पहनाया और अपने सर मुबारक की टोपी मेरे सर पर रखी और अलमे कादरी और ख़िलाफ़त नामा जो मेरे पास मौजूद है अता फ़रमाया और मुरीदों को हुक्म दिया कि उनको मेरा क़ाइम मक़ाम और नाइब समझते हुए हर महीने की ग्यारहवीं और ख़ास कर बड़ी ग्यारहवीं की फ़ातिहा में इनके मददगार और मुआविन रहें और मेरे जद्द यानी गौसे पाक की नियाज़ उनको पहुंचाएं और बाल बराबर उनके हुक्म से इन्हिराफ़ ना करें, जो कोई उनके ख़िलाफ़ होगा वो मेरे और मेरे जद्दे बुज़ुर्गवार यानी गौसे पाक के ख़िलाफ़ है। और इसी रोज़ ख़्वाजा मुहम्मद मीर साहिब रहमतुल्लाह अलैह को खिरकए ख़िलाफ़त, ख़ास टोपी और अलम मर्हमत फ़रमाया। इस के बाद मौलवी शम्सुद्दुहा रहमतुल्लाह अलैह और सैय्यिद हसन अली साहिब रहमतुल्लाह अलैह को खिरकए ख़िलाफ़त, टोपी मुबारक और ख़िलाफ़त नामा अता हुआ।

जब हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह आगरा से रामपुर तशरीफ़ ले गए जहां अब हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार मुबारक है तो वहां पहुंच कर मुझे तलब फ़रमाया और वहां ख़िलअते ख़ास दस्तार अपने सर मुबारक की और पंजए बग़दादी और अलम नामा मर्हमत फ़रमाया।

येह पंजा बग़दाद शरीफ़ का बना हुआ है और इस में **"या सैय्यिद सुल्तान अब्दुल क़ादिर जीलानी शैइन लिल्लाह अलमदद"** लिखा हुआ है। येह अलम हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह बग़दाद शरीफ़ से हिन्दुस्तान तशरीफ़ आवरी के वक़्त साथ लाए थे। हज़रत अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि येह अलम मुबारक मेरे जद्द और मेरे आक़ा ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार अक़्दस के सिरहाने लगा हुआ था, मैं उसे हिन्दुस्तान ले आया था अब हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की येह अमानत उनके हुक्म के मुताबिक़ तुम्हें इनायत करता हूँ। इस की ताज़ीम जैसी चाहिए वैसी करना।

हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं चुनांचे वो अलम शरीफ़ मेरे पास है और ग्यारहवीं शरीफ़ की मजलिस में एक मकान में जो कटरा आबरेशम ताज गंज में है और जिसके मालिकों ने वो मकान हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह की नज़र कर दिया है। और हज़ारों मुरिदीन और तालिबीन उस रोज़ उस की ज़ियारत करते हैं।

(फ़र्ज़ंदे ग़ौसे आज़म, पेज 115,117)

नोट अब येह पंजा और अलम मुबारक हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के औलाद के पास सेब के बाज़ार में मेवा कटरा नामी मुहल्ले में मौजूद है और ग्यारहवीं शरीफ़ में इस की ज़ियारत करवाई जाती है।

इस के बाद हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी रहमतुल्लाह अलैह रामपुर (यूपी) तशरीफ़ ले गए। रामपुर के नवाब फ़ैज़ुल्लाह ख़ान आप रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द व मुरीद हुए और उनके इसरार पर हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह मुस्तक़िल तौर पर रामपुर में आबाद हो गए। रामपुर में हज़रत शैख़ सैय्यिद

अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह ने एक अज़ीमुश्शान मस्जिद और ख़ानक़ाह तामीर करवाई लेकिन कभी घर नहीं बनाया। इस तामीराती काम के लिए फ़ैज़ुल्लाह ख़ान ने हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह को मदद करने की दरख्वास्त पेश की लेकिन हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह ने मना फ़रमा दिया।

हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह का विसाल 14 मुहर्रम 1207 हिजरी को हुआ। आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** रामपुर में ही तामीर किया गया। हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह अपने साथ बग़दाद से एक पत्थर लाए थे जिसमें हुज़ूर सैय्यिदुना नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पांव मुबारक के निशान थे आप रहमतुल्लाह अलैह की वसीयत के मुताबिक़ येह पत्थर हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार में पैवस्त कर दिया गया।

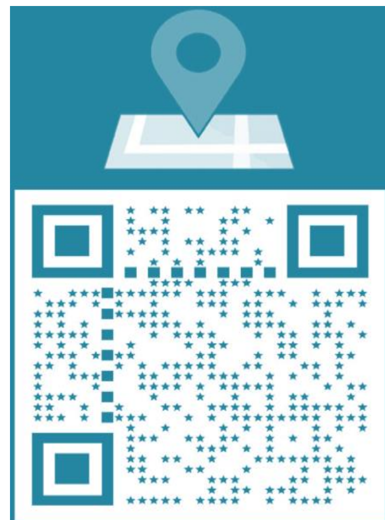
हज़रत शैख़ सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी जीलानी क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह के खोलफ़ा में हज़रत सरकार क़िब्ला सैय्यिदुना हुज़ूर शाह नियाज़ बेनियाज़ रहमतुल्लाह अलैह , हज़रत मौलवी सैय्यिदुना मज़हर अली रहमतुल्लाह अलैह , सैय्यिदुना शम्सुद्दुहा अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह , हज़रत अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह शामिल हैं।

करामत

हज़रत सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह रामपुर पहुंच कर एक आलीशान मस्जिद और चहार दीवारी और ख़ानक़ाह तैयार करवाया, और हर चंद नवाब साहिब ने अर्ज़ किया कि इस काम के वास्ते रुपये मैं नज़र करता हूँ। आप रहमतुल्लाह अलैह ने क़बूल नहीं फ़रमाया और जिस

मुसल्ले पर आप रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ़ फ़रमा थे तमाम दिन जिस क़दर ख़र्च की ज़रूरत होती मुसल्ले के नीचे से निकाल कर दिया करते थे। एक रोज़ एक मज़दूर ने येह ख़्याल कर के कि सैय्यिद साहिब रहमतुल्लाह अलैह का सब रुपया वग़ैरा इस मुसल्ले के नीचे गड़ा रहता है रात को आकर उस जगह को खोदा, कुछ ना मिला, नादिम हो कर उस ज़मीन को वैसे ही बराबर कर दिया। अगले रोज़ फिर सैय्यिद अब्दुल्लाह बग़दादी रहमतुल्लाह अलैह ने उसी मुसल्ले पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और तमाम दिन जिस काम की ज़रूरत हुई उसी मुसल्ले के नीचे से निकाल कर दिया। शाम के वक़्त जब सबको मज़दूरी तक़सीम फ़रमाई तो उस मज़दूर को दोगुनी मज़दूरी मर्हमत फ़रमाई, और फ़रमाया कि एक आज दिन की और एक रात की है। वो मज़दूर बहुत शर्मिंदा हुआ और क़दमों पर गिर गया और क़सूर माफ़ कराया। (फ़र्ज़ंदे ग़ौसुल आज़म, पेज 23)

अब्दुल्लाह बगदादी रामपुरी रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार के **Location** का **QR Code** इस को अपने मोबाइल से **Scan** कीजिए, आप के मोबाइल पर **Location** खुल जाएगी, जिस की मदद से आसानी के साथ आप मज़ार मुबारक तक पहुँच सकते हैं।



मज़ार का पता नहीं चल सका

आगरा के 283 औलियाए किराम में से 186 औलियाए किराम के मज़ारात का पता चल पाया है और 97 औलियाए किराम के मज़ारात का पता नहीं चल सका लेकिन उनकी सीरत अलग अलग किताबों में मौजूद है।

मज़ार का पता नहीं चल सका

(187) ख़लीफ़ा अबुल क़ासिम अबुल उलाई

आप रहमतुल्लाह अलैह मुल्ला उमर अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के दामाद, और मुल्ला वली मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द, मुरीद व खलीफा हैं और मुल्ला वली मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के खलीफा हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह आलिमे बा अमल, मुतावक्किल, साहिब तक़्वा और अकबराबाद के आलमगीर बादशाह के ज़माने के मशहूर मशाईख़ीन में से हैं,

शाह अब्दुर्रहीम देहलवी रहमतुल्लाह अलैह (जो कि मौलाना शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के वालिद हैं) ने हाफ़िज़ सैय्यिद अब्दुल्लाह नक़्शबंदी रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह की सोहबत से फ़ैज़ हासिल किया था, चुनांचे मौलाना शाह वलीयुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब **'अन्फ़ासुल आरिफीन'** में आप रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक्रे ख़ैर कलमबंद फ़रमाया है: कि आप रहमतुल्लाह अलैह पर गुमनामी पसंद ग़ालिब था, तसर्रुफ़ात और करामात भी रखते थे। अल्लाह पाक के ख़ज़ाने के दरवाज़े आप रहमतुल्लाह अलैह पर कुशादा थे, जब हज के वास्ते तशरीफ़ ले गए तो बहुत से मुरीदाने जांनिसार साथ थे, रवानगी के वक़्त एक पैसा भी जेब में मौजूद ना था, जब घर से बाहर निकले एक शख़्स ने चार आना बतौरे नज़र पेश किए, आप रहमतुल्लाह अलैह ने जेब में डाल लिए, वो चार आना वापसी के वक़्त बदस्तूर जेब में मौजूद थे, हरमैन शरीफ़ैन और रास्ते में अजीबो ग़रीब करामात आप रहमतुल्लाह अलैह से ज़हूर में आईं।

हरमैन शरीफ़ैन में एक शख़्स के पास हज़रत ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह की कुलाह यानी टोपी मुबारक थी, उस ने हज़रत ग़ौसे आज़म रहमतुल्लाह अलैह को ख्वाब में देखा, गौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया: कि येह टोपी अबुल क़ासिम अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के हवाला कर दो। सुब्ह सवेरे वो शख़्स तलाश करता हुआ आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में पहुंचा और ख्वाब का वाक़िआ बयान कर के टोपी और उस के साथ एक क़ीमती जुब्बा बतौरे इम्तिहान आप रहमतुल्लाह अलैह के हवाले किया और कहा कि इस नेमते उज़मा के शुक्रिया में शहर के नेक लोगों की दावत करना चाहिए। आप रहमतुल्लाह अलैह ने जुब्बा को बेच कर के उम्दा और लज़ीज़ खाने पक्वाए और शहर के तमाम नेक लोगों की दावत फ़रमाई।

येह देखकर उस शख़्स को बहुत तअज्जुब हुआ और कहा कि बज़ाहिर आप रहमतुल्लाह अलैह मुतावक्किल हैं और कोई अस्बाबे ज़ाहिरी आप रहमतुल्लाह अलैह के पास मौजूद नहीं है फिर इस क़द्र ज़्यादा खाना आप रहमतुल्लाह अलैह ने कहाँ से तैयार करवाया ? आप रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि जुब्बा बेच कर के दावत की गई है, इस पर उसने शोर और फ़र्याद की कि मैंने इस फ़क़ीर को अहल समझ कर तबर्रुकात दिए थे उसने यूं ज़ाए कर दिए, आप रहमतुल्लाह अलैह ने चुपके से कहा ख़ामोश रह, जो तबर्रुक था यानी टोपी वो मौजूद है और जो तबर्रुक ना था और महेज़ इम्तिहान की ग़रज़ से पेश किया गया था उसे फ़रोख़्त कर दिया गया है। येह बात सुन कर वो ख़ामोश हो गया।

मौलाना शाह वलीयुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह ने अपने वालिद अब्दुर्रहीम रहमतुल्लाह अलैह की ज़बानी आप रहमतुल्लाह अलैह की कई करामात **"अन्फ़ासुल आरिफीन"** में तहरीर फ़रमाई हैं जिनके नक़ल की इस किताब में गुंजाइश नहीं है।

माहे रमज़ानुल मुबारक 1089 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह गुलशने रुहानी की सैर को तशरीफ़ ले गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं मिल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज21.23)

(188) मुफ़्ती अबुल फ़तह फ़ारुकी

आप रहमतुल्लाह अलैह थानेसर के मुतवत्तिन यानी रहने वाले हैं और शैख़ अब्दुल ग़फ़ूर इब्ने शैख़ शर्फ़ुद्दीन फ़ारूक़ी रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे हैं, उलूमे मन्क़ूलात में क़ाज़ी मुहम्मद फ़ारूक़ी और माक़ूलात में हाजी हसन बिकरी से कमाल का दर्जा हासिल किया था।

सुल्तान सिकन्दर लोदी के ज़माने में दारुल ख़िलाफ़ा आगरा में तशरीफ़ लाकर सुकूनत इख्तियार की और हज़रत मीर रफ़ीउद्दीन सफवी रहमतुल्लाह अलैह से हदीस की सनद हासिल कर के पच्चास साल तक मीर रफ़ीउद्दीन सफवी रहमतुल्लाह अलैह के मुहल्ले में उलूमे अकली व नक़ली का दर्स फ़रमाते रहे।

आप रहमतुल्लाह अलैह की बदौलत हज़ारहा लोग फ़ज़ीलत के दर्जे पर पहुंचे और मुद्दत तक आप रहमतुल्लाह अलैह का फ़ैज़ जारी रहा।

मियां कमालुद्दीन हुसैन शीराज़ी रहमतुल्लाह अलैह, शैख़ अफ़ज़ल मुहम्मद अंसारी रहमतुल्लाह अलैह, क़ाज़ी नासिर अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह, हाजी इब्राहीम सरहिंदी रहमतुल्लाह अलैह, मुल्ला अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह वगैरा आप रहमतुल्लाह अलैह की शागिर्दी से उस्ताद हफ़्त इक़लीम हुए।

8 जुमादल अव्वल 976 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़िर्दोसे बरीं की राह ली यानी आप रहमतुल्लाह अलैह,का विसाल हो गया।

"मौते मुफ़्ती" रेहलत की तारीख़ है और आगरा की ज़मीन आरामगाह है, अब आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** के निशान का पता नहीं चलता, आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे शैख़ ईसा रहमतुल्लाह अलैह की सीरत इस किताब में मौजूद है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज33)

(289) शैख़ ईसा मुफ़्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह मुफ़्ती शैख़ अबुल फ़तह फ़ारूक़ी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे और शागिर्द हैं, आलिमे बा अमल, अख्लाक़े पसंदीदा से मौसूफ़, औसाफ़े हमीदा से आरास्ता और जहांगीर बादशाह के ज़माने में अकबराबाद यानी आगरा के मुफ़्ती थे।

1018 हिजरी में क़ज़ा का ओहदा आप रहमतुल्लाह अलैह के सिपुर्द किया गया, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख़्यार, पेज131)

(190) मीर अबुल गैस बुख़ारी

आप रहमतुल्लाह अलैह सूफ़ी मशरब और साहिबे निस्बत बुज़ुर्ग थे। औलियाए किबार और मशाईख़ीने नामदार की सोहबत से फ़ैज़ हासिल किए थे, दुनिया से किनारा कश, तहज़ीबे अख्लाक़, सख़ावत और हुस्ने मुआमलात के औसाफ़ से मौसूफ़ थे।

जमाअत का यहां तक शौक़ था कि मरज़ुल मौत में भी बावजूद सख़्त बीमारी के कभी तक्बीरे तहरीमा आप रहमतुल्लाह अलैह से फ़ौत नहीं हुई। आप रहमतुल्लाह अलैह की मजलिस में हर वक़्त ख़ुदा व रसूल का ज़िक्र और मशाईख़ीन, साहिबे हाल बुज़ुर्गों के बयान हुआ करते थे।

995 हिजरी में बहिश्ते बरीं को कूंच फ़रमाया यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

'मीर सितूदा सैर' रेहलत की तारीख़ है और ख्वाबगाह गोशे गुमनामी में है यानी आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज36)

(191) हाजी इब्राहीम मुहद्दिस अकबराबादी

आप रहमतुल्लाह अलैह मानिकपुर केरहने वाले थे, शैख़ दाऊद रहमतुल्लाह अलैह के बेटे, कुन्नियत अबुल मकारिम और विसाली तख़ल्लुस था, ज़ोहदो तक़्वे में बेनज़ीर शरीअत की ज़िंदा तस्वीर और तरीक़त के बद्रे मुनीर थे, उलूमे अक़्ली की तहसील अपने वतन में कर के सय्याही पर कमर बाँधी। पहले बग़दाद शरीफ़ में ढाई साल मुक़ीम रह कर तफ़सीर व हदीस का इल्म कमाल के दर्जे तक पहुंचाया, फिर वहां से ख़ैरुल बिलाद मक्का शरीफ़ की ज़ियारत व तवाफ़ के वास्ते रवाना हुए, हज की सआदत से मुशर्रफ़ हो कर मिस्र पहुंचे। यहां शैख़ शम्सुद्दीन अल्कमी रहमतुल्लाह अलैह शागिर्द बिल वास्ता शैख़ जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाह अलैह से हदीस की तसहीह की और शैख़ुल उरफ़ा रहमतुल्लाह अलैह, शैख़ मुहम्मद बिकरी शाफ़ेई रहमतुल्लाह अलैह से हदीस की सनद व इजाज़त लेकर दोबारा मक्कए मुअज़्ज़मा की तरफ़ लौटे। यहां शैख़ अब्दुर्रहमान मग़रिबी रहमतुल्लाह अलैह, शैख़ मसऊद मग़रिबी रहमतुल्लाह अलैह और शैख अली मुत्तक़ी रहमतुल्लाह अलैह के हल्क़ए दर्स में अज़ सरे नौ कुतुबे अहादीस की तकरार की और सेहत व शनाख़्त में आली मर्तबा हासिल किया।

इस के बाद दोबारा मिस्र का रुख किया और वहां पहुंच कर बराबर 24 साल तक तमाम उलूम का दर्स देते रहे, इस अर्से में हर साल हज के वास्ते आते जाते रहे, इस के बाद मुल्के शाम की सय्याही फ़रमाई और शहरी और सहराई बुज़ुर्गों की फ़ैज़े सोहबत से कमालात का ज़ख़ीरा फ़राहम कर के हिन्दुस्तान में वापिस आए।

जब दारुल खिलाफ़त आगरा में गुज़र हुआ तो आबो दाना की कशिश और साकिनाने आगरा की ख़ुश क़िस्मती ने यहां के क़ियाम का ख़्याल आप रहमतुल्लाह अलैह के दिल में पैदा किया लिहाज़ा यहां सुकूनत इख्तियार कर के तफ़सीर व हदीस और फ़िक़्ह के दर्स और वाज़ व नसीहत में मशग़ूल हुए।

साहिबे मुंतख़बुत्तवारीख का बयान है कि आप रहमतुल्लाह अलैह शबो रोज़ यानी रात दिन दीनी उलूम ख़ुसूसन इल्मे हदीस के पढ़ाने में मसरूफ़ रहते थे, बहुत से लोगों को आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़ैज़ व इल्म की मंज़िल पर पहुंचाया, आप रहमतुल्लाह अलैह का ज़ोहदो तक़्वा लोगों से मुलाक़ात का मानेअ था यानी आप रहमतुल्लाह अलैह लोगों से ज़्यादा नहीं मिलते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह हमेशा नेकी की दावत देते और बुराई से मना करते थे।

अकबर बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह को इबादत खाने में तलब फ़रमाया, आप रहमतुल्लाह अलैह तशरीफ़ लाए मगर अदब व आदाब के शाही तरीक़े बजा ना लाए और बादशाह को बहुत सी नसीहतो वाज़ कर के रुख़सत हुए, ख़्वाजा अब्दुस्समद शीराज़ी जो ज़ाहिरी इबादत में मशग़ूल रहा करता था उस से आप रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाया करते थे कि ख़्वाजा जब तक ख़ुलफ़ाए राशिदीन की मुहब्बत तुम्हारे दिल में ना आएगी इस नमाज़ रोज़ा से कुछ फ़ायदा ना होगा।

19 ज़िलहिज्जा, 1001 हिजरी को 86 साल की उम्र में वफ़ात पाई, वफ़ात से पहले सैय्यिद क़ासिम बयानवी अपने शागिर्दे रशीद को अपना जांनशीन मुक़र्रर फ़रमाया।

अफ़सोस कि ऐसे बा कमाल बुज़ुर्ग के **मज़ार मुबारक** का पता ना चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज36.38)

(192) ख़्वाजा इब्राहीम हुसैन

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के ज़माने के एक साहिब निस्बत बुज़ुर्ग हैं, जो किताबत से अपनी गुज़र औक़ात कर के ख़ुदा की याद में मसरूफ़ रहते थे, ख़त्ते नस्तालीक़ में कमाल हासिल था। सफ़र के महीने में सफ़रे आख़िरत फ़रमाया। अब्दुल क़ादिर बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह ने तारीख़ रेहलत मौज़ूं की।

बर मूजिबे हुक्म बादशाहे कौनैन
दर माहे सफ़र ख़्वाजा इब्राहीम हुसैन
चूँ कर्द सफ़र ज़ आलम पुर शर व शीन
तारीख़ शुदश ख़्वाजा इब्राहीम हुसैन

"ख़्वाजा इब्राहीम हुसैन" आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात का साल है यानी 1001 हिजरी, आप रहमतुल्लाह अलैह के आरामगाह यानी **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख़्यार, पेज38.39)

(193) क़ाज़ी अबू बक्र

आप रहमतुल्लाह अलैह बादशाह आलमगीर के ज़माने के उलमाए बा कमाल में से थे, ख़्वाजा बख़्तावर ख़ां साहिबे तारीख़ मिराते आलम के हुक्म से आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़िक़्ह में एक किताब लिखी थी जो **फ़तावाए बख़्तावर ख़ानी** के नाम से मौसूम थी।

अफ़सोस! आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात का साल और **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख़्यार, पेज40)

(194) शैख़ इस्माईल चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद सहीहुन्नसब और मशाहीरे औलियाए अकबराबाद से हैं उलूमे अकली व नक़ली में यकताए रोज़गार और

कमालाते बातिनी में शोहरए आफ़ाक़ थे, तालिबे दुनिया और तालिबे उक़बा दोनों तरह के लोग आप रहमतुल्लाह अलैह की मजलिस से फ़ैज़ पाते थे। आप रहमतुल्लाह अलैह का मक़ूला था कि तालिबे दुनिया अगर अपनी मुराद को पहुँचेगा तो उस के दिल में औलिया की मुहब्बत पैदा होगी और रफ़्ता रफ़्ता यानी धीरे धीरे तालिबे हक़ हो जाएगा।

ग़र्ज़ कि कोई शख़्स आप रहमतुल्लाह अलैह की मजलिस से महरूम व तही दस्त यानी खाली हाथ ना जाता था, वज्द और सिमाअ के आप रहमतुल्लाह अलैह आशिक़े ज़ार थे।

2 रमज़ान, 1066 हिजरी को हज और दीदार के वास्ते कूच फ़रमाया, राक़िमे बोस्तान को बदकिस्मती से **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।

तारीख़े वफ़ात

ख़लील दहर इस्माईले सानी
बहिश्ती शुद चुवां नेको सरश्ती

इस शेअर के मिसरे **चुवां नेको सरश्ती** के आदाद 1066 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज44.45)

(195) शैख़ इस्हाक़ मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह सालिक मज्ज़ूब थे, शुरू हाल में रस्मी उलूम हासिल करके शैख़ अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप के अन्फ़ासो तवज्जोह की बरकत से चंद रोज़ में बहुत से सुलूक के दर्जे तै कर लिए। आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़बान ख़ुदाई तर्जुमान और आप रहमतुल्लाह अलैह का सीना मशीय्यते इलाही का आईना था। इस आईना में जो नज़र आता वो बेधड़क ज़बान पर जाता था।

एक दिन आलमे बे इख़्तियारी में ख़लवत के राज़ों को जलवत में बयान फ़रमा रहे थे कि हज़रते शैख़ तशरीफ़ ले आए और येह बातें सुन कर फ़रमाया कि इस जिन को यहां से उठाओ। फ़ौरन मजनून की हालत पैदा हो गई और चल दिए, कभी रोते कभी हंसते। अक्सर गिर्या में येह फ़िक़रा ज़बान पर रहता था **"सुब्हानल्लाह हेच कस पैदा शुद कि अंदोख़्ता शैख़ अब्दुल क़ुद्दूस रा बर दारद"** बावजूद इस हैरानी व सर गरदानी के मुबाहिसाते इल्मी के मौक़ा पर अस्हाबे दानिश व ख़िरद से सबक़त ले जाते थे।

आरामगाह आगरा में है मगर मक़ाम ला पता है यानी **मज़ार मुबारक** की जगह मालूम ना हो सकी। (बोस्ताने अख्यार, पेज45.46)

(296) शैख़ यूसुफ़ अंसारी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ अब्दुल्लाह तमीमी अंसारी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे अर्जुमंद यानी बेटे और शागिर्दे रशीद हैं, मीर रफ़ीउद्दीन सफ़्वी रहमतुल्लाह अलैह, शैख़ बहाउद्दीन मुफ़्ती रहमतुल्लाह अलैह, शैख़ अबुल फ़तह मक्की रहमतुल्लाह अलैह, शैख़ फखरुद्दीन मदारी रहमतुल्लाह अलैह वग़ैरा बुज़ुर्गाने अकबराबाद के हम असर और सबकी ख़िदमत से मुस्तफ़ीज़ और अमीर सैय्यिद इस्माईल क़ादरी रहमतुल्लाह अलैह की बैअतो ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ और दामादी से मुफ़्तख़िर थे और आप रहमतुल्लाह अलैह के अन्फ़ासे मुताबर्रिका की बरकत से दरियाए तौहीद में ग़र्क़ हो कर कमाल की तह पर पहुंच गए।

994 हिजरी में शव्वाल की आख़िरी तारीख़ थी कि अपने बेटे शैख़ अफ़ज़ल मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह से कहा कि आज रोज़े विसाल है तुम कहीं बाहर ना जाना।

नमाज़े मग़रिब के बाद ज़िलक़ादा का चाँद देख कर मस्जिद से मकान में आए, उसी वक़्त तकिया पर सर रख कर अपनी जान को कलिमए शहादत के साथ अस्ली वतन में पहुंचा दिया यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

जब जिस्मे ख़ाकी को सिपुर्दे ख़ाक करने के वास्ते महल्ले ख़ाकी में उतारा तो आँखों से आँसू और बदन से अर्क़ यानी पसीना जारी था, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज254)

आप रहमतुल्लाह अलैह के बेटे शैख अफज़ल मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह की सीरत इस किताब में मौजूद है।

(197) शैख़ अफ़ज़ल मुहम्मद

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ यूसुफ़ तमीमी अंसारी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे, मुरीद और ख़लीफ़ा हैं। रस्मी उलूम की तहसील अपने मुहतरम चचा शैख़ जलाल रहमतुल्लाह अलैह और उनकी वफ़ात के बाद शैख़ अबुल फ़तह मुफ़्ती रहमतुल्लाह अलैह के हल्क़ए दर्स से फ़रमाई, इस के बाद अल्लामा अबुल फ़ज़्ल के वालिद शैख़ मुबारक और क़ाज़ी जलालुद्दीन की शागिर्दी में कमाल हासिल किया।

हदीस की सनद मीर जाफ़र अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह से हासिल की। वालिदे बुज़ुर्गवार की रुहानी परवरिश से कमालाते बातिनी में कमाल पाया और बाप की ज़िंदगी ही में जांनशीन हो गए, कई मर्तबा आलमे ख़्वाब में हुज़ूर रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए और बारगाहे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से **हिज़्बुल बहर** पढ़ने की इजाज़त मिली।

बहुत से लोग आप की हिदायतो इरशाद की बदौलत शर्फ़े इस्लाम से मुशर्रफ़ हुए, बहुत से मुसलमानों ने आप रहमतुल्लाह अलैह की सोहबत से ख़ुदा शनासी की अँखें रौशन कीं।

21 सफ़र 1003 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने रेहलत फरमाई, **"अफ़ज़ल अनाम"** और ख़ुद आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम मुबारक **"अफ़ज़ल मुहम्मद"** रेहलत के साल का हम अदद हैं, आरामगाह आगरा है मगर आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता ना चल सका।

शैख़ अब्दुस्समद अंसारी रहमतुल्लाह अलैह साहिबे **"अख़बारुल अस्फ़िया"** और **"जामेअ इंशाए अबुल फ़ज़्ल"** आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे और अबुल फ़ज़्ल के भांजे थे, इनका ज़िक्र इस किताब में मौजूद है। (बोस्ताने अख्यार, पेज46)

(298) शैख़ अब्दुस्समद अंसारी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ अफ़ज़ल मुहम्मद अंसारी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे और अल्लामी अबुल फ़ज़्ल के भांजे हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का इल्मे अरूस अमल के ज़ेवर से आरास्ता और आप रहमतुल्लाह अलैह की इंशा पर्दाज़ी बेनज़ीर समझी जाती थी, मकातिबाते अल्लामी (अबुल फ़ज़्ल) के आप रहमतुल्लाह अलैह जामेअ और **"अख्बारु अस्फ़िया"** के मुअल्लिफ़ हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज111)

(199) शैख़ बा यज़ीद ख़्वेशगी

आप रहमतुल्लाह अलैह औरंगज़ेब आलमगीर बादशाह के ज़माने के एक साहिबे निस्बत और वाक़िफ़े हक़ीक़त बुज़ुर्ग थे 1094 हिजरी में दारुस्सुरूर को रेहलत फरमा हुए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात हो गई।

"शुद ज़ आफ़ाक आह सानी बायज़ीद" के अदद 1094 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात का साल है, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कोई पता ना चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज53)

(200) अमीर सैय्यिद जलाल मुतवक्किल

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद सदरुद्दीन हसनी तिर्मिज़ी मुतावक्किल रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंद यानी बेटे हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़ानदान के बुज़ुर्ग हिन्दुस्तान में आकर अवध में सुकूनत पज़ीर हुए थे, वहीं 897 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह पैदा हुए, तमीज़ की उमर को पहुंच कर ख़ुदा शनासी के सुलूक का शौक़ पैदा हुआ तो शैख़ राजी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हो गए लेकिन वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के हुक्म से सिपाहियाना ज़िंदगी बसर करते रहे, पानीपत की लड़ाई में अपने बाप के साथ सुल्तान इब्राहीम लोदी के साथ थे, इसी लड़ाई में आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिद तो शहीद हो गए और आप शदीद ज़ख्मी हुए, जो मरहम पट्टी से अच्छे हो गए।

इस के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह क़स्बा सरहरपुर (जो कि जौनपुर के अतराफ़ में वाक़ेअ है) में शैख़ अलहद्दाद रहमतुल्लाह अलैह और अहमद शरीफ़ जौनपुरी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुए और चार बरस तक कमालाते इलाही और मारिफ़ते इलाही हासिल करते रहे, चूँकि आप

रहमतुल्लाह अलैह के बाल बच्चे आगरा में थे, लिहाज़ा शैख़ अलहद्दाद रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया कि अगर्चे आगरा की विलायत सैय्यिद मुईनुद्दीन बयानवी रहमतुल्लाह अलैह के तसर्रुफ़ में है लेकिन हमने इल्तिमास कर के दसवाँ हिस्सा तुम्हारे नाम से ले लिया है, बेहतर है कि तुम अपने घर की तरफ़ चले जाओ।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने हुक्म की तामील की और आगरा चले आये, चूँकि बरसों हुसूले फ़क्र की मश्क़ से तही दस्ती और भूके रहने के आदी हो चुके थे, लिहाज़ा बादशाहों के कहने के बावजूद अपनी गुज़र औकात के लिए कोई मिल्कियत क़बूल नहीं फ़रमाई और लोगों की ज़बान से मुतावक्किल का ख़िताब पाया।

मनक़ूल है कि एक रोज़ ख़ानक़ाह के दरवाज़ा पर क़लंदरों ने आकर दस्तक दी। ख़ादिम बाहर आया, क़लंदरों ने कहा कि साहिबे ख़ाना यानी घर वाले से हमारा सलाम कहो, नाम पूछा तो जवाब दिया कि ख़ुद जानते हैं, ख़ादिम ने अंदर जाकर येह हाल बयान किया, आप रहमतुल्लाह अलैह ने थोड़ी देर सर झुका कर ग़ौरो फ़िक्र फ़रमाया और फिर सर उठा कर फ़रमाया : जाओ जमाल और हुसैन कह कर बुला लो। क़लंदर अपना नाम सुनकर मुतहय्यर यानी तअज्जुब में पड़ गये और हाज़िरे ख़िदमत हो कर हाथ चूमे और बैअत की ख्वाहिश ज़ाहिर की, आप रहमतुल्लाह अलैह ने इल्तिमास क़बूल करके फ़रमाया दरवेशों की आज़माईश का कभी ख्याल दिल में ना आने देना क्योंकि हर वक़्त और हर घंटा यकसाँ यानी बराबर हाल नहीं होता, लिहाज़ा इस गिरोह के साथ हुस्ने अक़ीदत को आज़माईश पर मुन्हसिर नहीं रखना चाहिए।

10 ज़िल हिज्जा 969 हिजरी को ईदुल अज़्हा की नमाज़ से पहले आप रहमतुल्लाह अलैह नमाज़े ईद ईदगाह के बजाये विसाल के ईदगाह को रवाना हुए।

"शैख़ जहां" आप रहमतुल्लाह अलैह की रेहलत की तारीख़ है यानी उस के अदद 969 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात का साल है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिब ज़ादे सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की सीरत इस किताब में मौजूद है, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता ना चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज63.64)

(201) सैय्यिद बदरुद्दीन

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद जलाल मुतावक्किल के फ़र्ज़ंदे अर्जुमंद यानी बेटे हैं जिनका का ज़िक्र अभी गुज़रा, 943 हिजरी में पैदा हुए, उलूमे ज़ाहिरी की तहसील शैख़ अबुल फ़तह मुफ़्ती रहमतुल्लाह अलैह और शैख़ जलाल अंसारी रहमतुल्लाह अलैह के हल्क़ए दर्स से की। बातिन की परवरिश अपने वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह से पाई और शैख़ अब्दुल अज़ीज़ देहलवी रहमतुल्लाह अलैह से भी खिरकए ख़िलाफ़त हासिल किया।

आप रहमतुल्लाह अलैह की तमामो कमाले हिम्मत शरीअत की हदों की निगहबानी में और तमामो कमाल नीयते इसरार हक़ीक़त की पासबानी में सर्फ होती थी, रहनुमाई और नसीहत के वक़्त कश्फ़ो मारिफ़त के अनवार शरीअत के लिबास में पोशीदा इबारत के ज़रिये से बयान फ़रमाया करते थे। तसव्वुफ़ की ज़ाहिरी बातें बहुत कम बयान फ़रमाते। और इस क़ौल के पाबंद थे (राज़ों का ज़ाहिर करना अहरार के रविश के ख़िलाफ़ है)।

शैख़ मुहम्मद सूफ़ी से मनक़ूल है कि एक रोज़ मैं जंगल में जा रहा था अचानक दो अरब शरीफ के रहने वाले सामने नज़र आए और सलाम के बाद उन्होंने पूछा कि सैय्यिद बदरुद्दीन इब्ने सैय्यिद जलाल मुतावक्किल रहमतुल्लाह अलैह को आप जानते हैं ? मैंने जवाब दिया कि मैं आप रहमतुल्लाह अलैह ही के ख़ानवादए आली का अदना ग़ुलाम हूँ। उन्होंने कहा कि उनसे मिलना है, मैं उन दोनों को लेकर आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में गया, दोनों ने क़दम बोसी के बाद अर्ज़ किया कि किसी फ़र्ज़ंदे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बैअत होने की मुद्दत से आरज़ू थी, आलमे ख़्वाब में जनाब सरवर आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत नसीब हुई और हुक्म हुआ कि आगरा जा कर सैय्यिद बदरुद्दीन के मुरीद हो जाओ, अगर्चे हमारे फ़र्ज़ंद इस मुल्क में भी हैं मगर तुम्हारा हिस्सा मशीयते इलाही ने उन ही की तहवील में रखा है। आप रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि इस शहर में तुम्हारे मतलूब नाम का शख़्स कोई और शख़्स होगा तलाश करो और तहक़ीक़ व तशख़ीस यानी पहचान के बाद बैअत करो, उन्होंने अर्ज़ किया कि जो अलामतें हमको बतलाई गई हैं वो सब आप रहमतुल्लाह अलैह में मौजूद हैं, ग़र्ज़ कि वो दोनों अरब मुरीद हुए और उसी रात को वापसी की इजाज़त हासिल की, रुख़स्त के वक़्त बाहर तक मैं उनके साथ गया, उन्होंने कहा कि जिस साल सैय्यिद की दाढ़ी में सफ़ैद बाल नमूदार यानी ज़ाहिर होगा वही साल आप रहमतुल्लाह अलैह के कमाल का होगा।

चुनांचे 55 साल की उम्र में बुढ़ापे की सफ़ेदी नमूदार हुई और उसी साल के सफ़र के महीने की 6 तारीख़ को मर्ज़ इस्तिस्क़ा लाहिक़ हुआ, मुकम्मल दो महीने तक बीमार रहे लेकिन वज़ाइफ़ में किसी किस्म का

फ़र्क़ ना आया, आख़िरे कार 29 रबीउल अव्वल 998 हिज्री को बहिश्ते बरीं हो गये यानी आप रहमतुल्लाह अलैह विसाल फरमा गये।

काफ़ी तलाश करने के बावजूद आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज53.55)

आप रहमतुल्लाह अलैह के बेटे सैय्यिद भिकारी रहमतुल्लाह अलैह हैं जिनकी सीरत इस किताब में मौजूद है।

(202) सैय्यिद भिकारी

सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के बेटे और साहिब हाल बुज़ुर्ग थे। 26 रबीउल अव्वल 998 हिजरी को वालिदे बुज़ुर्गवार ने बीमारी की हालत में शहर के बुज़ुर्गाने दीन को बुला कर उनके रूबरू ख़िरक़ा और सज्जादा आप रहमतुल्लाह अलैह को मर्हमत फरमा कर ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ किया, तमाम उम्र आप रहमतुल्लाह अलैह ने अल्लाह पाक की इबादत में बसर फ़रमाई और बंदगाने ख़ुदा को दर्सो तदरीस और हिदायतो इरशाद से फ़ैज़ पहुंचाते रहे।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज60)

(203) शाह अज़मतुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अब्दुल लतीफ़ इब्ने सैय्यिद बदरुद्दीन इब्ने सैय्यिद जलाल मुतावक्किल रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे और अकबराबाद के औलियाए किबार और मशाईख़ीने नामदार से थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह सिल्सिला क़ादरिया, चिश्तिया, सुहरवर्दिया और शत्तारिया में तालिबाने ख़ुदा को तलक़ीन फ़रमाया करते थे। अपने जद्दे अमजद यानी दादा सैय्यिद जलाल रहमतुल्लाह अलैह की तरह निहायत मुतावक्किल और गोशा नशीन बुज़ुर्ग थे।

तमाम उम्र गोशए क़नाअत में इस तरह बसर की कि किसी फ़क़ीर या ग़नी के दरवाज़े पर भी नहीं गए। शाह अब्दुर्रहीम देहलवी रहमतुल्लाह अलैह जो कि मौलाना शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के वालिदे माजिद हैं को सिल्सिला चिश्तिया और सुहरवर्दिया की इजाज़त आप रहमतुल्लाह अलैह ही से हासिल हुई थी।

4 रबीउल अव्वल 1084 हिजरी को 72 साल की उम्र में आप रहमतुल्लाह अलैह बहिश्ते बरीं को तशरीफ़ ले गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया, राक़िमे बोस्तान को आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज124)

(204) शैख़ बुरहान शत्तारी

आप रहमतुल्लाह अलैह आलमगीर बादशाह के ज़माने के औलिया अल्लाह में से हैं, शाबान 1083 हिज्री में आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हुआ।

"साहिब मुल्क ख़ुल्द बुरहां" के अदद 1083 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह का साले वफ़ात है, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता ना चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज55)

(205) ख़्वाजा बख़्तियार

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के ज़माने के एक साहिबे कमाल दरवेश थे, आप रहमतुल्लाह अलैह को बाज़ और शिकरा परिंदों का बहुत शौक़ था और बहुत कसरत से पाल रखे थे, अक्सर औक़ात शिकार के वास्ते भी जाया करते थे। बावजूद इस के कि किसी किस्म का दुन्यवी अस्बाब व समान मौजूद ना था मगर मत्बख़ यानी बावर्ची खाना हर वक़्त

गर्म रहता था यानी खाना पकता रहता था और हर शख़्स के वास्ते हर वक़्त ताज़ा खाना आता था, दिन भर यही सिल्सिला जारी रहता था।

सख़ावत व दरिया दिली का येह आलम था कि कोई मिस्कीन या फ़क़ीर आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह से ख़ाली हाथ ना जाता था अक्सर लोग येह हालात देख कर आप रहमतुल्लाह अलैह को कीमिया गर ख़्याल करते थे, मगर साहिबे तबक़ाते अकबरी के क़ौल के मुताबिक आप रहमतुल्लाह अलैह कीमियागर ना थे बल्कि ख़ुदाई ख़ज़ानों के दरवाज़े आप रहमतुल्लाह अलैह पर कुशादा थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** लापता है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज58)

(206) अमीर सैय्यिद जाफ़र मुहद्दिस

आप रहमतुल्लाह अलैह अमीर ज़ैनुल आबिदीन इब्ने हज़रत अमीर तक़ीउद्दीन किरमानी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे हैं, सैय्यिद सहीहुन्नसब और उलूमे अक़्ली व नक़ली ख़ुसूसन इल्मे हदीस में यकताए रोज़गार थे बहुत से तिशनगाने उलूम आप रहमतुल्लाह अलैह के दरियाए इल्मो फ़ज़्ल से सैराब हुए।

आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा में आराम फरमा हैं मगर आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख़्यार, पेज62)

(207) शैख़ जाफ़र

आप रहमतुल्लाह अलैह आलमगीर बादशाह के ज़माने के बुज़ुर्गों में से हैं, 1074 हिजरी में वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।

"जाये जाफ़र बहिश्त" के अदद 1074 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज62.63)

(208) शैख़ जलाल मुतावर्रे

आप रहमतुल्लाह अलैह बादशाह औरंगज़ेब आलमगीर के ज़माने के ख़ुदा शनासाँ, अहले दिल में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह ने 1089 हिजरी में वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।

"शुद बहिश्त जाये जलाल" के अदद 1089 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात का साल है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज65.66)

(209) क़ाज़ी जलालुद्दीन मुल्तानी

आप रहमतुल्लाह अलैह हिन्दुस्तान के बड़े आलिम मुताबहहिर, हक़ कहने वाले और ख़ुदा परस्त थे, शैख़ वजीहुद्दीन अहमदाबादी रहमतुल्लाह अलैह और शैख़ जलाल अंसारी अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के हल्क़ए दर्स से आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़ज़्लो कमाल का ज़ख़ीरा फ़राहम और फ़क़्र व तसव्वुफ़ की चाशनी चखी थी।

इब्तिदाए ज़माने में तिजारत किया करते थे, उस के बाद दर्स में मशग़ूल हुए, कई बरस तक आगरा में आप रहमतुल्लाह अलैह का इल्मी फ़ैज़ (यानी मदरसा) जारी रहा, सैकड़ों इल्म के प्यासे आप रहमतुल्लाह अलैह के दरियाए इल्मो फ़ज़्ल से सैराब हुए। अकबर बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह के इल्म व फ़ज़्ल और दियानतो अमानत का हाल सुनकर क़ाज़ी याक़ूब की जगह आप रहमतुल्लाह अलैह को अकबराबाद (आगरा) का क़ाज़ी मुक़र्रर किया, आख़िरे कार आप रहमतुल्लाह अलैह की हक़ गोई और ख़ुदा परस्ती ने आप रहमतुल्लाह अलैह को जिला वतन कराया, आगरा से आप रहमतुल्लाह अलैह बीजापुर पहुंचे, वहां के हुक्काम ने आप रहमतुल्लाह अलैह के दीने इस्लाम में इस्तिक़ामत और इज़्हारे कलिमतुल हक़ का हाल सुना तो बहुत ताज़ीमो

तकरीम से पेश आए, वहां से हज के सफ़र को तशरीफ़ ले गए और वहीं 999 हिजरी में सफ़रे आख़िरत इख्तियार किया यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया। और बाज़ किताबों में लिखा है कि आप रहमतुल्लाह अलैह बीजापुर में ही विसाल फ़रमाया, वल्लाहु आलम।

(बोस्ताने अख्यार, पेज67)

(210) जमाल शाह मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह मदारिया सिल्सिले के फ़क़ीर थे, हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की नज़र पुर असर की तासीर से शराबे वहदत से मदहोश हो कर मज्ज़ूबे कामिल हो गए, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज67.68)

(211) शैख़ जमालुद्दीन मुहद्दिस

आप रहमतुल्लाह अलैह आलमगीर के ज़माने के मुहद्दिसाने बा कमाल और मशाईख़ीने नामदार में से हैं।

21 ज़िलक़ादा 1078 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई।

"दा दह जमाल रौनके ख़ुल्द" के अदद 1078 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का हिजरी साल है, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज68)

(212) मुफ़्ती शैख़ जुनैद

आप रहमतुल्लाह अलैह मुफ़्ती बहाउद्दीन मुल्तानी अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे, साहिबे इल्म, पाकीज़ा अख्लाक़, सितूदा सिफ़ात और ज़ाहिदाना अफ़आल वाले थे, इल्मो फ़ज़्ल की तहसील अपने वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह से की थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह का दस्तर ख़्वान खलीली दस्तर ख़्वान था, बिग़ैर मेहमान के कभी आप रहमतुल्लाह अलैह खाना नहीं खाते थे, हाजत मंदों के हक़ में आप रहमतुल्लाह अलैह की सिफ़ारिश असर करती थी, ज़रूरत वाले लोगों की ज़रूरते पूरी हो जाया करती थीं।

इसी तरह आप रहमतुल्लाह अलैह की दुआएं अपने और बेगाने दोनों के वास्ते आम और मुश्किलात में मक़बूल हुआ करती थीं, 4 शाबान 998 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह रुहानी बाग़ की सैर को तशरीफ़ ले गए, आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा में दफ़न हैं मगर **मज़ार मुबारक** का कोई पता ना चल सका।

आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिद मुफ़्ती बहाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** कछपुरा में मौजूद है। (बोस्ताने अख्यार, पेज68)

(213) शैख़ चंदन क़ुरैशी

आप रहमतुल्लाह अलैह अल्लामा अबुल फ़ज़्ल के नाना हैं और शैख मुबारक के सुसर हैं, उलूम दीनी, तक़्वा व परहेज़गारी, बुलंद हिम्मती, ईसार, तवक्कुल वग़ैरा औसाफ़े हमीदा और सिफ़ाते पसंदीदा से मौसूफ़ थे, शैख़ जमाली रहमतुल्लाह अलैह के पीर भाई और शैख़ समाउद्दीन कंबोह देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाया करते थे कि इन्सान के वास्ते अल्लाह पाक की इनायत से येह चार चीज़ें काफ़ी है: (1) इल्म, (2) अमल, (3) उम्र, (4) आफ़ियत। और येह चारों चीज़ें तीनते बशरी के ख़मीर में दाख़िल हैं, उनके हुसूल के वास्ते दुआ के ज़रिये से ख्वाहिश करनी चाहिए, जब उबूदीयत का मर्तबा कमाल को पहुँचेगा।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** आगरा में है मगर मज़ार मुबारक का कोई पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज69.70)

(214) सैय्यिद हबीब मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह का जज़्बए सुलूक के साथ शामिल और मस्ती व होशयारी मिली जुली थी, पोशीदा वाक़िआत और छुपे हुए हालात का आप रहमतुल्लाह अलैह की बसीरत के आईना में अक्स पड़ता था।

आगरा में शाह क़ली ख़ां मुर्हम के बाग़ के पहलू में आप रहमतुल्लाह अलैह का घर था, अब ना बाग़ मौजूद ना मज़ार का कुछ निशान है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख़्यार, पेज70)

(215) मिर्ज़ा हसन बेग सूफ़ी

आप रहमतुल्लाह अलैह आलमगीर बादशाह के ज़माने के मशाईख़ीन में से हैं, शबे जुमा 22 सफ़र 1074 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक का पता नहीं चल सका।

"हसन बेग शहीदे ख़ुदा" इस के अदद 1074 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज71.72)

(216) शैख़ हुसैन बदख़शी

आप रहमतुल्लाह अलैह मख़दूम शैख़ हुसैन खवारिज़मी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा और बहुत बड़े साहिबे बातिन बुज़ुर्ग थे, शरीअत पर साबित क़दम और सिल्सिला कबीरिया के मोतक़िद थे, इश्क़ो मुहब्बते इलाही में सरशार थे।

हर रोज़ सुब्ह की नमाज़ के बाद शैख़ रशीद की किताब **"मिस्बाह"** और **"मसनवी मौलाना रुम"** आप रहमतुल्लाह अलैह की मजलिस में पढ़ी जाती थी, आप रहमतुल्लाह अलैह की सोहबत बड़ी बा असर

थी कि हज़ारों पर असर कर गई, अकबर बादशाह के ज़माने में हज और ज़ियारत के वास्ते कूच फ़रमाया।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कोई निशान अब नहीं मिलता। (बोस्ताने अख़्यार, पेज72)

(217) मीर सैय्यिद रफ़ीउद्दीन सानी

आप रहमतुल्लाह अलैह क़ुतुबे आलम शैख़ अब्दुल क़ुद्दूस गंगोही रहमतुल्लाह अलैह के ख़ुलफ़ाए आज़म में से हैं, 965 हिज्री में वफ़ात पाई, **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख़्यार, पेज79)

(218) शाह रफ़ीउद्दीन सब्ज़ पोश

आप रहमतुल्लाह अलैह आलमगीर बादशाह के ज़माने के बुज़ुर्गाने ख़ुदा शनास में से थे, 1086 हिजरी में वासिल ब हक हुए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया। **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। तारीख़

"सैय्यिद रफ़ीअ ज़ुब्दए ख़ुल्द" के अदद 1086 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल का साल है। (बोस्ताने अख़्यार, पेज79)

(219) शैख़ ज़ाहिद

आप रहमतुल्लाह अलैह आलिम बा अमल आरिफ़ हक़ शनास औलियाए कामिल में से थे, इश्क़े हक़ीक़ी की सोज़िश से आप रहमतुल्लाह अलैह का सीना कबाब बना रहता था।

16 रबीउल अव्वल 1070 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने विसाल फ़रमाया।

"जा ज़ाहिद बहिश्त वाला शुद" के अदद 1070 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल फ़रमाने का साल है, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता ना चल सका।(बोस्ताने अख्यार, पेज80)

(220) सैय्यिद ज़ैनुल आबिदीन

आप रहमतुल्लाह अलैह उलमाए अकबराबाद (आगरा) में से हैं, सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक़िदीने ख़ास से थे, **तज़्किरए असरारुल अबरार** जिसमें सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह के हालात लिखे हुए हैं आप रहमतुल्लाह अलैह ही की यादगार है यानी येह किताब आप रहमतुल्लाह अलैह ही की लिखी हुई है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल और **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज82)

(221) शैख़ सालिम बनी इसराईल

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ हिसामुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के बेटे हैं, ज़ोहदो तक़्वे में शोहरए आफ़ाक़ और रियाज़तो नफ्स कुशी में बेनज़ीर थे, इब्तिदाए हाल में बमक़ाम दिल्ली उलूमे रस्मी की तहसील की, इस के बाद अज़ली इनायत ने जज़्बए इलाही से हम अग़ोश कर दिया और आगरा आकर इबादतो रियाज़त में मशग़ूल हुए।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने तमाम खाने पीने की चीज़ें छोड़ दी थीं, और दिन रात में बक़दर रमक़ दूध पी लिया करते थे, अकबर बादशाह के ज़माने में ब क़ैदे हयात थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज83)

(222) सक़्क़ा

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ जामी मुहम्मद हनु सानी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और साहिबे जज़्बा व हाल बुज़ुर्ग थे, आप रहमतुल्लाह अलैह का नाम मुबारक गुमनामी में पोशीदा है, अकबर बादशाह के ज़माने में हमेशा आगरा के गली कूचों में अपने चंद शागिर्दों को साथ लिए हुए और मश्कें यानी मटके कंधे पर धरे हुए मख़्लूक़े ख़ुदा को पानी पिलाने में मसरूफ़ रहते थे, इसी हाल में अक्सर अशआर अबदार फ़रमाते थे, शागिर्दों ने कई दीवान जमा किए मगर आप रहमतुल्लाह अलैह ने हालते जज़्बा में सब को धो डाला, अख़ीर में सिर्फ एक दीवान किसी तरह बच गया।

एक मर्तबा आप रहमतुल्लाह अलैह के पीर ज़ादों में से एक शख़्स हिन्दुस्तान में आया, उस वक़्त जो कुछ आप रहमतुल्लाह अलैह के पास मौजूद था सब उस की नज़र कर दिया और बिल्कुल तजरीद इख्तियार कर के सरन्दीप (लंका) का रास्ता लिया।

1000 हिजरी में अस्नाए राह में अल्लाह पाक के जल्वों की ज़ियारत के वास्ते सफ़र इख्तियार किया यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया, वो मुल्क बिल्कुल कुफ़रिस्तान था, एक शख़्स को ख्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बिशारत दी लिहाज़ा उसने आप रहमतुल्लाह अलैह की तजहीज़ो तकफ़ीन की। (बोस्ताने अख्यार, पेज83.84)

(223) मीर सैय्यिद अहमद

आप रहमतुल्लाह अलैह सियालकोट के रहने वाले हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद मुहम्मद फ़ाज़िल मज़हरुल हक़ साहिबे मुख़्बिरुल वासिलीन के वालिदे बुज़ुर्गवार और शाहजहाँ बादशाह के ज़माना के मशाईख़ीने नामदार में से थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह जुमेरात के दिन 25 ज़िलहिज्जा 1062 हिजरी को दारुल फ़ना से दारुल बका को कूंच फ़रमाया। और आगरा में मदफ़ून हुए, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।

"आब व रौनक ब ख़ुल्द अज़ अहमद" इस के अदद 1062 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का साल है।

(बोस्ताने अख्यार, पेज86)

(224) सैय्यिद शाह मीर सामाना

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद सहीहुन्नसब हैं। तमाम उलूम में यकता और बड़े आबिद व ज़ाहिद बुज़ुर्ग थे, अकबर बादशाह के ज़माने में जमना पार मुफ़्ती पुरा में शैख़ बहाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के क़रीब रहते थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह तमाम उम्र क़ानेअ और तलबा के पढ़ाने में मसरूफ़ रहे। सैकड़ों तलबा और सूफ़ी ख़ानक़ाह में जमा रहते और आप रहमतुल्लाह अलैह की सोहबत से फ़ायदा उठाते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज88)

(225) मौलाना शम्सुद्दुहा अकबराबादी

आप रहमतुल्लाह अलैह मुल्ला वली मुहम्मद के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं (जिनका का मज़ार मुबारक बालू गंज में खोया मंडी के पास है, इनका ज़िक्र इस किताब में मौजूद है) और सैय्यिद अब्दुल्लाह क़ादरी बग़दादी, रामपुरी रहमतुल्लाह अलैह के ख़लीफ़ा और अमजद अली शाह रहमतुल्लाह अलैह के पीर भाई और तेरहवीं सदी हिजरी के मशाइख़ीने अकबराबाद में से हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका।(बोस्ताने अख्यार, पेज88.89)

(226) शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी

आप रहमतुल्लाह अलैह ग़ौसुल औलिया, शैख़ मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंद रशीद यानी बेटे हैं, वालिद माजिद रहमतुल्लाह अलैह की ज़िंदगी ही में गुजरात तशरीफ़ ले गए और हज़रते शैख़ वजीहुद्दीन अल्वी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत बा बरकत में तमाम उलूमे अक़्ली व नक़ली में कमाल हासिल किया।

इस के बाद नहरदाला (पाक पटन) में शैख़ मुहम्मद ताहिर लोहरा मुहद्दिस रहमतुल्लाह अलैह की मुकम्मल दस साल तक शागिर्दी कर के हदीस की सनद हासिल की। इसी अरसे में हज़रत ग़ौसुल औलिया, शैख़ मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह ने शैख़ नूर मुहम्मद को खिरकए ख़िलाफ़त और इजाज़त नामा देकर आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में रवाना किया था।

970 हिजरी में वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह के विसाल फ़रमाने के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह ग्वालियर तशरीफ़ लाए और चंद रोज़ वहां क़ियाम करके आगरा को अपने क़ुदूमे मैमनत लुज़ूम से मुशर्रफ़ किया और यहां की सुकूनत इख़्तियार फ़रमा कर मकान और ख़ानकाह तामीर कराई।

35 साल तक अज़ रुये बातिन ख़ुदा शनासी के हुजरे में चिल्ला नशीन रहे और अज़ रुये ज़ाहिर लोगों से मेल मुलाक़ात और जलसों की नशिस्तो बर्ख़ास्त को अपने ख़लवत के जमाल का निक़ाब बनाए रखा।

साहिबे मुंतख़बुत्तवारीख का बयान है कि आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह में रातो दिन तसव्वुफ़ की गुफ़्तगु हुआ करती थी और इस इल्म में आप रहमतुल्लाह अलैह को ऐसी महारत हासिल थी कि और मशाईख़ में कम होती है, क़ुरआन शरीफ़ आप रहमतुल्लाह अलैह को ख़ूब याद था और इस

के मा'ना इस उम्दगी से बयान फ़रमाते थे कि किसी तफ़सीर की ज़रूरत ना रहती थी।

फकीरों और मुसाफ़िरों और अहले हाजत की हाजत रवाई का आप रहमतुल्लाह अलैह को खास तौर से ख़्याल रहता था।

1005 हिजरी में बमक़ाम लाहौर अकबर बादशाह की रान में एक हिरन के सींग से निहायत सख़्त ज़ख्म आया था, अकबर बादशाह ने एक रोज़ अल्लामा अबुल फ़ज़्ल से कहा कि इस वाक़िआ से दूरो नज़्दीक के तमाम अकाबिर और उमरा के आने से हमें शैख़ ज़ियाउल्लाह रहमतुल्लाह अलैह याद आए, लेकिन शैख़ ज़ियाउल्लाह रहमतुल्लाह अलैह ने हम को याद नहीं किया यानी मेरी बीमार पुर्सी करने नहीं आएं। शैख़ अबुल फ़ज़्ल ने अकबर बादशाह का येह हाल आप रहमतुल्लाह अलैह को लिख भेजा। आप रहमतुल्लाह अलैह ना चाहते हुए भी आगरा से लाहौर पहुंचे और अकबर बादशाह की इयादत फ़रमाई। चंद रोज़ के बाद अकबर बादशाह ने कहा कि शहज़ादा दानियाल की एक बीवी उम्मीद से है यानी उस को बच्चा होने वाला है, हमारी तमन्ना है कि वज़अ हमल शैख़ के मुताबर्रिक मकान में हो। आप रहमतुल्लाह अलैह ने इस हुक्म की तामील में कई मर्तबा उज़्र पेश किया मगर क़बूल ना हुआ बिल आख़िर शहज़ादा दानियाल की बीवी ने आप रहमतुल्लाह अलैह के मकान में आ कर बच्चा जना।

आप रहमतुल्लाह अलैह को इस वाक़िआ से ऐसी नफ़रत पैदा हुई कि ज़िंदगी से तंगदिल हो गए और एक हफ़्ता के बाद 3 रमज़ान, 1005 हिजरी को फ़िर्दोसे बरीं को रवाना हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

पहले आप रहमतुल्लाह अलैह को बतौर अमानत लाहौर में सिपुर्दे ख़ाक किया गया फिर एक साल के बाद वहां से मुंतक़िल हो कर आगरा में आप

रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह के अंदर दफ़न किया गया। अब ना ख़ानक़ाह मौजूद, ना **मज़ार मुबारक** का पता है, अब सिर्फ किताबों में आप रहमतुल्लाह अलैह का मुबारक नाम बाक़ी और यादगार रह गया है।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज92.93)

(227) अमीर अब्दुल बासित

आप रहमतुल्लाह अलैह अमीर अब्दुल्लाह अहरारी रहमतुल्लाह अलैह के बड़े बेटे और हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के चचाज़ाद भाई और साले हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह अपने वालिदे माजिद रहमतुल्लाह अलैह के इंतिक़ाल के बाद हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हो कर नेअमते बातिन के तालिब हुए, हज़रत अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह ने एक ही तवज्जोह में आप रहमतुल्लाह अलैह को मंज़िले मक़्सूद पर पहुंचा दिया। यानी आप रहमतुल्लाह अलैह विलायत के मर्तबा पर फ़ाइज़ हो गए, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज95)

(228) शैख़ अब्दुल्लाह घटवासन

आप रहमतुल्लाह अलैह का मशरब उवैसिया था, निहायत मुतावक्किल बुज़ुर्ग थे, कभी दुनियादार लोगों के पास अपनी ज़रूरत के लिए नहीं गए।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** मौज़ा घटवासन के क़रीब था जिसका अब पता नहीं चलता। (बोस्ताने अख़्यार, पेज96)

(229) शाह फ़र्हाद सिफ़ात जमाली क़ादरी नक़्शबंदी

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद के ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के पूरे हालात ला इल्मी में हैं।

23 रजब 1199 हिजरी को दो शंबा यानी पीर शरीफ़ के दिन आप रह रहमतुल्लाह अलैह ने रेहलत फ़रमाई।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।
(बोस्ताने अख्यार, पेज138)

(230) मौलाना फ़रीद

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद शाह मीर सामाना रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और शागिर्दे रशीद और उलमाए अकबराबाद से थे, जमुना पार मुहल्ला मुफ़्ती पुरा में अपने उस्ताद की ख़ानक़ाह में रहते थे, अगर्चे तहसीले उलूम मामूली की थी मगर ऐसा कमाल हासिल कर लिया था कि कैसा ही मुश्किल मसला आप रहमतुल्लाह अलैह से दरयाफ्त किया जाता उसे आप रहमतुल्लाह अलैह हल कर देते थे।

मशहूर था कि मशरिक़ व मग़रिब के तमाम वाक़िआत हर रात को अपने पीर के सामने बयान कर दिया करते थे, कोई कहता था कि जिन आप रहमतुल्लाह अलैह का मुतीअ है, कोई और कुछ ख़्याल करता था।

हज़रते शैख़ ज़ियाउल्लाह रहमतुल्लाह अलैह तमाम सिल्सिला गौसिया के आप रहमतुल्लाह अलैह के मोअतक़िदीने ख़ास से थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज138)

(231) शैख़ फ़िरोज़

आप रहमतुल्लाह अलैह शाहजहाँ बादशाह के ज़माने के मशाईख़ीन में से हैं, 1061 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने विसाल फ़रमाया, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।
(बोस्ताने अख्यार, पेज139)

(232) क़ाज़ी क़ुर्बान

आप रहमतुल्लाह अलैह शाहजहाँ और आलमगीर के ज़माने में अकबराबाद के क़ाज़ीउल कुज़ात और साहिबे इल्म व अमल थे,

शाहजहाँ बादशाह की तजहीज़ो तकफ़ीन आप रहमतुल्लाह अलैह ही के हाथ से हुई।

1085 में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई।

"बसा अज़ीज़ क़ाज़ी बूदा" इस के अदद 1085 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के वफ़ात का हिजरी साल है, अफ़सोस आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का भी कुछ पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज140)

(233) सैय्यिद लुत्फ़ुल्लाह शहीद

आप रहमतुल्लाह अलैह हाजीउल हरमैन शरीफ़ैन और आलमगीर बादशाह के ज़माने के शुहदाए नामदार से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। आप रहमतुल्लाह अलैह की शहादत की तारीख़ 1089 हिजरी है। (बोस्ताने अख्यार, पेज144)

(234) लोटन शाह मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह बड़े मस्त मज्ज़ूब थे, बाज़ारों में लोटा करते थे और दूर दूर तक लोटते हुए चले जाते थे, इसी वजह से लोटन शाह नाम पड़ गया, अक्सर आप रहमतुल्लाह अलैह के साथ कुत्ते रहा करते थे, एक मर्तबा हज़रत सैय्यिद क़ुर्बान अली शाह नक़्शबंदी मुजद्दिदी जो कि आगरा में सदर दीवानी (हाईकोर्ट) में वकालत करते थे कचहरी से पालकी में बैठ कर घर को तशरीफ़ ला रहे थे रास्ता में आप रहमतुल्लाह अलैह भी साथ हो लिए, जब मकान पर पहुंचे तो आप रहमतुल्लाह अलैह वापस होने लगे। सैय्यिद क़ुर्बान अली शाह साहिब ने फ़रमाया कि येह हमारा मकान है अंदर चले आओ। आप रहमतुल्लाह अलैह उनके साथ अंदर तशरीफ़ ले गए, मग़रिब की नमाज़ का वक़्त क़रीब था, सैय्यिद साहिब ने आप रहमतुल्लाह अलैह से फ़रमाया कि मियां लोटन शाह तुमने कभी नमाज़ भी पढ़ी है ?

आप रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया: कभी नहीं पढ़ी। सैय्यिद साहिब ने फ़रमाया: कि आज हमारे साथ नमाज़ पढ़ लो, और ख़ादिम को हुक्म दिया कि आप रहमतुल्लाह अलैह को वुज़ू करवाए, पस वुज़ू के बाद नमाज़ में अपने पीछे खड़ा कर लिया, नमाज़ की हालत में आप रहमतुल्लाह अलैह को कैफ़ियते गिर्या यानी रोने की कैफियत शुरू हो गई, सैय्यिद साहिब तो नमाज़ तमाम फरमा कर फ़ारिग़ हो गए मगर आप रहमतुल्लाह अलैह की नमाज़ बहुत देर तक ख़त्म ना हुई और लगातार सज्दे पर सज्दे करते रहे और बार बार कहते थे कि मीर साहिब आप ने तो मुझे अल्लाह के सामने खड़ा कर दिया अब तो मैं नमाज़ ही पढ़े जाऊँगा। जब किसी तरह नमाज़ ख़त्म होते ना देखी तो सैय्यिद साहिब के एक मुलाज़िम ने आप रहमतुल्लाह अलैह को बा मुश्किल मकान से ले जा कर दुकान पर बैठा दिया। तीन शबाना रोज़ यानी तीन दिन रात यही कैफ़ीयत तारी रही और इसी हालत में वासिल बह हक़ हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज145.146)

(235) शैख़ माखू मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह बड़े साहिबे जज़्ब मज्ज़ूब थे, साहिबे तबक़ाते अकबरी का बयान है कि आगरा में अजीबो ग़रीब बातें और इन्किशाफ़े बातिन आप रहमतुल्लाह अलैह से ज़ाहिर हुईं। आसमानी ख़ज़ानों के दरवाज़े आप रहमतुल्लाह अलैह पर कुशादा थे, हमेशा बीसियों बच्चे आप रहमतुल्लाह अलैह के साथ गली कूचे में फिरा करते और लोगों को गालियां दिया करते थे, सबको रोज़ाना आप रहमतुल्लाह अलैह से वज़ीफ़ा मिला करता था जो लड़का गालियों की ज़्यादा तवाज़ो करता वो ज़्यादा इनाम पाया था।

सैकड़ों मोहताज व तंगदस्त आप रहमतुल्लाह अलैह के साथ लगे रहते थे और नक़द रुपये से फ़ैज़याब होते थे। हर शख़्स से आप रहमतुल्लाह अलैह की येह इल्तिजा होती थी कि दुआ करो कि माखू जल्द ज़मीन में समा जाये।

982 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ाक नशीन हुए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया, **"शैख़ माखू"** के अदद 982 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के रेहलत की तारीख़ है, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कोई पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज146)

(236) शैख़ मुहिब्बुल्लाह

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद के औलियाए नामदार, मशाईख़ीने साहिबे असरार से हैं, उलूमे ज़ाहिरी में अहले ज़माना के उस्ताद और अपने ज़माने के उलमा में मुम्ताज़ थे। बहुत सी तसानीफ़ आप रहमतुल्लाह अलैह ने छोड़ी थीं जिनमें सबसे मशहूर और बेहतर **"शरह फ़ुसूस"** है।

बेशुमार तालिबाने ख़ुदा आप रहमतुल्लाह अलैह की नज़र कीमिया असर से कमाल के मर्तबा पर पहुंचे। 21 जुमादस्सानी 1058 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह आलमे बक़ा को कूच फरमा गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कोई पता नहीं चल सका।

"शैख़ मुहिब्बुज़्ज़मां" के अदद 1058 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल का हिजरी साल है। (बोस्ताने अख्यार, पेज154)

(237) क़ारी शैख़ अब्दुल मलिक

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ अब्दुल्लाह बिन शैख़ सालेह इब्ने महमूद ग़ज़नवी ख़ालिदी के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, आग़ाज़ होश में आप रहमतुल्लाह अलैह को इल्मी शौक़ पैदा हुआ और आप रहमतुल्लाह अलैह अपने वतन से चल कर हरी में पहुंचे और हाफ़िज़ महमूद ताबादगानी की ख़िदमत में कलामे रब्बानी यानी कुरआने पाक हिफ़्ज़ किया।

इस के बाद हाफ़िज़ उस्मानी हरवी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हो कर उलूम व फ़ुनून ख़ुसूसन किराअत में कमाल पैदा किया, येह हाफ़िज़ साहिब तमाम उलूम के और साहिबे विलायत थे और ख़्वाजा ख़िज़र अलैहिस्सलाम की सोहबत से मुफ़्तख़िर और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ थे और हुज़ूरे वाला की तालीम से कस्बी और वहबी उलूम की मुश्किलात उन्होंने हल की थीं।

क़ारी साहिब अपने सीने को ख़ुदाई इल्म के नूर से मुनव्वर करके शैख़ ज़ैनुद्दीन ख्वानी रहमतुल्लाह अलैह की मुलाज़िमत में हाज़िर हुए, यहां अपने दिल को वहदत व हकीकत की रौशनी से ताबां व दरख्शां कर के ख़िलअते ख़िलाफ़त से मुशर्रफ़ हुए।

जब आप रहमतुल्लाह अलैह की बुज़ुर्गी का चर्चा सुल्ताने ज़ीशान सिकन्दर लोदी के कान तक पहुंचा तो बार बार आप रहमतुल्लाह अलैह की बारगाह में आप रहमतुल्लाह अलैह की तशरीफ़ आवरी की ख्वाहिश की अर्ज़ीयां भेजीं। आख़िरे कार हामिए दीन सुल्तान के इसरार से मजबूर हो कर आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा तशरीफ़ लाए।

बादशाह ने हद से ज़्यादा ताज़ीम व तकरीम की, सुल्तान के इल्तिमास करने की वजह से आप रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा की सुकूनत

इख़्तियार फ़रमाई मगर कोई जागीर या वज़ीफ़ा सिकन्दर लोदी से और ना सिकन्दर लोदी के बाद किसी हुक्काम से क़बूल फ़रमाया।

आप रहमतुल्लाह अलैह कलामे रब्बानी को सात किराअत और चौदह रिवायत से पढ़ते थे और हमेशा सबको ख्वाह दरवेश हो या मालदार मुफ़्त में अल्लाह पाक की रिज़ा के लिए क़ुरआन और किराअत सिखाया करते थे।

बेशुमार लोगों को आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़ात बा बरकात से फ़ैज़ पहुंचा। एक सौ तीस बरस की उम्र में रजब के महीने 956 हिजरी में बहिश्त नशीनों को क़ुरआन सुनाने के वास्ते तशरीफ़ ले गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया।

आप रहमतुल्लाह अलैह के बेटे क़ारी शैख़ मुहम्मद ख़ालिदी रहमतुल्लाह अलैह का तज़्किरा इस किताब में मौजूद है, आप रहमतुल्लाह अलैह के मज़ार मुबारक का कोई पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज115.116)

(238) क़ारी शैख़ मुहम्मद ख़ालिदी

आप रहमतुल्लाह अलैह क़ारी शैख़ अब्दुल मलिक रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे अर्जुमंद यानी बेटे और शागिर्दे रशीद हैं, इल्मे किराअत में उस्तादे ज़माना और निहायत आबिदो ज़ाहिद बुज़ुर्ग थे। मुसलसल रोज़े रखने के बावजूद इबादत गुज़ारी की ताक़त में कमी नहीं आती थी, आप रहमतुल्लाह अलैह ने कभी सिला हुआ कपड़ा नहीं पहना, सिर्फ़ तहबंद और चादर आप रहमतुल्लाह अलैह का लिबास था, तमाम उम्र किसी किस्म की जागीर या वज़ीफ़ा किसी बादशाह या वक़्त के हाकिम से क़बूल नहीं किया जो कुछ ज़रूरत पड़ती आसमानों के खज़ाने से पूरी हो जाती थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाया करते थे: कि मैं अपने वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के खिरकए ख़िलाफ़त पर ही दिल निहाद हो कर

नहीं रहा बल्कि हमेशा हज़रत ग़ौसुल आज़म रहमतुल्लाह अलैह के बातिन से परवरिश की तलाश रखी। जब मैं अपने पीरे बातिन की तरफ़ निस्फ़ यानी आधी तवज्जोह भी करता हूँ तो तमाम दुशवारियाँ आसान हो जाती हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने तमाम उम्र कभी ग़ौसे पाक रहमतुल्लाह अलैह का नाम बिग़ैर वुज़ू के नहीं लिया।

14 रजब 970 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़िरदौसे बरीं की राह ली यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया, मनक़ूल है कि विसाल फ़रमाने से आठ दिन पहले आप रहमतुल्लाह अलैह ने फ़रमाया: कि मुहम्मद को एक जगह मुक़र्रर कर दिया था लेकिन अब कहाँ जाऊँगा येह इत्तिला नहीं है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कोई पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज157)

(239) मीर सैय्यिद मुहम्मद जाफ़र अबुल उलाई

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह अमीर अबुल उला रहमतुल्लाह अलैह के ख़ुलफ़ाए अज़ीमुश्शान में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह पर सुक्रो फ़ना की हालत ग़ालिब थी, दो दो रोज़ तक मुराक़बा से सर ना उठाते थे, रास्ते में कभी निगाह ऊपर को ना उठती थी। महफ़िले सिमाअ में पांव में घुन्गरू बांध कर तशरीफ़ ले जाते थे, हालते वज्द में आप रहमतुल्लाह अलैह के घुन्गरू की झन्कार से तमाम मजलिस मस्त हो जाती थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज170)

(240) शैख़ मुहम्मद ज़ाहिद

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ मुहम्मद यहया शाह ख़ूबुल्लाह इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह के ख़ुलफ़ाए आज़म से हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** लापता है। (बोस्ताने अख्यार, पेज170)

(241) मौलाना मुहम्मद सईद ऐजाज़

आप रहमतुल्लाह अलैह आलिम बा अमल और शायर शीरीं कलाम हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का कलाम बेश बहा मोती और निहायत पसंदीदा है, ऐजाज़ तख़ल्लुस, मुल्ला अब्दुल अज़ीज़ अकबराबादी के शागिर्दे रशीद, मिर्ज़ा बे दिल, मीर मुइज़्ज़ फ़ितरत और मौलाना नासिर अली के हम सोहबत और यारे ग़ार थे, मुद्दत तक अकबराबाद में दर्स व तदरीस से तालिबाने उलूम को फ़ैज़ पहुंचाते रहे।

आख़िरे कार 1117 हिजरी में रौज़ए जिनाँ को रुख़स्त हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया। उस ज़माने के अक्सर फुज़ला को आप रहमतुल्लाह अलैह की शागिर्दी का फख्र हासिल था।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कोई पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज171)

(242) मौलाना मुहम्मद आरिफ़

आप रहमतुल्लाह अलैह शाह ख़ूबुल्लाह मुहम्मद यहया इलाहाबादी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद व ख़लीफ़ा मशाईख़ीने अकबराबाद से थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** और वफ़ात के साल का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज198)

(243) सैय्यिद मुहम्मद आक़िल

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर सैय्यिद अहमद अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे और मीर मुहम्मद फ़ाज़िल साहिबे मुख़्बिरुल वासिलीन के बरादरे हक़ीक़ी यानी सगे भाई और मशाईख़ीने साहिबे असरार में से थे और जुमादस्सानी 1092 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख़्यार, पेज198)

(244) मीर मुहम्मद फ़ाज़िल

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर सैय्यिद अहमद अकबराबादी के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे और सैय्यिद मुहम्मद आकिल रहमतुल्लाह अलैह के भाई हैं और ख़ुदा शनासों के आलीशान दरबार के मीरे मुंशी हैं, मज़हरुल हक़ तख़ल्लुस और शैखुश्शुयूख मुहम्मद सालेह अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्दे रशीद और मुरीद हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह का इल्मो फ़ज़्ल और तारीख़ गोई के कमाल की यादगार कुतुब **"मुख़्बिरुल वासिलीन"** मौजूद है, जिसमें हुज़ूर सरवरे आलम, महबूबे मुअज़्ज़म सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लेकर अपनी वफ़ात यानी 1105 हिजरी तक तमाम मशहूर बुज़ुर्गाने इस्लाम की रेहलत की तारीखें नज़्म में कलमबंद फ़रमाई हैं, अजीबो ग़रीब और दिलचस्प माद्दहाए तारीख़ के इलावा मुख़्तसर तारीख़ी वाक़िआत भी सिल्सिलए नज़्म में मुंसलिक कर के दरिया को कूज़े में भर दिया और सैकड़ों बेश बहा मोतियों को एक बेनज़ीर लड़ी में पिरो कर अपना कमाल दिखाया है।

येह किताब छप गई है इस के इलावा एक मशाईख़ीन का तज़्किरा नसर में भी लिखा है जो **"तज़्किरतुल कुदमा"** के नाम से मौसूम मगर

नायाब है। अफ़सोस है कि इस के मुतालआ का शर्फ़ निगारिंदए बोस्ताने अख्यार को हासिल नहीं हुआ।

2 रबीउस्सानी 1105 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने सफ़रे आख़िरत इख्तियार फ़रमाया यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया और जन्नत वालों के हम नशीन हुए, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज200)

(245) मीर मुहम्मद आक़िल

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर मुहम्मद सालेह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं और निहायत नेक ख़स्लत, ख़ुश सीरत और बा बरकत बुज़ुर्ग थे, 7 रजब 1088 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने रेहलत फ़रमाई, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज199)

(246) ख़्वाजा मुहम्मद मीर नक़्शबंदी

आप रहमतुल्लाह अलैह तेरहवीं सदी हिजरी के बुज़ुर्गों में हैं, सिल्सिला नक़्शबंदिया में मुंसलिक और सलाहियतो परहेज़गारी के साथ आरास्ता थे। अक्सर लोगों ने आप रहमतुल्लाह अलैह की हिदायत व इरशाद से ख़ुदा शनासी के मैदान में क़दम रखा। शैख़ बरकात रसूल मारहरवी रहमतुल्लाह अलैह जो सलाह व तक़्वे से मौसूफ़ और बा बरकत बुज़ुर्ग थे आप रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदाने जांनिसार में से थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज203)

(247) मौलाना मीर कलां मुहद्दिस

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ जलाल रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और मुल्ला ख़्वाजा कोही ख़ुरासानी रहमतुल्लाह अलैह के पोते हैं, इल्मो फ़ज़्ल से

मौसूफ़ ख़ुसूसन इल्मे हदीस में बेनज़ीर और कमालाते ज़ाहिरी व बातिनी से आरास्ता थे, मौलाना ज़ैनुद्दीन महमूद रहमतुल्लाह अलैह के मंज़ूरे नज़र और हदीस में सैय्यिद मीरक शाह वल्द मीर जमालुद्दीन मुहद्दिस के शागिर्दे रशीद थे, तमाम सगीरा और कबीरा गुनाहों से पाक और निहायत आबिदो ज़ाहिद ख़ुदा शनास बुज़ुर्ग थे।

हमेशा सर नीचे किए हुए मुराक़बे में बैठे रहते थे, तमाम उम्र दीनी उलूम का फ़ैज़ आप रहमतुल्लाह अलैह से जारी रहा। (जन्नत माओं के क़दमों के नीचे है) की उम्मीद में महेज़ इस ख़्याल से कि शायद मेरी बीवी वालिदा की इताअत ना करे तमाम उम्र शादी नहीं की और शबो रोज़ मुशफ़िक़ माँ की इताअत व ख़िदमत गुज़ारी में मसरूफ़ रहे।

आख़िरे कार 80 बरस की उम्र और सन 981 हिजरी में वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह की वालिदा माजिदा भी जो सैय्यिदा और कामिलए रोज़गार और अपने ज़माने की राबिया बसरिया थीं, आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात के वक़्त आप रहमतुल्लाह अलैह की वालिदा ज़िंदा और क़ुरआने मजीद की तिलावत में मसरूफ़ थीं, जब उन्होंने बेटे के मरने की ख़बर सुनी और लोगों ने तज्हीज़ो तकफ़ीन की इजाज़त मांगी तो उन्होंने सिर्फ **"इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"** पढ़ कर इजाज़त दी और बदस्तूर क़ुरआने मजीद पढ़ने में मसरूफ़ रहीं।

मौलाना मीर रहमतुल्लाह अलैह ने आगरा में एक पक्का कुँआं तामीर कराया था। आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख़्यार, पेज219)

(248) मौलाना नासिर मुफ़्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह हरवियुल अस्ल और सादाते जमाली में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का मर्तबा इश्क़ और इर्फ़ान में बुलंद था और आप

रहमतुल्लाह अलैह की मस्नद हदीस व फ़िक़्ह में मुमताज़ थी, एक रोज़ मिश्कात शरीफ़ में एक हदीस शरीफ़ नज़र से गुज़री जिसका मा हसल येह है कि अल्लाह पाक सबसे पहले अपना बेमिस्ल दीदार क़ियामत के दिन उस शख़्स को दिखाएगा जिसकी ज़ाहिरी आंखे बुरी और नाजाइज़ चीज़ देखने से आलूदा यानी गंदी ना हुई होगीं और पाक होगीं, आप रहमतुल्लाह अलैह ने इस को पढ़ कर दुआ के वास्ते हाथ उठाया और दुआ की कि ऐ अल्लाह! मुझे चश्मे ज़ाहिरी यानी आँख की ज़रूरत नहीं, इस के बजाये मुझे चश्मे हक़ीक़त अता फ़रमा। इस दुआ ने इजाबत का दर्जा हासिल किया यानी कबूल हुई और आप रहमतुल्लाह अलैह फ़ौरन नाबीना हो गए। इस के बाद भी 30 साल तक ज़बानी तलबा को दर्स देते और फ़ैज़ पहुंचाते रहे, आख़िरे कार 980 हिजरी में वफ़ात पाई।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज221)

आप रहमतुल्लाह अलैह के बेटे मौलाना मीर रहमतुल्लाह अलैह हैं जिन की सीरत इस किताब में मौजूद है।

(249) मौलाना मीर

आप रहमतुल्लाह अलैह मौलाना नासिर मुफ़्ती रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद और जांनशीन थे, तमाम उम्र मख़्लूक़े ख़ुदा को दर्सो तदरीस से फ़ैज़ पहुंचाते रहे, मीर फरोगी अशरफ़ से जो आप रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्द थे मनक़ूल है कि जिस वक़्त में हिदाया आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में पढ़ा करता था तो आप रहमतुल्लाह अलैह ने मुझ से फ़रमाया था: कि अगर इल्मे फ़िक़्ह पढ़ने की ग़र्ज़ फ़तवा नवेसी, ओहदए क़ज़ा वगैरा है तो तुम को इस से कोई नतीजा नहीं मिलेगा और मेरी तालीम तवक्कुल पर नहीं होगी।

990 हिजरी के आस पास आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज220)

(250) क़ाज़ी नासिर

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ उमर इब्ने शैख़ हामिद के बेटे और शैख़ अबू हामिद महादनी और शैख़ अबुल फ़तह मुफ़्ती के शागिर्दे रशीद थे, अकबर बादशाह के ज़माने में दर्स व तदरीस में मशग़ूल और आगरा के क़ाज़ी थे, इल्मे फ़िक़्ह में बे नज़ीर समझे जाते थे।

1002 हिजरी में वफ़ात पाई, **"क़ाज़ी कामिल"** के अदद 1002 बनते हैं और यही आप रहमतुल्लाह अलैह के रेहलत की हिजरी तारीख़ है।

सैय्यिद सदरुद्दीन और सैय्यिद रहमतुद्दीन आप रहमतुल्लाह अलैह के बेटे इल्मो अमल से आरास्ता थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज221)

(251) शैख़ नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी

आप रहमतुल्लाह अलैह मुल्तान के रहने वाले हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह सिपहगरी के ज़माने में भी ख़ुदा दोस्त थे। हमेशा तहज्जुद की नमाज़ ग़ुस्ल कर के पढ़ा करते थे, जब मुल्तान में तवाइफ़ अल मलूकी शोरिश हुई तो आप रहमतुल्लाह अलैह अपने अहलो इयाल यानी बाल बच्चों के साथ आगरा में चले आए और क़िला में मकान बना लिया।

बहुत अरसे तक सिपाहियाना वज़ा में रहे आख़िरे कार इनायते इलाही शामिले हाल हुई कि हम जिंसों की गुलामी तर्क कर के ख़ुदा परस्ती पर कमर बाँधी और गोशा नशीनी में कमालाते दो जहानी हासिल किए।

एक दिन आलमे मुराक़बा में कान में आवाज़ आई कि अपने चेहरा पर निक़ाब रखो, आप रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि बिरादराने ज़माना से दुकानदारी की तोहमत सुनने की मुझ में ताक़त नहीं है, दूसरी बार फिर आवाज़ आई कि गिर्या मंज़ूर नहीं तो गर्दन टूटने की तकलीफ़ गवारा करो। उसे आप रहमतुल्लाह अलैह ने क़बूल फरमा लिया, उसी वक़्त गर्दन के मोहरे की एक हड्डी अपनी तर्तीब से हट कर उभर आई और सर सीने पर जा पड़ा। जिस वक़्त किसी चीज़ के देखने की ज़रूरत होती थी तो आप रहमतुल्लाह अलैह ठोढ़ी के नीचे हाथ रख कर सर उठा कर देखा करते थे।

अख़ीर दम तक येह ही हालत क़ाइम रही। आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात के बाद शैख़ याक़ूब रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के साहिबज़ादे जांनशीन हुए, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज226.227)

आप रहमतुल्लाह अलैह के बेटे शैख याक़ूब रहमतुल्लाह अलैह का ज़िक्र इस किताब में मौजूद है।

(252) शैख़ याक़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ नसीरुद्दीन तमीमी अंसारी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे और आगरा के पुराने बुज़ुर्गों में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह ने तमाम उम्र दरवेशी के चेहरा को सिपाहियाना निक़ाब से छुपाए रखा और सालिकाने तरीक़त की तरह यहां तक कोशिश की कि वाजिब और मुम्किन की शनाख़्त यानी पहचान में अपना रुत्बा औलिया अल्लाह के आली मर्तबा के बराबर कर दिया।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज252)

आप रहमतुल्लाह अलैह के बेटे शैख अब्दुल्लाह दानिशमंद रहमतुल्लाह अलैह की सीरत इस किताब में मौजूद है।

(253) शैख़ अब्दुल्लाह दानिशमंद

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ याक़ूब इब्ने शैख़ नसीरुद्दीन अंसारी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, सिपहगरी और नौकरी के दिनों में हर किस्म के उलूम हासिल किए। आप रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाया करते थे कि सिपहगरी में जहां पैमाई लाज़िमी है इस वजह से मेरे 100 से ज़्यादा उस्ताद हैं, जहां जहां मैं रहा, वहां के उलमा, फुज़ला की सोहबत से कुछ ना कुछ इल्मी ज़ख़ीरा हासिल किया।

जब आलमे जवानी ने कूंच किया तो लोगों की ख़िदमत गुज़ारी बुरी मालूम होने लगी, लिहाज़ा नौकरी को छोड़कर गोशा नशीनी इख्तियार कर ली और किताबत के फ़न से अपना रोज़गार चलाते रहे।

6 शव्वाल 943 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने इंतिक़ाल फ़रमाया, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज95.96)

शैख जलाल अंसारी रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के बेटे हैं जिनका ज़िक्र इस किताब में मौजूद है।

(254) शैख़ जलाल अंसारी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ अब्दुल्लाह अंसारी दानिशमंद रहमतुल्लाह अलैह के बेटे हैं, 923 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने आलमे ग़ैब से आलमे दुनिया में ज़हूर फ़रमाया यानी पैदा हुए, सात बरस की उम्र में हाफ़िज़े क़ुरआन हो कर बारह पंद्रह साल की उम्र में राइज तमाम किताबों की तहसील से फ़ारिग़ हो गए, माक़ूलात में मीर अबुल बका बाबरी के शागिर्दे रशीद हैं, बीसवीं साल में अपने दर्स देने से वालिदे बुज़ुर्गवार के मदरसा में

एक ताज़ा रौनक पैदा की। हफ़्त इक़लीम में ख़ुश नवीसां ज़माना पर फ़ौक़ियत रखते थे।

शैख़ हातिम संभली रहमतुल्लाह अलैह जो कि हिन्दुस्तान के बड़े आलिमों में से थे एक मर्तबा आप रहमतुल्लाह अलैह की दर्सगाह में तशरीफ़ लाए दोनों में ख़ूब इल्मी मुबाहिसा हुआ। दीगर उलूमो फ़नून में मुसावी यानी बराबर और हैयतो हिंदसा में आप रहमतुल्लाह अलैह सबक़त ले गए। शैख़ हातिम संभली रहमतुल्लाह अलैह मुंसिफ़ मिज़ाज थे ख़ामोशी इख्तियार की।

आप रहमतुल्लाह अलैह दर्स देते वक़्त अपनी ज़बरदस्त बातों से थोड़ी समझ वाले तलबा की इस्तिदाद बढ़ाया करते थे, हमेशा शरीअत की रिआयत करके सुलूक के तरीक़ों में कोई तरीक़ा नहीं छोड़ते थे।

961 हिजरी में आगरा के क़िला के मीगज़ीं में आग लगी जिसके सदमा से सैकड़ों ख़ूबसूरत इमारतें दोज़ख़ की तरह भड़क उठीं और संगीन दीवारें परिंदों की तरह उड़ उड़ कर कोसों जा पड़ीं। उन्ही में से एक पत्थर आप रहमतुल्लाह अलैह के मकान में आकर आप रहमतुल्लाह अलैह के सर पर गिरा और इस के सदमा से 16 ज़िलक़ादा 961 हिजरी को इस दारे ना पाएदार से आलमे क़ुदुस को रेहलत फरमा गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया, क़ाज़ी जलालुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह, शैख़ अफ़ज़ल मुहम्मद रहमतुल्लाह अलैह, सैय्यिद बदरुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह आप रहमतुल्लाह अलैह के मशहूर शागिर्द हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज65)

(255) शैख अब्दुल मोमिन चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ मुहम्मद अमीन इब्ने शैख़ ख़लील चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे सआदत मंद यानी बेटे हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह के

मूरिस शर्मान्डा (रियासत धार) में सुकूनत पज़ीर थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के जद्दे अमजद यानी दादा ने मांडा से दिल्ली की सुकूनत इख्तियार की।

आप रहमतुल्लाह अलैह को बारह साल की उम्र में ख़ुदा शनासी की आरज़ू पैदा हुई, घर से निकल कर सब से पहले अजमेर शरीफ़ पहुंचे। यहां से आप रहमतुल्लाह अलैह हज के वास्ते तशरीफ़ ले गए और हज की सआदत से मुशर्रफ़ हो कर बारह साल तक जा बजा मुल्कों की सैरो सयाहत फ़रमाते हुए अजमेर वापस आए।

छः माहिने तक ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रहमतुल्लाह अलैह के रौज़ा में मोअतकिफ़ रहे, फिर हुक्म के मुताबिक सुल्तान सिकन्दर लोदी के बा बरकत ज़माने में आगरा में आकर सुकूनत इख्तियार की।

आप रहमतुल्लाह अलैह को खिरकए ख़िलाफ़त अपने बाप से मिला था, रोज़ाना चार ख़त्म क़ुरआन शरीफ़ के किया करते थे, 90 साल की उम्र में 2 शव्वाल 970 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह की हयात का पैमाना लबरेज़ हुआ और हूराने बहिश्ती के हम नशीन हुए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज117)

आप रहमतुल्लाह अलैह के बेटे शैख नसीरुद्दीन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह की सीरत इस किताब में मौजूद है।

(256) शैख़ नसीरुद्दीन चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ अब्दुल मोमिन चिश्ती रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं, निहायत मुतावक्किल और आबिदो ज़ाहिद बुज़ुर्ग थे।

जहांगीर बादशाह के ज़माने में ब क़ैदे हयात थे। आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज227)

(257) शैख़ निज़ाम मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह मज्ज़ूबाने इलाही में से हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह ने लकड़ी की एक लंबी पाड़ बांध रखी थी जिस पर दस आदमी आराम के साथ लेट सकते थे। उसी पर आप रहमतुल्लाह अलैह हमेशा बैठे रहा करते थे, नीचे बहुत कम उतरते थे, जो कुछ आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़बान से निकल जाता वो नविश्तए तक़दीर यानी तकदीर का लिखा हुआ समझा जाता था।

अल्लामी अबुल फ़ज़्ल तालिबे इल्मी के दिनों में आप रहमतुल्लाह अलैह के अस्ताने पर अक्सर हाज़िर रहते थे, जब आप रहमतुल्लाह अलैह अल्लामी अबुल फ़ज़्ल को आता देखते तो फ़रमाया करते थे आओ! वज़ीर चुग़ताई आओ।

आप रहमतुल्लाह अलैह की वफ़ात के बाद अल्लामी अबुल फ़ज़्ल के छोटे भाई शैख़ अबुल बरकात ने आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** पर एक गुंबद तामीर करा दिया था जिसका पता बताने वाला अब कोई दुनिया में मौजूद नहीं है, जिसकी वजह से आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज227)

(258) शैख़ वजीहुद्दीन हुसैनी चिश्ती

आप रहमतुल्लाह अलैह क़ुरआने पाक के हाफ़िज़, आलिमे बा अमल, आरिफ़ बिल्लाह और बुज़ुर्गाने चिश्त अहले बहिश्त में से थे, 1071 हिजरी में वफ़ात पाई और मुहल्ला दौलताबाद में दफ़न हुए। अब इस नाम का कोई मुहल्ला आगरा में मौजूद नहीं है, जिसकी वजह से आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज247)

(259) शैख़ वली मुहम्मद नारनौली

आप रहमतुल्लाह अलैह शाहजहाँ बादशाह के ज़माने के मशाईख़ीने अकबराबाद में से हैं। 25 शव्वाल 1057 हिजरी को वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज247)

(260) मीर हादी (फ़ज़ाइल ख़ां)

आप रहमतुल्लाह अलैह मीर हाजी वज़ीर ख़ां दीवान बादशाह ज़ादा मुहम्मद आज़म शाह के फ़र्ज़ंदे अर्जुमंद यानी बेटे और शैख़ अब्दुल अज़ीज़ अकबराबादी के शागिर्दे रशीद हैं, इल्मो फ़ज़्ल में यगानए रोज़गार और आलमगीर बादशाह के दरबार से फ़ज़ाइल ख़ां के लक़ब से मुफ़्तख़िर थे।

अरबी फ़ारसी के इलावा हिन्दी ज़बान में भी कमाल हासिल किया था, मुलाज़िमते शाही में दाख़िल और मनासिब जलीला मीर मुंशी गिरी पर मामूर रहे।

निहायत इल्म दोस्त और आलिमे बा अमल थे, आप रहमतुल्लाह अलैह का दिल किताबों का संदूक़ और आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़बान मशहूर सल्फ़ के इल्मी कारनामों की हाफ़िज़ थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने एक बेनज़ीर कुतुब ख़ाना फ़राहम किया था जिस की चंद किताबें मिनहाज इमाम नवावी वग़ैरा एक इज्लास ज्ो कि 14 अप्रैल 1906 ईस्वी मक़ाम बनारस में मुन्अकिद की गई थी उस की इल्मी नुमाइश गाह में रखी गई थीं।

6 ज़िलक़ादा 1114 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई। आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज248)

(261) शैख़ यूसुफ़ क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद इस्माईल रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद हैं जो शैख़ कमालुद्दीन क़ुरैशी रहमतुल्लाह अलैह के ख़ुलफ़ा में से थे। आगरा के क़िला में सुकूनत पज़ीर और तालिबाने ख़ुदा की रहनुमाई में मसरूफ़ रहते थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज254)

(262) शैख़ अब्दुल्लाह सूफ़ी शत्तारी

आप रहमतुल्लाह अलैह कमालुद्दीन बहलूल इब्ने शैख़ चाँद इब्ने जुनैद इब्ने मुहम्मद इब्ने बुरहानुद्दीन इब्ने अज़ीज़ुद्दीन इब्ने नज्मुद्दीन अहमद इब्ने मौलाना शम्सुद्दीन हरवी उस्मानी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह क़स्बा संडीला ज़िला हरदोई के रहने वाले हैं, 22 रबीउस्सानी 904 हिजरी को पीर शरीफ़ के दिन नमाज़े अस्र के वक़्त आप रहमतुल्लाह अलैह ने आलमे ग़ैब से दुनिया में क़दम रखा। ज़मानए तिफ़्ली यानी बचपन ही में विलायत के आसार नुमूदार थे, चुनांचे नौ बरस की उम्र में ख़ुदा शनासी का ज़ौक़ पैदा हुआ और मख़दूम शैख़ सफ़ी साती पुरी की ख़िदमत में हाज़िर हो कर मुरीद हो गए।

16 बरस की उम्र में किताबी उलूम की तहसील के वास्ते घर से निकले और क़स्बा गोपामऊ में शैख़ अल हद्दाद इब्ने सादुल्लाह उस्मानी की ख़िदमत में पहुंच कर सर्फ व नहव शुरू की।

वहीं शैख़ बदरुद्दीन बदायूनी रहमतुल्लाह अलैह को ख्वाब में देखा और हुक्म के मुताबिक बदायूं पहुंच कर मुकम्मल छः माहीने उन के रौज़ा के

मुजावर रहे। फिर ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन औशी चिश्ती देहलवी रहमतुल्लाह अलैह को ख्वाब में देखकर दिल्ली रवाना हुए और शैख़ मुइज़ुद्दीन बुख़ारी रहमतुल्लाह अलैह की ख़ानक़ाह में क़ियाम कर के क़ाफ़िया और इरशाद वग़ैरा तीन किताबें वहां पढ़ीं।

रोज़ाना ईशा की नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर रौज़े पर जाया करते और रात को दिन कर दिया करते थे, पूरे साल भर तक येह सिल्सिला क़ाइम रहा। इस के बाद हुज़ूर ख़ातिमुल अन्बिया सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आलमे मिसाल में तशरीफ़ लाए और हुक्म दिया कि मौलाना बुरहानुद्दीन मुल्तानी हिसार में तुम्हारे मुंतज़िर हैं उन के दर्स में हाज़िर हो कर कमालात की तहसील करो। सुब्ह को हुक्म की तामील में हिसार रवाना हुए और मौलाना बुरहानुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हो कर दर्स शुरू किया। अक्सर उलूमे गरीबा की किताबें और तफ़सीर मौलाना बुरहानुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में पढ़ीं। इस के बाद मौलाना बुरहानुद्दीन रहमतुल्लाह अलैह के साथ अहमदाबाद गुजरात में जा कर शरह मवाक़िफ़, शरह मक़ासिद के इलाहियात और बाज़ रियाज़ी के रिसाले हज़रते शैख़ वजीहुद्दीन अहमद अलवी रहमतुल्लाह अलैह के दर्स मुहम्मदिया में, और बज़्दोइ, हिदाया, व अज़्दी शैख़ मुबारक दानिशमंद शत्तारी रहमतुल्लाह अलैह के सामने हासिल कीं। इल्मे हदीस मीर अब्दुल अव्वल दौलताबादी रहमतुल्लाह अलैह से हासिल किया और फ़ुसूस की इजाज़त मौलाना मुस्तफ़ा रूमी रहमतुल्लाह अलैह से ली।

24 बरस की उम्र में जब येह तमाम कमालात फ़राहम हो गए तो एक अजीब जज़्बा पैदा हुआ। तमाम किताबें लोगों को तक़सीम कर के गोशा नशीनी इख्तियार की और ख़ुदा शनासी का शौक़ ऐसा दामनगीर हुआ कि हर वक़्त पीर रौशन ज़मीर और मुर्शिदे कामिल की तलाश में

सरगर्दां रहने लगे, आख़िरे कार अल्लाह पाक की इनायत और हुज़ूर रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रहनुमाई से हज़रते शैख़ मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमते बा बरकत में जा पहुंचे। हज़रत शैख मुहम्मद ग़ौस ग्वालियरी रहमतुल्लाह अलैह ने दो माह के अरसे में मशरबे इश्क़िया (शत्तारीया) के तमाम अज़्कार और अश़ग़ाल सिखा कर अन्वारो असरार से बहरायाब किया और 9 ज़िलहिज्जा 950 हिजरी को तमाम ख़ानक़ाह नशीनों का सरे हल्क़ा बनाया।

मुकम्मल दस साल ख़ानक़ाहे गौसिया में आप रहमतुल्लाह अलैह मुब्तदी यानी नये दरवेशों की तर्बीयत फ़रमाते रहे, इस के बाद हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत का शौक़ पैदा हुआ और ग़ौसुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह से इजाज़त लेकर रवाना हुए, पाँच साल तक मदीनए मुनव्वरा में क़ियाम कर के कमाले रियाज़त में मुन्हमिक रहे। इस अरसे में हर साल हज के वास्ते आमदो रफ़त रही यानी मक्के से मदीना आना जाना रहा। फिर हुक्म के मुताबिक अहमदाबाद गुजरात में वापस हो कर वहीं रहने लगे।

15 साल तक इस शहर में क़ियाम रहा। 981 हिजरी में हज़रत ग़ौसुल औलिया रहमतुल्लाह अलैह की ज़ियारत के वास्ते ग्वालियर तशरीफ़ लाए। यहां दो साल रौज़ा मुनव्वरा की ख़िदमत की बाद पीर के फरमान से 983 हिजरी में आगरा में आए और मटिया महल (मुत्तसिल थाना रकाब गंज) गली में सुकूनत इख्तियार कर के ख़ल्क़े ख़ुदा की फ़ैज़ रसाई में मशग़ूल हुए।

23 जुमादल उला 1010 हिजरी को मंज़िले उंसुरी से मंज़िले क़ुदुसी को उरूज फ़रमाया यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया। इस अरसे में आप रहमतुल्लाह अलैह गोशा नशीन रहे।

आप रहमतुल्लाह अलैह किसी आशना यानी जानने वाले या बेगाने के दरवाज़े पर मुतलक़ नहीं गए। और अपने इबादतखाने (हुजरा) के अंदर ख़्वाबगाह इख्तियार की।

राक़िमे बोस्तान **मज़ार मुबारक** की तलाश में सरगर्दां है मगर अब तक पता नहीं चला।

सिराजुस्सालिकीन बर सुनने जवाहिरे ख़म्सा, औरादे सूफिया, रिसालए सूफिया, अनीसुल मुसाफ़िरीन, असरारुद्दावात, शरह रिसालए गौसिया, कंज़ुल असरार फ़ी हालि इश्तिग़ालिश्शत्तार, आप रहमतुल्लाह अलैह की तस्नीफ़ात व यादगार हैं।

अल्लाह पाक इन किताबों का मुताला और ज़ियारत नसीब फ़रमाए, आप रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे रशीद **शैख़ अब्दुन्नबी** रहमतुल्लाह अलैह की सीरत इस किताब में मौजूद है। (बोस्ताने अख्यार, पेज96.98)

(263) शैख़ अब्दुन्नबी

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ अब्दुल्लाह सूफ़ी शत्तारी अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के फ़र्ज़ंदे दिलबन्द यानी बेटे और शागिर्दे रशीद हैं, बहुत से उलूम व फ़ुनून में आप रहमतुल्लाह अलैह को काफी दस्तगाह हासिल थी।

वालिदे बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह के इंतिक़ाल के बाद उनके सज्जादा नशीन हुए, **रिसाला जवामिउल कलिम सूफ़ी** आप रहमतुल्लाह अलैह की तसनीफ़ में से है।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** लापता है यानी कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज118)

(264) शैख़ अब्दुल्लाह बुख़ारी

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब रहमतुल्लाह अलैह के हम ज़माना और दरवेशे कामिल थे, एक मर्तबा आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद अलाउद्दीन रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत बा बरकत में इस इरादे से हाज़िर हुए कि आप रहमतुल्लाह अलैह को हालते जज़्ब से होश में लाएं। उस वक़्त एक कूज़ा क़ंद जो सैय्यिद साहिब रहमतुल्लाह अलैह के हाथ में था, वो आप रहमतुल्लाह अलैह ने बुख़ारी साहिब रहमतुल्लाह अलैह को दे दिया, बुख़ारी साहिब रहमतुल्लाह अलैह ने दो टुकड़े कर के कहा कि जो लज़्ज़त दुई में है वो वहदत में नहीं है। सैय्यिद साहिब रहमतुल्लाह अलैह ने इस के जवाब में मारिफ़तो तौहीद और ज़ौक़ व फ़ना के मुताअल्लिक़ चंद बातें इस तरह अपनी ज़बान से बयान फ़रमाएं कि नासेह का दिल बेक़ाबू हो गया, होश में लाने को आए थे लेकिन ख़ुद बेहोश हो गए और दीवानगी और रबूदगी ने आप की हालत में वहदत का मज़ा पैदा कर दिया।

आप रहमतुल्लाह अलैह किस सिने हिजरी में वफ़ात पाई मालूम ना हो सका नीज़ आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का भी कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज99)

(265) क़ारी हाफ़िज़ सैय्यिद अब्दुल्लाह नक़्शबंदी मुजद्दिदी

आप रहमतुल्लाह अलैह मौज़ा खेड़ी मुत्तसिल क़स्बा बारह के रहने वाले हैं, बचपन ही में आप रहमतुल्लाह अलैह के वालिदैन का इंतिक़ाल हो गया, मशीयते इलाही ने उसी वक़्त से आप रहमतुल्लाह अलैह के दिल में ख़ुदा तलबी की शोरिश यानी शौक पैदा कर दी थी कि जंगल जंगल ख़ुदा शनासों की तलाश में सरगर्दां फिरते थे।

इस सिल्सिले में सैकड़ों बुज़ुर्गों की ख़िदमत कर के उन से फ़ैज़ हासिल किया, पंजाब के किसी जंगल में एक मस्जिद थी उस में एक मुतावक्किल हाफ़िज़े क़ुरआन बुज़ुर्ग मुक़ीम थे जिन्हें किराअत में यदे तूला हासिल था यानी बहुत माहिर थे। आप रहमतुल्लाह अलैह फिरते फ़िराते उन की ख़िदमत में पहुंचे और उन की सोहबत ऐसी अच्छी मालूम हुई कि वहीं मुक़ीम हो गए, यहां तक कि उन बुज़ुर्ग की फ़ैज़े सोहबत से किराअत में कमाल हासिल हुआ, क़ुरआने मजीद आप रहमतुल्लाह अलैह के लौहे दिल यानी दिल की तख्ती पर मनक़ूश हो गया और बहुत से तरीकेत के असरार आप रहमतुल्लाह अलैह पर ज़ाहिर हो गए।

यहां से रुख़स्त हो कर सबसे पहले आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ इदरीस क़ादरी सामानी रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में पहुंचे और मुद्दत तक ख़ानक़ाहे आली में मुक़ीम रह कर ख़ुदा शनासी की आँखें रौशन कीं और शर्फ़े बैअत से मुशर्रफ़ हो कर शैख़ आदम बनौरी रहमतुल्लाह अलैह जो ख़लीफ़ए आज़म हज़रत शैख़ अहमद मुजद्दिद अल्फ़े सानी सरहिंदी रहमतुल्लाह अलैह हैं उनकी ख़ानक़ाह में हाज़िर और उन बुज़ुर्गवार रहमतुल्लाह अलैह की फ़ैज़े सोहबत से तकमील को पहुंच कर खिरकए ख़िलाफ़त से मुफ़्तख़िर हुए।

आप रहमतुल्लाह अलैह के चचा या चचाज़ाद भाई सैय्यिद अब्दुर्रहमान मुलाज़िमते शाही में दाख़िल और शैख़ आदम बनौरी रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद थे, उन के हमराह आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा में तशरीफ़ लाकर आबाद हुए। तमाम उम्र आप रहमतुल्लाह अलैह ने शादी नहीं फ़रमाई।

किराअत में आप रहमतुल्लाह अलैह को ऐसा कमाल हासिल था कि जिस वक़्त आप आँखें बंद कर के आलमे वज्द में क़ुरआने मजीद की तिलावत फ़रमाते तमाम सुनने वालों पर वज्द का आलम तारी हो जाता

था, मौलाना शाह वलीयुल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने **"अन्फ़ासुल आरिफीन"** में लिखा है कि जिस ज़माने में आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ आदम रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में थे एक दरख़्त के नीचे चश्म बस्ता यानी आँख बंद कर के तिलावते क़ुरआने मजीद में मसरूफ़ हुए जिस क़दर चिड़ियां दरख़्त पर बैठी हुई थीं वो और दूसरे जानवर बैअत के लिए आए हुए थे और उस वक़्त जो भी मौजूद थे वज्द में आकर मुर्दों की तरह गिर पड़े। जब शैख़ आदम रहमतुल्लाह अलैह ने येह हाल सुना तो उस जगह तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : हाफ़िज़! बस करो। इस पर आप रहमतुल्लाह अलैह ने आँख खोली और हज़रत शैख़ आदम रहमतुल्लाह अलैह को देख कर फ़ौरन खड़े हो गए।

बहुत से तालिबाने ख़ुदा ने आप रहमतुल्लाह अलैह के आरिफ़ाना ख्वान की चाशनी का मज़ा चखा और कमाल का दर्जा हासिल किया।

हज़रत शाह अब्दुर्रहीम देहलवी रहमतुल्लाह अलैह जो कि मौलाना शाह वलीयुल्लाह देहलवी रहमतुल्लाह अलैह के वालिद हैं आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़ुलफ़ाए आज़म में से थे, चुनांचे मौलाना शाह वलीयुल्लाह देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब **"अन्फ़ासुल आरिफीन"** में आप रहमतुल्लाह अलैह के अक्सर वाक़िआत और कमालात का हाल अपने वालिदे माजिद हज़रत शाह अब्दुर्रहीम देहलवी रहमतुल्लाह अलैह की ज़बानी कलमबंद फ़रमाया है, उसी किताब में लिखते हैं कि जिस ज़माने में औरंगज़ेब बादशाह अकबराबाद में था मैं मीर ज़ाहिद हरवी रहमतुल्लाह अलैह के दर्स में बमक़ाम अकबराबाद यानी आगरा इल्म हासिल करता था कि आप रहमतुल्लाह अलैह को एक आरिज़ा तारी हुआ और उसी में आप रहमतुल्लाह अलैह फ़िरदौसे बरीं को रुख़स्त हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया, ब वक़्ते रेहलत आप रहमतुल्लाह अलैह ने वसीयत फ़रमाई कि जस्दे

ख़ाकी यानी लाश मुबारक को मक़बरा ग़रीबां (पच कुइयां कब्रिस्तान) में दफ़न करना ताकि कब्र को कोई ना पहचाने। चुनांचे वसीयत के मुताबिक आप रहमतुल्लाह अलैह को गोरे ग़रीबाँ में दफ़न किया गया, मैं भी (यानी शाह अब्दुर्रहीम) उस ज़माने में ऐसा सख़्त बीमार था कि जनाज़ा के साथ ना जा सका। जब मुझे सेहत हुई तो एक दोस्त को जो आप रहमतुल्लाह अलैह की तजहीज़ो तकफ़ीन में शरीक था साथ लेकर मर्क़द मुबारक की ज़ियारत के वास्ते मक़बरा में गया, नफ्स मुबारक की तासीर से मेरा दोस्त मर्क़द मुनव्वरा की पहचान ना कर सका, आखिरे कार कयास से एक दूसरी क़ब्र की तरफ़ इशारा किया, मैं उस क़ब्र के पास बैठ कर क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना शुरू किया, फ़ौरन आप रहमतुल्लाह अलैह ने मेरे पीठ के पीछे से निदा फ़रमाई कि फ़क़ीर की कब्र येह है, लेकिन जो शुरू किया है उसी जगह ख़त्म कर के साहिबे क़ब्र को सवाब पहुँचाओ और जल्दी मत करो। हुक्म के मुताबिक तिलावत ख़त्म करने के बाद अपने दोस्त से कहा कि ख़ूब ग़ौर कर के बताओ कि हज़रत का **मज़ार मुबारक** येह है या मेरी पीठ के पीछे वाला। उसने ग़ौरो तअम्मुल के बाद कहा कि मैंने ख़ता की। अस्ल में आप रहमतुल्लाह अलैह का मज़ार पीठ के पीछे वाला है, ग़र्ज़ कि मज़ार के पास बैठ कर मैंने क़ुरआने मजीद पढ़ना शुरू किया चूँकि उस वक़्त दिल निहायत पुर मलाल था लिहाज़ा ब वक़्ते क़ुरआन ख्वानी क़वाइदे किराअत में कई जगह ग़लती हुई। आप रहमतुल्लाह अलैह ने कब्र के अंदर से फ़रमाया कि फ़ुलां फ़ुलां मक़ाम पर ग़लती की है, किराअत के मुआमले में ऐहतियात वाजिब है।

जब वफ़ात के क़रीब ज़माने में मज़ार मुबारक का येह हाल था तो अब क्या पता चल सकता है। लिहाज़ा अब आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कोई पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज106.108)

(266) मौलवी अब्दुल्लाह मुहद्दिस

आप रहमतुल्लाह अलैह आलमगीर बादशाह के ज़माना के फ़ुज़लाए नामदार और मुहद्दिसीने ज़ी वक़ार से थे। सूफ़ी मशरब और निहायत नेक और बा बरकत बुज़ुर्ग थे, आप रहमतुल्लाह अलैह ने 1094 हिजरी में वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज108)

(267) मीर अब्दुल हैय्य मशहदी

आप रहमतुल्लाह अलैह इल्म व फ़ज़्ल और कमालाते शायरी से मौसूफ़ और हुमायूँ बादशाह के ज़माने में सदारत के मन्सब पर मामूर थे, अक्सर फ़ुनून में कामिल महारत हासिल थी और ख़त्ते बाबरी मुख़्तरा बाबर बादशाह को अच्छी तरह जानते थे, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता ना चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज109)

(268) शैख़ अब्दुल हैय्य

आप रहमतुल्लाह अलैह शाहजहाँ और आलमगीर बादशाह के ज़माने के मशाईख़ीन में से थे।

रमज़ान 1070 हिजरी में रेहलत फ़रमाई, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता ना चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज109)

(269) अफ़ज़लुल फ़ुज़ला मुल्ला अब्दुर्रशीद

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबराबाद के उलमाए आली मक़ाम में से हैं। शाहजहाँ और आलमगीर के ज़माने के अक्सर फ़ुज़ला को आप रहमतुल्लाह अलैह की शागिर्दी का फख्र हासिल था।

1088 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज110)

(270) मुल्ला अब्दुल अज़ीज़

आप रहमतुल्लाह अलैह मुल्ला अब्दुर्रशीद अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के बेटे और शागिर्दे रशीद हैं, तमाम उलूमे अक़लिया व नक़लिया में तबह्हुर हासिल था और अक्सर फ़ुनून में कमाल का दर्जा रखते थे।

बख़्तावर ख़ां, ख्वाजा सरा साहिबे मिरातुल आलम और हिम्मत ख़ान मीर बख्शी ने आप रहमतुल्लाह अलैह के फ़ज़्ल व कमाल का हाल आलमगीर बादशाह के दरबार में बयान किया और अक्सर आप रहमतुल्लाह अलैह के मुसव्विदात बादशाह के रूबरू पेश किए। फ़ौरन तलब का फरमान जारी हुआ, और 9 ज़िलहिज्जा 1080 हिजरी को मस्जिद में आप रहमतुल्लाह अलैह बादशाह की ख़िदमत में तशरीफ़ ले गए। क़द्र दान और इल्म दोस्त बादशाह ने आप रहमतुल्लाह अलैह की निहायत वुक़अतो ताज़ीम की और तीन रुपया यौमिया वज़ीफ़ा से कि उस वक़्त तक अता होता था मन्सब चार सदी यानी चार सौ सिपाहियों के अमीर के मनसब पर सरफ़राज़ कर के ख़िलअत, घोड़ा, शमशीर, बरछी, पालकी वगैरा मर्हमत फ़रमाई।

चौथे दिन पंच सदी यानी पाँच सौ सिपाहियों के अमीर के मन्सब पर तरक़्क़ी हो कर ख़िदमत अर्ज़ मुकर्रर पर ताय्युनाती हुई, चंद ही रोज़ में हफ़्त सदी यानी सात सौ सिपाहियों के अमीर के मन्सब से मुफ़्तख़िर हुए।

बादशाह आप रहमतुल्लाह अलैह की दियानत व अमानत, इल्म व फ़ज़्ल और आप रहमतुल्लाह अलैह के काम से ऐसा ख़ुश था कि अल्लामा सादुल्लाह ख़ां की तरह वज़ारत के मन्सब पर पहुंचाना चाहता था लेकिन उम्र ने वफ़ा ना की और 1089 हिजरी में बीमार पड़ गए। मिर्ज़ा मुहम्मद साक़ी साहिबे **"आलमगीर नामा"** का बयान है कि बख़्तावर ख़ां ख्वाजा

सरा ने वफ़ात से दो रोज़ पहले मुझे आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में येह पयाम देकर भेजा था कि ईलाज में तअस्सुब अच्छा नहीं अगर हुक्म हो तो किसी शाही तबीब को ईलाज के वास्ते ख़िदमते आली में रवाना करूँ।

जिस वक़्त मैं आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में पहुंचा तो देखा कि आप रहमतुल्लाह अलैह बिस्तर पर लेटे हुए तस्नीफ़ में मशग़ूल हैं जो कुछ फ़रमाते शागिर्द मीर हादी (फ़ज़ाइल ख़ां) रहमतुल्लाह अलैह और मुहम्मद सईद ऐजाज़ रहमतुल्लाह अलैह वग़ैरा कलमबंद करते जाते थे, जब मैंने पैग़ाम पहुंचाया तो जवाब दिया कि ईलाज में मुझे कोई तअस्सुब नहीं लेकिन इन हुकमा की किताब दानी और तजुर्बा पर ऐतिमाद नहीं, ना अब हयाते मुस्तआर बाक़ी है कि उस के क़ियाम के वास्ते फ़ुज़ूल हाथ पांव मारे जाएं। मैं चंद रोज़ का मेहमान हूँ।

आख़िरे कार 6 रबीउल अव्वल 1089 हिजरी को पैमानए हयात लबरेज़ हो गया और आप रहमतुल्लाह अलैह रेहलत फ़रमाए आलमे बक़ा हो गये। बादशाह आलमगीर और तमाम अराकीने दौलत को सख़्त रंज व अफ़सोस हुआ।

आप रहमतुल्लाह अलैह शीरीं कलाम और मुल्के सुख़न के उस्ताद थे, इज़्ज़त तख़ल्लुस और अरबी फ़ारसी और हिन्दी तीन ज़बानों में निहायत आबदार अशआर मौज़ूं फ़रमाते थे, **“साक़ी नामा”** आप रहमतुल्लाह अलैह का यादगार है।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज112.114)

(271) शैख़ अब्दुल ग़फ़्फ़ार सुहरवर्दी

आप रहमतुल्लाह अलैह का मुख़्तसर या मुफ़स्सल ज़िक्रे ख़ैर किसी किताब में नज़र से नहीं गुज़रा। बस इतना पता चला है कि आप रहमतुल्लाह

अलैह शैख़ मुद्दस्सिर रहमतुल्लाह अलैह के बेटे और ख़ानवादए सुहरवर्दिया के बुज़ुर्ग थे, 18 जुमादस्सानी 1010 हिजरी आप रहमतुल्लाह अलैह के विसाल की तारीख़ है। आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज114)

(272) क़ारी हाफ़िज़ अब्दुल करीम बसीर

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ अब्दुल मलिक क़ारी रहमतुल्लाह अलैह के शागिर्दे रशीद हैं। सातों कारियों उनके चौदह रावियों के साथ अज़ बर थीं और क़सीदा शातीयअ मा'ना के साथ और उस इशकाल के जो उस पर वारिद है बिल्कुल हिफ़्ज़ था, आप रहमतुल्लाह अलैह की क़ुरआन ख्वानी में बहुत कुछ तासीर और दिल रुबाई पाई जाती थी।

आप रहमतुल्लाह अलैह का क़ल्ब इस क़ौल से रौशन था कि **"बुज़ुर्गों का दिल नूर की जगह है"** और आप रहमतुल्लाह अलैह का बातिन कुरआनी नूर से ऐसा मुनव्वर था कि हमेशा हम नशीनों की दिल की बातें आयाते कुरआनी के पर्दे में ज़ाहिर कर दिया करते थे।

आप रहमतुल्लाह अलैह का **मज़ार मुबारक** आगरा में मौजूद है मगर मज़ार मुबारक का अब तक कोई पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख्यार, पेज115)

(273) शैख़ अब्दुल वह्हाब मुहद्दिस

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ अबुल फ़तह मक्की रहमतुल्लाह अलैह के बड़े बेटे और शाह मुहम्मद ख़िबाली रहमतुल्लाह अलैह के मुरीद और शैख़ बुद्धा के उर्फ़ से मौसूम थे, हुस्ने सूरत और नेक सीरत से आरास्ता और दानिशमंदी से पैरास्ता थे।

दर्सी उलूम में कमाल का दर्जा हासिल और हदीसो तफ़सीर के तो हाफ़िज़ थे। वाज़ व तलक़ीन से गुरेज़ फ़रमाते थे।

मजलिसे आली में ख़ुदा की याद और ख़ुदा के नबियों के हालात के सिवाए दूसरी बातें बहुत ही कम हुआ करती थीं।

इल्म सियर व तारीख़ पर ख़ास उबूर हासिल था और अक्सर इबरत अफ़ज़ा गुज़रे हुए वाक़िआत बयान फ़रमाया करते थे, जवांमर्दी में रुस्तम और सख़ावत में हातिम थे, कोई हाजतमंद घर से ख़ाली हाथ ना जाने पाता था, अगर किसी वक़्त इत्तिफ़ाक़ से घर में कुछ मौजूद ना होता था तो अहले ख़ाना से छुपा कर घर का जो कुछ मालो अस्बाब हाथ पड़ जाता हाजतमंद को ला कर दे देते थे।

एक साल आप रहमतुल्लाह अलैह की हिम्मत का इम्तिहान करने के वास्ते अकबराबाद के हाकिम ने तमाम शहर के लोगों को मना कर दिया कि इस दरवेश को हदिया या बतौरे क़र्ज़ एक कोड़ी भी कोई ना दे, मगर आप रहमतुल्लाह अलैह के मेहमान ख़ाना का ख़र्च कम ना हुआ और पहले से ज़्यादा सख़ावतो दरिया दिली गैब के ख़ज़ाने से जारी रही।

29 या 30 रजब 970 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ने इस दारे ना पाएदार से बोरिया बिस्तर बाँधा और आलमे बका को रुख़स्त हो गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया। आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज118.119)

(274) शैख़ अब्दी

आप रहमतुल्लाह अलैह आबिद, मुतावक्किल और आरिफ़े ज़माँ थे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महफ़िले मीलाद के तर्तीब देने में इस्तिताअत यानी ताक़त से ज़्यादा कोशिश व हिम्मत फ़रमाते और उम्दा उम्दा तरीक़े के साथ अंजाम देते थे।

यही मुतबर्रिक व मुक़द्दस ख़िदमत आप रहमतुल्लाह अलैह की मख़दूमी का बाइस और बुज़ुर्गी का सरमाया हुई, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज119)

(275) शैख़ अलाउद्दीन सानी मज्ज़ूब

आप रहमतुल्लाह अलैह की गुफ़तार ग़ैबी उलूम का रिसाला और आप रहमतुल्लाह अलैह की ज़बान लौहे महफ़ूज़ की मुतर्जिम थी और आप रहमतुल्लाह अलैह सिरा मुत्तसिल अहमदाबाद गुजरात के रहने वाले थे। आप रहमतुल्लाह अलैह वज्द व जज़्बा में बे ख़ुद रहते थे, अपने वतन से सबसे पहले अजमेर शरीफ़ में आए और चंद साल वज्द की हालत में वहां बसर कर के ग्वालियर में रौनक अफ़रोज़ हुए। फिर वहां से आगरा में आ गए। जो हाजतमंद आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़िदमत में हाज़िर होते उन के ज़मीरों यानी दिलों का आप रहमतुल्लाह अलैह को इल्म हो जाता था और बिग़ैर अर्ज़े हाल किए हुए हर शख़्स को अपने मुद्दआ का जवाब मिल जाता था।

ख़ान ख़ानां अब्दुर्रहीम ख़ां पर आप रहमतुल्लाह अलैह की ख़ास नज़रे इनायत थी और मुल्क ठट्टा और क़िला अहमद नगर की फ़तहयाबी की ख़ुश ख़बरी पहले ही से आप रहमतुल्लाह अलैह ने सुना दी थी।

चालीस साल आप रहमतुल्लाह अलैह आगरा में मुक़ीम रह कर 1014 हिजरी में दारुन्नूर को रेहलत फरमा गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया। आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख्यार, पेज129)

(276) मौलाना अली अहमद

आप रहमतुल्लाह अलैह उलमा और सोलहाए अकबराबाद से हैं, मुफ़स्सल ज़िक्रे ख़ैर किसी तारीख़ में नज़र से नहीं गुज़रा।

1026 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने रेहलत फ़रमाई, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज130)

(277) मौलाना शैख़ इमादुद्दीन

आप रहमतुल्लाह अलैह आलमगीर और बहादुर शाह के ज़माना के मशहूर फुज़ला से हैं, तमाम उलूमे अक़्ली व नकली में कामिल और निहायत ख़ुदा दोस्त बुज़ुर्ग थे, सिराजुद्दीन अली ख़ान आरज़ू अकबराबादी मशहूर शायर को आप रहमतुल्लाह अलैह की शागिर्दी का फख्र हासिल था।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख़्यार, पेज130.131)

(278) ग़ुर्बती हिसारी

आप रहमतुल्लाह अलैह अकबर बादशाह के वक़्त के एक साहिबे इल्म सूफ़ी और साहिबे दीवान शायर थे, एक रोज़ मा वराउन्नहर में शैख़ हुसैन खवारिज़मी की ख़िदमत में हाज़िर हुए उस वक़्त क़व्वाल एक रुबाई गा रहे थे, हज़रते शैख़ पर उस वक़्त वज्द तारी था, उनकी सोहबत की बरकत से आप रहमतुल्लाह अलैह पर भी कैफ़ियत तारी हो गई और आलमे बेहोशी में शेअर पढ़ना शुरू कर दिया।

हज़रते शैख़ ने आकर आप रहमतुल्लाह अलैह का हाथ पकड़ लिया और आलमे वज्द में अपने साथ लिए फिरे। तमाम उम्र उस दिन की लज़्ज़त आप रहमतुल्लाह अलैह को याद रही।

966 हिजरी में बमक़ाम आगरा आप रहमतुल्लाह अलैह ने वफ़ात पाई, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का कुछ पता ना चल सका।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज132)

(279) बीबी नबफ़्शा

शैख़ हसन अंसारी शीराज़ी रहमतुल्लाह अलैह की कनीज़ बा तमीज़ और निहायत कामिलए रोज़गार और अपने ज़माने की राबिआ ख़ातून थीं, इल्म व फ़ज़्ल से मौसूफ़ ख़त्ताती में शोहरए आफ़ाक़ और सहीफ़ों के सरे वर्क़ की सफ़ाई और तिलाई रंग अमेज़ी में कामिल महारत रखती थीं।

मुल्ला अब्दुल्लाह सहरी जो कि अकबर के ज़माने का मशहूर शायर और ख़त्ते नस्तालीक़ का बा कमाल माहिर था, आप रहमतुल्लाह अलैहा का बेटा और शागिर्द था, आप रहमतुल्लाह अलैहा के **मज़ार मुबारक** का पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख़्यार, पेज55)

(280) शाह हैदर

आप रहमतुल्लाह अलैह आलमगीर बादशाह के ज़माने के मशाईख़ीने अकबराबाद में से हैं, 1076 हिजरी में आप रहमतुल्लाह अलैह ने विसाल फ़रमाया।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** का पता ना चल सका।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज73.74)

(281) ख़्वाजा ख़िज़र

आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ मुहम्मद बख़्तियार रहमतुल्लाह अलैह के बेटे हैं जो शेर शाह सूरी के ज़माने के मशहूर बुज़ुर्ग और तमाम पठानों के मुक़्तदा यानी पेशवा थे, आप रहमतुल्लाह अलैह तमाम उम्र आगरा में गोशा नशीन और अपने आबाओ अज्दाद यानी बाप दादा के तरीक़े पर सरगर्म व साबित क़दम रहे।

आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** और विसाल की तारीख़ के बारे में कुछ पता नहीं चल सका। (बोस्ताने अख़्यार,पेज 74)

(282) अमीर सैय्यिद दाऊद

आप रहमतुल्लाह अलैह सैय्यिद जलाल क़ादरी अकबराबादी रहमतुल्लाह अलैह के छोटे बेटे, ख़लीफ़ा और सज्जादा नशीन थे, आप रहमतुल्लाह अलैह को शैख़ अफ़ज़ल मुहम्मद अंसारी रहमतुल्लाह अलैह से बहुत मुहब्बत थी, उन के इंतिक़ाल के बाद आप रहमतुल्लाह अलैह शैख़ सादी का एक शेअर अक्सर पढ़ा करते थे।

8 ज़िलहिज्जा 1006 हिजरी को आप रहमतुल्लाह अलैह ख़ाके आगरा के सिपुर्द किए गए यानी आप रहमतुल्लाह अलैह का विसाल हो गया, आप रहमतुल्लाह अलैह के **मज़ार मुबारक** के बारे में कुछ पता नहीं चल सका।

(बोस्ताने अख़्यार, पेज74.75)

(283) मौलाना मुहम्मद सआदतुल्लाह क़ादरी

आप रहमतुल्लाह अलैह क़स्बा संभल ज़िला मुरादाबाद के रहने वाले हैं और मख़दूम मियां हातिम संभली (जिनकी वफ़ात 968 हिजरी में हुई) की नस्ल से हैं जो मियां अज़ीज़ुल्लाह तल्बनी के शागिर्दे रशीद, जामेअ माक़ूलो मनक़ूल और फ़िक़्ह में इमामे आज़म सानी समझे जाते थे, माँ की तरफ़ से आप रहमतुल्लाह अलैह शाह हिलाली संभली रहमतुल्लाह अलैह मशहूर बुज़ुर्ग से जा मिलते हैं, इन दोनों बुज़ुर्गों का नसब नामा हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम अंसारी रज़ी अल्लाहु अनहु तक पहुंचता है जो हुज़ूर, रसूले मक़बूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मशहूर सहाबी हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह मुफ़्ती मुहम्मद इनामुल्लाह साहिब के फ़र्ज़ंदे रशीद यानी बेटे हैं। आप रहमतुल्लाह अलैह के ख़ानदान में इल्म व फ़ज़्ल का चर्चा और दर्सो इफ़्ता का सिल्सिला चार सौ बरस के क़रीब से चला आता है। शराफ़ते ख़ानदानी के साथ आप रहमतुल्लाह अलैह (इल्म नसब में से अफ़ज़ल नसब और लक़ब में से अफ़ज़ल लक़ब है) के शर्फ़ से मुशर्रफ़

और (अक़्ल आधी करामत है) की करामत से सरफ़राज़ हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह का इल्म अमल के ज़ेवर से आरास्ता और आप रहमतुल्लाह अलैह का बातिन तरीक़त का पोशीदा ख़ज़ाना और अख्लाक़ व इख्लास से पैरास्ता है।

सूरत दरवेशाना, तन सूफियाना, दिल सादा और जमाल व हाल से सलाहियतो परहेज़गारी के आसार नुमायां हैं, **"ख़ामोशी आलिम की ज़ीनत है"** पर कारबन्द और कभी आम जलसों में वाज़ नहीं फ़रमाते लेकिन ख़वास और शागिर्दों में बैठ कर निहायत फ़सीह व बलीग़ और ऐसी दिलकश तक़रीर फ़रमाते हैं कि बड़े बड़े मुश्किल मसाइल निहायत आसानी से ज़ेहन नशीन हो जाते हैं, आप रहमतुल्लाह अलैह की सोहबत निहायत असर करने वाली है कि मुसलमान तो मुसलमान ग़ैर मज़ाहिब वालों पर भी इस का निहायत नेक असर पड़ता है।

चुनांचे आप रहमतुल्लाह अलैह के अक्सर ग़ैर मुस्लिम शागिर्दों के दिल जो आली ख़ानदान और आला तालीम याफ़ता हैं आप रहमतुल्लाह अलैह की हिदायतो सोहबत की बरकत से नूरे इस्लाम से मुनव्वर हैं।

आप रहमतुल्लाह अलैह उन बुज़ुर्गों में हैं जो **"शौहरत आफ़त और गुमनामी राहत"** पर कारबंद हो कर ख़ामोशी से इस्लाम की ख़िदमत में मसरूफ़ हैं, ग़र्ज़कि आप रहमतुल्लाह अलैह के औसाफ़े हमीदा और ख़साइले पसंदीदा की दास्तान इस क़द्र तवील है कि तारीफ़ के क़ालिब में नहीं आ सकती, अगर्चे आप रहमतुल्लाह अलैह का अख्लाक़ वसीअ और तवाज़ो आम है कि हर अदना व आला के साथ आप रहमतुल्लाह अलैह मुशफ़िक़ाना और मेहरबानी के साथ पेश आते हैं मगर राक़िमे बोस्तान पर खास नज़रे शफ़क़त फ़रमाते हैं चुनांचे इसी शफ़क़तो मुहब्बत का नतीजा है कि आप रहमतुल्लाह अलैह ने राक़िमे बोस्तान के मुतवातिर इसरार से मजबूर हो कर

आप रहमतुल्लाह अलैह ने हालात कलमबंद फरमा कर मर्हमत फ़रमाए जिनसे तख़्तए बोस्ताने अख्यार को पुर बहार करता हूँ।

मौलाना मुहम्मद सआदतुल्लाह क़ादरी ख़ुद लिखते हैं कि मेरी पैदाइश 22 मुहर्रम 1293 हिजरी पीर के दिन संभल मुहल्ला कोट में हुई, मुझ से पहले मेरा एक भाई हुआ था जो चालीस रोज़ ज़िन्दा रह कर वफ़ात पा गया जिससे वालिदा को बे इंतिहा गम हुआ, उसी ज़माने में हमारे यहां एक विलायती बुज़ुर्ग मियां रसूल शाह रहमतुल्लाह अलैह हसनी व हुसैनी सैय्यिद रहते थे जिनसे मेरे ख़ानदान के अक्सर बुज़ुर्ग बैअत थे, मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुस्सलाम रहमतुल्लाह अलैह इन ही के मुरीदो ख़लीफ़ा थे, इन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया: कि और आएगा और वो ज़िंदा रहेगा। मेरी पैदाइश की इत्तिला मेरी दादी मरहूमा ने इन बुज़ुर्ग साहिब रहमतुल्लाह अलैह को उस वक़्त दी जिस वक़्त वो ख़ास हालते मुराक़बा में थे, उन्होंने फ़रमाया कि मेरे इस कुर्ता को जिसको मैं पहने हुए हूँ पुश्त की जानिब से फाड़ कर उस के लिए कुर्ता बनाओ और सबसे पहले उसी को पहनाओ, चुनांचे पहला कपड़ा जो मेरे बदन से मस हुआ वो ही उनका पसीने का भरा हुआ कुर्ता था, जब इन बुज़ुर्ग का विसाल हुआ है उस वक़्त मेरी उम्र तक़रीबन दो साल थी।

मेरी वालिदा माजिदा का बयान है कि वो तमाम बच्चों में से ख़ुसूसियत के साथ मुझको खिलाते थे और बे इंतिहा ख़ुश हुआ करते थे, इस आलम बे होशी की ख़ास तवज्जो का असर आज तक अपने अंदर पाता हूँ।

सबसे पहले मैंने अपनी वालिदा माजिदा से पढ़ा उन्होंने मकतब में दाख़िल होने से पहले ही मुझे क़ायदा ख़त्म करा कर पारा अलिफ़ लाम मीम शुरू करा दिया था, पांचवें साल मेरा मकतब जाना हुआ और मैं अपने हक़ीक़ी मामूं मौलवी मुहम्मद हसन के पास पढ़ने को बैठा मगर घर

पर वालिदा से भी बराबर पढ़ता रहा, मैंने दो तीन ही पारे पढ़े होंगे जो वालिदा ने करीमा बे माना मुझको शुरू करा दी और आठवें पारे तक ही पहुंचा हूँगा कि करीमा ख़त्म करा के गुलिस्तान का पहला बाब तर्जमा के साथ शुरू करा दिया।

उस ज़माने में मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाह अलैह बदायूं में हाफ़िज़ अहमद हसन टोंक वाले मशहूर रईस के बच्चों की तालीम पर मामूर थे, छठा साल था और मैं गुलिस्तान की पहली हिकायत ख़त्म कर चुका था जो वालिदा ने मुझ को वालिद रहमतुल्लाह अलैह के साथ कर दिया, सातवीं साल वो ख़ुद बदायूं आ गईं और मुझे अपने हक़ीक़ी भाई मौलवी मुहम्मद हसन साहिब इसराईली संभली की ख़िदमत में मीज़ान शुरू कराने की ग़र्ज़ से ले गईं और अर्ज़ किया कि तबर्रुकन आप उस को अरबी शुरू करा दीजिए।

मुझे ख़ूब याद है कि मामूं साहिब ने फ़रमाया कि तुम उस को मौलवी अब्दुल हैय्य लखनवी फ़रंगी महल्ली की तरह बीस बरस की उम्र में फ़ाज़िल कराना चाहती हो। वालिदा ने अर्ज़ किया दुआ तो यही है और इसी ग़र्ज़ से आई हूँ कि आप शुरू भी करा दें और दुआ भी फरमा दें, मामूं साहिब ने शुरू कराने के बाद दुआ फ़रमाई। मुझे येह वाक़िआ याद रहा और इस वक़्त फिर ताज़ा हो गया।

जब दर्सियात ख़त्म कर चुका और मैंने अपनी उम्र का हिसाब किया तो बीस बरस से चंद ही माह ज़ाइद हुए थे, मामूं साहिब ने अरबी शुरू कराने के बाद फ़रमाया था कि जब येह मुल्ला हसन शुरू करेगा तो मैं ख़ुद उस को पढ़ाऊंगा मगर अफ़सोस कुतुबी ही पढ़ रहा था कि वो आफ़ताबे इल्म मर्कज़े ख़ाकी में ग़ुरूब हो गया यानी उनका विसाल हो गया।

मैंने मीज़ान से लेकर कुतुबी व शरह मुल्ला जामी व हिदाया जिल्द अव्वल और इब्तिदाई नूरुल अनवार तक अपने वालिद रहमतुल्लाह अलैह से पढ़ा, उस के साथ साथ फ़ारसी की दर्सियात भी ख़त्म कीं। उसी ज़माने में अंग्रेज़ी भी सातवें दर्जे तक पढ़ी जिसका सिल्सिला वहीं रह गया। हाफ़िज़ अहमद हसन मरहूम के इंतिक़ाल के बाद वालिद रहमतुल्लाह अलैह संभल तशरीफ़ ले आए और मेरी तालीम अपने मामूं सिराज अहमद मरहूम के मुताअल्लिक़ कर दी। येह बुज़ुर्ग मौलवी अब्दुल जलील साहिब अलीगढ़ी के मुम्ताज़ शागिर्दों में थे बेहद ज़हीन थे, शम्सुल उलमा मौलवी ख़लील अहमद साहिब इसराईल अरबी प्रोफ़ैसर अलीगढ़ कॉलेज इन ही के बड़े साहिब ज़ादे हैं, डेढ़ साल उन की ख़िदमत में रह कर तमाम रसाइले मंतिक़ व उमूरे आम्मा व तल्वी वग़ैरा तमाम कीं। इसी ज़माने में मेरे दादा मरहूम के मामूं ज़ाद भाई एक बुज़ुर्ग मुफ़्ती मुहम्मद अब्दुस्सलाम भी थे वो पक्के सुन्नी थे इख्तिलाफ़े मसाइल की वजह से मौलवी सिराज अहमद साहिब उन की तहक़ीर व तज़हीक फ़रमाया करते थे उन ही की तालीम का असर था कि मैं भी मुफ़्ती साहिब को पढ़ा लिखा शख़्स ख़्याल नहीं करता था, एक रोज़ मैंने इम्तिहान की ग़र्ज़ से मुफ़्ती साहिब से सवाल किया कि अल्लाह पाक के सिफ़ात के मुताअल्लिक़ मुताकल्लिमीन का येह मसलक कि वो ना ऐने ज़ात है ना ग़ैरे ज़ात अच्छी तरह ज़ेहन नशीन नहीं होता। मेरा ख़्याल था कि बहुत से बहुत वो शरह अक़ाइद नस्फ़ी की तक़रीर करेंगे इस पर बेहद एतराज़ करूँगा, लेकिन मुफ़्ती साहिब ने निहायत ख़ंदा पेशानी से फ़रमाया कि येह मसला जब हल होगा तब तू वहदतुल वुजूद को समझ लेगा। और अगर समझना चाहता है तो सात रोज़ तक बराबर मेरी तक़रीर सुन और जिस क़दर ख़दशात हों बे तकल्लुफ़ बयान कर, इन सात ही रोज़ों में येह मसला तै होते ही सिफ़ात

का मसला भी हल हो जाएगा। मैं मुस्तइद यानी तैयार हो गया और उसी वक़्त से गुफ़्तगु शुरू हुई, एक बजे रात तक गुफ़्तगु होती रही मैंने बेहद ऐतिराज़ किए जिनमें से अक्सर बे दलील थे मगर मुफ़्ती साहिब निहायत ख़ंदा पेशानी से जवाब ही नहीं देते थे बल्कि ख़्याल की ग़लती का मंशा समझा देते थे।

इस रोज़ ख़ास इस मसला के मुताअल्लिक़ मैंने ऐसी तक़रीर सुनी थी जिसके मुताअल्लिक़ इस से पहले कभी सुनी थी और ना ऐसी तक़रीर सुनने का ख़्याल कर सकता था, इस वजह से रात भर इख़्तिलाले हवास की सी कैफ़ियत रही, दूसरे रोज़ फिर गुफ़्तगु हुई आज की तक़रीर में दिमाग़ पर ज़्यादा बोझ ना पड़ा पहली तक़रीर ने कुछ मुनासिबत पैदा कर दी थी, तीसरे रोज़ फिर गुफ़्तगु हुई थोड़ी देर में गुफ़्तगु का ख़ातिमा हो गया और मैं नफ्से मसला वहदतुल वुजूद को एक हद तक समझ गया तक़रीर के ख़ातिमे पर मुफ़्ती साहिब ने फ़रमाया अल्हम्दु लिल्लाह वो मसला जिसको मैं सात रोज़ में समझाया करता हूँ तूने तीन ही रोज़ में समझ लिया।

इन तक़रीरों से मुझे मालूम हुआ कि मौलवी सिराज अहमद मरहूम का इल्म सतही और ज़ाहिरी है और जिनको मैं एक मुद्दत तक मामूली मुल्ला समझता था इल्म की रौशनी इसी शिकस्ता हाल दरवेश के पास है जिसको मुफ़्ती अब्दुस्सलाम कहा जाता है, मुफ़्ती साहिब की तक़रीर और उनके अख्लाक़ की ख़ास कशिश ने मुझे मजबूर किया कि मैं मुफ़्ती साहिब से ही बक़िया उलूम हासिल करूँ। मैंने कुछ किताबें शुरू कीं हर फ़न में और हर मसला में मैंने उन की तहक़ीक़ की ख़ास शान पाई और अस्ल येह है कि उलूम के हक़ाइक़ का पता चलाने की फ़िक्र वहीं से पैदा हुई, मगर मुफ़्ती साहिब अकेले मेरे हिस्से के ना थे बल्कि शहर के तमाम

गुरबा और देहात के तमाम दहक़ानों के लिए भी उसी तरह वक़्फ़ थे जैसे एक शैखे वक़्त को होना चाहिए।

इस वजह से सबकों में हर्ज होने लगा और मजबूरन मुझे रख़्ते सफ़र कानपुर के लिए करना पड़ा जिसका शोहरा उस ज़माने के तलबा के तबक़े में खासतौर से था, मुफ़्ती साहिब से इजाज़त लेकर मैं कानपुर चला गया।

कानपुर में जब मुझे डेढ़ साल के क़रीब पढ़ते हो गया तो एक ख़ास ज़रूरत के वास्ते पहले वतन गया और वहां से रामपुर जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ, रामपुर में ख़ुश क़िस्मती से एक स्याह पोश बुज़ुर्ग की ख़िदमत में नयाज़ हासिल हुआ जिनका नामे नामी हज़रत शाह मुहम्मद नूर था, येह बुज़ुर्ग मुजद्दिदिया ख़ानदान के इजाज़त याफता और हज़रत हाफ़िज़ जमाल रहमतुल्लाह अलैह के मुरीदो ख़लीफ़ा थे, बज़ाहिर उर्दू भी मुश्किल से पढ़ सकते थे, मैंने उनमें एक ख़ास रुहानी कशिश पाई कि जिसने मुझे बावजूद एक आज़ाद और बेबाक तालिबे इल्म होने के थोड़ी ही देर में गुलामी पर मजबूर कर दिया और मैंने निहायत फख्र से पहली ही मुलाक़ात में उनकी गुलामी का तौक़ अपनी गर्दन में डाला।

आप रहमतुल्लाह अलैह ने ख़ानदाने क़ादरिया में मुझे दाख़िल फरमा कर दूसरे रोज़ मेरी इस्तिदाद के मुताबिक़ वहदतुल वुजूद का मुशाहिदा करा दिया जिससे इल्मुल यकीन, ऐनुल यक़ीन हो गया और मेरी बसीरत की आँखें खुल गईं और कुछ ऐसी बद हवासी की हालत पैदा हो गई कि दो दिन तक जो मेरे रामपुर में ठहरने की पूरी मुद्दत है येह यक़ीन नहीं होता था कि मैं रामपुर में हूँ और मेरा वतन संभल में है, तमाम तअल्लुक़ात यहाँ तक कि सिल्सिलए दर्स से भी तबीअत मुतनफ़्फ़िर और बरदाश्ता खातिर हो गई और मैंने ख़िदमते अक़्दस में अर्ज़ किया कि अगर हुक्म हो तो मैं

हुज़ूर के क़दमों के नीचे पड़ा रहूं। आप रहमतुल्लाह अलैह ने जवाब दिया कि कमली ओढ़ कर दरिया से पार हो जाना मर्दानगी नहीं, बहादुरी येह है कि कश्ती खे कर पार लगाओ जिसमें बहुत से आदमी हों। तुमसे तो काम लेना है और तुम हिम्मत हारे देते हो, ख़ुदा मालूम इन अल्फ़ाज़ में क्या जादू था कि इस्मे आज़म का काम कर गए और मैं फ़ौरन ख्वाब से चौंक पड़ा और मुझे मालूम हुआ कि मैं अब इस आलम में हूँ। येह उस वक़्त मुझे याद नहीं रहा कि मैंने अर्ज़ किया था या ख़ुद आप रहमतुल्लाह अलैह ही ने हर इल्मो फ़न के लिए ख़ास ख़ास ख़्यालात तालीम फ़रमाए, वो ख़्यालात अगर्चे आगे चल कर मुझ से निभ ना सके लेकिन येह ज़रूर है कि हज़रत की तालीम ने उलूम के साथ एक ख़ास किस्म की दिलचस्पी पैदा कर दी।

हज़रत की ख़िदमत से दो रोज़ मुस्तफ़ीज़ हो कर जुदा हुआ और अफ़सोस कि इस वाक़िआ के चंद ही माहिने बाद हज़रत का विसाल हो गया।

मैं मकान पर एक माह ठहर कर फिर कानपुर चला गया और तकमीले दर्सियात में मसरूफ़ हो गया और इसी साल तहसील से फ़ारिग़ हो कर मकान पर आ गया और अपने मकान की मस्जिद के क़रीब में तलबा को पढ़ाने में मसरूफ़ हो गया, इस अस्ना में मुझे बहुत से हज़रात से नियाज़ हासिल करने का इत्तिफ़ाक़ हुआ मगर मैं कभी किसी के पास उस को नुकसान देने वाला या फाइदा देने वाला समझ कर नहीं गया।

एक मर्तबा एक मज्ज़ूब साहिब ने जिनके कमाल के आसार मुझे ज़ाहिर तौर पर मालूम होते थे मुझसे कमाले शफ़क़त से फ़रमाया कि मांग क्या मांगता है उस के फ़रमाने से येह मालूम होता था कि मेरे आज़ा पर लर्ज़ा की सी कैफ़ियत तारी हो गई मगर मैंने जवाब दिया तो यही कि आप दे ही क्या सकते हैं जो आप से माँगू,उन्होंने फिर वही इरशाद फ़रमाया फिर

मैंने यही अर्ज़ किया, जब तीसरी मर्तबा उन्होंने फ़रमाया तो मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत जब आप को मेरे दिल का हाल तक मालूम नहीं तो आप दे क्या सकेंगे, इस पर मुस्कुराए और निहायत महफ़ूज़ हो कर फ़रमाने लगे कि हमने तेरा टिकट ले लिया है आ जाईएगा। इस के जवाब में मैंने बे सोचे समझे कह दिया कि हाँ आ जाऊँगा लेकिन आज तक नहीं समझा कि उनका मुद्दा क्या था ?

कानपुर से आए हुए मुझे दो तीन ही माह का अरसा हुआ था कि आगरा में एक क़ौमी अंजुमन बनाम अहबाब क़ाइम हुई और इस अंजुमन ने अरबी का एक मदरसा जारी किया, शव्वाल 1313 हिजरी में मैं उस मदरसे में अरबी का मुदर्रिस मुक़र्रर हो कर आगरा आया, एक साल बाद फ़ारसी का अव्वल दर्जा भी मेरे मुताअल्लिक़ कर दिया गया, मैं उस मदरसे में जो मदरसा अहमदिया के नाम से मौसूम है सात साल तक मुलाज़िम रहा, इस अरसे में चार तालिबे इल्म फ़ारिग़ुत्तहसील हुए, उसी ज़माने में मैंने तोहफ़ए मुर्सला का उर्दू में तर्जमा किया, आख़िरे कार उस मदरसे की इंतिज़ामी हालात ख़राब होने की वजह से मैं मजबूरन वहां से अलैहिदा हो गया और ढाई बरस तक हालात बेकारी में मुतफ़र्रिक़ तौर से अरबी फ़ारसी पढ़ाता रहा।

मुफ़्ती साहिब मरहूम के फ़ैज़े सोहबत और तालीम ने ज़मानए तालिबे इल्मी में शायरी का एक ख़ास ज़ौक़ पैदा कर दिया था। इस ढाई बरस की तातील यानी छुट्टी ने इस शौक़ को फिर ज़िंदा कर दिया और इस क़द्र ग़ज़लें लिखीं कि एक दीवान तैयार हो गया।

शव्वाल 1313 हिजरी से आगरा को आप के गिरामी क़ुदूम की बरकत हासिल है, 1904 ईस्वी से आप मदरसा जामा मस्जिद आगरा में मुदर्रिसे अव्वल और तालिबाने इल्मो इरफ़ान की दर्सो तलक़ीन में

मशग़ूलो मसरूफ़ और अपने बा बरकात औक़ात के आमिर हैं, अगर्चे इआलदारी का बड़ा बोझ कंधे पर है मगर निहायत क़ानेअ हैं, कई लड़कियों के इलावा एक ख़ुर्द साल लड़का मुहम्मद नाम का मौजूद है, ख़ुदा करे कि वालिदे बुज़ुर्गवार के ज़ेरे साया इल्म व अमल के ज़ेवर से आरास्ता हो कर बाप के मर्तबा पर पहुंचे और ख़ानदान का नाम रौशन करे। आमीन (बोस्ताने अख्यार, पेज171.184)

हिन्दी तर्जमा की तारीख

आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत का हिन्दी तर्जमा 5 जनवरी 2026 ईस्वी को किया गया और अल्लाह पाक के करम से 27 जनवरी 2026 ईस्वी को मुकम्मल हो गया।

मुतर्जिम

अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी



मुरत्तिब की किताबों का तआरुफ़

स	किताब का नाम	ज़बान	पेज
1	दीने इस्लाम की खूबियाँ	उर्दू	80
2	दीने इस्लाम की खूबियाँ	हिन्दी	80
3	असरारूल ईमान फ़ी हकाईकुल अरकान	उर्दू	423
4	असरारूल ईमान फ़ी हकाईकुल अरकान	हिन्दी	423
5	मेरी सुन्नत मेरी उम्मत	उर्दू	231
6	मेरी सुन्नत मेरी उम्मत	हिन्दी	231
7	क्या हाल है ?	उर्दू	220
8	क्या हाल है ?	हिन्दी	220
9	मौत के वक़्त	उर्दू	282
10	मौत के वक़्त	हिन्दी	282
11	अकाइद की हिकमतें	उर्दू	153
12	अकाइद की हिकमतें	हिन्दी	153
13	पाँच नमाजों की हिकमत	उर्दू	152
14	पाँच नमाजों की हिकमत	हिन्दी	152
15	सब से पहले सब से आखिर	उर्दू	276
16	सब से पहले सब से आखिर	हिन्दी	276
17	क़ुसूर किस का ?	उर्दू	64
18	क़ुसूर किस का ?	हिन्दी	64
19	निसाब मसाइले नमाज़	उर्दू	80
20	आसान हनफ़ी नमाज़	हिन्दी	96
21	आसान फ़र्ज़ उलूम	उर्दू	696

22	आसान फ़र्ज़ उलूम	हिन्दी	696
23	आसान खुत्बाते मुहर्रम	उर्दू	720
24	आसान खुत्बाते मुहर्रम	हिन्दी	720
25	आला हज़रत का चर्चा रहेगा	उर्दू	32
26	आला हज़रत का चर्चा रहेगा	हिन्दी	32
27	ईद मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?	उर्दू	165
28	ईद मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?	हिन्दी	165
29	मुहम्मद और अहमद के राज़	उर्दू	160
30	मुहम्मद और अहमद के राज़	हिन्दी	128
31	मदीने जाना क्यों ज़रूरी है ?	उर्दू	276
32	मदीने जाना क्यों ज़रूरी है ?	हिन्दी	276
33	चाँद की गवाही	उर्दू	64
34	चाँद की गवाही	हिन्दी	64
35	कुर्बानी की तारीख और हिकमतें	उर्दू	112
36	कुर्बानी की तारीख और हिकमतें	हिन्दी	112
37	आँखों का तारा नामे मुहम्मद	उर्दू	176
38	आँखों का तारा नामे मुहम्मद	हिन्दी	160
39	आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	उर्दू	592
40	आगरा के 283 औलियाए किराम की सीरत	हिन्दी	608
41	फतेहपुर सीकरी की तारीख	उर्दू	208
42	फतेहपुर सीकरी की तारीख	हिन्दी	208
43	आगरा की तारीख	उर्दू	400
44	आगरा की तारीख	हिन्दी	400

45	हिन्दुस्तान को मुस्लिम बादशाहों के तोहफे	उर्दू	208
46	हिन्दुस्तान को मुस्लिम बादशाहों के तोहफे	हिन्दी	208
47	शबे बराअत का बयान	उर्दू	50
48	शबे बराअत का बयान	हिन्दी	50
49	कुरआनी सूरतों के मज़ामीन	उर्दू	435
50	खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 1	उर्दू	477
51	खुत्बाते मुस्तफाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 1	उर्दू	464
52	खुत्बाते मुस्तफाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 2	उर्दू	382
53	खुत्बाते मुस्तफाई व खुत्बाते शफ़ीकी जिल्द 3	उर्दू	382
54	तदरीस के 26 तरीक़े	उर्दू	400
55	रफीकुत्तदरीस	उर्दू	376
56	तारीख साज़ शख्सियत बनने के फॉर्मूले	उर्दू	135
57	फैज़ाने कुरआन कोर्स	उर्दू	256
58	फैज़ाने शरीअत कोर्स	उर्दू	700
59	मा फ़ूआलल्लाहु बिका	उर्दू	288
60	तन्ज़ीमी निसाब व बयानात	उर्दू	528
61	उम्मते मुहम्मदिया के सुवालात	उर्दू	145
62	दुरूद की हिकमतें	उर्दू	98
63	चन्दा करने के फॉर्मूले	उर्दू	147
64	शफीकुल मिस्बाह शरह मराहुल अरवाह	उर्दू	402
65	शफ़ीकिया शरह अरबइने नवाविया	उर्दू	190
66	शाफ़िकुन्नहव लिहल्लि खुलासतुन्नहव हिस्सा1	उर्दू	200
67	शाफ़िकुन्नहव लिहल्लि खुलासतुन्नहव हिस्सा2	उर्दू	200

68	अल कौलुल अज़हर शरह फ़िक़्हे अकबर	उर्दू	192
69	शारीकुल फलाह शरह नूरुल इज़ाह	उर्दू	717
70	खलीलिया शरह मुनाज़रा रशिदिया	उर्दू	300
71	कलामुल विकाया शरह शरहुल विकाया जिल्द1	उर्दू	372
72	सर्फ के दिलचस्प सुवालात	उर्दू	375
73	हर्फों के राज़	उर्दू	160



सिने जुलूस का मतलब

किसी बादशाह के तख़्त नशीन होने के बाद का साल, यानी बादशाहत शुरू होने के वक़्त को बुनियाद बना कर साल शुमार करने को सिने जुलूस कहते हैं क्योंकि जुलूस का मा'ना बैठना है और येह बादशाह के तख़्त नशीन होने से किनाया है, मिसाल के तौर पर अगर शाहजहाँ 1628 ईस्वी में तख़्त नशीन हुआ, तो 1628 ईस्वी को "साले अव्वल जुलूस" कहा जाएगा। इस के बाद 1629 ईस्वी को "साले दोम जुलूस" कहा जाएगा। और 1638 ईस्वी को "ग्यारहवां साले जुलूस" कहा जाएगा।

आगरा के औलियाए किराम की सीरत की Video देखने और सुनने की लिए इस QR Code को Scan कीजिए ।

Like Share & Subscribe Channel



बुज़ुर्गाने दीन के उर्स की तारीख और महीना

(1) मुहर्रम

स	नाम व पता	तारीख	हिजरी साल
1	हिम्मत ख़ान	5	1092
2	शैख़ अबुल फ़तह शहीद	15	1033

(2)सफर

स	नाम व पता	तारीख	हिजरी साल
1	अमीर सैय्यिद अबुल उला	9	1061
2	शैख़ अबुल फ़ैज़ फ़ैज़ी फ़य्याज़ी	10	1004
3	मीर मुहम्मद नोमान बदखशी नक़्शबंदी मुजद्दिदी	18	1058
4	शैख़ अफ़ज़ल मुहम्मद	21	1003
5	मिर्ज़ा हसन बेग सूफ़ी	22	1074
6	हकीम सैय्यिद नूरुद्दीन रज़वी कादरी	23	1207
7	मीर सैय्यिद जलाल उद्दीन कादरी	25	983
8	मियां नज़ीर	26	1246
9	क़ाज़ी सैय्यिद महर अली कादरी	…..	1270

(3)रबीउल अव्वल

स	नाम व पता	तारीख	हिजरी साल
1	अमीर सैय्यिद मुहम्मद अफ़ज़ल अहरारी	1	1111
2	अल्लामी फ़हमामी शैख़ अबुल फ़ज़्ल	4	1011
3	शाह अज़मतुल्लाह	4	1084
4	मुफ़्ती हाफ़िज़ मुहम्मद रमज़ान	6	1334
5	मुल्ला अब्दुल अज़ीज़	6	1089
6	ख़्वाजा मुहम्मद यहया अहरारी नक़्शबंदी	12	999
7	शैख़ ज़ाहिद	16	1070
8	सैय्यिद अमजद अली शाह जाफ़री क़ादरी	22	1230
9	सैय्यिद बदरुद्दीन	29	998



(4)रबीउस्सनी

स	नाम व पता	तारीख	हिजरी साल
1	सैय्यिद नज्मुद्दीन मुहम्मद मौलाना क़ासिम	2	988
2	मीर मुहम्मद फ़ाज़िल	2	1105
3	मिर्ज़ा अबू तुराब	4	1063
4	अमीर नूरुल उला	7	1090
5	मौलवी सैय्यिद वारिस अली	10	1327
6	क़ारी हाफ़िज़ मुहम्मद सालेह अबुल उलाई	14	1118
7	शैख़ आरिफ़ हुसैनी (मीराँ आरिफ़ हुसैनी)	21	1006
8	हकीम सैय्यिद क़ुदरत अली कादरी	21	1318
9	शैख़ कमालुद्दीन हुसैन	22	1018
10	बीबी जीवनी	29	1201



(5)जुमादल उला

स	नाम व पता	तारीख	हिजरी साल
1	सैय्यिद जलाल बुख़ारी	1	1057
2	मुफ़्ती अबुल फ़तह	8	976
3	शैख़ अब्दुल्लाह सूफ़ी शत्तारी	23	1010
4	शैख़ अबुल ख़ैर	25	1014

(6)जुमादस्सानी

स	नाम व पता	तारीख	हिजरी साल
1	मौलवी अब्दुल्लाह	5	1328
2	शैख़ नासिर (शैख़ नाज़िर)	13	1057
3	शैख़ अब्दुल ग़फ़्फ़ार सुहरवर्दी	18	1010
4	शाह फ़ख़रुद्दीन मदारी	19	970
5	शैख़ मुहिब्बुल्लाह	21	1058
6	सैय्यिद मुहम्मद आक़िल	……	1092



(7)रजब

स	नाम व पता	तारीख	हिजरी साल
1	शैख़ मुहम्मदी चिश्ती साबरी	3	1107
2	मौलाना शैख़ हसन शीराज़ी अंसारी	4	956
3	मीर मुहम्मद आक़िल	7	1088
4	कादरी शैख़ मुहम्मद ख़ालिदी	14	970
5	शाह फ़र्हाद सिफ़ात जमाली कादरी नक़्शबंदी	23	1199
6	सैय्यिद अहमद बुख़ारी	25	1064
7	शैख़ मुहम्मद ख़्याली	27	990
8	मौलाना मुहम्मद सिराजुल इस्लाम	28	1316
9	शैख़ अब्दुल वहहाब मुहद्दिस	29/30	970
10	क़ारी शैख़ अब्दुल मलिक	……	956

(8)शाबान

स	नाम व पता	तारीख	हिजरी साल
1	मुफ़्ती शैख़ जुनैद	4	998
2	मीर मुहम्मद सालेह कश्फ़ी	12	1060
3	अमीर ताजुल उला	15	1102
4	शैख़ अबुल फ़तह मक्की	22	953
5	शैख़ बुरहान शत्तारी	……	1083

(9)रमज़ान

स	नाम व पता	तारीख	हिजरी साल
1	शैख़ इस्माईल चिश्ती	2	1066
2	शैख़ ज़ियाउल्लाह शत्तारी	3	1005
3	शैख़ जैनुद्दीन	7/20	1005/1006
4	अल्लामी अफ़ज़ल ख़ां शीराज़ी	12	1048
5	हकीम सैय्यिद महर अली रज़वी कादरी	22	1313
6	ख़लीफ़ा अबुल क़ासिम अबुल उलाई	……	1089
7	शैख़ अब्दुल हैय्य	……	1070

(10)शव्वाल

स	नाम व पता	तारीख	हिजरी साल
1	शैख़ अब्दुल मोमिन चिश्ती	2	970
2	सैय्यिद शाह मीर शीराज़ी	4	996
3	सैय्यिद बाक़ी	5	1065
4	शैख़ अब्दुल्लाह दानिशमंद	6	943
5	शैख़ कमाल	10	1009
6	मुफ़्ती शैख़ बहाउद्दीन	11	978
7	शैख़ अबुल फ़त्ताह	11	978
8	शैख़ वली मुहम्मद नारनौली	25	1057
9	हाफ़िज़ अहमद हुसैन नक़्शबंदी मुजद्दी	……	1331
10	उस्माने ग़नी मज्ज़ूब	……	1329

(11)ज़िलकादा

स	नाम व पता	तारीख	हिजरी साल
1	मीर सैय्यिद शाह	1	1197
2	शैख़ यूसुफ़ अंसारी	1	994
3	बीबी कुतुबन	5	1279
4	मीर हादी (फ़ज़ाइल ख़ां)	6	1114
5	शैख़ मुहम्मद सालेह कादरी आज़मी	13	1067
6	मिर्ज़ा अली शाह मज्ज़ूब	15	1277
7	शैख़ जलाल अंसारी	16	961
8	शैख़ मुबारक क़ुरैशी	17	1001
9	सैय्यिद अलाउद्दीन मज्ज़ूब	17	953
10	शैख़ जमालुद्दीन मुहद्दिस	21	1078
11	मीर अब्दुल्लाह अहरारी	23	……
12	शैख़ मुनव्वर चिश्ती	27	970
13	अमीर फ़ैज़ुल्लाह	29	1081

(12)ज़िलहिज्जा

स	नाम व पता	तारीख	हिजरी साल
1	अमीर सैय्यिद दाऊद	8	1006
2	अमीर सैय्यिद जलाल मुतावक्किल	10	969
3	हाजी इब्राहीम मुहद्दिस अकबराबादी	19	1001
4	मीर सैय्यिद अहमद	25	1062

बुज़ुर्गाने दीन के वफ़ात का साल

स	नाम	हिजरी साल
1	सैय्यिद हुसैन	1064
2	मौलाना ज़ियाउद्दीन बल्ख़ी	1193
3	शाह मुजाहिदुद्दीन	1107
4	मौलवी मुहम्मद काज़िम	1191
5	शैख़ अब्दुर्रहमान सूफ़ी कादरी सरहिंदी	995
6	अमीर तपां चिश्ती	1019
7	सूफ़ी हुसैन ख़ां शहीद	1081
8	यूसुफ़ अली शाह चिश्ती साबरी	1279
9	मौलाना सैय्यिद रफ़ीउद्दीन सफ़्वी मुहद्दिस अकबराबादी	954
10	सैय्यिद ज़ैनुल आबिदीन शहीद	1190
11	मख़दूम सिधारी चिश्ती	994
12	सैय्यिद शाह आलम (रजब शहीद)	1296
13	शाह बरवी	971
14	शैख़ मुहम्मद आरिफ़	1080
15	सैय्यिद कबीर	1018
16	सुल्तान मुहम्मद मासूम	989
17	शाह नजफ़	1143
18	मौलाना मुहम्मद सआदत अली कादरी	1331
19	अमीर मुहम्मद शरीफ़	1054

20	मीर मुहम्मद मोमिन अर्शी	1091
21	मौलाना मक़सूद अली तबरेज़ी	977
22	मीर अब्दुल्लाह तबरेज़ी (मुशकीं क़लम)	1035
23	क़ाज़ी सैय्यिद नूरुल्लाह शोस्तरी	1019
24	सैय्यिद अब्दुल क़ादिर बुख़ारी	1050
25	मिर्ज़ा यज़्द बख्श रसा	1124
26	मीर इब्राहीम नक़्शबंदी	1071
27	हाफ़िज़ अहमद	1151
28	मौलाना अहमदी कादरी	1216
29	सैय्यिद मुनव्वर अली शाह	1235
30	हकीम सैय्यिद मीर	1223
31	आग़र ख़ां शहीद	1102
32	शैख़ अलहद्दाद कादरी	1078
33	मीर दुस्तम ख़ां शहीद	990
34	बेगम सुल्तान	945
35	हाजी शम्सुद्दीन अली हरवी	1010
36	मौलाना शैख़ जैनुद्दीन ख़वाफ़ी	940
37	मौलाना शहाबुद्दीन मुअम्माई	942
38	मौलाना अबुल वाजिद फ़ारग़ी	940
39	मीर अबुल गैस बुख़ारी	995
40	ख़्वाजा इब्राहीम हुसैन	1001
41	शैख़ बा यज़ीद ख़वेशगी	1094
42	शैख़ जाफ़र	1074

43	शैख़ जलाल मुतावर्रेअ	1089
44	क़ाज़ी जलालुद्दीन मुल्तानी	999
45	मीर सैय्यिद रफ़ीउद्दीन सानी	965
46	शाह रफ़ीउद्दीन सब्ज़ पोश	1086
47	सक़ा	1000
48	शैख़ फ़िरोज़	1061
49	क़ाज़ी क़ुरबान	1085
50	सैय्यिद लुत्फ़ुल्लाह शहीद	1089
51	शैख़ माखू मज्ज़ूब	982
52	मौलाना मुहम्मद सईद ऐजाज़	1117
53	मौलाना मीर कलां मुहद्दिस	981
54	मौलाना मीर	990
55	क़ाज़ी नासिर	1002
56	मौलाना नासिर मुफ़्ती	980
57	शैख़ वजीहुद्दीन हुसैनी चिश्ती	1071
58	मौलवी अब्दुल्लाह मुहद्दिस	1094
59	अफ़ज़लुल फ़ुज़्ला मुल्ला अब्दुर्रशीद	1088
60	शैख़ अलाउद्दीन सानी मज्ज़ूब	1014
61	मौलाना अली अहमद	1026
62	ग़ुर्बती हिसारी	966
63	शाह हैदर	1076

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْف وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْق

मुहर्रम के महीने में की जाने वाली तक़रीरों का आसान और दिलचस्प मालूमाती गुलदस्ता बनाम

रसूलुल्लाह की पैदाइश से लेकर इमामे हुसैन की शहादत तक की मुख्तसर इस्लामी हिस्ट्री

आसान खुत्बाते मुहर्रम

आप इस किताब में पढ़ सकेगें

(1) दीने इस्लाम की खूबियाँ

(2) मुस्तफ़ा की सीरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

(3) सहाबए किराम रज़ी अल्लाहु अन्हुम

(4) हज़रते अबू बकर सिद्दीक़ रज़ी अल्लाहु अन्हु

(5) हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म रज़ी अल्लाहु अन्हु

(6) हज़रते उस्माने गनी रज़ी अल्लाहु अन्हु

(7) हज़रते मौला अली रज़ी अल्लाहु अन्हु

(8) हज़रते फ़ातिमा ज़हरा रज़ी अल्लाहु अन्हा

(9) हज़रते इमामे हसन रज़ी अल्लाहु अन्हु

(10) हज़रते इमामे हुसैन रज़ी अल्लाहु अन्हु

(11) शहादते इमामे हुसैन रज़ी अल्लाहु अन्हु

(12) यज़ीद और यज़ीदियों का अंजाम

(13) आशूरा के फ़ज़ाइल

(14) कलाम और सलाम

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْفِ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

اَلصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه وَ عَلٰى اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰه

मीलादे मुस्तफा पर किये जाने वाले सवालात के जवाबात, मीलाद की बरकात, मीलाद नामा पर मुश्तमिल आसान किताब बनाम

ईदे मीलादुन्नबी क्यों और कैसे ?

इस किताब में आप पढ़ सकेंगे

दुरूद शरीफ़ की अनोखी फ़ज़ीलत
मीलाद क्या है?
मीलाद या वफ़ात?
क्या मीलाद मनाना क़ुरआन से साबित है?
मीलाद को ईदे मीलाद क्यों कहते हैं?
नबी की पैदाइश के वक़्त मीलाद किस ने मनाया?
क्या नबी ने कभी अपना मीलाद मनाया है?
क्या सहाबए किराम ने मीलाद मनाया है?
मीलाद मनाने की क्या बरकतें हैं?
बुज़ुर्गाने दीन मीलाद कैसे मनाते थे?
मीलाद कब कब कर सकते हैं?
मीलाद कैसे मनाया जाये?
मीलाद नामा
सलातो सलाम
फ़ातिहा ख़्वानी दुआ

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान
अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

अहम्मुल फ़राइज़, नमाज़ की हिकमतों पर मुश्तमिल दिलचस्प किताब बनाम

पांच नमाज़ो की हिकमत

आप इस किताब में मुलाहजा फरमाएंगे

- **क़ुरआन में लफ़्ज़े सलात कितनी बार आया ?**
- **नमाज़ के आ'ज़मुल फ़राइज़ होने की छे हिकमतें**
- **नमाज़ को सलात कहने की हिकमत**
- **नमाज़ के अफ्ज़लुल इबादात होने की पांच हिकमतें**
- **नमाज़ की बरकात**
- **पांच नमाज़ों के फ़र्ज़ होने की सात हिकमतें**
- **इंसानी ज़िन्दगी की पांच हालत**
- **सूरज की पांच ह़ालात**
- **नमाज़ के शराइत व फ़राइज़ की हिकमतें**
- **क़िबला मुक़र्रर करने की चार हिकमतें**
- **का'बे को क़िबला मुक़र्रर करने की नौ हिकमतें**
- **नमाज़ों की रकअतों के मुख्तलिफ होने की हिकमतें**
- **अहकामे इलाही के मुख्तलिफ होने की हिकमतें**
- **पांच नमाज़ों के नामों की हिकमत**
- **फर्ज़ों के साथ सुनन की हिकमतें**
- **आ'माले नमाज़ का शरई जाइज़ा**

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक़ खान अत्तारी मदनी फतहपूरी

मकतबा दरुस्सुन्ना आगरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

फ़तेहपुर सीकरी की तारीख़ पर लिखी जाने वाली

110 साल पुरानी किताब बनाम

रहनुमाए फतेहपुर सीकरी

1335 हिजरी / 1916 ईस्वी

मुसन्निफ़:अल्लामा सईद अहमद मरहरवी

अल मारूफ़

फतेहपुर सीकरी की तारीख

तरतीब व तस्हील

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

1447 हिजरी / 2026 ईस्वी

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

*पहला बाब : फ़तेहपुर सीकरी

*दूसरा बाब : दरगाह शरीफ़

*तीसरा बाब : शाही महल्लात

*चौथा बाब : उत्तर की जानिब की इमारतें

*पांचवाँ बाब : दख्खिन की जानिब की इमारतें

*छठा बाब : फतेहपुर के आस पास की इमारतें

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ اللَّطِیْفِ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الشَّفِیْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ   وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

दिलचस्प मालूमात का एक अछूता अंदाज़ "सब से पहले फुलां काम किसने किया?" पर मुश्तमिल किताब बनाम

सबसे पहले सबसे आखिर

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

* सबसे पहले किसने मिम्बर पर खुत्बा दिया ?
* सबसे पहले किसने राहे खुदा में जिहाद किया ?
* सबसे पहले किसने सरीद तैयार किया ?
* सबसे पहले किसने तराज़ू बनाया ?
* सबसे पहले किसने हथियार बनाये ?
* सबसे पहले किसने इस्लाम में मस्जिद बनाई ?
* सबसे पहले इस्लाम में सूली किस को दी गई ?
* सबसे पहले इस्लाम में खुत्बा कौन सा पढ़ा गया ?
* सबसे पहले किसने ताजे शाही अपने सर पर रखा ?
* सबसे पहले किसने मूंछ के बाल तराशे ?
* सबसे पहले किसने सूफ का लिबास पहना ?
* सबसे पहले किसने क़लम से लिखा ?

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना देहली

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْف وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

मकतबा दारुस्सुन्ना की जानिब से घर घर दीन की तालीम पहुंचाने, दीनी जानकारी को आम करने और मुसलमानों के दिलो में नबी ﷺका इश्क़ पैदा करने और सुन्नतों का आमिल बनाने की पहली कोशिश बनाम :

आँखों का तारा

नामे मुहम्मद

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

* दीन सीखो इनआम पाओ
* मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा और दीन की खिदमत
* तकरीज़े जमील
* मुसन्निफ़ का तआरूफ
* आँखों का तारा नामे मुहम्मद
* दुरूद शरीफ कि अनोखी फ़ज़ीलत
* मुहब्बत और इश्क़ में फर्क़
* नबी ﷺ से मुहब्बत करने की मिसाल
* इश्क़े रसूल ﷺ के फवाइद
* सहाबए किराम का अंदाज़े इश्क़
* मुस्तफ़ा ﷺ ईमान की जान हैं
* हुज़ूर ﷺ के आशिक़ तमाम मख्लूक़ है
* इश्क़े रसूल की निशानियां
* सुन्नतों पर अमल का सवाब
* प्यारे नबी की प्यारी सुन्नतें
* कलाम व सलाम

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफीअ मुहम्मद शफीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दरुस्सुन्ना आगरा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْفِ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْق

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم

आला हज़रत का तज़्किरए दिल नवाज़ कुरआन, हदीस और मैथ की रौशनी में **खुतबाते शफ़ीकी** जिल्द दोम का एक मुन्फ़रिद बयान बनाम

आला हज़रत का चर्चा रहेगा

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

दुरूद शरीफ की अनोखी फ़ज़ीलत
बादशाहों के मकबरों का हाल
मुहब्बत और तारीफ में फ़र्क़
आला हज़रत के पास सब कुछ है
सोने का निराला अंदाज़
हर वक़्त नबी की तारीफ़
तआरुफे आला हज़रत का तआरुफ
वलियों के तज़्किरे क्यों बाक़ी रहते हैं?
तज़्किरे बाक़ी रहने के चंद अस्बाब
9 के अदद की चार अजीब बातें
बरगाहे मुस्तफा की मशीन
फ़ना फ़िर्रसूल होने की दलील
मीलाद में बैठने का अंदाज़
आला हज़रत की मन्क़बत

खतीब

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान
अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

الحمد للہ اللطیف و الصلوۃ و السلام علی رسولہ الشفیق اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

الصلوۃ و السلام علیک یا رسول اللہ   وعلی الک و اصحابک یا حبیب اللہ

कई लड़कियां पैदा होने के बाद लोग कहते हैं"इस औरत को तलाक़ दे दो' आख़िर लड़कियों की पैदाइश में

क़ुसूर किस का ?

मर्द का   या   औरत का

इस्लाम और साइंस की रोशनी में

आप इस किताब में पढ़ सकेगें

ज़मानए-जाहिलियत की कुछ यादें
बेटियों के फ़ज़ाइल
दिलचस्प सवालातो-जवाबात
बच्चे की पैदाइश का सबब क्या है?
बे औलादी के4 रुहानी इलाज
पाँच लर्ज़ा ख़ेज़ वारदातें
साइंस क्या कहती है?
इल्मुल जनीन क्या है?
बच्चे की पैदाइश का मरहला
औलादे नरीना के रुहानी इलाज

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم

اَلصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَ اَصْحَابِكَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہ

आला हज़रत (رحمۃ اللہ علیہ)के इल्मे तक़वीम के शहंशाह होने पर मुँह बोलता सबूत

फतावा रज़विया की 26 वीं जिल्द में मौजूद इमामे अहले सुन्नत का इल्मे तक़वीम पर मुश्तमिल रिसाला **"नुत्क़ुल हिलाल बारिखु विलादिल हबीब वल विसाल"** का आसान अंदाज़ में ख़ुलासा बनाम

चाँद की गवाही

आला हज़रत और इल्मे तक़वीम



मुरत्तिब :मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना दिल्ली

الحمد للہ اللطیف و الصلوۃ و السلام علی رسولہ الشفیق اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

وعلی الک و اصحابک یا حبیب اللہ   الصلوۃ و السلام علیک یا رسول اللہ

दीने इस्लाम की अहमियत, ज़रुरत और अक़्ली व नक़्ली ख़ूबियों और रूहानी ईलाज पर मुश्तमिल फ़िक्र अंगेज़ किताब बनाम

दीने इस्लाम की ख़ूबियाँ

आप इस किताब में पढ़ सकेगें

दुरूदे पाक की अनोखी फ़ज़ीलत
अल्लाह पाक की सबसे बड़ी नेमत कौन सी है ?
हमारा दीन और हमारी हालत
कौन सा दीन मक़बूल है ?
दीन और इस्लाम का माना क्या है ?
इस्लाम क्यों आया ?
दीने इस्लाम की क्या ख़ूबियाँ हैं ?
मुसलमानों से दर्दमंदाना अपील
रूहानी ईलाज

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफीक़ खान अत्तारी मदनी फतेहपुरी

मकतबा दरुस्सुन्ना आगरा

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ اللَّطِيْفِ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِهِ الشَّفِيْقِ

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मुहम्मदे अरबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के **1500 सालह जशने विलादत** के मौक़े पर **"मुहम्मद"** और **"अहमद"** नाम की ला जवाब तशरीह पर मुश्तमिल आशिकाने रसूल के लिए एक नायाब तोहफा बनाम

मुहम्मद और अहमद के राज़

आप इस किताब में पढ़ सकेंगे

दुरूद शरीफ़ की अनोखी फ़ज़ीलत
अल्लाह पाक के3000 नाम
हुज़ूरﷺ के1400 नाम
मुहम्मद ﷺ अल्लाह के मज़हर हैं
अहमद के अलिफ़ की हिक्मत
मुहम्मद के मीम की हिक्मत
नामे मुहम्मद नामे अल्लाह का मज़हर
चार हर्फ़ लाने की हिक्मत
नबी के नाम में कोई नुक़्ता ना होने की हिक्मत
ज़ेर की हरकत ना होने की हिक्मत
मुशद्दद हर्फ़ लाने की हिक्मत
मुशद्दद हर्फ़ को दो बार पढ़ने की हिक्मत
हर्फ़े मीम को ही मुशद्दद लाने की हिक्मत
अल्लाह कहने में होंठ ना मिलने की हिक्मत
मुहम्मद कहने में होंठ मिलने की हिक्मत
मुहम्मद कहने में दो बार होंठ मिलने की हिक्मत
सारी कायनात की कुंजी नामे मुहम्मद
9 की चार अजीब बातें
सिफ़ाते मुहम्मद सिफ़ाते ख़ुदा का मज़हर
अफआले मुहम्मद अफआले ख़ुदा का मज़हर
हर चीज़ में मुहम्मदﷺ का नाम कैसे है ?
ख़साइसे मुस्तफ़ाﷺ कितने हैं ?
अहमद नाम रखने की हिक्मत
मुहम्मद नाम रखने की हिक्मत
आसमान में अहमद, ज़मीन में मुहम्मद नाम रखने की हिक्मत
मुहम्मद और अहमद के अदद की हिक्मत
मुहम्मद के हर हर्फ़ की जुदा हिकमतें
मुहम्मद में दो मीम लाने की हिक्मत
मुहम्मदﷺ के दुनिया की जान होने की हिक्मत
शाने मुस्तफा का बयान क़ुरआनो हदीस से
मीलाद नामा
कलामो सलाम

मुसन्निफ़

मौलाना अबू शफ़ीअ मुहम्मद शफ़ीक़ ख़ान अत्तारी मदनी फ़तेहपुरी

मकतबा दारुस्सुन्ना आगरा

येह जशन है पंद्रह सौ सालह

(वसीम बेख़ुद इंडिया)

आओ सब को बताते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

एक नया सा जोश उभर कर, दुनिया पर छा जाता है
चाँद महे मीलाद का यारो, हम को नज़र जब आता है
फिर फूलें न समाते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

इस उम्मत पर रब्बे अकबर, ने ऐसा एहसान किया
इस आलम में पैदा उस ने, नबियों का सुलतान किया
शुक्र बजा हम लाते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

बुलबुल, कोयल, चिड़िया, मैना, अपनी अपनी रागों में
गीत खुशी के चहक चहक कर, गाते रहते बागों में
फूल भी हँसते जाते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

आमिना बीबी के घर से, वह शान के साथ निकलती है
दाई हलीमा गोद में ले के, प्यारे नबी को चलती है
याद वही दिन आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, येह जश्न है पंद्रह सौ सालह

बेखुद अपनी क़िस्मत देखो, उस दिन वह एअजाज़ मिला
हम को हादी, हामी, रहबर, और रब का हमराज़ मिला
तभी तो हम भी मनाते हैं, यह जश्न है पंद्रह सौ सालह
आज मुहम्मद आते हैं, यह जश्न है पंद्रह सौ सालह



आओ दुनिया को बताएं खूबियाँ इस्लाम की

आओ दुनिया को बताएं खूबियाँ इस्लाम की
ज़िंदगी भर काम आएं खूबियाँ इस्लाम की

अदल है, इन्साफ़ है, उल्फ़त, रहम की बात है
किस तरह कोई मिटाए खूबियाँ इस्लाम की

दूर से ही रुख से तेरे सुन्नतें छलका करें
पैरहन में मुस्कराए खूबियाँ इस्लाम की

कुफ्र की ज़ुल्मत में डूबा जिस जगह इंसान हो
उस जगह फिर जगमगाए खूबियाँ इस्लाम की

नूर बन कर दिल में उतरेगी उसी की बात फिर
जो कोई अपनाते जाए खूबियाँ इस्लाम की

क़ौम की तक़दीर बन जाते हैं वो माँ बाप जो
अपने बच्चों को सिखाएं खूबियाँ इस्लाम की

येह फ़रीज़ा है हमारा, दीन का फ़रमान भी
हर कदम अपनाते जाएं खूबियाँ इस्लाम की

इस तरह बतलाओ बेख़ुद, अपने तो अपने मगर
ग़ैर भी फिर जान जाएं खूबियाँ इस्लाम की

वसीम बेखुद माण्डलवी राजस्थान



याद दाश्त

स	उनवान	पेज
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		

याद दाश्त

स	उनवान	पेज
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		

याद दाश्त

स	उनवान	पेज
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		